Saurashtra University
Re – Accredited Grade 'B' by NAAC
(CGPA 2.93)

Dave, Dipikaben V., 2009, *"मन्नू भंडारी के गद्य साहित्य का मूल्यांकन"*, thesis PhD, Saurashtra University

http://etheses.saurashtrauniversity.edu/id/eprint/681

Copyright and moral rights for this thesis are retained by the author

A copy can be downloaded for personal non-commercial research or study, without prior permission or charge.

This thesis cannot be reproduced or quoted extensively from without first obtaining permission in writing from the Author.

The content must not be changed in any way or sold commercially in any format or medium without the formal permission of the Author

When referring to this work, full bibliographic details including the author, title, awarding institution and date of the thesis must be given.

Saurashtra University Theses Service
http://etheses.saurashtrauniversity.edu
repository@sauuni.ernet.in

© The Author

ॐ

''मन्नू भंडारी के गद्य साहित्य का मूल्यांकन''

(सौराष्ट्र विश्वविद्यालय की पीएच. डी. (हिन्दी) की
उपाधि के लिए प्रस्तुत शोध-प्रबन्ध की रुपरेखा)

★ प्रस्तुतकर्ता ★

प्रा. दीपिकाबहन वी. दवे
हिन्दी व्याख्याता
बहाउद्दीन कला महाविद्यालय
जूनागढ़ ।

★ निर्देशक ★

डॉ. आर. एम. पाण्डेय
प्राचार्य एवं अध्यक्ष - हिन्दी विभाग
बहाउद्दीन कला महाविद्यालय,
जूनागढ़।

वर्ष - २००९

ॐ

‘‘मन्नू भंडारी के गद्य साहित्य का मूल्यांकन’’

(सौराष्ट्र विश्वविद्यालय की पीएच. डी. (हिन्दी) की
उपाधि के लिए प्रस्तुत शोध-प्रबन्ध की रुपरेखा)

★ प्रस्तुतकर्ता ★

प्रा. दीपिकाबहन वी. दवे
हिन्दी व्याख्याता
बहाउद्दीन कला महाविद्यालय
जूनागढ़ ।

★ निर्देशक ★

डॉ. आर. एम. पाण्डेय
प्राचार्य एवं अध्यक्ष - हिन्दी विभाग
बहाउद्दीन कला महाविद्यालय,
जूनागढ़ ।

वर्ष - २००६

‘‘मन्नू भंडारी के गद्य साहित्य का मूल्यांकन’’
प्रा. दीपिकाबहन वी. दवे

:: प्रमाणपत्र ::

प्रमाणित किया जाता है कि प्रा. डी. वी. दवे ने सौराष्ट्र विश्व विद्यालय की पीएच. डी. (हिन्दी) की उपाधि के लिए मेरे निर्देशन एवं निरीक्षण में **''मन्नू भंडारी के गद्य साहित्य का मूल्यांकन''** शीर्षक से शोध-प्रबंध तैयार किया है । इस शोध-प्रबंध में इन्होंने उक्त विषय का यथा-शक्ति अध्ययन, अनुशीलन एवं शोध-परक विश्लेषण-विवेचन करके वैज्ञानिक ढंग से मौलिक निरुपण किया है ।

साथ ही यह शोध-प्रबंध अथवा इसका कोई अंश अब तक न तो प्रकाशित हुआ है और न ही इसका कहीं कोई उपयोग हुआ है ।

दिनांक :-

स्थल :- जूनागढ़

निर्देशक

डॉ. राजेन्द्रप्रसाद एम. पाण्डेय
प्राचार्य एवम् अध्यक्ष हिन्दी विभाग
बहाउद्दीन कला महाविद्यालय,
जूनागढ़ ।

:: प्रथम अध्याय ::

❁ मन्नू भंडारी का जीवन परिचय

१. मन्नू भंडारी का व्यक्तित्व

२. बचपन

३. शिक्षा-दीक्षा

४. विवाह एवं दाम्पत्यजीवन

५. साहित्य साधना

प्रथम अध्याय

❖ मन्नू भंडारी का जीवन परिचय :-

❉ प्रस्तावना :

किसी के व्यक्तित्व की पहचान के लिए उस व्यक्ति का परिचय आवश्यक है । वैसे तो किसी भी व्यक्ति के व्यक्तित्व के मूल्यांकन करना कठिन कार्य है और किसी प्रतिभशाली व्यक्ति के व्यक्तित्व का चित्रण करना तो लगभग असंभव है, फिर भी नेपोलियन ने कहा है कि -

''दुनिया मे कोई कार्य असंभव नहीं है'' ।[१]

उसी विश्वास के आधार पर मन्नू भंडारी के व्यक्तित्व के विविध पहलुओं को उजागर करने हेतु हमने अल्प-सा प्रयास किया है ।

आधुनिक युग के साहित्यकारों में मन्नू भंडारी का अपना अलग ही स्थान है । स्वातंत्र्योत्तर कथा साहित्य में जिन महिला साहित्यकारों के नाम सामने आते हैं, उनमें मन्नू भंडारी का नाम सर्वप्रथम आता है । मन्नू भंडारी का साहित्य कहानी, उपन्यास एवं नाटक इन तीन विद्याओं से परिपूर्ण हैं । मन्नू भंडारी के बिना आधुनिक कथा साहित्य की चर्चा ही अपूर्ण लगती हैं ।

मन्नू भंडारी का समग्र साहित्य उनके सीधे-सादे और सच्चे व्यक्तित्व का आइना हैं । हिन्दी कहानी को स्वतंत्र करने का श्रेय पर्याप्त मात्रा में मन्नू भंडारी को है ।

तेजस्वी विचार, रुढ़िमुक्त साहस और घरेलू आत्मीयता की सहजता ही मन्नू की सबसे बड़ी शक्ति है । वह कहानी लिखती नहीं, पाठक को अंतरंग घनिष्टता में लेकर कहानी सुनाती हैं । बेहद सहज और सीधे पाठक तक पहुँचनेवाली ये कहानियाँ हर स्तर और क्षेत्र में

चर्चित हुई हैं ।

मन्नू जी का कथा-साहित्य जीवन से जुड़ा हुआ है । उनकी कहानियों में पारिवारिक जीवन, पति-पत्नी के बनते-बिगड़ते संबंध एवम् उन्मुक्त प्रेम आदि का चित्रण सुक्ष्मता से हुआ हैं । मन्नू भंडारी की कहानिर्यां पाठकों को कला दृष्टि के साथ-साथ जिन्दगी के 'आज' को समझने की दृष्टि देती है ।

मन्नू भंडारी का व्यक्तित्व :-

जन्म :

श्रीमती मन्नू भंडारी का जन्म ३ अप्रैल १९३१ को मध्यप्रदेश में स्थित भानपुरा नामक छोटे से गाँव में हुआ ।

पिता :

मन्नू भंडारी के पिताजी का नाम श्री सुख सम्मपराम था । वे चार भाई थे । अपने भाइयों में वे सबसे बड़े थे । उनका परिवार संयुक्त मारवाड़ी परिवार था । उस समय देश में स्वतंत्रता-आंदोलन की लहर जोरों पर थी । श्री सुख सम्पतराम ने भी अपने घर के दरवाजे इस आंदोलन की सहायता के लिए खोल दिये । उसमें देशप्रेम तो जबरदस्त था ही, साथ ही साथ यश प्राप्ति की अभिलाषा भी प्रबल थी । इन्दौर में कांग्रेस की स्थापना इन्हीं के घर पर हुई थी । स्वतंत्रता आंदोलन से संबंधित अन्य पक्षों के लोग भी इनके घर पर आते-जाते रहते थे । मारवाड़ी समाज के होते हुए भी पिताजी ने अपनी बेटियों को पढ़ाया । जैन धर्म के होते हुए भी वे आर्य समाज से प्रभावित थे । वे कभी अकेले भोजन नही करते थे । साथ मे हमेशा कोई ने कोई सामाजिक कार्यकर्ता या अन्य लोग रहते थे । उनके पिता क्रोधी, अहंवादी एवम् आदर्शवादी थे । मन्नू भंडारी के व्यक्तित्व निर्माण

का श्रेय उनके पिताजी को है ।[२]

श्री सुख सम्पतराय हिन्दी साहित्य-जगत के जाने-माने व्यक्ति थे । उन्होंने हिंदी पारिभाषिक शब्दकोश की रचना आठ भागों में की है । उनकी कुछ अन्य रचनाएं भी है । जब विश्वकोश का काम चल रहा था, वे बीमार थे किंतु अंतिम समय तक विश्वकोश का ही काम करते रहे उसके पलंग के नीचे पांडुलिपियां रखी थी । वे सुधारवादी होते हुए भी वे अपनी पुत्री मन्नु का राजेन्द्र यादव से विवाह रचाने के पक्ष में नहीं थे । वे अन्तिम समय तक अपने दामाद से मिले नहीं । हो सकता है उन्होंने ऐसा भी सोचा हो कि राजेन्द्र की निश्चित आय न होने से मेरी पुत्री को कहीं आर्थिक कष्ट न उठाना पड़े । मन्नूजी ने कहा भी कि अगर एक बार वे राजेन्द्र से मिलते तो उनके स्वभाव के कारण और बात-चीत के ढंग से निश्चित ही प्रभावित होते किंतु ऐसा हुआ नहीं ।[३]

श्री सुख सम्पतराय की मृत्यु कैंन्सर से हुई । उनका देशप्रेम अंत समय तक बना रहा । देश की स्वतंत्रता के बाद देश की स्थिति, सत्ता की राजनीति तथा भ्रष्टाचार से वे बहुत दुःखी थे । लोगों से हमेशा इस बात पर चर्चा करते रहते थे । उन्हे परिवारवालों की चिंता करने के बजाय देश की चिंता अधिक थी । मन्नू भंडारी के शब्दों में वे बड़े ईगोइस्ट थे । अजमेर में मन्नू भंडारी ने कॉलेज बंद करवाया है कॉलेज के छात्र मेरी बात नहीं मानते । अगर मन्नू कह दे तो वे सब क्लास में आने के लिये तैयार हो जायेंगे । इस बात पर वे बड़े प्रसन्न हुए ।

मारवाड़ी जैन समाज में प्रचलित धारणा के विपरित लड़कियों को शिक्षा देना, राजनीति में हिस्सा लेने को प्रोत्साहन करना तथा

रसोईघर में जाने नहीं देना आदि के कारण मन्नू भंडारी शिक्षा-जगत् में पहुँच पायी हैं । मन्नू ने अपना प्रथम कहानी संग्रह ''मैं हार गई'' सन् १९५७ में उन्हीं को अर्पित करते हुए लिखा हैं - 'जिन्होंने मेरी किसी भी इच्छा पर कभी अंकुश नहीं लगाया - पिताजी को ।' इस बात का प्रमाण है कि उनके व्यक्तित्व के विकास में पिताजी का कितना बड़ा योगदान था ।

माता :

मन्नू भंडारी की माता का नाम अनूपकुंवरि था । वह अनपढ़ थी । दिनभर घूंघट निकाले रहती थी । संयुक्त परिवार की सबसे बड़ी जिठानी होने से अपनी देवरानियों के साथ बहन जैसा व्यवहार करती थी । पिताजी से बिलकुल प्रतिकुल स्वभाव की उनकी माता थी । अनपढ़ होते हुए भी पति की किताबों को बांधना, पारसल की व्यवस्था करना जैसे छोटे-मोटे कार्य व्यवस्थित ढंग से करती थी । एक दिन एक सौ तीन डिग्री बुखार में भी जब वे इस प्रकार के कार्यों में लगी हुई थीं तब मन्नू ने उन्हें डांटा और प्यार से सुला दिया जीवन में अनुपकुंवरि जी ने हर किसी को स्नेह देना ही सीखा था, किसी से लेना नहीं । उन्होंने कभी किसी से कोई शिकवा-शिकायत नहीं की । हर परिस्थितिम में चुपचाप सब कार्य राजी-खुशी से करती रहती थी । मानो कर्म ही उनका जीवन था । मां को लेकर मन्नू जब किसी बात का पिता से विरोध करतीं या अवरोध करती तब वे कहतीं -

''मुझे कोई शिकायत नहीं है बेटी, तुम क्यों परेशान होती हो । जाओ अपना काम करो''[४]

मन्नू के अंतर्जातीय विवाह का उसकी माताने विरोध नहीं किया

और जीवन में आयी हुई हर स्थिति को वे स्वीकार करती चली गयीं । अपनी उदारमता मां की याद आते ही आज भी मन्नू का हृदय भर जाता हैं । मन्नूजी ने अपनी मां के संबंध में और बाते बताते हुए कहा - मां ने हमें कभी रसोई में नहीं बुलाया और न घर के कार्य में हमारी मदद ली । उस समय का हमारा व्यवहार-जूलूस निकालना, भाषण देना, घर देर-सबेर आना आदि का भी उन्होंने कभी विरोध नहीं किया और न उस पर कोई टीका-टिप्पणी ही की और उसी का परिणाम है कि आज हम कुछ बन पाये हैं ।

भाई-बहन :

मन्नू भंडारी के भाई-बहनों की संख्या चार है उनके दो भाई और दो बहनों हैं । बड़े भाई का नाम प्रसन्न कुमार हैं जिन्होंने अंग्रेजी में एम.ए. किया है और दूसरे भाई का नाम है वसंत कुमार उन्होंने भी अंग्रेजी में एम.ए. किया है दोनों भाई संप्रति नौकरी करते हैं ।

मन्नूजी की बड़ी बहन का नाम है स्नेहलता और छोटी बहन का नाम है सुशीला । दोनों बहनों की शिक्षा बी.ए. तक हुई है । स्नेहलता आजकल इंदौर में रहती है तथा सुशीला कलकता में एक स्कूल चला रही हैं ।

महेन्द्रकुमारी :-

मन्नू भंडारी का पूरा नाम महेन्द्रकुमारी है वे सबसे छोटी होने के कारण सभी उन्हें प्यार से 'मन्नू' पुकारते थे । राजेन्द्र यादव से विवाह होने के उपरांत भी वे 'मन्नू भंडारी' ही रही ।[५]

शिक्षा :-

मन्नूजी ने अजमेर के 'सावित्री गर्ल्स हाईस्कूल' में अपनी शिक्षा पूर्ण की । वहीं से आपने सन् १९४५ में मैट्रिक किया । सन् १९४५

४७ तक अपने अजमेर के कालेज से ही इंटर किया । कालेज में प्राध्यापिका शीला अग्रवाल और प्राध्यापिका वसुमती मेनन लड़कियों को देशप्रेम और अंग्रेज-सरकार के विरोध में उकसाती रहती थीं । मन्नू भंडारी के घर के संस्कार तथा इन प्राध्यापिकाओं के उपदेशो ने उन पर प्रभाव डाला । वे देशप्रेम से सराबोर हो उठीं । उनके हृदय में स्वतंत्रता की ऐसी ज्वाला भड़की कि वे रोज सुबह होते ही जुलूस निकालतीं, नारे लगातीं और धुआंधर भाषण देती । स्वतंत्रता-संग्राम में कार्य करते हुए रात में देर से घर पहुंचतीं । विलंब से पहुंचने पर डांट खाती सुबह होते ही फिर वही कार्य आरंभ होता उन पर स्वातंत्र्य संग्राम का नशा छाया रहता था । उन दो प्राध्यापिकाओं को कालेज से निकाल दिया गया और मन्नू भंडारी को बी.ए. में प्रवेश लेने की अन्नुमति कमेटी ने नहीं दी, जब मन्नूने इस बात के विरोध में कॉलेज बंद करवाया । इसी सिलसिले में दिल्ली से पूछताछ के लिए कोई अंग्रेज अफसर आया था । उसने मन्नू को बुलाया । मन्नू को देखने के बाद उसे विश्वास ही नहीं हुआ कि यह दुबली-पतली बित्ते भर की लड़की कालेज बंद करवा सकती है । इस संदर्भ में जब पिताजी को बुलवाया गया तब अपनी लड़की के इस गौरवमय कार्य से वे फूल उठे ।[६]

भारत स्वतंत्र हुआ । मन्नू भंडारी को अजमेर के उसी कॉलेज में बी.ए. के लिए प्रवेश मिल गया था । किंतु सुशीला बहनने उन्हें कलकता में अपने पास बुला लिया । सन् १९४९ में उन्होंने कलकता से बी.ए. किया ।

बी.ए. में उनका हिंदी विषय नहीं था किंतु उन्होंने हिंदी विषय लेकर काशी हिंदू विश्व विद्यालय से बहिस्थ के रूप में एम.ए. किया ।

❖ अध्यापकीय जीवन :-

कलकता में 'बालीगंज शिक्षा सदन' स्कूल में मन्नू ने सन् १९५२-६१ तक लगभग ९ साल अध्यापिका का कार्य किया। मन्नू भंडारी को स्कूल के बच्चों को पढ़ाने में बड़ा आनंद आता था। वे छात्रवत्सल थीं। किताबें पढ़ाने का उन्हें बेहद शौक था। इसीलिए स्कूल के पुस्तकालय का भार उन्हीं पर सौंपा गया।[७]

❖ राजेन्द्र यादव से विवाह :-

बालीगंज शिक्षा सदन स्कूल के अध्यक्ष श्री भगवती प्रसाद खेतान थे। वे बड़े साहित्य-प्रेमी थे। श्री राजेन्द्र यादव शोधकार्य करने कलकता पुहुंचे थे। पढ़ने-लिखने और लेखक बनने की धुन उन पर सवार थी। साहित्य में रुचि रखने के कारण श्री भगवती प्रसादजी से उनका परिचय हुआ। उन्होंने स्कूल का पुस्तकालय अद्यतन करने के लिए राजेन्द्र जी से कहा और वहां पुस्तकों पर चर्चा करते-करते उनका मन्नू भंडारी से परिचय हुआ। पुस्तक लेखक और साहित्य की चर्चा चलते-चलते वे लोग जिंदगी की चर्चा करने लगे। धीरे-धीरे उनका पुस्तक परिचय जीवन-परिचय में परिवर्तित होता गया और दोनों का सिविल मैरेज हुआ। यह अंतर्जातीय विवाह था। राजेन्द्र यादव से विवाह होने के पश्चात् मन्नू भंडारी का लेखन तथा अध्यापन और अधिक निखर आया। यादवजी के अनुभवों और सुझावों ने मन्नूजी के लेखन में नई चमक उत्पन्न की। और मन्नू भंडारी का ऊँचे साहित्यकारों से परिचय हुआ। मन्नू भंडारी को सत्येन्द्र शरत, मोहन राकेश, कमलेश्वर आदि लोग देवर-जेठ के रूप में प्राप्त हुए।

मन्नू भंडारी को पुत्री हुई उसका नाम साहित्यिक माता-पिता ने 'रचना' रखा किंतु घर में उसे प्यार से वे 'टिंकू' पुकारते हैं।

❖ प्राध्यापकीय जीवन :-

श्रीमती मन्नू भंडारी सन् १९६१ में अध्यापिक से प्राध्यापिका बनीं । सन् १९६४ तक कलकता में 'रानी बिड़ला कालेज' में उन्होंने अध्यापन कार्य किया । इन्हीं दिनों श्री राजेन्द्र यादवने दिल्ली जाकर वहा स्थायी होने का निर्णय लिया । अतः सन् १९६४ में मन्नू भंडारी का दिल्ली में आगमन हुआ । तब से मन्नू भंडारी दिल्ली के प्रसिद्ध सोफिस्टिकेटेड कॉलेज 'मिरांडा हाउस' में प्राध्यापिका के रूप में कार्यरत हैं । सप्ताह में एक दिन 'दिल्ली विश्व विद्यालय' में भी पढ़ाने जाती हैं ।

❖ व्यक्तित्व :-

व्यक्ति का 'व्यक्तित्व' परिवेश से बनता है । जो अपने साथ सामाजिक विषमताओ एवं मानवीय संवेदनाओं का एक पूरा संसार लिये रहता है । इस परिवेश से जोड़ना और जुड़कर लिखना स्वयं अपनी सजीवता के लिए आवश्यक है । वस्तुतः परिवेश हर व्यक्ति को मिलता है, किंतु उसे भोगने की प्रक्रिया हर एक की अलग-अलग हुआ करती है । परिवेश के द्वारा ही व्यक्ति का निर्माण या विघटन संभव होता हैं ।

मन्नू भंडारी के व्यक्ति में माता के पूर्ण समर्पित एवं पिता के दृढ़ संकल्पना एवं अहंवादी संस्कारों का औचित्यपूर्ण समंजन है । इसी संवेदनशील स्वभाव, न्यायोचित विवेक, निष्काम समाजसेवी मस्तिष्क ने एक समर्थ लेखिका बनने के लिए पृष्ठभूमि निर्मित की जिससे उनकी रचनाओं में अप्रतिबद्धता, समाज सापेक्षता, न्यायपक्ष घरता आद्यन्त दृष्टिगत होती है । जूलूस निकालना, प्रभातफेरियों में सम्मिलित होना, स्वतन्त्रता-संग्राम में जूझने को कृत संकल्पी होना, जन समूह में भाषण

देना, अत्याचार के विरुद्ध स्वरोद्‌घोष करना आदि गतिविधियाँ उनकी प्रारम्भिक जिन्दगी का खास हिस्सा रही हैं । मन्नू भंडारी को बचपन में राजनीतिक चर्चाओं में सहभागी होने का सुअवसर प्राप्त हुआ ।[८]

पराधीन भारत में नारी-शिक्षा की सुविधाएँ इतनी सहजता से उपलब्ध नहीं थी । आज भी नारी-शिक्षा का प्रसार विशिष्ट मध्यवर्ग के परिवारों तक सीमित हैं । जहाँ तक मन्नू भंडारी की शिक्षा का प्रश्न है, उनकी शिक्षा और अध्ययन को अग्रसर करने का श्रेय उनके सुसंस्कृत और गरिमावान् पिता को हैं ।

मन्नू भंडारी को जब से अस्मिता बोध हुआ तब से स्वयं को पुस्तकों, पत्रिकाओं, राजनीतिक, सामाजिक चर्चाओं के बीच पाया । इससे उनमें एक दृष्टि-आलोक लेखन-क्षेत्र में अवतरित होने से पूर्व ही स्फुरित हो चुका था, जो उनकी रचनाओं में आद्यन्त महसूसा जा सकता है । यही दृष्टि-चिंतन उनकी कहानी की अभीप्सित उपलब्धि है और यही उनकी लेखकीय निधि हैं ।

नारी अपने जीवन में माँ-बेटी, बहन, पत्नी आदि भूमिकाएँ निभाती है मन्नू भंडारी ने यह भूमिकाएँ अच्छी तरह से निभायी है इन्हीं भूमिकाओं के साथ मन्नू भंडारी लेखिका तथा अध्यापिका की भी भूमिका निभा रही है । मन्नू भंडारी स्वयं कहती है कि -

''इन सब में से मैं दरअसल क्या हूँ ? तो यों समझिये कि इन सबका मिला-जुला रूप ही मेरा वास्तविक व्यक्ति है और मै वही बनी भी रहना चाहती हूँ ।''[९]

श्रीमती मन्नू भंडारी को जो कोई एक बार देखता है तो उसे उनके माथे की बड़ी-सी बिंदी याद रह जाती है । विश्व में भारतीय नारी की पहचान 'बिंदी' हैं । मन्नू भंडारी सिर्फ बिंदी से ही नहीं अपितु

संपूर्ण व्यक्तित्व से आम घरेलू भारतीय नारी का एहसास दिलाती हैं ।

श्रीमती मन्नू भंडारी पीले सिल्क की साड़ी में लाल बार्डर और शाल ओढ़े ऐसी दिखायी देती है कि लगता ही नहीं कि वे प्रसिद्ध लेखिका है । वह एक संवेदनशीला नारी अधिक लगती है ।

गिरिराज किशोरजी ने 'मन्नू भंडारी जिंदगी की समझदारी' लेख में लिखा है .... ''मन्नू भंडारी की पहचान उस बिंदी से शुरु हुई थी और आज रचनाओं तक पहुँच गयी है । मन्नू भंडारी को पहली बार देखकर यह प्रश्न होता है कि क्या वो कहानियाँ लिखती है ? मन्नू भंडारी कहानी लेखिका उतनी नजर नहीं आती जितनी की एक घरेलू स्त्री ।''[१०]

मन्नू भंडारी ने अपनी संपादित पुस्तक 'अपने से परे' में लिखा हैं कि - ''एक अच्छा कहानी लेखक बनने से पहले अनिवार्य है एक अच्छा कहानी - पाठक बनना ।'' यह एक सुझाव नहीं है । सच बात तो यह है कि मन्नू भंडारी को आज भी कहानी-उपन्यास पढ़ने में रूचि है । और मन्नू भंडारी की लायब्रेरी में यशपाल, प्रेमचन्द से लेकर अभिमन्यु अनत तक की समस्त पुस्तके उपलब्ध है । वहा जयशंकर प्रसाद, चन्द्रकांत बांडिवदेकर, रामनगरकर, ममता कालिया, मीनाक्षी पुरी, मृदुला गर्ग, यादवेन्द्र शर्मा, अब्दुल बिस्मिल आदि सभी नये पुराने चर्चित - अचर्चित साहित्यकारों की पुस्तकें देखी जा सकती हैं । और मन्नू भंडारी ने यशपाल, प्रेमचन्द, अज्ञेय शरतचन्द्र आदि का सम्पूर्ण साहित्य पढ़ा है और उनसे प्रभावित भी हुई है । और शरतचंद्र की कहानी 'स्वामी' पर तो उन्होंने स्वामी नामक उपन्यास भी लिखा हैं । और हमे ऐसा लगता है कि मन्नू भंडारी की रचना-प्रक्रिया शरत् बाबू से जाने-अनजाने जुड़ गयी है । शरत साहित्य के सभी पात्र यथार्थ

लोक के हैं उसी तरह मन्नू भंडारी की कहानियों तथा उपन्यासों के सभी पात्र यथार्थ की जमीन पर खड़े है । मन्नू भंडारी ने अपनी रचना प्रक्रिया के संदर्भ में 'महिला उपाधि महाविद्यालय' की छात्राओं से बातचीत करते हुए कहा कि - ''पुरुष-लेखकों की प्रेरणा तो प्रेमिकाएं होती है लेकिन मेरा वैसा कुछ नही है बस आसपास की घटना व्यक्ति या माहौल ही लिखने के लिए प्रेरित करते है ।'' कुछ लोगों ने राजेन्द्र यादव और श्रीमती मन्नू भंडारी के वैवाहिक जीवन के संबंध में अनेक प्रकारकी मिथ्या बातों का प्रचार कर दोनों के विवाह-विच्छेद की कल्पनाएँ भी कर डाली। उसके पारिवारिक जीवन की एक महत्वपूर्ण उपलब्धि उनके लेखन कार्य से संबंधित है और उनके लेखन कार्य में किसी प्रकार की शिथिलता नहीं आई तथा उन्हें निरंतर प्रसिद्धि प्राप्त होती रही ।

अब मन्नू भंडारी की अर्द्धशती पारकर चुकी है पर ये दिल्ली महानगर की अनेक व्यस्तताओं के मध्य सुखी जीवन व्यतीत करते हुए लेखन कार्य से जुटी हुई है । उनका व्यक्तित्व अत्यंत सरल है और उनके निश्छल एवं निष्कलुष व्यवहार से सभी प्रभावित होते हैं । उनके जीवन में कोई बनावट नहीं हैं, जो कुछ वे नहीं है, उसे दिखाने के कतई कोई चेष्टा नहीं की । वे नारी है मात्र नारी और यह नारीत्व एक ओर भारतीय परम्पराओं तथा दूसरी और आधुनिक परिवेश दोनों को सहज ढंग से आत्मसात किए हुए है । इस प्रकार मन्नू भंडारी का जीवन पूर्णतया सुखमय ही माना जाएगा ।

साहित्य-सृजन के बारे में मन्नू की मान्यता है - ''लेखन एक अनवरत यात्रा है जिसका न कोई अन्त है, न मंजिल । बस निरन्तर

चलते चले जाना ही जिसकी अनिवार्यता है शायद नियति भी ।''[११]

❖ कृतित्व :-

स्वातन्त्र्योत्तर कथा-साहित्य में जिन महिला कथाकारों ने जिन्दगी की विद्रुपताओं, विषमताओं, विकृतियों को कलात्मक अभिव्यक्ति दी उनमें कथा लेखिका मन्नू भंडारी का नाम सर्वाधिक चर्चित है । सहज सामानय भाषा में निश्छती, बेबाक अभिव्यक्ति से समाज सापेक्ष विषयों के शाश्वत संदर्भो में प्रस्तुतीकरण और नारी मन की पीड़ा के अंकन से वे हिन्दी पाठकों में अत्यधिक लोकप्रिय हैं । उनकी रचनाओं में विषय-वैविध्य के साथ-साथ उत्तरोत्तर सृजनात्मक विकास विद्यमान है ।

श्रीमती मन्नू भंडारी ने अपनी रचना-प्रक्रिया के संबंध में 'पांचजन्य' नामक पत्र में लिखा है - ''मेरे लिये लिखना दो तरह का होता है । एक वह जो मैं कलम लेकर कागज पर लिखती हूं और काफी लम्बे अन्तराल के बाद ही संभव हो पाता हैं । दूसरा वह जो बिना कागज-कलम के दैनंदिन कामों के साथ-साथ बैक ग्राउंड म्युजिक की तरह मन की परतों पर निरंतर ही चलता रहता है । बाहर वालों के लिए महत्वपूर्ण वह है जो कागज पर लिखा गया और उन तक पर्हुंच गया । लेकिन मेरे लिये तो 'मेरा मानसिक लेखन' ही महत्त्वपूर्ण है, क्योंकि इसके दौरान ही रो-मैटिरियल का वह भंडार जमा होता है जिसमें से कुछ चीजें चुनकर उन्हें काट-छांट और तराश कर तैयार माल की तरह मैं बाहर ला पाती हुं ।''

मन्नू भंडारी लौकिक पात्र एवं घटना से प्रभावित होती है और वह प्रभाव उनके चिंतक मन-मस्तिष्क को मथता रहता है, उस मंथन से जब स्वानुभूति का नवनीत तैयार होता है तभी वह कहानी के रूप में

प्रकट होता है । यही कारण है कि उनकी कहानियां सजीव होकर जनसामान्य से बातें करने लगती है । लेखन उनका व्यवसाय नहीं है अपितु अनुभूति और चिंतन का विस्फोट हैं ।

राजेन्द्र यादव ने लिखा है कि - ''मन्नू भंडारी के दिमाग में प्लाट मौलिक और सशक्त आते हैं । और वह लिखने से पूर्व कई बार राजेन्द्र को सुनाती है ।''[१२]

❖ मन्नू भंडारी का रचना संसार :-

(१)	**कहानी संग्रह**	**प्रथम संस्करण**
१.	मैं हार गई	सन् १९५७ ई.
२.	तीन निगाहों की तस्वीर	सन् १९५९ ई.
३.	यही सच है	सन् १९६६ ई.
४.	एक प्लेट सैलाब	सन् १९६८ ई.
५.	त्रिशंकु	सन् १९७८ ई.
६.	आंखो देखा झूठ (बाल कहानियां)	सन् १९७६ ई.
(२)	**उपन्यास**	**प्रथम संस्करण**
१.	एक इंच मुस्कान	सन् १९६१ ई.
२.	आपका बंटी	सन् १९७१ ई.
३.	स्वामी	सन् १९८२ ई.
४.	महाभोज	सन् १९७६ ई.
५.	कलवा	सन् १९७१ ई.
(३)	**नाटक**	**प्रथम संस्करण**
१.	बिना दीवारों का घर	सन् १९६६ ई.
२.	महाभोज	सन् १९८३ ई.

मन्नू भंडारी का साहित्य लोकप्रिय तथा श्रेष्ठ सिद्ध हुआ है ।

साहित्यकार के रूप में उन्हें सम्मानित कर उनकी कई रचनाओं को पुरस्कार मिल चुका है । उनकी कई कहानियों का अनुवाद देशी विदेशी भाषाओं में हुआ हैं । पंजाबी में उनकी बीस कहानियों का अनुवाद कर उसका एक संकलन तथा मराठी, कन्नड़, मलयालम, तेलुगु, सिंधी एवं बंगला भाषा में मन्नूजी की कहानियों के अनुवाद हो चुके है । इतना ही नहीं विदेशी भाषाओं में भी विशेषतः डच एवं अंग्रेजी में भी उनके अनुवाद हुए है उनके सुप्रसिद्ध उपन्यास आपका बंटी का अनुवाद गुजराती भाषा में निरंजन सट्टावाला ने मराठी में इन्दुमती शेवडे ने तथा अंग्रेजी में जयरतन ने किया है । सिंधी, पंजाबी, कन्नड़, उड़िया आदि भाषाओं में भी उक्त उपन्यास के अनुवाद हुए है ।

मन्नू भंडारी के 'महाभोज' उपन्यास का मंचन सबसे पहले बदायूं में हुआ । उसके पश्चात् रायपुर में हुआ । श्रीमती अमाल अलाना और प्रेम महियानी के सहयोग से उन्होंने स्वयं 'महाभोज' का नाट्य रूपांतर किया और 'राष्ट्रीय नाट्य-विद्यालय' ने बड़े जोश के साथ दिल्ली के मंच पर प्रस्तुत किया । बी.बी.सी. लन्दन ने ५५ मिनटोंवाले 'महाभोज' के नाट्य रूपान्तर को प्रस्तुत एवं प्रसारित करने के लिये प्रति मिनट ६.५० पौंड स्वीकार किया है ।

मन्नू भंडारी के 'बिना दीवारों के घर' नाटक का भी मंचन ग्वालियर, दिल्ली, भोपाल, देहरादून, उदयपुर आदि नगरों में हुआ ।''[१३]

'फिमेल कौरेक्टर्स इन हिंदी शोर्ट स्टोरीज' पर अमेरिकन छात्र श्री जुडित अन्ने बेनाडे सुश्री उषा प्रियंवदा के निर्देशन में कार्य कर रहे है जिसमें मन्नू भंडारी की कहानियों को उन्होंने विशेष स्थान दिया है ।

मन्नू भंडारी की कई कहानियों का मंचन भी हुआ है । 'अकेली' तथा 'चश्मे' नामक कहानियों का मंचन 'अनामिक' संस्था कलकता

द्वारा किया गया था । 'त्रिशंकु' नामक कहानी का मंचन प्रथम मिरांडा कॉलेज दिल्ली द्वारा और रचना संस्था कलकता द्वारा हुआ है । बाद में इसी कहानी पर राजेन्द्रनाथ द्वारा टी.वी. के लिये फिल्म भी बनी ।

'एखाने आकाश नाई' कहानी पर बासु चटर्जीने शबाना आजमी और अमोल पालेकर को लेकर 'जीना यहां' नामक फिल्म बनायी हैं ।

बी.बी.सी. लंदनने मन्नू भंडारी की रचनाओ पर १४ जुलाई सन् १९८२ ई. में एक 'फीचर' भी प्रस्तुत किया था ।

मन्नूजी ने पाँच कहानी संग्रहो का सृजन किया । उन्हें सफलता 'मैं हार गई' कहानी से मिली । अब तक उन्होंने ५० कहानियाँ लिखी हैं ।

मन्नू भंडारी ने पाँच उपन्यासों की रचना की । इनमें से एक उपन्यास पति के सहयोग से लिखा । दूसरा उपन्यास 'कलवा' किशोरोपयोगी है । महाभोज और 'आपका बंटी' उपन्यास लोकप्रिय हो गये । महाभोज उपन्यास में राजनीतिक पतन तो 'आपका बंटी' उपन्यास में सामाजिक समस्या चित्रित की है । और 'स्वामी' उपन्यास पर आधारित 'स्वामी' फिल्म बन चुकी हैं ।

मन्नू भंडारी के समस्त कहानी-साहित्य से चयन कर तीन अलग अलग प्रकाशकों ने उनके विशेष कहानी-संग्रह प्रकाशित किये हैं ।

	कहानी संग्रह	**प्रकाशक**	**सन्**
१.	मेरी प्रिय कहानियां	अक्षर प्रकाशन दिल्ली	१९६९
२.	श्रेष्ठ कहानियां	राजपाल एण्ड सज. दिल्ली	१९७९
३.	सप्तपर्णा	नेशनल पठिल शिंग हाउस दिल्ली	१९८२

मन्नू भंडारी की पहली कहानी 'नया समाज' में ५४ छपी लेकिन

यह 'मैं हार गई' कहानी से मिला जो १९५६ में प्रकाशित हुई ।

महिला कहानी लेखिकाओं में मन्नू भंडारी का नाम सर्वाधिक महत्त्व का है । उन्होंने हिन्दी कहानी को रुढ़ियों से मुक्त रहने के संकल्प के साथ नूतन शैली में कथा रचना की है । सहजता मन्नू भंडारी के साहित्य का प्राण तत्व है । अपने अन्दर लिखने की जो शक्ति निहित होती है उसके बारे में उनका मन्तव्य है - जीवन की धड़कन से भरपूर स्थितियाँ, विचार या समस्याएँ ही मुझे लिखने के लिए प्रेरित करती हैं ।

मन्नू भंडारी ने अपनी पहली कहानी 'मैं हार गई' लिखने के बारे में कहा है - बिना किसी भी प्रेरणा और प्रोत्साहन के मैंने अपनी पहली कहानी 'मैं हार गई' कैसे लिखी मैं खुद नहीं जानती । 'कहानी' नामक पत्रिका में छप गई अपनी पहली कहानी को देखकर उन्हें जो आत्मानुभूति हुई उसको वे यों प्रकट करती हैं - ''वैसा थ्रिल वैसा रोमांच तो उसके बाद मैंने कभी महसूस ही नहीं किया, जब कि कहीं बड़े-बड़े और महत्त्वपूर्ण अवसर आए । अपनी कहानी पर बनी पहली फिल्म 'रजनीगंधा' उसके 'सिल्वर जुबली' समारोह में शिरकत 'धर्मयुग' में धारावाहिक रूप में छपते समय उपन्यास 'आपका बंटी' पर पाठको की गुदगुदी, व्यापक प्रतिक्रियाएँ, 'महाभोज' का अविस्मरणीय मंचन और सभी अखबारों में 'रिव्यूज'....... लेकिन नहीं वैसा अनुभव फिर कभी नहीं हुआ ।''

अपनी रचना प्रक्रिया के बारे में मन्नू भंडारी ने कहा है कि उनके सारे पात्र वास्तविक जीवन से ही आए हैं, लेकिन रचनाओं में उनका जो रूप उभरकर आया है, वह तो वास्तविक जीवन से बिल्कुल भिन्न है ।

मन्नू भंडारी कहती है कि - मुझे जब भी कोई घटना या व्यक्ति क्लिक करता है - मैं कभी तुरंत उस पर नहीं लिख पाती । उस समय तो मन के किसी कोने या डायरी के किसी पृष्ठ पर उतारकर रख लेती हूं । फिर कुछ अन्तराल के बाद कभी किसी घटना को अर्थ देने के लिए या किसी समस्या को रेखांकित करने के लिए मन के गोदाम में से कोई व्यक्ति निकलकर आता हैं या कभी किसी व्यक्ति के व्यक्तित्व को सार्थक विस्तार या गहराई देने के लिए कोई घटना । और उन दोनों के तालमेल से एक सम्पूर्ण रचना जन्म लेती हैं ।

लेखन की दुनिया में पदार्पण करते समय उन्हें प्रोत्साहन देनेवालों में प्रमुख थे भैरव प्रसाद गुप्त जी ।

पाठकों की प्रतिक्रियाओं ने भी उनमें आत्मविश्वास भर दिया था । उन्होंने कहा है -

''स्वीकृति के मान पर चढ़कर ही शायद आत्मविश्वास को ऐसी धार मिलती है ।

साठोतरी महिला कथाकारों में मन्नू भंडारी का विशिष्ट स्थान है । मन्नू भंडारी की कथा-यात्रा लगभग चार दशकों में फैली हुई है । सन् ६० के आसपास ''नई कहानी'' आन्दोलन से नवें शतक तक वे लगातार कहानियाँ लिखती रही है । उनकी कहानियाँ सामाजिक सन्दर्भो में स्त्री-पुरुष सम्बन्धों को व्याख्यायित ही नहीं करती, बल्कि मध्यवर्गीय जीवन यथार्थ के विविध पक्षों को व्यक्त भी करती है । हर कहानी लिखने के पीछे जो प्रेरणा उन्हें मिलती है, उसके बारे में मन्नू भंडारी ने 'मेरी प्रिय कहानियाँ' की भूमिका में लिखा हैं - अनेक बार ऐसा हुआ है कि दूसरों के अनुभव और जिन्दगी के कुछ हिस्सों ने अनायास ही मुझे कहानीकार के रूप में आकर्षित किया है और मैंने उन्हें

ज्यों का त्यों कहानी के रूप में बांध दिया लेकिन बाद में पाया कि वह आकर्षण इतना अनायास नहीं था । उसके पीछे कहीं अनजाने और अचेतन में मेरा अपना ही अनुभव था, जो एक भीतरी समानता पाकर उस ओर झुका था । उनकी कहानियों में 'मजबूरी' की मां, 'यही सच है' की दीपा, 'खोटे सिक्के' का बालक, 'त्रिशंकु' की मां, बेटी, उपन्यास में 'आपका बंटी' का शकुन अजय और बंटी, 'महाभोज' का दा साहब आदि सभी पात्रों के साकार रूप के दर्शन मन्नू भंडारी ने मुझे साक्षात्कार के प्रसंग में कराए ।

सामान्यतया मन्नू भंडारी को कहानी लेखिका के रूप में ही सर्वाधिक ख्याति मिली हैं । और थोड़े समय में ही उन्होंने नये कहानीकारो में विशिष्ट स्थान पा लिया । वास्तव में हिंदी साहित्य जगत में मन्नू भंडारी का पर्दापण 'कहानी' नामक मासिक पत्रिका में प्रकाशित उनकी 'मैं हार गई' नामक कहानी से ही हुआ और यद्यपि इसके पूर्व उनकी एक अन्य कहानी प्रकाशित हो चुकी थी परंतु वह पत्रिका प्रभावरहित होने के कारण और प्रचार के अभाव में उक्त कहानी की कोई खास चर्चा न हो सकी, इस प्रकार मन्नू भंडारी नेकहानी लेखन द्वारा ही हिंदी साहित्य जगत में प्रवेश किया और 'कहानी' मासिक में प्रकाशित उनकी 'मैं हार गई' कहानी के बहुचर्चित होने के कारण मन्नू का उत्साह स्वाभाविक ही बढ़ा तथा उनका लेखन तीव्र गति से बढ़ता गया । अब उनकी कहानियाँ अबाध गति से पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशित होने लगी और दो वर्ष बाद मन्नू भंडारी की 'ईसा के घर इन्सान' गीत का चुम्बन, जीती बाजी की हार, एक कमजोर लड़की की कहानी, सयानी बुआ, अभिनेता, श्मशान, दीवार, बच्चे और बरसात, पंडित गजाधर शास्त्री,

कल और कसक तथा मैं हार गई आदि बारह कहानियों का संकलन 'मैं हार गई' शीर्षक से प्रकाशित हुआ । 'मैं हार गई' कहानी संग्रह का उत्साहपूर्वक स्वागत किए जाने के कारण मन्नू भंडारी ने कुछ अन्य सुंदर कहानियाँ भी लिखी और उनके कहानी संग्रह के दो वर्ष पश्चात सन् १९५९ में तीन निगाहों की एक तस्वीर, अकेली अनचाही गहराइयाँ, खोटे सिक्के, घुटन, हार, मजबूरी एवं चश्मे आदि आठ कहानियों का संग्रह 'तीन निगाहों की एक तस्वीर नामक प्रकाशित हुआ ।

मन्नू भंडारी के मैं हार गई, एवं तीन निगाहों की एक तस्वीर नामक दो कहानी संग्रहों के प्रकाशनोपरांत उनके निम्नलिखित कहानी संग्रह भी प्रकाशित हुए - (१) यह सच है (२) एक प्लेट सैलाब और (३) त्रिशंकु ।

मन्नू भंडारी के पाँच कहानी संग्रह प्रकाशित हुए और उनमें उनकी छियालीस कहानियाँ संकलित है ।

इससे स्पष्ट हो जाता है कि हिन्दी कहानी साहित्य के विकास में मन्नू भंडारी का निर्विवाद रूप से महत्त्वपूर्ण योग रहा है । और डॉ. नगेन्द्र द्वारा सम्पादित बृहत्काय ग्रंथ 'हिन्दी साहित्य का इतिहास' में डॉ. बच्चनसिंह ने यही कहा है कि - मन्नू भंडारी ने बड़ी ही ईमानदारी के साथ नारी के मन में उठनेवाले भावों, स्थिति विशेष में पुरुष के मन में जागनेवाली शंकाओ, ईष्याओं आदि को अपनी कहानियों में विषय वैविध्यता के दर्शन होते हैं और उनमें विभिन्न सामाजिक कहानियों के निरुपण के साथ-साथ मजदूरों की दयनीय आर्थिक स्थिति का वर्णन करते हुए उनके और उनके परिवार के प्रति उच्च पदाधिकारियों के क्रूर व्यवहार का चित्रण भी किया गया । साथ ही रचना विधान की

द्रष्टि से भी मन्नू भंडारी की कहानियाँ निर्विवाद रूप से प्रशंसनीय है और उनकी सभी कहानियों में पात्रों की संख्या प्रायः सीमित ही है तथा उनका परिचय मनोवैज्ञानिक आधार पर किया गया है । कहानीकी संवाद योजना सराहनीय है और उसमें स्वाभाविक, सजीवता एवं पात्रानुकूलता आदि गुण भी दीख पड़ते है तथा भाषाशैली सीधी सादी, व्यावहारिक और पात्र एवं परिस्थिति अनुकूल है ।

इसी प्रकार उनकी प्रत्येक कहानी का आरंभ एवं अंत दोनों ही आकर्षक और प्रभावोत्पादक हैं तथा शीर्षक छोटे घटना से सामंजस्य रखनेवाले तथा नवीन है ।

डॉ. श्रीमती उमेश माथुर के अनुसार - 'मन्नू भंडारी की कहानियों का उदेश्य है नारी हृदयकी कोमल अछूती भावनाओं की मार्मिक अभिव्यंजना तथा जीवन और जगत के व्यापक क्षेत्र में घटित होनेवाले विविध घटनाओं का चित्रांकन ।'

मन्नू भंडारी ने उपन्यास साहित्य की समृद्धि में भी अपना योग प्रदान किया और उनकी सर्वप्रथम औपन्यासिक कृति 'एक इंच मुस्कान' है । यह उपन्यास सर्वप्रथम 'ज्ञानादेय' मासिक में जनवरी १९६१ से दिसम्बर १९६१ तक धारावाहिक रूप से प्रकाशित हुआ । उसके पश्चात् मन्नू भंडारी की स्वतंत्र पहचान उनके बहुचर्चित एवं महत्त्वपूर्ण उपन्यास 'आपका बंटी' से बनती हैं । इस उपन्यास के द्वारा उन्होंने जो ख्याति प्राप्त की, वह कई उपन्यासों की रचना करने के बाद भी कुछ उपन्यासकारों को प्राप्त नहीं हो सकी ।

डॉ. गोपाल रायने 'समीक्षा' के जुलाई १९७१ के अंक में उचित ही लिखा है -

''हिन्दी में यह पहला उपन्यास है जिसमें एक विशेष परिस्थिति

में पड़े हुए बच्चे की मनःस्थिति का विस्तृत फलक पर चित्रांकन किया है ।[१६] बंटी हमारे सामने आधुनिक युग के लिए चुनौती बनकर खड़ा हैं । उपन्यास को इतना प्रभावशाली बनाने में उनके शिल्प और भाषा दोनों की महत्त्वपूर्ण भूमिका है । मन्नू भंडारीने जिष भाषा का इस्तेमाल किया है वह उन्हें आधुनिक उपन्यासकारों में विशिष्ट दरज्जा प्रदान करती है । इस उपन्यास की भाषा में ऐसी लयात्मकता है जो अन्यत्र देखने को नहीं मिलती ।

सन् १९७९ में मन्नू भंडारी का एक और उपन्यास 'महाभोज' प्रकाशित हुआ । इस उपन्यास ने हिन्दी के राजनीतिक उपन्यासों की परमाश में उल्लेखनीय स्थान प्राप्त किया । यह उपन्यास हिंदी में आम तौर पर लिखे जानेवाले उपन्यासों से एकदम भिन्न हैं । 'महाभोज' उपन्यास हिन्दी की उपन्यास धारा में एक नये मोड़ की तरह हैं । देश के राजनीतिक माहौल की दुविधापूर्ण, झकझोर देनेवाली सच्चाई का खुला ब्यौरा मन्नू भंडारी के इस उपन्यास में पहलीबार देखने को मिला । गरीब खेतिहर मजदूर और गाँव की जनता के शोषण पर तुली राजनीति के दोगले अगुओं उनके पिट्ठुओं और चमचों का इस उपन्यास में निरावरण चित्रण हुआ हैं । ऐसा कहा जा सकता है कि देश के अभावग्रस्त वर्गों को सदा से त्रस्त करते आए घिनौने आतंक से परदा उठानेवाला यह पहला उपन्यास है । गरीबों के लिए झुठे आँसू बहाने में निपुण मगरमच्छनुमा नेताओं द्वारा लगाये गये खोखले नारों के पीछे के कुत्सित षड़यंत्रों और दमघोटुं स्थितियों की निर्भीक चीरफाड़ इसमे हुई है ।

इस औपच्यासिक कृतियों के अतिरिक्त मन्नू भंडारी के 'कलवा' और 'स्वामी' नामक दो अन्य उपन्यास भी है । इनमें से 'कलवा'

बाल उपन्यास है, और 'स्वामी' बंगला के प्रसिद्ध साहित्यकार की शरतचंद्र चट्टोपाध्याय की एक कहानी के आधार पर कथा है और उस 'स्वामी' नामक फिल्म बन चुकी है ।

मन्नू भंडारी ने अपने 'महाभोज' उपन्यास का नाट्य रूपांतर भी प्रस्तुत किया है । इसके पूर्ण उनका नाटक 'बिना दीवारों का घर' प्रकाशित हो चुका था । इसके बारे में

डॉ. बच्चन सिंह ने कहा - ''मन्नू भंडारी का बिना दीवारों का घर' में पति-पत्नी के बीच जो तनाव पैदा हुआ है उसका आधार पुष्ट और विश्वसनीय है क्योंकि आज के युग में पढ़ी लिखी पत्नी के प्रति पतिका ईर्ष्यालु हो जाना स्वभाविक है ।[१७]

इस से स्पष्ट हो जाता है कि श्रीमती मन्नू भंडारी बहुमुखी प्रतिभा सम्पन्न साहित्यकार है और उन्होंने कहानी, उपन्यास एवं नाटक आदि विविध साहित्य रूपों की समृद्धि में अपना महत्त्वपूर्ण योग प्रदान किया है । उन्होंने कहानी और उपन्यास ही अधिक परिमाण में प्रस्तुत किये है और अधिकांश विचारक मन्नू भंडारी को हिंदी कथा साहित्य में उल्लेखनीय स्थान प्रदान करने के पक्ष में हैं ।[१८]

डॉ. प्रतापनारायण टंडन ने तो मन्नूजी को स्वातंत्र्योतर युग के कथाकारों में विशेष रूप से उल्लेखनीय माना है ।[१९]

उस जमाने में आजकी तरह मनोरंजन के कोई साधन नही थे महीने दो महीने में भाइयों के साथ सिनेमा जाने की अनुमति मिलती तो उत्सव जैसा लगता था । दो दिन पहले से उत्सुकता भरी प्रतीक्षा और दो दिन बाद तक देखे हुए का 'थ्रिल' । लड़कियों के अकेले इधर-उधर जाने और घूमने-फिरने का चलन तो था नहीं, तो स्कूल और खेल से बचे समय में हम किताबें पढ़ते थे - कहानी, उपन्यास ।

यों पिताजी का अपना एक अच्छा खासा निजी पुस्तकालय था । उसमे शरतचन्द्र की अनेक और प्रेमचन्द की कुछ पुस्तके थी । जो भी किताब हाथ में आ जाती पढ़ डालती, पर अच्छी वे ही लगती थी जो या तो किसी सामाजिक समस्या पर केन्द्रित होती हो या फिर कसी क्रान्तिकारी के जीवन पर । लेखक के रूप में यदि किसी से पहचान बनी थी तो केवल शरत और प्रेमचन्द से ।

''लड़कियों को जिस उम्र में स्कूल शिक्षा के साथ-साथ सुघड़ ग्राहणि और कुशल पाक-शास्त्री बनाने के नुस्खे रटाए जाते थे, पिताजी का आग्रह था कि मैं रसोई से दूर ही रहूँ । वे रसोई को भटियाखाना कहते थे और उनके हिसाब से वहाँ रहना अपनी क्षमता और प्रतिभा को भट्टी में झोंकना था । घरमें विभिन्न राजनीतिक पार्टियों के जमावड़े होते थे । मैं चाय-नाश्ता देने जाती तो पिताजी मुझे भी वहीं बैठने को कहते वे चाहते थे कि मैं भी वहाँ बैठुं सुनूं और जानुं कि देश में क्या हो रहा है ।''[२०]

मैं दसवी पास करके 'फर्स्ट इयर' में आई हिन्दी की प्राध्यापिका शीला अग्रवाल से परिचय हुआ उन्होने साहित्य की दुनिया में प्रवेश करवाया खुदने चुन-चुनकर किताबें दी । पढ़ी हुई किताबो पर बहसे की । अज्ञेय, जैनेन्द्र, यशपाल, भगवतीचरण वर्मा- प्रेमचंद, शरतचन्द्र तक साहित्य की दुनिाय फेल गई मेरे प्रिय लेखक यशपाल ही थे । शीला अग्रवाल ने साहित्यका दायरा ही नहीं बढ़ाया था, बल्कि घर की चहारदीवारी के बीच बैठकर देश की स्थितियों को जानने-समझाने का जो सिलसिला पिताजीने शुरु किया था, उन्होंने वहाँ से खींचकर उसे भी स्थितियों की सक्रिय भागीदारी में बदल दिया । शीला अग्रवाल की जोशीली बातों ने रगो में बहते खून को लावे में बदल दिया था ।

एक बार कॉलेज से प्रिंसीपाल का पत्र आया कि पिताजी आकर मिले और मेरी गतिविधियों पर कारवाई करे, पत्र पढ़ते ही पिताजी आगबबूला ''यह लड़की मुझे कहीं मुँह दिखाने लायक नहीं रखेगी पता नहीं क्या-क्या सुनना पड़ेगा वहाँ जाकर । चार बच्चे पहले भी पढ़े किसीने ये दिन नहीं दिखाया ।''[२१]

पिताजी गुस्से में गये थे तो माँ से कहा कि लौटकर बहुत कुछ गुबार निकल जाए तब मुझे बुलाना मैं पड़ोस की एक मित्र के यहाँ जाकर बैठ गई । लेकिन जब पिताजी आए तब वे खुश थे । तो मुझे विश्वास न हुआ ।

आगे मन्नू भंडारी आपने बारे में कहती है कि उस समय आज़ाद हिन्दी फौज के मुक़दमे का सिलसिला था । सभी कॉलेजों, स्कूलों, दुकानों के लिए हड़ताल का आह्वान था । शाम को भाषणबाजी हुई । पिताजी के एक मित्रने घर आकर पिताजी को कहा कि मन्नू कि तो मत मारी गई है आपने लड़कियों को आज़ादी दी पर कैसे लड़को के साथ हड़तालें करवाती है वह देखते है आप हमारे घरों की लड़कियों की शोभा देता है ये सब ? वे तो आग लगाकर चले गए और पिताजी सारे दिन भभकते रहे बस अब इस मन्नू का घर से बाहर निकलना बन्द करो ।

इस बात से बेख़बर में रात को घर लौटी तो पिताजी के एक मित्र ओर अजमेर के सबसे प्रतिष्ठित और सम्मानित डॉ. अम्बालालजी बैठे थे मुझे देखते ही स्वागत किया -

''आओ आओ मन्नू । मैं तो चौपड़ पर तुम्हारा भाषण सुनते ही सीधा भंडारी जी को बधाई देने चला आया । आय एम रिअली प्राउड ओफ यू. क्या तुम घर में रहते हो भंडारी घर से निकला भी करो,

वे बोलते जा रहे थे और पिताजी के चेहरे का सन्तोष गर्व में बदलता जा रहा था ।''[२२]

लेखिका कहती है कि उस समय शीलाजीने साहस और आत्मविश्वास से भरकर चलने के लिए एक दिशा दी थी जीवन को अर्थ दिया था । उन्होंने मेरी भीतरी शक्ति और व्यक्तितत्व के सारे सकारात्मक पहलुओं को उजागर किया था ।

संदर्भ - ग्रंथ सूची

क्रम	पुस्तक	लेखक	पृष्ठ संख्या
१.	कथाकार मन्नू भंडारी	अनीता राजूरकर	१
२.	कथाकार मन्नू भंडारी	अनीता राजूरकर	२
३.	म. भंडारी की कहानियों के प्रमुख पात्र	प्रदीप सी. लाड	१४
४.	कथाकार मन्नू भंडारी	अनीता राजूरकर	४
५.	कथाकार मन्नू भंडारी	अनीता राजूरकर	५
६.	म. भंडारी की कहानियों के प्रमुख पात्र	प्रदीप सी. लाड	१५
७.	म. भंडारी की कहानियों के प्रमुख पात्र	प्रदीप सी. लाड	१६
८.	कथाकार मन्नू भंडारी	अनीता राजूरकर	७
९.	गिरिराज किशोर	मनोरमा (१९७७)	६
१०.	त्रिशंकु (कहानी संग्रह)	मन्नू भंडारी	१५
११.	एक कहानी यह भी	मन्नू भंडारी	१३
१२.	म. भंडारी की कहानियों के प्रमुख पात्र	प्रदीप सी. लाड	१८
१३.	कथाकार मन्नू भंडारी	अनीता राजूरकर	१४
१४.	कथाकार मन्नू भंडारी	अनीता राजूरकर	१८
१५.	म. भंडारी की कहानियों के प्रमुख पात्र	प्रदीप सी. लाड	१९
१६.	मन्नू भंडारी का उपन्यास साहित्य	नन्दिनी मिश्र	१४
१७.	हि. सा. का. ई.	डॉ. नगेन्द्र	
१८.	मन्नू भंडारी का उपन्यास साहित्य	नन्दिनी मिश्र	१६
१९.	मन्नु भंडारी का कथा सहित्य	प्रा. किशोर गिरडकर	२
२०.	एक कहानी यह भी	मन्नु भंडारी	२०
२१.	एक कहानी यह भी	मन्नु भंडारी	२३
२२.	एक कहानी यह भी	मन्नु भंडारी	२५

:: द्वितीय अध्याय ::

❁ मन्नू भंडारी का रचना साहित्य

१. मन्नू भंडारी का साहित्य संक्षिप्त परिचय

२. मन्नू भंडारी का उपन्यास साहित्य

३. मन्नू भंडारी का कहानी साहित्य

४. मन्नू भंडारी का नाट्य साहित्य

द्वितीय अध्याय

❖ मन्नू भंडारी का साहित्य संक्षिप्त परिचय :-

(१) उपन्यास साहित्य :

हिन्दी साहित्य जगत में कथा लेखिका मन्नू भंडारीका नाम बड़े आदर से लिया जाता है । उनकी रचनाओं में वैयक्तिक से निर्वैयक्तिक होने की युगधर्मी यात्रा सर्वत्र अन्तर्निहित है । सहज, सरल आम बोलचाल की भाषा में मानवीय अन्तर्वृत्तियों को निरुपित करने में मन्नू भंडारी अन्यतम हैं । उनका समस्त रचना संसार उपन्यास, कहानी, नाटक इन तीन विद्याओं में ग्रंथित हैं ।

हिन्दी उपन्यास गद्य साहित्य की नव्यविद्या है । उपन्यास आधुनिक युग की देन है । मानवजीवन की अनेक उलझनों को उसके राजनैतिक, सामाजिक, आर्थिक, धार्मिक शोषण को ही आज उपन्यास में केन्द्रस्थान नहीं मिला, बल्कि आधुनिक परिवेश में मनुष्य की अजनबीयत व्यक्ति के व्यक्तितत्व आदि को उपन्यास में स्थान मिला है । गद्य साहित्य में उपन्यास का स्थान सबसे महत्वपूर्ण इसलिए है । उसमें मानव जीवन के यथार्थ रूप को प्रस्तुत करने का सामर्थ्य हैं । विस्तृत फलक है मानव जीवन के माध्यम से समाज के विविध रूपों को उद्‌घाटित करके सत्य की खोज करना उपन्यासका प्रमुख लक्ष्य रहा है ।

उपन्यास सम्राट प्रेमचंदजी ने इसे और भी स्पष्ट बताया हैं - ''साहित्य की आधार जीवन है । इसी नींव पर साहित्य की दीवार खड़ी होती है, उसकी अटारियाँ, मीनार और गुंबद बनते हैं ।''[१]

आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी के अनुसार -

''उपन्यास का जन्म ही समाज की यथार्थ परिस्थितियों के भीतर

से हुआ है । उपन्यास के अध्ययन क मतलब होना चाहिए, किसी जाति या बढ़ते हुए विचारों और निरन्तर उत्पन्न होती रहनेवाली जीवन की यथार्थ परिस्थितियों से सम्पर्क स्थापित करते रहने के प्रयत्नों का अध्ययन ।''[२]

मन्नू भंडारीने अपने उपन्यासों द्वारा भारतीय समाज के बदलते चेहरे को जीवन्त बनाया है । किसी भी समाज में खासकर भारतीय समाज में युग परिवर्तन की प्रक्रिया सैकड़ों वर्षो तक चलती हैं, इसलिए मन्नूजी द्वारा प्रतिध्वनित होनेवाली भावनाएँ आनेवाले लम्बे समय तक महत्वपूर्ण बनी रहेंगी । फिर भी उसके भाव गम्भीर और तीक्ष्ण हैं । उनका सामाजिक वर्ग स्थूल रूप में मध्य वर्ग हैं और सूक्ष्म रूप में उच्च मध्यवर्ग है । दोनों का अन्तर तो यह है कि उच्च मध्यम वर्ग में आकांक्षाऐ उच्चवर्गो की होती हैं पर व्यवहार उच्चवर्ग की और निम्न मध्यवर्ग मे भी आकांक्षाएँ उच्च वर्ग की तरह होती हैं परन्तु व्यवहार निम्न वर्ग की तरह होते हैं ।

स्वातंत्र्योतर हिन्दी उपन्यासकारों में मन्नू भंडारी का उल्लेखनीय स्थान है । उनके उपन्यास सामाजिक उपन्यासों की कोटि में आनेवाले हैं । सामाजिक उपन्यासों के लक्ष्य के बारे में डॉ. त्रिभुवन सिंह ने लिखा है -

सामाजिक विषमताओं, भ्रष्टाचारों तथा वैयक्तिक स्वार्थो से आक्रान्त पीड़ित समाज की दयनीय परिस्थितियों को उसके वास्तविक रूप में समाज के सामने प्रस्तुत करना सामाजिक उपन्यासों का प्रधान लक्ष्य हैं । सचमुच लेखिका के सभी उपन्यास इसी लक्ष्य की पूर्ति करनेवाले हैं । इनके पाँच उपन्यास हैं । यहाँ उन उपन्यासों का संक्षिप्त परिचय दिया जा रहा है ।

१. एक इंच मुस्कान :

मन्नू भंडारी ने अपने रचनाकार पति राजेन्द्र यादव से मिलकर प्रस्तुती उपन्यास १९६१ में लिखा हैं यह एक सहयोगी उपन्यास है । ३०२ पृष्ठोंवाले इस उपन्यास के अन्तिम भाग में राजेन्द्र यादव और मन्नू भंडारी ने अपने-अपने विचार प्रस्तुत किए हैं, जिससे उपन्यास के बारे में कुछ जानकारी प्राप्त होती है - जैसे (१) अत्यन्त संघर्षशील परिस्थितियों में प्रस्तुत उपन्यास की रचना हुई है । (२) इसकी कथावस्तु मुख्य रूप से मन्नूजी ने ही लिखी थी । प्रस्तुत उपन्यास में चौदह परिच्छेद हैं । जिनमें पहला, तीसरा, पाँचवा आदि परिच्छेद राजेन्द्र यादव जी द्वारा लिखित हैं, और दूसरा, चौथा, छट्ठा आदि परिच्छेदों की रचना मन्नूजी ने की हैं । उपन्यास के अन्त में यह भी लिखा है कि जब यह उपन्यास धारवाहिकी रूप में 'ज्ञानोदायी' में प्रकाशित हुआ था तब मन्नूजी द्वारा लिखित भाग को पाठकों ने अधिक पसन्द किया था ।

'एक इंच मुस्कान' में मुख्यरूप से तीन पात्र है - अमर, रंजना और अमला । इन तीनों पात्रों के इर्दगिर्द कथानक घूमता रहता है । अमर के मनोविज्ञान को राजेन्द्र यादव ने प्रस्तुत किया है, और रंजना, अमला की ओर से मन्नू भंडारीने लिखा है । अमर एक लेखक है और रंजना उसकी पत्नी हैं । लेकिन अमर अपनी सृजन की प्रेरणा अमला को मानता है, जो उसके उपन्यासों की पाठिका है, उच्च वर्ग की है, और पति द्वारा परित्यक्ता है । अमला अपनी संपत्ति, सुन्दरता आदि के द्वारा अमर को अपने वश में कर लेती है । परिणाम स्वरूप अमर और रंजना के वैवाहिक जीवन में दरार पड़ती है । जब कि रंजना की सम्पूर्ण दुर्बलताओं के साथ उसे चाहनेवाली थी ।

अपने माँ-बाप से लड़कर उसके साथ आई थी । रंजना परम्परागत संस्कारों से प्रभावित समर्पित नारी होने को कारण यह चाहती है कि उसका पति केवल उसका होकर रहे । जब उसकी इस इच्छा का भंग हो जाता है, तो वह अमर को छोड़कर जाती हैं ।

मन्नू भंडारी और राजेन्द्र यादव ने प्रस्तुत उपन्यास में यह दिखाया है कि बुद्धिजीवी लेखक को प्रेम विवाह, गृहस्थी आदि भावनात्मक सम्बन्धों से दूर ही रहना चाहिए, नहीं तो वह सफल कलाकार नहीं बन पाते । अमला भी अमर के जीवन से चली जाती है अमला धनी, अहंग्रस्त और आधुनिक विचार धाराओं से सहमत नारी हैं । इसलिए वह अपने पति से समझौता नहीं कर पाती तथा परित्यक्ता होने के बावजूद कैलाश के विवाह प्रस्ताव को ठुकरा देती है कईबार चाहकर भी अमर के समर्पण करके करजोर नहीं बनना चाहती ।

इस प्रकार ''अमला और रंजना परिस्थितियों में अधिक और मनस्थितियों में कम जीवित रहती हैं । दोनों नारियाँ प्रताड़ित थी अमला की उच्चवर्ग की विडम्बनाने मारा था और रंजना को एक 'सनकी' और प्रवर्चता ने अर्थात् पाठक दोनो को सहानुभूति दे रहा था ।''[३]

२. आपका बंटी :

मन्नू भंडारी का 'आपका बंटी' उपन्यास इस नकली आधुनिकता से दूर आज की महानगरी जिन्दगी के एक पहलू की तीखी वास्तविकता का सही बोध करानेवाला उपन्यास हैं । इसमें एक 'बंटी' नामक बच्चे की मनःथिति का चित्रांकन किया हैं । यह उनका प्रथम स्वतंत्र उपन्यास हैं । एक बच्चे को उनके माता-पिता के अनबन के कारण जो यातना सहन करनी पड़ती है उसका यथार्थ ढंग से निरुपण इस

उपन्यास में किया है ।

'समीक्षा' के जुलाई १९७१ अंक में संपादक गोपालरायने प्रस्तुत उपन्यास के बारे में लिखा है - हिन्दी का यह पहला उपन्यास है जिसमें एक विशेष परिस्थिति में पड़े हुए बच्चे की मनःस्थिति का इतने विस्तृत फलक पर चित्रांकन किया गया है ।''[४]

श्रीमती कमल कुमारने अपना लेख समकालीन महिला उपन्यासकारों के उपन्यासों का परिवेश में 'आपका बंटी' के बारे में कहा है - ''मन्नू भंडारी का 'आपका बंटी' आज के अनेक परिवारों में साँस ले रहा है अलग-अलग सन्दर्भो में अलग-अलग स्थितियों में अलग तरह से ।''[५]

बंटी के माता-पिता शकुन और अजय हैं जो आजकी आधुनिक स्वतंत्र विचार धारा से प्रभावित हैं और दोनों अहं भावना से ग्रस्त है जिसकी वजह से तनाव उत्पन्न होता है । शिक्षा के प्रभाव से शकुन अपना एक स्वतन्त्र व्यक्तित्व निर्मित होता है । फलस्वरुप वह अपने पति अजय का साथ नहीं निभा पाती है और बच्चे (बंटी) को लेकर अलग ही रहती हैं । अजय से अलग होने के बाद बंटी ही उसको एकमात्र सहारा रह गया । यद्यपि बंटी को अजय बहुत प्यार करते हैं पर उसके तो मम्मी के साथ रहना ही पसन्द है । अजय शकुन को तलाक देने से पहले ही मीरा नामक दूसरी स्त्री से विवाह कर लेता हैं । इसलिए दोनों में तलाक अनिवार्य होता है । शकुन भी दूसरी शादी कर लेती है तब बंटी का भविष्य अंधेरे में पड़ जाता हैं । बंटी न तो डॉ. जोशी को जिससे शकुन दूसरी शादी करती है, अपने पिता के रुप में स्वीकार कर सकता है, न अजय की दूसरी पत्नी मीरा को अपनी माँ के रुप में स्वीकार कर पाता है । फलस्वरुप उसे

होस्टेल में रहने के लिए भेज देते हैं ।

अजय, शकुन और बंटी इन तीनों चरित्रों के बारे में ‘जन्मपत्री : बन्टी की’ में मन्नूजी ने स्वयं कहा है - ‘समेरी अपनी धारणा है कि मैंने न शकुन को गलत कहा, न अजय को, बंटी तो गलत है ही नहीं । गलत और सही अगर कोई हो सकते है तो वे हैं अजय, शकुन और बंटी के आपसी सम्बन्ध ।’’

इस उपन्यास के बारे में डॉ. अनीता राजूरकम ने अपनी पुस्तक ‘कथाकार मन्नू भंडारी’’ में लिखा है - ‘‘उक्त उपन्यास आज की उस सामाजिक समस्या को सीधा स्पर्श करनेवाला है जो ‘वुमेंस लिब’ के कारण और अर्थाजन की स्वतन्त्रता के कारण उत्पन्न हुई है ।’’[६]

मन्नू भंडारीने शकुन के चरित्र के बारे में ‘जन्मपत्री बंटी की’ में कहा है - शकुन चक्की पीसकर बेटे का जीवन बनाने में अपने आपको स्वाहाः कर देनेवाली माँ नहीं थी, बल्कि स्वतन्त व्यक्तित्व आकांक्षाओं और आजीविका के साधनों से दृप्त माँ थी । इस नारी और माँ से आपसी द्वन्द्व का अध्ययन ही शकुन को उसका वर्तमान रूप देता है ।’’[७]

मन्नू भंडारीने प्रस्तुत उपन्यास के बारे में एक साक्षात्कार में बताया है - सारा उपन्यास केंद्रित है आठ साल के बंटी पर । उपन्यास के आरंभ में बंटी के पास ‘अपना घर हैं’, ‘अपना बगीचा हैं’, ‘अपनी ममी हैं’, ‘अपनी फूंफी है’, पापा साथ नहीं रहते पर पापा का असीम प्यार हैं, दिए हुए ढेर सारे खिलौने हैं, लेकिन किस तरह एक साल में उसके हाथ से एक एक चीज सरकती चलती हैं - फूफी गई, घर गया, मम्मी गई और पापा भी पहलेवाले पापा नहीं रहे । यानी सारे सम्बन्धों से गहरे जुड़ा बच्चा सम्बन्ध हीन होता चला गया ।

उपन्यास की अंतिम पंक्ति 'पापा का चेहरा भी अजनबियों के चेहरों में मिल गया'[८] यानी कि सम्बन्ध का अंतिमी सूत्र भी अजनबी हो गया ।

निःसन्देह उपन्यास मेन आयी गयी समस्या टूटते हुए वैवाहिक सम्बन्धों में संवेदनशील बच्चे की दयनीय स्थिति एक विशिष्ट समस्या है जिसे हिन्दी में शायद पहली बार उठाया गया हैं ।

३. महाभोज :

मन्नू भंडारी का १९७९ में प्रकाशित १५१ पृष्ठोंवाला महत्त्वपूर्ण राजनीतिक उपन्यास है महाभोज । राजनीतिक परिवेश को आधार बनाकर 'महाभोज' का सृजन मन्नू भंडारी ने किया हैं । वास्तव में यह उनकी कहानी 'अलगाव' का विस्तारपूर्वक वर्णन हैं ।

प्रस्तुत उपन्यासों में आपातकालीन स्थिति के बाद देश की बदली हुई राजनीतिक परिस्थितियाँ और तत्कालीन शासन का चित्रण मन्नूजी ने किया है । ऐसा माना जाता है कि यह उपन्यास हिन्दी की उपन्यास धारा में एक नए मोड़ की तरह हैं - हिन्दी में आमतौर पर लिखे जानेवाले उपन्यासों में एकदम भिन्न ।

प्रस्तुत उपन्यास के माध्यम से चुनाव के बीच मानवीय त्रासदी करुणा और पीढ़ी की नियति की सच्चाई को अभिव्यंजित करनेका सशक्त प्रयास लेखिका ने किया हैं । राजनीतिज्ञों की ऊपर महानता औदात्य तथा गम्भीरता भरे खडेल के अन्दर से उनकी जो घिनौनी तस्वीर उभरती है वह छोटे से छोटे व्यौरे के माध्यम से उभारी है ।

'महाभोज' उपन्यास में आपातकाल के बाद कॉंग्रेस की पराजय और जनता पार्टी के शासनकाल की पृष्ठभूमि प्रस्तुत की गई है, 'महाभोज' का परिवेश हमारा आधुनिक राजनीतिक जीवन हैं ।

वर्तमान में व्याप्त राजनीति को लेखिका ने इस उपन्यास में खूबी से बाँधा है । इस कृति का राजनीतिक परिवेश अत्यन्त भ्रष्ट घिनौना और लज्जित करनेवाला है ।[१] महाभोज एक वातावरण प्रधान उपन्या हैं । 'महाभोज' अकेलापन और यातना की कथा है जो बेहद विक्षुब्ध असन्तुष्टी और संघर्ष व अनिवार्य सर्जनात्मक क्रिया के रूप में प्रस्तावित करता है । इस उपन्यास में बिसू, बिन्दा, रुकमा और सक्सैना को निहितार्थ कर प्रभु शक्तियों ने दा साहब की सौम्य किन्तु अचूक मार से अकेला और यन्त्रणाग्रस्त बनाकर छोड़ दिया हैं ।[९]

'महाभोज' उपन्यास में कथावस्तु के नाम पर बहुत अधिक पेचीदगियां नहीं है । स्वाधीनता के बाद भारत का एक देहात उस देहाती तक पहुंची हुई दलगत राजनीति, चुनावों के लिए अपनाये जानेवाले हथकंड़े, अपराधी तत्त्वों का राजनीति में दखल, पुलिस की अपने ही लाभ पर केंद्रित दृष्टि, बुद्धिजीवियों की तटस्थता और पत्रकारों की अवसरवादिता - ''ये सारे तत्त्व इस उपन्यास की कथावस्तु में मुखर होकर उभरे हैं, प्रस्तुत उपन्यास में दा साहब मुख्यमंत्री हैं और सुकुल बाबू विरोधी पक्ष के नेता, जोरावर राजनीतिक सुरक्षा में पलनेवाला गुंडा और हत्यारा है । सक्सेना और सिन्हा पुलिस अधिकारी हैं । दयाबाबू संपादक । महेश वर्मा बुद्धिजीवी हैं जो इस बात की खोज करने देहात पहुँचती हैं कि, 'क्लास स्ट्रगल और कास्ट स्ट्रगल' क्या होता है ।''[१०] आम चुनाव से कुछ ही दिन पहले एक देहात में बिसेसर नामक युवक की हत्या हो जाती हैं और उस हत्या के बाद से लेकर उस हत्या के आत्महत्या घोषित होने तक इतना कुछ गुजर जाता है कि जिसे पढ़कर पाठक दंग रह जाता है । एक हत्या का आत्महत्या के रूप में घोषित होना जिसे सफेद झूठ का प्रमाण है उस

सफेदझूठ को सत्य सिद्ध करके काली-कलूटी राजनीति के घिनौनी करतविकता इस उपन्यास में अंकित हुई है । उसे पढ़ते हुए हर पाठक निःसंदेह सहमति अनुभूत करता है, इससे हम 'महाभोज' की कथावस्तु के यथार्थ चित्रण का अनुमान कर सकते हैं ।[११]

४. स्वामी :

बंगला के विख्यात कहानीकार शरत्‌चंद्र की कहानी 'स्वामी' मन्नू भंडारी को संभवतः इतनी अधिक पसंद आई कि उन्होंने इसकी कथावस्तु को दो-दो बार रूपांतरित की । एक बार कहानी के रूप में लिख लिया और इससे जब संतोष न हुआ तो उसे उपन्यास का रूप दे दिया । ''ऐसा लगता है मन्नूजी की कहानी 'एक कमजोर लड़की की कहानी' शरत्‌चंद्र की कहानी 'स्वामी' का अनजाने में किया हुआ भावानुवाद है और मन्नू जी का 'स्वामी' उपन्यास उसी कहानी का जाना-माना रुपांतर हैं ।''[१२]

विख्यात फिल्मी निर्देशक बासू चटर्जी शरत् की प्रस्तुत कहानी पर फिल्म बनाना चाहते थे और उनके अनुरोध पर मन्नूजी ने इस कहानी को फिर से लिखा । शरतबाबू की मूल कहानी को उपन्यास में रुपांतरित करते हुए मन्नूजी ने उसकी शैली को ही नहीं उसके उदेश्य को भी रुपांतरित किया । मन्नू भंडारीने इसके बारे में कहा हैं - ''मैं यदि कहूँगी कि शरतचन्द्र की कहानी आत्मधिक्कार और पाप-बोध की कहानी थी मैंने उसे सहज मानवीय अन्तद्वर्न्द्व की कहानी का रूप दिया है ।''[१३] इस फिल्म के बारे में मन्नूजी ने एक साक्षात्कार में बताया हैं - 'स्वामी' फिल्म बहुत अच्छी बनी हैं ।

'स्वामी' उपन्यास के मुख्य पात्र है - ''सौदामिनी उसका प्रेमी नरेन्द्र और पति घनश्यामी । नरेन्द्र मिनी का पड़ोसी है । नरेन्द्र और

मिनी दोनों एक दूसरे को चाहते हैं । मिनी पढ़ी-लिखी होने के कारण अपने मामा से और नरेन्द्र से खुलकर बहस करती हैं । और मिनी अपने अपने मामा के द्वारा निश्चित सम्बन्ध के अनुसार मजबूर होकर घनश्याम से शादी करती है ।''[१४] मिनी विवाह के बाद भी अपने प्रेमी नरेन्द्र को भुला नहीं पाती । फलस्वरुप मिनी के मन में अपने पति के प्रति किसी तरह का अनुराग उत्पन्न नहीं होता । घनश्याम तो घरवालों की दृष्टि में था । एक दिन उसकी सहनशकित की सीमा टूट गई और वह पति का घर छोड़कर चली जाती हैं । इसके बारे में मन्नूजी ने कहा है - ''पारिवारिक कलह और अपमान ने उसके आत्मसम्मान को इस तरह आहत किया कि उसने घर छोड़ दिया । लेकिन स्वतंत्र निर्णय लेने की अपनी इस क्षमता के कारण वह नरेन्द्र के साथ जाने के लिए भी अपने को तैयार नहीं कर पाई । मिनी अपने माँ के घर गई ।''[१५] वह नरेन्द्र के साथ जीने को सोचती है, लेकिन अपने पति घनश्याम की निरीहता, प्रेरणा आदि से वह जिन्दगी में लौट आती है पहले घनश्याम के प्रति उसके मन में प्रतिशोध और विद्रोह ही रहता है, जो धीरे-धीरे करुणा, स्नेह, सम्मान और आदर से होता हुआ पूजा के भाव तक पहुँच जाता है ।

यही 'स्वामी' शीर्षक पति के लिए पारस्परिक संबोधन मात्र न रहकर उच्चत्तर मनुष्यता का विशेषण बन जाता है, ऐसी मनुष्यता जो ईश्वरीय हैं ।

५. कलवा :

मन्नू भंडारी द्वारा विरचित 'कलवा' उपन्यास बालपयोगी है । यह उपन्यास की कथा पंचतंत्र की कथा से मिलती प्रतीत होती है । इस छोटे से उपन्यास में मन्नूजी ने जीवन के कटु सत्यों को उजागर

करने की कोशिश की है । इसमें कलवा नामक चमार की कहानी है । उसकी कथा राजपुत्र, साहु के पुत्र और चमार के पुत्र के चरित्रों को उजागर करती है । इन तीनों शिष्यों से गुरुजी ने प्रश्न किया कि - ''दुनिया में सबसे शक्तिशाली कर्ता कौन है ? तुम आगे जाकर क्या करोगे ? क्या बनोगे ? इसका उत्तर राजकुमार की द्रष्टि से - दुनिया में सबसे बड़ी शक्ति भाग्य सबसे बड़ी दुर्बलता है असन्तोष । सबसे बड़ा कर्ता है इश्वर । मुझे अपने पिता का राज्य चलाना है । मैं कोशिश करूंगा कि पिता से मिले अपने राज्य में वृद्धि करुं ।''[१६] इस के बाद साहुकार के पुत्र ने उत्तर दिया - दुनिया में सबसे बड़ी शक्ति है धन । जिसके पास धन है उससे भगवान भी प्रसन्न होते है और दुनिया भी । मनुष्य की सबसे बड़ी दुर्बलता है भावुकता नरम दिलवाला आदमी दुनिया में कभी कुछ नहीं कर सकता । सबसे बड़ा कर्ता मनुष्य की बुद्धि । अपने पिताजी की पाँच हजार गाँवों की जागीरको दस हजार की कर दूँ यही मेरी इच्छा है । कलवा चमारने कहा - दुनिया में सबसे बड़ी शक्ति है मनुष्य और सबसे बड़ा कर्ता है मनुष्य का अपना पौरुष । मनुष्य की सबसे बड़ी दुर्बलता है ईश्वर और भाग्य में उसका विश्वास । ईश्वर न कभी था, न आज है । मै एक ऐसी दुनिया बनाना चाहता हूँ । जहाँ आदमी न भाग्य का बनाया खाये, न बाप का दिया भोगे । तीनों शिष्य गुरु का आशीर्वाद पाकर अपने-अपने घर जाते है । राजकुमार अपने ही द्रष्टिकोण को आगे बढ़ाता हुआ राज्य करता है । वह प्रजा का शोषण करता है । साहुकार मित्र ने उसकी चमचागिरी करके २०० गाँव भेंट में ले लिया और राजा को उल्लू बनाता है । राजाने प्रजा का शोषण किया इस कारण प्रजा भूषी, नंगी घूमती रहती है । ऐसे समय में पड़ोसी राज्य का राजा हमला करता है

और राजा जीव बचा के जंगल में भाग जाता है । अतः भाग्य के भरोसे जीनेवाला आदमी कुछ करने लायक नही रहता वह घमंडी राजकुमार घास छीलता हुआ दिन काटता है । मन्नू भंडारी ने कलवा चमार का उल्लेख करते हुए लिखा है वह सच्चाई, ईमानदारी पौरुष के बल पर आगे बढ़ता है । और उसके इन गुणों के कारण राजा की लड़की से विवाह होता है । राजा बनने पर भी कलवा चमार की विचारधारा परिवर्तित नहीं होती । वह अपनी प्रजा से कहता है - ''आप भगवान को भी भूल जाओ । भाग्य को भी भूल जाओ, और राजा को भी भूल जाओ । हम सभी भगवान है । अपना-अपना भाग्य बनाना अपने ही हाथ में है । मैं आपका राजा नहीं, सेवक की तरह मैं आपके सुख दुख का खयाल रखूँगा । जिस दिन आपको मेरे काम की शिकायत हो, आप मुझे हटा दीजिए और अपने लिये कोई योग्य सेवक चुन लीजिए । सेवक चुनने का हक आपका है और चुना हुआ सेवक आपका सुख दुःख बँटाये यह कर्तव्या उसका है ।''[१७]

यह उपन्यास उदेश्यपरक है । बालको को शिक्षा मिलती है कि भाग्य के भरोसे नही रहना चाहिए अपनी मेहनत, सच्चाई और लगन के साथ आगे बढ़ते रहना चाहिए । कलवा परिश्रम में विश्वास करता है । भाग्य को स्वयं बनाना चाहता है । इसी बात में 'इकबाल' की पंक्ति याद आती है -

''खुदी को कर बुल्नद इतना कि हर तकदीर से पहले,
खुदा बन्दे से खुद पुछे बता तेरी रजा क्या है ।''[१८]

❖ आसमाता :

मन्नू भंडारी का बालोपयोगी उपन्यास है । मन्नू भंडारीने कहाँ कि मेरी माँ आसमाता का व्रत करती थी । यह उपन्यास राजस्थान की

लोककथा पर आधारित है । आस यानी कि जो जीवन में आशा रख के चलते है उसी की आशा पूरी हो जाती है ।

यह छोटा उपन्यास है । इसे मैंने अपने अध्ययनी की सीमा में नहीं रखा है ।

मन्नू भंडारी ने पाँच उपन्यासों की रचना की है । उनमें से तीन मौलिक एवं स्वतन्त्र है, एक सहयोगी 'एक इंच मुस्कान' राजेन्द्र यादव और मन्नू भंडारी ने मिलकर लिखा है । दूसरा 'स्वामी' अनूदित कहानी का विस्तार है । इनमे से विख्यात दो उपन्यास 'आपका बंटी' और 'महाभोज' ने ही मन्नू भंडारी को सफल उपन्यासकार बना दिया है ।

(२) मन्नू भंडारी का कहानी साहित्य :

'उपन्यास' और 'कहानी' ये दोनों कथा साहित्य के प्रकार है । तत्वतः दोनों में कई समानताएँ है, किन्तु कुछ अंतर भी देखा जा सकता है । बीसवी शती के उत्तरार्ध की बहुचर्चित महिला कहानीकारों में मन्नू भंडारी का नाम आदर से लिया जाता है । वैसे हिन्दी में कहानी लिखनेवाली महिलाओं का अनुपात पहले से ही बहुत कम रहा है उसमें मन्नू भंडारी की तरह व्यक्तित्व में क्रांतिकारी तत्त्वो को लिये हुए आधुनिकता बोध करानेवाली कहानियाँ लिखनेवाली नही के बराबर है । मन्नूजी अपने समय की उन प्रसिद्ध कहानी-लेखिकाओं में से है जिनकी रचनाएँ पुरुष की आकांक्षाओं से प्रेरित होकर नारी का चित्र उपस्थित नही करती, बल्कि नारी का नारी की द्रष्टि से चित्रण करती है । मन्नू भंडारी की कहानियों की प्रमुख विशेषता अनुभवों की सच्चाई और संवेदनशीलता है ।

मन्नू भंडारी ने साहित्य की तीन विद्याओं में अपनी प्रतिभा दिखाई

है तो भी उनकी विशेष ख्याती (प्रसिद्धि) कहानीकार के रूप में है । कुछ समीक्षकोने मन्नू भंडारी की कहानीयों को मुख्यतः वैयक्तिक चेतना पर आधारित ही माना है । जैसे

डॉ. इन्द्रनाथ मदान ने लिखा है -

''मन्नू भंडारी की कहानीकला का मूल स्वर भी वैयक्तिक चेतना से प्रेरीत है । इनकी कहानीयों में सदैव व्यक्ति की कुष्ठाओं का चित्रण तथा रोमांटिक प्रेम का व्यंग्यात्मक निरुपण है, घुटन, पराजय तथा विवशता की अभिव्यक्ति है ।''[१९]

यद्यपि इनकी कहानियों का मूल स्वर वैयक्तिक चेतना पर आधारित है किन्तु उसमें विराटता और व्यापकता इतनी अधिक है कि यहीं वैयक्तिक चेतना आगे चलकर सहसा महान सामाजिक सन्दर्भो से जुड़ जाती है ।

डॉ. भैरुलाल गर्ग ने कहा कि - ''मन्नू भंडारी की कहानियाँ सोदेश्य होती है और जीवन के निकट कहानियों में अनुभूति की गहनता और नए मूल्यों को उभारने की क्षमता भी ।''[२०]

मन्नू भंडारी के पाँच कहानीसंग्रह प्रकाशित हो चुके है उसमें लगभग ४८ कहानियाँ लिखी गई है ।

'कहानी' या 'कथा' शब्द का शाब्दिक अर्थ है - कहना । इस अर्थ के अनुसार जो कुछ भी कहा जाय कहानी है किन्तु विशिष्ट अर्थ में हम किसी विशेष घटना के रोचक ढंग से वर्णन को 'कहानी' कहते है । कथा और कहानी पर्यायवाची होते हुए भी दोनो के अर्थ में सूक्ष्म अन्तर आ गया है । कथा व्यापक है इसमें सभी प्रकार की कहानियाँ तथा उपन्यासों का समावेश किया जाता है जब बि कहानी के अन्तर्गत लघुकथाओ को ही लिया जाता है ।

''अपनी कहना और दूसरे की सुनना यह मनुष्य का स्वभाव है इसलिए कहानी प्राचीन काल से सर्वप्रिय विधा रही है । राज-दरबारों में भी किस्सागोई कहानी-कथक को सम्मानपूर्वक रखा जाता था ।''[२१]

''स्वातंत्रता के बाद बदलती हुई परिस्थितियों में साहित्य की प्रचलित विद्याओं में अनेक प्रकार के परिवर्तन लक्षित हुए किन्तु उनसे अत्यधिक प्रभावित हुई केवल दो विधाएँ-कविता और कहानी ।''[२२]

''नई कहानी व्यक्ति की नहीं व्यक्तिपन की कहानी है समाज की नहीं समाज के बंधन के बदलते हुए रूप की कहानी है, घटना की प्रधानता को चित्रित करनेवाली नहीं किन्तु परिवेश को प्रधानता देनेवाली कहानी है । इसमें संशयग्रस्तता, अकेलापन, व्यर्थता, संत्रास, घुटन आदिका चित्रण प्रधानरूप से हुआ है ।''[२३]

विश्व प्रसिद्ध कहानीकार एडगर एलेन यो ने कहानी की परिभाषा देते हुए कहा है कि - ''कहानी आधे घण्टे से लेकर एक या दो घण्टे के बीच पढ़ लिया जानेवाला गद्य वृतांत है । कहानी वह एक गद्यात्मक कथा हैं जो एक बैठक में ही पढ़ ली जा सके ।''[२४] यहाँ बल संक्षिप्तता पर है वह अपने आप में एक स्वतंत्र विद्या है ।

प्रेमचन्दने कहा है कि - ''कहानी एक रचना है जिसमें जीवन के किसी एक अंग या किसी एक मनोभाव को प्रदर्शित करना ही लेखक का उददे्श्य रहता है वह एक रमणीय उद्यान नहीं, जिसमें भाँति-भाँति के फूल, बेल बूटे सजे हुए है, बल्कि एक ऐसा गमला है, जिसमें एक ही पौंधे का माधुर्य अपने समुलत रूप में द्रष्टिगोचर होता है ।''[२५]

कहानी का विषय इतना संक्षिप्त होना चाहिए की निश्चित सीमाओं और अवधि के अंदर अत्यधिक प्रभावशाली ढंग से उपस्थित करने में नियोजन की कोई क्षति नहीं पहुँचे । कहानी में कथा का

भारीपन और साहित्यिक बोझ नही होता और न थकाने ऊबानेवाली भावुकता होती है न लंबे तनाववाला कौतूहल अनुभव की कुशाग्रतीव्रता रस का गहरा ।''[२६]

''गद्य कथा साहित्य के एक अन्यतम भेद के रूप में कहानी सबसे अधिक, किसी अंश में उपन्यास से भी अधिक लोकाप्रिय साहित्य का रूप है । आधुनिक हिन्दी साहित्य में यह रूप भी बंगला के माध्यम से पाश्चात्य साहित्य से आया है । अंग्रेजी में जिसे 'शार्ट स्टोरी' कहते है, वही बंगला में गल्प तथा हिन्दी में 'कहानी' नाम से प्रचलित है ।''[२७] कथा साहित्य के बड़े रूपों उपन्यास और उपन्यासिका की तरह कहानी में भी कथासूत्र, कथानक, पात्र और देशकाल का परिस्थिति उसके प्रमुख तत्व बताये गये है तथा इसमें भी पात्रों के पारस्परिक अथवा परिस्थिति के विरुद्ध द्वन्द्व या संघर्ष, संघर्ष की पराकाष्ठा, चरमसीमा तथा संघर्ष की जटिलताओं के विघटन में कहानी के अन्तकी विकास रेखा बतायी गयी है ।

मन्नू भंडारी के पाँच कहानी संग्रह प्रकाशित हो चुके है इन कहानियों का संक्षिप्त परिचय निम्नरूप से दिया गया है ।

१.	मैं हार गई	सन् १९५७ ई.
२.	तीन निगाहों की एक तस्वीर	सन् १९५९ ई.
३.	यही सच है	सन् १९६६ ई.
४.	एक प्लेट सैलाब	सन् १९६८ ई.
५.	त्रिशंकु	सन् १९७६ ई.

इसके अलावा राधाकृष्ण प्रकाशन, राजपाल एण्ड सन्स और नेशनल पब्लिशिंग हाउसने उनकी श्रेष्ठ कहानियों को चुनकर तीन और संग्रह निकाले है, मेरी प्रिय कहानियाँ, श्रेष्ठ कहानियाँ और

सप्तपर्णा । यह कहानी पाँच कहानी संग्रह में कही आ गई है तो मैने अलग से उसका परिचय नही दिया ।

(१) मैं हार गई : (कहानी संग्रह)

यह सन् १९५७ में प्रकाशित मन्नू भंडारी का प्रथम कहानी संग्रह है । प्रस्तुत संकलन में उनकी बारह कहानियाँ संग्रहित है । इसकी अंतीम कहानी है 'मैं हार गई' इस कहानी के आधार पर इस कहानी संग्रह का नामकरण हुआ है । इस कहानी संग्रह की समग्र कहानियों का संक्षिप्त परिचय इस प्रकार दिया हैं ।

(१) ईसा के घर इन्सान	(२) गीत का चुम्बन
(३) जीती बाजी की हार	(४) एक कमजोर लड़की की कहानी
(५) सयानी बुआ	(६) अभिनेता
(७) श्मशान	(८) दीवार, बच्चे और बरसात
)९) पंडित गजाधर शास्त्री	(१०) कील और कसक
(११) दो कलाकार :	(१२) मैं हार गई

१. ईसा के घर इन्सान :

यह मन्नू भंडारी के प्रथम कहानी संग्रह की प्रथम कहानी है । यह कहानी अच्छी और मनोवैज्ञानिक कहानी है । जिसमें लेखिका ने धर्म के नाम पर होनेवाले नारी मन की आभ्यन्तरिकता की तलाश की है । ईश्वर धर्म, समाज, परिवार स्त्री-पुरुष सम्बन्ध व्यक्ति, कुंठा के प्रति नया द्रष्टिकोण इस कहानी में अपनाया है । पहाड़ियो से घिरे शहर में मिशनरी लड़कियों का कॉलेज है । अधिकतर स्टाफ नन्स का है कॉलेज के सामने ही जेल है । जेल के कैदियों और मिशनरी लड़कियों के जीवन की लेखिकाने एक समान दिखाया है -

''मिसेज शुक्ला की कान्तिहीन आँखे जेल की ऊँची ऊँची

दीवारो पर टिका वोली जब सरीन आई थी तो उसने भी यही बात पूछी थी पता नहीं क्यों कॉलेज के लिए यह जगह चुनी गई है ।''[२८]

कॉलेज में कुछ लड़किया अन्य धर्म की भी है जिनमें रत्ना नयी है । उसे कॉलेज और फादर के प्रति बेहद कौतूहल तथा भय है । वहा यनी नन एंजिला फादर के ढ़ोंग का पर्दाफाश करती है । वह बोली - ''मुझे कोई नहीं रोक सकता, जहाँ मेरा मन होगा मैं जाऊँगी । मैंने तुम्हारे फादर... अब वे कभी ऐसी फ़ालतु की बातें नहीं करेंगे ।''[२९]

इस प्रकार एंजिला ने फादर का नशा डाउन कर दिया । इस कहानी का लक्ष्य है प्राकृतिक लालसाओं को कुंठित करने से व्यक्ति में विकार आ जाते है । अतः अतृप्त कामनाओं को तृष्टी करके सहज एवं स्वस्थ जीवन जीना चाहिए । यह लक्ष्य फ्रायड के जीवन-दर्शन से प्रभावित है ।

२. गीत का चुम्बन :

मन्नू भंडारी के यह कहानी सुशिक्षित संस्कार सम्पन्न आधुनिक युवती के अव्यक्त प्रेम की कुंठा को प्रस्तुत करती है । यह एक मनोवैज्ञानिक कहानी है । जिसमें लेखिका ने नारी के मानसिक अन्तर्द्वन्द्व को बड़ी बारीकी से चित्रित किया है । यह कहानी स्त्री पुरुष सम्बन्धों को नैतिकता की सीमा में बाँधकर उलझी हुई दिखाई दे रही है उसका परिचय कवि निखिल से होता है । जिसकी कविताओं के अनेक गीत कनिका गाती है । निखिल की द्रष्टि में स्त्री-पुरुष के सभी प्रकार के सम्बन्ध नैतिक थे । वह कनिका से सभी प्रकार के सम्बन्ध स्थापित करना चाहता था, लेकिन कनिका का तर्क था कि -

''बाते हम कितनी ही बड़ी-बड़ी बना ले निखिल-दा पर व्यवहार

में आगे नहीं बढ़ पाते है ।आप जो यहाँ बैठकर इतनी लम्बी-चौड़ी बाते करते है मान लो कल को आपकी बीवी आए और किसी दूसरे पुरुष के साथ वह अपना शारीरिक सम्बन्ध रखे तो बर्दाश्त कर सकेंगे आप ?''[३०]

आखिर एक दिन निखिल ने उसे बाहों में भर कर चूम लिया जिस निखिल में उसे इतना विश्वास था, जिसे वह इतना स्नेह करती थी, उसकी इस हरकत को वह बर्दाश्त न कर पायी, उसने निखिल को एक चांटा मार दिया और कहा -

''तुम्हारे लिये यह जरा सी बात होगी मेरे लिये नही तुमने मुझे क्या ऐसी वैसी लड़की ही समझ रखा है ?''[३१]

दुसरे दिन निखिल ने कनिका से माफी माग ली और वह चला गया । निखिल ने उसे एक पत्र लिखा - ''सच तुमने मेरी आँखे खोल दी कि शारीरिक सम्बन्ध के परे भी लड़के लड़की की मित्रता का कोई और आधार हो सकता है मुझे तुम पर जरा-सा गुस्सा नही, अपने पर ही ग्लानी हैं ।''

परम्परा और आधुनिकता के बीच उलझी हुई नारी के मन की असलियत को मन्नू भंडारीने इस कहानी में व्यक्त किया है । निखिल पाश्चात्य संस्कृति का अन्धानुकरण करनेवाला है और कनिका भारतीयता का प्रतीक है ।

३. जीती बाजी की हार :

इस कहानी संग्रह की तीसरी कहानी है 'जीती बाजी की हार' इसमें लेखिका ने महानगरीय बोध के एक अन्य आयाम को प्रस्तुत किया है । इस कहानी में मन्नू भंडारीने ऐसी शिक्षित नारियों की मनःस्थिति को चित्रित करने में सफल रही है जो उचित जीवनसाथी

के तलाश में एक के बाद दूसरे पुरुषों को 'रिजेकट' करती चली जाती है और अन्ततः उनके स्वप्ने जब पत्ते के महल की तरह ढ़ह जाते है तो उन्हे अकेलेपन की त्रासद अनुभूतियों के अतिरिक्त कुछ भी हाथ नहीं लगता ।

नलिनी, आशा, मुरला तीनो कॉलेज में मित्र थी । इनके लिए विवाह, पति, बच्चे उपहासास्पद लगते है लेकिन पढ़ाई पूरी होने से पहले ही आशा और नलिनी का विवाह हो गया और मुरला ने सभी को नकार दिया और शोधकार्य में लग गयी । मुरला कहती है -

"क्या दक़ियानूसी लोगों जैसी बातें करती है । सहारा उसे चाहिए जो अपने को अबला समझे । मैं सबला हूँ, मुझे किसी का सहारा नहीं चाहिए । बच्चों को तो मैं अपनी उन्नति का बाधक समझती हूँ ।"

कही सालो बाद मुरला इलाहाबाद गई अब वह शिक्षा विभाग के ऊँचे पद पर थी । आशाने मुरला को विवाह करने की सलाह दी थी मुरलाने इन्कार कर दिया दोनों में शर्त लगी कि मुरला अविवाहित रहेगी तो आशा उसे मुँह माँगा इनाम देगी, जब आशा से मुलाकात हुई तो आशा ने शर्त की याद दिलवाई और कुछ मांगने का मुरला को आग्रह किया तो मुरलाने आशा की पाँच साल की छोटी प्यारी सी लड़की मांग ली ।

इस कहानी में लेखिका मातृत्व पर नारी व्यक्तित्व को न्यौछावर कर देती है उसका कहना है कि मातृत्व के बगैर नारी अधूरी है । वात्सल्य उसका स्थायी भाव है ।

यही 'जीती बाजी की हार' है जिसमें मुरला शर्त तो जीत गई परंतु वस्तुतः उसकी हार हो गई ।

४. एक कमजोर लड़की की कहानी :

मन्नू भंडारी ने प्रस्तुत कहानी में 'रूप' के द्वारा नारी की मनःस्थिति का चित्रण किया है । रूप बहुत अच्छी लड़की है । बचपन में उसकी मां की मृत्यो हो गई तो पिताने दूसरी शादी कर ली । नयी मा के कारण रूप अपने निःसंतान मामा के पास रहने लगी । उनके यहां एक अनाथ लड़का था । जिसका नाम है ललित मामा उसे बचपन से बेटे के जैसा चाहते थे और रखते थे । ललित रूप के प्रति अपना प्रेम प्रकट कर उच्चशिक्षा के लिये विदेश चला गया । रूपने न चाहते हुए भी घरवालों के कहने पर वकील साहब से शादी कर ली । परंतु प्रेमी और पति दोनों के प्रति ईमानदार रहना चाहती है । अंत में वह प्रेमी को पूर्ण रूप से त्याग कर वकील साहब की पत्नी बन रहती है । रूप की कमजोरी यह है कि वह निर्णय नही ले पाती और अपनी इज्जत के लिये लोग उसके बारे में अच्छी बाते कहे उसके लिए वह अपनी सारी अभिलाषाओं को नष्ट करती है । वकील साहब अपने मित्र की बात करते है कि -

''बड़ी मुसीबत में था बेचारा उसकी स्त्री अपने किसी आशिक के साथ भाग गई ।''[३२]

यह बात सुनते है रूपने अपना ललित के साथ भाग जाने का फैसला बदल दिया । रूप विद्रोह करने में कमजोर पड़ती है । वह अपनी भावनाओं का होम कर देती है । निर्णय न कर पाना और सामाजिक विद्रोह न कर पाना उसकी कमजोरी हैं ।

५. सयानी बुआ :

प्रस्तुत कहानी समय की पाबंद और अतिव्यवस्था से बधी सयानी बुआ की है । परिवार के सभी लोगों पर उनका कड़ा नियंत्रण था ।

सयानी बुआ की पागलपन की सीमा तक व्यवस्था और समय की पाबन्दी मनुष्य को मशीन बना देती है यही लेखिका का कहना है । बुआ अपनी पाँच वर्षीय बीमार बच्ची अन्नू के साथ खूद न जाकर भाई साहब के साथ उसे भेजते हुए कहती है । एक भी चीज़ खोनी नही चाहिए - ''देखो यह फ्रोक मत खो देना, सात रुपए मैंने इसकी सिलाई दी है यह प्याले मत तोड़ देना, वरना पचास रुपया का सेट बिगड़ जाएगा । और हाँ ग्लास को तुम तुच्छ समझते हो उसकी परवाह ही नहीं करोगे पर देखो यह पन्द्रह बरस से मेरे पास है और कहीं खरोंच तक नहीं है, तोड़ दिया तो ठीक न होगा ।''[३३]

और अन्नू किस दिन, किस समय क्या खाएगी उसका मीनू बना दिया । कब कितना घूमेगी क्या पहनेगी सब कुछ निश्चित कर दिया । और जब भाई साहब अन्नू को लेकर चले तो बुआजी रोई उनका ये रोना नई बात थी उसी दिन ऐसा लगा कि उसकी कठोरता में कहीं कोमलता भी छिपी है । भाई साहब के पत्र रोज आते थे और बुआजी भी रोज एक पत्र लिखती थी जिसमें अपनी उन मौखिक हिदायतों को लिखित रूप में दोहराती थी । एक महीने तक भाई साहब का कोई पत्र नही आया । बुआजी चिन्तित हो उठी । तब नौकर पत्र लाया । उसमें सेट के दो प्याले टूटने का समाचार था । पाँच आने की सुराही तोड़ देने पर नौकरी की बुरी तरह पीटनेवाली बुआजी पचाय रूपये के सेट के प्याले टूट जाने पर भी हँस रही थी ।

बुआजी का संवेदन शून्य जगत फिर चैतन्य होता है । बुआ के माध्यम से लेखिका सामाजिक रूढ़ि पर प्रहार और मौन व्यंग्य करने में सफल हुई है । अत्यधिक अनुशासन मनुष्य को संवेदन शून्य बना देता है ।

६. अभिनेता :

प्रस्तुत कहानी का शीर्षक अभिनेता है लेकिन कथा एक अभिनेत्री की व्यथा की है । रंजना नामक एक अभिनेत्री की कथा है । वह कला और सौंदर्य की मूर्ति है । प्रेम का अभिनय करते उसका जी तड़प जाता कि काश कोई होता जिससे वह वास्तविक प्रेम कर सकती ऐसे में वह दिलीप नामक युवक की ओर आकर्षित होती है । दिलीप पहले उसकी उपेक्षा करता है । एक दिन वह फिर से कामिनी के घर मिलते है उस समय बहुत सारी बातें उसके बीच होती है इसके बाद रंजना और दिलीप की मुलाकातें बढ़ती गई । दिलीप बिज़नेस के काम से यहाँ आया था । उसे नाटक पसंद नही रंजना कहती है कि मैं उसे छोड़ दूँगी -

''आजकल मैं नए कॉंट्रेक्ट भी नहीं लेती । तुम्हें चिढ़ न तो अब यह सब छोड़ दूँगी ।''[३४]

दिलीप विवाहित होकर भी रंजना को झूठ बताकर शादी के स्वप्न दिखाता है और उसका आर्थिक शोषण भी करता है लेकिन एक दिन उसके झूठ का पर्दाफाश हो जाता है कि दिलीप शादीशुदा है यह जानकर रंजना टूट जाती है क्योंकि वह उसे बहुत प्यार करती थी । दिलीप उसे छलता है वह दिलीप से एक पत्र में लिखती है -

''मैं तो केवल रंगमंच पर ही अभिनय करती हूँ पर तुम्हारा तो सारा जीवन ही अभिनय है । बड़े ऊँचे कलाकार और सधे हुए अभिनेता ही तुरम तो मेरे दोस्त ।''[३५]

इस कहानी का शीर्षक 'अभिनेता' सार्थक है दिलीप को नाटक पसंद न था और खुद एक अभिनेता नीकला जो रंजना के सामने प्रेम का अभिनय करता हैं ।

७. **श्मशान :**

इस कहानी में मन्नूजे ने मानवीय संवेदना तथा मनोभावों का चित्रण किया है । उसका माध्यम है श्मशान । प्रस्तुत कहानी का नायक तीन बार शादी करत है और तीनों बार पत्नी मर जाती है । लेकिन वह जब-जब श्मशान आता है तब तब कहता है कि -

तुम मुझे छोड़कर कहाँ चली गई ? अब मैं तुम्हारे बिना जीवित नहीं रह सकता । तुम मुझे अपने पास बुला लो, नहीं तो मुझेही तुम्हारे पास आने का कोई उपाय करना पड़ेगा । तुम नहीं तो मेरे जीवन का कोई अर्थ नहीं, कोई सार नहीं, कोई रस नहीं तुम्हीं तो मेरा जीवन थी, मेरी प्रेरणा थीं मैं तुम्हारे बिना नहीं रह सकता ।''[३६] इस प्रकार विलाप करता है श्मशान इस दृश्य को देखता रहता है । और पहाड़ी से कहता है इस व्यक्ति की व्यथा ने मेरे हृदयको मथ डाला । रोज कितने ही व्यक्ति आते है पर जाने क्यों इसके दुख में, इसकी वेदना में ऐसा क्या था, जो मै कभी नहीं भूल सकूँगा । अब यह जीवित नहीं रहेगा । लेकिन तीन-बार ऐसा हुआ तो श्मशान अवाक्-सा रह जाता है ।

यह कहानी वास्तविक सत्य की उद्घाटित करती है कि मनुष्य प्रेम की स्मृति पर ही जिन्दा नहीं रहता । वह जीवन की पूर्णता के लिए फिर से प्रेम करता है, जीवित रहने का प्रयत्न करता है, वह दुःख को सह लेता है । इस कहानी में प्रकृति का मानवीयकरण प्रस्तुत किया गया है । लेखिका ने इस शास्वत सत्य से हमें अवगत कराया है कि नारी तो पुरुष के जीवन की व्यवस्था और इच्छा पूर्तिका साधन मात्र है स्थायी प्रेमभाव अपवाद स्वरुप ही पुरुष में पाया जाता हैं ।

८. दीवार, बच्चे और बरसात :

मन्नू भंडारी ने प्रस्तुत कहानी में नारी को घर-परिवार तथा तत्कालीन आदर्श परम्पराओं से ऊँचा उठाकर अधिकार संलग्न दिखाया है । दूसरी ओर अशिक्षित नारियों के मनोभावों का यथार्थ चित्रण किया है । मोहल्ले की अधिकांश स्त्रियाँ अनपढ़ है और दोपहर को दूसरों की हँसी मज़ाक करने के व्यापार में लगी हुई है । इस मोहल्ले में एक शिक्षित दम्पति रहने आते है । इसमें पत्नी लेखिका है एक शाम को वह किसी मीटिंग में जाती है देर से आती है पति पत्नी के बीच झगड़ा होता है पत्नी शिक्षिता एवं मानिनी होने के कारण पति को छोड़कर चली जाती है । इस बात को लेकर अनपढ़ महिलाएँ हल्ला मचाती है । ''आदमी थका-माँदा लौटे तो घर में औरत तो रहनी चाहिए कि नहीं । अब तुम जानों, बर्दाश्त की भी एक हदद होवे है, कल आदमी भी ताव खा गया । रात में जब लौटी तो आदमी ने भी झौंटा पकड़कर दो झापटे रख दिए और कह दिया, निकल जा मेरे घर से ।''[३७]

इस कहानी में मन्नू भंडारीने बताया है कि आधुनिक नारी की यह विडम्बना है कि उसे एक ओर पुरुष समाज से लड़ना पड़ता है तो दूसरी और परम्परागत रुढ़ियों में बँधी नारी समाज से । अपने स्वतंत्र व्यक्तित्व और अस्तित्व की रक्षा के लिये शिक्षित नारी का संघर्ष स्पष्ट है ।

९. पंडित गजाधर शास्त्री :

इस कहानी में पंडित गजाधर शास्त्री 'अहं' के कोष में लिपटे रहते है । आधुनिक लेखकों पर व्यंग्य किया गया है जो मौलिकता के अभाव में तस्कर वृत्ति ग्रहण करते हुए आत्म प्रशंसा द्वारा अपने को

श्रेष्ठ साहित्यकार सिद्ध करने के प्रयास में रहते है । शास्त्री की रचना छात्रोपयोगी पत्रिका छप जाने से वह स्वयं को महान साहित्यकार समझते है । हकिकत में बाद में वह पत्रिका बन्द भी हो जाती है । पूरी कहानी आत्मश्लाधा अहंकार से ग्रस्त आदमी की कहानी है । पंडितजी अहंवादी थे । एक बार वे पुरी के समुद्र किनारे गये थे, वहाँ एक साहित्यकार से उसके भेंट हुई जिनके तीन कहानी संग्रह प्रकाशित हो चुके थे । पंडितजी अपना परिचय देते हुए कहते है कि - मैं हूँ कहानी लेख पं. गजाधर शास्त्री । यदि हिन्दी साहित्य से आपका परिचय हो तो आपने मेरा नाम अवश्य सुना होगा । सामनेवाला व्यक्ति भी साहित्यकार था । आत्म-प्रशंसा में लिप्त आचारों और विचारों में भिन्न यह पात्र अनजाने ही उस लेखक की कहानी के एक पात्र बन गए ।

पंडितजी कहते है - ''मेरी अभी कोई छपी नहीं है पर शीघ्र ही तीन-चार छपनेवाली है । आज से सात साल पहले 'रश्मि' में एक कहानी निकली थी 'अमीरी गरीबी' । अब आपको क्या बताऊँ, इधर वह निकली और उधर मेरी मुसीबत आ गई । हिन्दी की शयद ही कोई ऐसी पत्रिका होगी, जिसके सम्पादक का पत्र न आया हो कि शीघ्र ही अपनी रचना भेजिए । और बच्चे-बच्चे के मुँह पर मेरा नाम हो गया । लोग ऊँगली उठाकर कहते, यह देखो । अमीरी-गरीबी के लेखक पं. गजाधर शास्त्री जा रहे है ।''[३८]

१०. कील और कसक :

इस कहानी में लेखिका ने ऐसी नारी को प्रस्तुत किया है जो अपने पति की उपेक्षा के कारण कहीं और आकर्षित होती है किंतु पराये पुरुष से भी इच्छित योग प्राप्त नही कर पाती, जिसके कारण

वह हताशा से आक्रांत होकर आक्रोश करती है । इस कहानी में मनोवैज्ञानिक द्रष्टि अे अभावजन्य कुंठा के अतिरेक से अवचेतन की विरोधात्मक प्रक्रिया अत्यन्त मार्मिक रुप से व्यक्त हुई है । रानी का विवाह काले और येचक के दागोवाले कैलाश से होता है । वह रात दिन काम करता है उस पर कर्जा है । कैलाश एक मशीन बन गया था, भावनाहीन, रसहीन उसे न रानी में दिलचस्पी थी, न घर में । कर्ज का भूत कोड़े लगा-लगाकार उससे काम करवाता था ।

रानी के यहाँ एक पेइंग गेस्ट आता था जिस का नाम शेखर था वह सुंदर था पतिकी अत्यन्त व्यस्तता के कारण रानी शेखर की ओर आकृष्ट होती है । शेखर का ब्याह हो जाता है तो रानी के मन में शेखर की पत्नी के प्रति सौतिया डाह उत्पन्न हुआ । रोज शाम शेखर अपनी बीबी को घुमाने ले जाता तो वह उसकी आलोचना करती रहती, बिना वजह उससे झगड़ा करती हैं । रानी कहती है - ‘‘भला करने का जमाना नही रहा । अरे साल-भर तक रोटियाँ बनाकर खिलाई, उसकी कौन कहे ? चार दिन इसे आए नही हुए कि सब किए-कराए पर पानी फिर गया । ऐसे नमकहराम भी नही देखे होंगे कहीं ? ’’[३६]

रानी बात-बात पर शेखर की पत्नी से झगड़ती है अंतमें परेशान होकर कैलाशने मकान बदल लिया । रानी अपनी अतृप्त इच्छाओं को लेकर रोती रही । अतृप्त इच्छाओं की कील की वेदनामयी कसक से उसे मुक्ति तो नहीं मिल पाई ।

११. दो कलाकार :

यह कहानी भिन्न व्यक्तित्ववाली दो युवतियों की कहानी है । एक प्रशंसा की अपेक्षा कर्म को महत्त्व देती है और दूसरी निरर्थक

कला की अपेक्षा जीवनोपयोगी कर्म को महत्त्व देती है । दोनों कलाकार है चित्रा चित्रकार है वह मृत भिखारिन का चित्र खींचती है, 'भिखारिन और दो अनाथ बच्चे' नाम से । उसे प्रदर्शिनी में पुरस्कार भी प्राप्त होता है । लेकिन दूसरी कलाकार अरुणा तो उन अनाथ बच्चों को सचमुच गोद लेती है और उनका पालन करती है । चित्रा विदेश चली जाती है वहा चित्रा के 'भिखमंगी और दो अनाथ बच्चे' चित्र ने धूम मचा दी । प्रदर्शनी में उस चित्रने प्रथम पुरस्कार प्राप्त किया उससे करुणा साकार हो उठती है । उसकी एक प्रदर्शिनी में दिल्ली में अरुणा से मुलाकात हुई । उसके साथ दो प्यारे प्यारे बच्चे थे ''चित्रा ने पूछा - यह बच्चे किसके है ? उसने कहा मेरे है । अरुणा ने चित्रा को बताया कि ये वे ही बच्चे है जिनका चित्र ये भिखारिनवाला है ?''[४०]

जहां चित्रा कल्पना के चित्रलोक में विहार करती रही है अरुणा वहां यथार्थ की ठोस जमीन पर कर्म में मग्न है ।

१२. मैं हार गई :

'मैं हार गई' इस कहानी संग्रह की अंतिम कहानी है । इसमें लेखिका ने आजकाल के राजनीतिज्ञो पर व्यंग्य किया है और उसका कहना है कि आज के युग में आदर्श नेता की परिकल्पना करना भी असंभव हैं । आज का नेता सुरा-सुंदरी का उपदेश देता है । आज तो कुर्सी और सत्ता की मंजिल तक पहुंचना है, चाहे जिस रास्ते से पहुंचे ।

''कवि सम्मेलन में एक कवि 'बेटे का भविष्य' नामक कविता सुनाते है उसमें बेटा अभिनेत्री की फोटो को चूमता है, शराब पीता है और थोड़ी देर बाद अत्यंत गम्भीरता से 'गीता' लिए बाहर

निकलता है बेटे के व्यवहार को देखकर बाप कहता है - यह साला तो आजकल का नेता बनेगा ।''[४१]

(२) तीन निगाहों की एक तस्वीर :

इस कहानी संग्रह में आठ कहानियाँ संग्रहित हैं -

(१) तीन निगाहों की एक तस्वीर	(२) अकेली
(३) अनचाही गहराइयाँ	(४) खोटे सिक्के
(५) घुटन	(६) हार
(७) मजबुरी	(८) चश्में

१. तीन निगाहों की एक तस्वीर :

मन्नू भंडारी का दूसरा कहानी संग्रह है - तीन निगाहों की एक तस्वीर । यह संग्रह १९५९ में प्रकाशित हुआ था । इसमें आठ कहानियाँ संग्रहित है । 'तीन निगाहों की एक तस्वीर' पारिवारिक प्रेम और दाम्पत्य सम्बन्ध की कहानी है यह कहानी दर्शना की है तस्वीर है दर्शना की जिसको तीन निगाहें अपने-अपने ढंग से देखती समझती है । यह तीन निगाहें है, नैना, हरीश और स्वयं दर्शना की । हरीश किसी पत्रिका में कहानी छपवाकर दर्शना का मनोविश्लेषण करता है । नैना ने बचपन से अपनी दर्शना मौसी के संबंध में रिश्तेदारों से सुना है ।

''दर्शना ने विवाह के तुरंत बीमार पति की सेवा करना शुरु किया । अपने घर का एक कमरा किराये पर दे रखा था, जिसमें अकेला हरेश रहता था । यही दुनिया भी दर्शना की । दर्शना का ममत्व ही नहीं नारीत्व भी प्यासा था । शरीर और मन दोनों अतृप्त थे । वह हरीश की ओर आकर्षित होती है उसका पति सहन नही कर पाता उसे मार कर घर से निकाल दिया और साथ ही दर्शना की मां, भैया, दीदी

सब को पत्र लिखकर उनकी मौखिक सहानुभूति को घृणा में परिवर्तित कर दिया । पति मर गया दर्शना का संगीत का पुराना शौक आज जीविका का साधन बन गया वह स्कूल में संगीत की शिक्षिका बन गई । लेखिकाने दर्शना के मनोभावो को स्पष्ट किया है यह कहानी डायरी शैली में है ।''[४२]

२. अकेली :

यह कहानी सोमा बुआ बुढिया की है जो परित्यक्ता है और अकेली है । उसका जवान बेटा मर गया तो उसकी जवानी चली गई पति पुत्र वियोग में घर-बार छोड़कर चले गये । सोमाबुआ अपना एकाकीपन दूर करने के लिये पास पड़ोश से जुड़ने की कोशिश करती है । लेकिन साल में एक बार घर आनेवाले पति को यह पसंद नही था इसलिए बुआ से झगड़ा करते रहते थे । एकदिन बुआ अपने रिश्तेदार के यहाँ शादी पर जाना चाहती है और न्यौता न आने पर निराश हो जाती है ।

''बुआ ने साड़ी में माँड़ लगाकर सुखा दिया राधा भाभीने बुआ को चाँदी की एक सिन्दूर-दानी एक-साडी और एक ब्लाउज का कपड़ा ला दिया । बुआ ने लाल-हरी चूड़िया पहन ली ।''[४३]

बुआ जाने का आयोजन कर रही थी कि संन्यासी पति ने कहा यदि कोई बुलाने न आए तो चली मत जाना नहीं तो ठीक न होगा । बुआ दिनभर न्योता की राह देखती है और राधा से कहती है -

''नये फेशनवालों की मत पूछो, ऐन मोकों पर बुलावा आता है । पाँच बजेका मुह्रत है दिन में कभी भी आ जावेगा ।''[४४]

लेकिन शाम तक बुलावा न आया । बुआ निराश हो जाती है ।

वह दुःखी होती है । बुआ अकेली है पर सबको अपना मानती है और सबको सुख दुःख में साथ देती है पर दूसरो से छली जाती है ।

मन्नू भंडारी ने वृद्धा नारी की अन्तर्पीड़ा और अकेलेप का मार्मिक चित्रण इस कहानी में किया है व्यक्ति अहम व सामाजिक परिवेशजन्य विसंगतियों से उसके व्यक्तित्व का विघटन आदि स्थितियों का सूक्ष्म एवं यथार्थपरक चित्रण इस कहानीमें देखने को मिलता है ।

३. अनचाही गहराइर्यां :

इस कहानी संग्रह की तीसरी कहानी 'अनचाही गहराइर्यां' एक साधारण कहानी होते हुए भी पाठक के मन को छू लेनेवाली कहानी है । इसमें एक दरिद्र, जिज्ञासु, भावुक शिवनाथ नामक विद्यार्थी का चित्रण लेखिका ने किया है । लेखिकाने भावना को ही कहानी में शिरमोर बना दिया है । शिवनाथ का अपनी शिक्षिका के प्रति अप्रत्यक्ष स्नेह उसे जीने नही देता और शिक्षिका को अपनी गलती पर पश्चाताप होता है । शिवनाथ अपमानित होने पर दुःखी होता है अपने अपमान को बर्दाशत नही कर पाता और आत्महत्या कर लेता है ।

सुनंदा अध्यापिक है । वह अपने भैया भाभी के पास रहती है । वह गरीब विद्यार्थीयों को अधिक समय पढ़ाती है । शिवनाथ की आर्थिक स्थिति देखकर उसे टयुशन देती है उसे सप्ताह में तीन दिन आने को कहती है । एक बार सुनंदा को बुखार आया । सुनंदा अकेली सोई थी कमरे में कोई नही था । शिवनाथ आया इतने में सुनंदा की भाभी भी आई उसने शिवनाथ को सुनंदा पर झुका हुआ देखा, शिवनाथ भी चौंक गया । इस घटना के बाद भैया-भाभी ने शिवनाथ को पढ़ाने का सुनंदा को इन्कार किया । शिवनाथ निराश

हो गया पूछता है -

"तो क्या आप मुझे बिल्कुल नही पढ़ाया करेगी ?"

हाँ अब नहीं पढ़ा सकूँगी तुम कोई और प्रबन्ध कर लो ।

'क्या दो तीन दिन भी नही दे सकेगी ?' सुनंदा अधिक कठोर नहीं हो सकी - ठीक है, परसो आ जाना । मैं पढ़ा दूँगी पर यह समझ लो कि वह आखिरी दिन होगा ।"[४५]

शिवनाथ ने कुछ कठिनाइयां हल करने के लिये अपनी किताब सुनंदा को दी थी उसमें एक प्रेमपत्र था । सुनंदा ने उसके टुकड़े-टुकड़े कर दिये और शिवनाथ को तीन-चार तमाचे मार दिये । दूसरे दिन शिवनाथ ने रेल की पटरी पर आत्महत्या कर ली ।

दो दिन बाद एक लड़केने सुनंदा से कहा कि उसकी पुस्तक शिवनाथ ने सुनंदा को दी है, उसमें मेरा पत्र है । मेरे पत्र शिवनाथ लिखता था । तब सुनंदा अपने आप को हत्यारिन समझने लगी । लेखिका ने शिवनाथ का अच्छा चित्रण किया है ।

४. खोटे सिक्के :

यह कहानी टकसाल में काम करनेवाले मजदूरों के शोषण की कहानी है । खन्ना साहब टकसाल के उच्च पदाधिकारी है । वे लखनऊ के कॉलेज की छात्राओं को टकसाल देखने की अनुमति देते हुए स्वयं टकसाल दिखाने लगते है । उन्होंने कच्चे धातु को भट्ठी में गलाकर किस प्रकार सिक्के तैयार होते है यह बताया । खन्ना साहब छात्राओं से बड़े स्नेह और घनिष्ठता से मुलायम शब्दो में बात करते है । बड़ी बड़ी मशीनों के बीच काम करते मजदूरों को देखकर छात्राएँ पूछती है कि यहाँ मजदूर अपनी जान जोखिम में डालकर काम करने क्यों आते है ? तब खन्ना साहब ने कहा -

"काम करने । अरे, एक ही जगह खाली होती है, तो पचासों टूट पड़ते है । आप जानती नहीं, हमारे देश में इन्सान की जान बड़ी सस्ती है ।"[४६] वहीं एक मजदूर की औरत रोते हुए आती है अपने पति के उसी फेक्टरी में काम करते दोनों टाँगे कट जाने पर बैठे-बैठे खोटे सिक्के चुनने के काम की माँग करती है। तो वही खन्ना साहब की भाव भंगिमा तथा वाणी की मधुरता कर्कश रूप धारण कर लेती है । लेखिका ने आज की स्थिति आर्थिक संकट, बेरोजगारी तथा व्यवस्था पर व्यंग्य किया है । लेखिका ने मजदूरों के शोषण को प्रस्तुत किया है ।

५. घुटन :

प्रस्तुत कहानी में दो स्थितियों में जीनेवाली दो नारियों की घुटन को लेखिका ने चित्रित किया है । एक है विवाहिता प्रतिमा और दूसरी सौभाग्य कांक्षाणी कुंवारी मोना । दोनों की अपनी व्यथा है । प्रतिमा पति की बाँहों की जकड़ से मुक्त होना चाहती है तो मोना किसी की बाहों में जकड़ जानेकी इच्छा रखती है इसमें अनुभूति की गहराई है। मोना ौर प्रतिमा पड़ोसन है । प्रतिमा का पति नेवी में है वह साल में एक महीना उसके पास रहता है । एक बार यह पति के साथ जहाज पर गई थी किंतु पति दोस्तो के साथ पेग पर पेग पढ़ाना और गंदे मजाक करता तथा पत्नी को दकियानूस कहता तब उसे यह अच्छा नहीं लगा । उसका पति आनेवाला है किंतु उसमें किसी प्रकारका उत्साह नही । वह पति की बांहो में जकड़ गई प्रतिमा मुक्ति के लिए तड़प रही थी यह तड़प घुटन में तब्दील हो सकती है । किंतु मुक्ति में नही । मोना अरुप से प्रेम करती है । उसकी बीमार विधवा मा उसकी शादी नही होने देती क्योंकि कमानेवाली अकेली मोना है । एक दिन

वह अरुण के साथ भाग जानेवाली है किंतु प्रतिमाने देखा कि

''मोना घर के आंगन में खाट पर पड़ी सिसक रही है, दरवाजे पर ताला लगाकर अम्मा सोई है । मोना नही जा सकी मोना दुःख प्रतिमा जानती है ।''[४७] सब की अपनी-अपनी समस्याएं है । प्रतिमा विवाहिता है किंतु पति से असंतुष्ट है तो मोना का विवाह नही हो रहा है यही उसे दुःख है । दोनों दमिक कुंठित घुटती हुई सांस ले रही है । लेखिकाने दोनों की घुटन का चित्रण किया हैं ।

६. हार :

स्वतन्त्र व्यक्तित्व चाहनेवाले पति पत्नी के द्वंन्द्व को इस कहानी में प्रस्तुत किया गया है । दीपा राजनीतिक वातावरण में पली है । उसके पिता के घर सभी राजनीतिक दलों के प्रमुख व्यक्ति आते थे । दीपा एक राजनीतिक दल की सक्रिय सदस्य बन गई उसने अपनी इच्छा से विरोधी पार्टी के सदस्य को अपना जीवनसाथी बनाया । शादी के बाद दोनों अपनी पार्टीयों का काम करने लगते हैं । चुनाव आता है और दोनों एक दूसरे के विरोध में खड़े रहते है दीपाने कहा -

अभी तक तुम्हारी पार्टी की विरोधिनी थी, अब तुम्हारा भी विरोध करना पड़ेगा ।

दीपाने शेखर को अपने मित्र से यह कहते हुए सुना -

''मेरी जीत की संभावना ही मुझे खिन्न बनाए दे रही है । सोचता हूँ मैं हार भी गया तो उस लज्जा को सह लूंगा । पर जीत गया तो दीपा का क्या होगा ।''[४८] इसलिए मैं चाहता हूँ कि मैं हार जाऊँ वह हार का धक्का बर्दाश्त नहीं कर सकेगी । दीपा और शेखर राजनीतिक क्षेत्र में एक दूसरे से अलग होने पर भी जिन्दगी में परस्पर चाहनेवाले है ।

इस कहानी में मन्नू भंडारी ने भारतीय नारी की मनःस्थिति का सुन्दर चित्रण किया है ।

७. **मजबूरी :**

मन्नू भंडारी की यह कहानी दो पीढ़ियों के वैचारिक संघर्ष की कहानी है । संघर्ष भावना और विचार का है । कहानी की बूढ़ी अम्मा गाँव में रहनेवाली अनपढ़ औरत है बेटे का विवाह हो जाने से वह शहर चला जाता है वह अकेली हो जाती है । एक बार पुत्र शहर से आता है तो वह उसके बेटे को गाँव में रखती है उसका पालन करती है लेकिन बुढ़ी अम्मा के लाड़-प्यार ने उस बच्चे को अनुशासनहीन बना दिया है बच्चे को ऐसा देखकर गुस्से में आकर पढ़ी लिखी बहू अपने बेटे को दादी अे अलग करके शहर ले जाती है । तो वह अकेली हो जाती है । लेखिकाने इस कहानी में मातृत्व मोह का चित्रण दिया है पोते को अलग करने की विवशता उसकी अंतर्द्वन्द्व दिखाया है पोते के प्रति दादी का वात्सल्य भाव बताया गया है । बुढी मा के अन्तसंघर्ष का मर्मस्पर्शी चित्रण किया है ।

८. **चश्मे :**

मन्नू भंडारी ने इस कहानी में अतीत और वर्तमान का संघर्ष चित्रित किया है । और पुरुष के आत्मकेन्द्रित वृत्ति पर व्यंग्य किया है । प्रत्येक मनुष्य का अपना अतीत होता है अतीत की घटनाएँ होती है इसका चित्रण मि. वर्मा के द्वारा किया है ।

मि. वर्मा की पत्नी कहानी लिखती है लेकिन उसे सुनने का मौका मि. वर्मा को नहीं मिलता । एक दिन वह मि. वर्मा का चश्मा निकाल लेती है और उसे अपनी कहानी सुनाती है । कहानी सुनते सुनते मि. वर्मा को अपनी पुरानी प्रेमिका की याद आ जाती है उनका

नाम शैल था उसे टी.बी. हो गया था । वर्मा का नाम निर्मल था । निर्मल और शैल विवाह करनेवाले थे किंतु शैल की बीमारी के कारण निर्मल का मन उचट गया वह ट्रेनिंग का बहाना कर के पंद्रह दिन चला जाता है । और शैल की २३ मई को मृत्यु हो गयी । कहानी सुनते वर्मा अचानक चिल्लाते है -

''मैं कहता हूँ मेरा चश्मा दो नही तो मेरा दम घुट जाएगा ।''[४६]

मिसेज़ वर्मा के हाथ से चश्मा लेकर उन्होंने आँखो पर चढ़ाया तो उन्हें लगा मानो किसी अतल समुद्र की गहराई में से जहाँ केवल अन्धकार था और उनका दम घुट रहा था वे बाहर निकल आए हैं ।

प्रस्तुत कहानी पुरुष के विवाह पूर्व प्रेम से सम्बन्धित हैं ।

(३) यही सच है :

मन्नू भंडारी के तृतीय कहानी संग्रह 'यही सच है' में आठ कहानियाँ संग्रहित है जो निम्नलिखित है ।

(१) क्षय	(२) तीसरा आदमी
(३) सजा	(४) नकली हीरे
(५) नशा	(६) इन्कम-टैक्स और नींद
(७) रानी मां का चबूतरा	(८) यही सच है ।

१. क्षय :

मन्नू भंडारी ने क्षय कहानी में कुंती के जीवन संघर्ष का चित्रण किया है । सारी उम्र जीवन के यथार्थ से लड़ती रहती है इसलिए वह सोचती है - ''घूमना-फिरना, सैर-सपाटे, हँसी-मजाक उसके जीवन में तो यह सब है ही नहीं क्योंकि परिवार का आर्थिक भार कुंती पर है । घर में टी. बी. से बीमार पिता और आठवी कक्षा में पढ़नेवाला छोटा भाई दुन्नी है और घर संभालने को रमाबुआ को बुलाया है ।

कुंती स्कूल में पढ़ाती है दुन्नी पढ़ने में कमजोर था तो उसके पापा बच्चो को अपनी आँखो से दूर रखना नही चाहते फिर भी कहते है - ''मैं कौन होता हूँ कुछ करनेवाला ? अब तो तुम्हीं सबकुछ हो जो चाहो करो । मैं क्षय का रोगी ।'' एक बार कोशिश करके इस चढ़वा तो दे तेरी हैडमास्टर से अच्छी जान-पहचान है वहाँ भी जाये तो एक साल तो बच जाये ।''[५०]

''कुंती पिता की बिमारी के इलाज के लिये तथा छोटे भाई को पढ़ाने के लिए टयूशन भी करती है वह सावित्री नामक एक मंद बुद्धि की लड़की को पढ़ाती है जो एक धनवान पिता की बेटी है । सावित्री की माँ सोचती है कि पैसे के बल पर दुनिया में सबकुछ खरीदा जा सकता है इसलिए वह वार्षिक परीक्षा के बाद कुन्ती से सभी अध्यापिकाओं से मिलकर आने को कहती है इस बात से आदर्शवान पिता की बेटी कुंती को धक्का सा लगा । परन्तु वह विवश थी । परिस्थितियों के दबाव में कुन्ती अपनी इच्छा के विरुद्ध स्वयं के आचरण द्वारा कुन्ती मन से क्षयग्रस्त हो गयी कुन्ती के पिता की शारीरिक क्षय उसके नैतिक क्षय में बदल जाता है ।''[५१]

इस कहानी में मध्यवर्गीय समाज के यथार्थपरक चित्रण से पाठकों के मन को गहरी संवेदना से सराबोर कर देता है ।

२. तीसरा आदमी :

'तीसरा आदमी' कहानी में लेखिका ने पति-पत्नी के बीच एक तीसरे आदमी के आने से सम्बन्धो में जो दरार पड़ती है उसकी अभिव्यक्ति की है । इस कहानी में प्राचीन और नवीन मूल्यों की टकराहट है । प्राचीन जीवन मूल्यों के अनुसार पराये पुरुष से एकांत में बातचीत करने मात्र से पति अपनी पत्नी पर लांछन लगा सकता था

किन्तु वर्तमान सामाजिक व्यवस्था में यदि पति पर पुरुष से बात करने पर पत्नी पर शक करे तो वह हास्यास्पद बनेगा ।

इस कहानी में सतीश और शकुन पति-पत्नी है । सतीश अपनी पत्नी पर शक करता है । सतीश के अंतर्द्वन्द्व को कहानी में अंकित किया गया है ।

''आलोक जी, आपको शायद विश्वास नहीं होगा आप पहले आदमी है जिसके आने पर शकुन यों खुश हो रही है, वरना शकुन को इस घर में तीसरे आदमी की उपस्थिति तक बर्दाशत नहीं होती ।''[५२]

३. सजा :

मन्नू भंडारी ने इस कहानी में भारत देश में चल रहे आज की न्याय-व्यवस्था पर तीखा व्यंग्य किया है तो दूसरी और आर्थिक अभाव के कारण परिवार में आनेवाले बिखराव का मर्मस्पर्शी चित्रण किया है । सजा किसी एक व्यक्ति को नही परन्तु संपूर्ण परिवार को बिना किसी अपराध के भुगतनी पड़ती है और एक सुखी परिवार टूटकर बिखर जाता है ।

आशा के पिता पर बीस हजार रुपये चोरी करने का इल्जाम लगाया जाता है उसे नौकरी से हटा दिया जाता है । आशा की माँ बीमार है बच्चे अपने चाचा के घर रहने चले जाते है । आशा के पिता घर से बाहर नहीं निकलते । अंत में कई बरसों के बाद अदालत का फैसला आता है कि वे निर्दोष है ।

''प्पा आप बरी हो गये ! सुनते है, आपको सजा नहीं हुई, सजा नहीं हुई आपको ! पर पापा फिर भी वैसे ही रहे, मानो उन्हें विश्वास ही नहीं हो रहा कि उन्हें सजा नहीं हुई है ।''[५३]

कोर्ट की सजा से बढ़कर जो सजा उनका परिवार भुगत चुका है

उसका चित्रण लेखिकाने किया है ।

४. नकली हीरे :

इस कहानी में लेखिकाने बाह्याडम्बरों की निरर्थकता को साबित करने का प्रयास किया है ।

मिसेस सरन और इन्दु दो बहने है । इनके पापा एक बड़ी स्टेट के भूतपूर्व प्रधानमंत्री थे । सरन की शादी एक धनी परिवार से होती है और उसकी बहन इन्दु ने अपनी पसन्द के अनुसार एक स्कूल मास्टर से शादी की थी । वह अपने पति के एक निष्ठ प्रेम से खुश रहती है । मिसेस सरन के पास सबकुछ है लेकिन उसके पास पति का एक निष्ठ प्रेम नहीं । सरनने अपने व्यस्त पति को फोन किया - ''हलो ! मैं मिसेज सरन... कौन रामसिंह ? साहब को दो, साहब को, हम जरा बात करेंगे । रामसिंहने कहा साहब तो हुजूर अनिता मेम साहब के साथ डांस पर गये है, आने से हम बोल देगा ।''[५४]

मिसेज सरन और इन्दु समाज के दो वर्गो के प्रतिनिधि है एक उच्चवर्ग की तो दूसरी मध्यवर्ग की । इस कहानी में उच्चवर्ग के जीवन का खोखलापन उजागर हुआ है ।

५. नशा :

यह कहानी एक अलग प्रकार की कहानी है । इसमें लेखिका ने भारतीय संस्कृति में ढली हुई एक नारी का हृदय-स्पर्शी चित्रण किया है । एक को पीने का नशा है तो दूसरे को पिलाने का । शंकर और आनन्दी पति पत्नी है । शंकर को शराब पीने की आदत है और आनन्दी उसे पैसे देती रहती है । शंकर की पीने की लत में घर का धन, आनन्दी की किस्मत और बच्चों का भविष्य चला गया । शंकर अपनी पत्नी को मारता-पीटता है । शंकर नशे मे धुत्त बोला -

''मैं एक-एक का खून पी जाऊँगा । देखूँ कौन माई का लाल ले जाता है मेरी जोरु को । और उसने आनंदी को बड़ी बेरहमी से पीटना शुरु कर दिया । वह कहती है बच्चा बेटे किशन् बचा ।''[५५]

आनन्दी पति की मारपीट सहती है लेकिन भारतीय नारी के संस्कार वह अपने पति को छोड़ने को तैयार नही होती वह पति को परमेश्वर मानती है । इस बात को लेखिकाने 'नशा' कहानी में चरितार्थ कर दिया है ।

६. इन्कम-टैक्स और नींद :

इस कहानी में भ्रष्टाचार्चा और उसके विविध रुपों का चित्रण हुआ है । और ग्राम्य और शहरी संस्कृति के भेद के साथ-साथ दो पीढ़ियों के अंतर को भी स्पष्ट किया है । सभ्यता और संस्कृति में बदलाव समय की माँग है उसे पूरा करना चाहिए । अन्यथा व्यक्ति हास्य व्यंग्य का पात्र बनता है हीन ग्रंथी से ग्रसित होता है इसका उदाहरण है डॉं. दयाल प्रसाद चतुर्वेदी होमियोपेथिक बालरोग विशेषज्ञ ।

डॉं. दयाल पुराने विचारों के प्रतिक है तो डॉं. महिमा आधुनिक विचारों की । महिमा उसकी भतीजी है महिमा के शादी संबंधी विचार उन्हें आश्चर्य में डालते है । वह अपनी बेटी सरोज को मैट्रिक के बाद ससुराल भेजने की बात करते है -

''लखनऊ क्या बिट्टी, अब तो ससुराल ही भेंजेगे । हम तो भाई मैट्रिक के बाद लड़की को घर रखने में विश्वास नहीं करते एक बहुत ही अच्छा लड़का है मेरठ में इंजीनियर है घर भी अच्छा है बस बचुआ जरा देख आये तो आती सर्दी में शादी कर दूँ ।''[५६]

डॉं. दयाल आत्मसम्मान अहं और अपने बड़प्पन को प्रस्थापित

करना चाहते है । और उपहास के पात्र बनते है डॉ. दयाल मनोविकार के शिकार है ।

७. रानी माँ का चबूतरा :

मन्नू भंडारी ने इस कहानी में निम्नवर्ग की नारी के चरित्र को उजागर किया है यह कहानी स्वाभिमान, ईमानदार, कर्तव्यपरायण, आत्मनिर्भर, विधवा गुलाबी की कहानी है जिसे कभी रानी माँ के चबूतरे पर जाने की जरूरत नही पड़ी । उसे अपने हाथों पर विश्वास था । नगर शेठ की माता की याद में बनाए चबुतरे पर हर पूनम को औरते दीया जलाकर बच्चों के लिए मनौती मानती है पर गुलाबी किसी की सहानुभूति पर जीना नही चाहती वह कहती है

''किसी के दान-पुन्न पर पलनेवाली नही है गुलाबी, थूकती है तुम्हारे चंदे पर ...''[५७]

ग्राम्य जीवन, जड़ मान्यताओं का शिकार है तो गुलाबी अकेली उस जड़ मान्यताओं का सामना करती है । सबसे पहले तो वह अपने शराबी पति को घर से निकाल देती है ।

इस कहानी में एक नयी विचारधारा को गुलाबी लोगों तक पहुँचाना चाहती है ।

८. यही सच है :

लेखिका ने इस कहानी के आधार पर ही संग्रह का नामकरण किया है और इस कहानी पर 'रजनीगंधा' फिल्म भी बन चुकी है ।

इस कहानी में मन्नू भंडारी ने नारी मन में पुरुष के प्रति जो भाव-उत्पन्न होते है उन्हें डायरी-शैली में व्यक्त किया है । अनेक नारियों के प्रति एक ही समय आकर्षित होने का एकाधिकार पुरुष वर्ग का है और नारी को एक समय एक पुरुष को चाहना चाहिए । इस

दोहरे मापदण्ड भले ही प्रकट रूप से हो किन्तु पुरुष मन और नारी मन दोनो में मन तो एक ही है । भारतीय नारी अपने मन पर संस्कृति, समाज निसर्ग और मातृत्व के बंधन को परिस्थितिवश और परम्परा की मानसिकता के कारण स्वीकार करती है किन्तु आधुनिक नारी अपनी इस मानसिकता के दायरे से बाहर नीकलने की सोच रही है ।

दीपा इस कहानी की नायिका है वह निशीथ से प्रेम करती है उससे अनबं हो जाती है तो वह अपने शोध-कार्य में लीन हो जाती है । उसके जीवन में संजय नामक युवक आया वह निशीथ को भूल जाती है -

''मैं तुम्हें प्यार करती हूँ बहुत-बहुत प्यार करती हूँ विश्वास करो संजय मेरा तुम्हारा प्यार ही सच है, निशीथ का प्यार तो छल था, भ्रम था, झूठ था ।''[५८] जब कलकता जाती है वहाँ निशीथ से मुलाकात होती है फिर से दीपा के मन में निशीथ के लिए प्यार उमड़ जाता है । तब वह सोचती है - ''प्रथम प्रेम ही सच्चा प्रेम है बाद में किया हुआ प्रेम तो अपने को भुलाने का भरमाने का प्रयास मात्र होता हैं ।''[५९]

इस प्रकार दो नायको के बीच नयिका के अन्तर्द्वन्द्व को चित्रित किया गया है ।

(४) एक प्लेट सैलाब :

मन्नू भंडारी का यह चतुर्थ कहानी संग्रह एक प्लैट सैलाब है । इस कहानी संग्रह में कुल ९ कहानियाँ संग्रहित है ।

(१) नई नौकरी
(२) बंद दराजों का साथ
(३) एक प्लेट सैलाब
(४) छत बनाने वाले
(५) एक बार और
(६) संख्या के पार
(७) बाहो का घेरा
(८) कमरे, कमरा और कमरे
(९) ऊँचाई

१. नई नौकरी :

प्रस्तुत कहानी में मन्नूजी ने पुरुष की भौतिकवादी द्रष्टि और उसमें बली होती हुई नारी की नियति का चित्रण किया है ''कुंदन की नई नौकरी है, वह बड़ी तेजी से भौतिक समृद्धि प्राप्त करना चाहता है । इसके लिए रोज रमा को कुंदन के साथ पार्टी में जाना पड़ता है या घर पर पार्टी की व्यवस्था करनी पड़ती है । रमा पढ़ी-लिखी होने पर भी कुंदन उसकी नौकरी छुड़ा देता है वह कुंदन के जीवन में एक शो पीस मात्र बन जाती है ।''[६०] रमा के मानसिक तनाव को मन्नूजी ने चित्रित किया है ।

२. बंद दराजों का साथ :

प्रस्तुत कहानी में मन्नूजी ने बताया है कि विवाही पूर्व प्रेमी पारिवारिक विघटन का कारण बन सकता है । और वैवाहिक जीवन केवल आकर्षण के सहारे नहीं चल सकता परस्पर समझौते की वृत्ति से साहचर्य बना रहता है ।

''अपने पति विपिन के साथ सुखपुर्वक जीवन बितानेवाला मंजरी को जिस दिन पति के विवाहपूर्व प्रेमिका का पता चलता हैं जिससे विवाह के बाद भी वह सम्बन्ध रखता है उस दिन मंजरी अपने बच्चे के साथ विपिन से अलग हो जाती हैं ।''[६१] लेखिका ने मंजरी की मनोदशा का चित्रण किया हैं ।

३. एक प्लेट सैलाब :

इस कहानी में एक होटल में जुड़े व्यक्तियों की विभिन्न मानसिकता का चित्रण किया गया है । मन्नूजी ने बताया है कि हर उम्र की अपनी दुनिया और अपनी समस्या होती है और उम्र के साथ समस्याएँ परिवर्तित होती है । यह कहानी किसी एक पात्र से पाठक

की संवेदना को नहीं जोड़ती अपितु व्यावहारिक जगत का दर्शन कराती है ।

४. छत बनाने वाले :

प्रस्तुत कहानी में लेखिकाने शहरी और देहाती प्राचीन और नई पीढ़ी के जीवन दर्शन का भेद स्पष्ट किया है । ''खान-पान, रहन सहन, शिक्षा, रीति-रिवाज सभी में भेद है, अंतर आया है शरद लेखक है । जब शरद नौ बरस का था तभी उसके पिता रामेश्वर लखनऊ में जा बसे और शहरी हो गये हैं । उन्होंने अपने बच्चों को पढ़ाया हैं । शरद घूमने मेरठ आया हैं वहाँ उसके ताऊजी रहते हैं । ताऊजी ने उसकी अपनी मर्जी से शादी करा दी संपूर्ण परिवार ताऊजी के आदेश पर चलता हैं ।''[६२]

५. एक बार और :

इस कहानी में परम्परागत नैतिकता के प्रति खुला विद्रोह और आदर्श है । भारतीय समाज प्रेम की परिणति विवाह में चाहता है और प्रेम की अनुभूति को शाश्वत मानता है । इस व्यवस्था में पली नारी अपने पहले प्रेम को सच्चा मानती है । और इस प्रेम में असफलता होने से निराश हो जाती है और किसी दूसरे से जूड़ना उसके लिए मुश्किल हो जाता है । मन्नू भंडारी ने नारी-मन की इसी भावना को चित्रित किया है ।

६. संख्या के पार :

मन्नू भंडारीने बताया है कि मनुष्य मन के कुछ भाव ऐसे होते है जो पैसे से गिने नहीं जा सकते । ममत्व के सामने संख्या कम होती है यह बात प्रस्तुत कहानी में कही गई है । दुनिया में प्यार और वात्सल्य अनमोल है उन्हे रुपयों से तोला नहीं जा सकता । इसमें एक ऐसी

युवती के जीवन का चित्रण किया है जिसे माँ का प्यार नहीं मिला ।

''प्रमिला के प्रति उसकी मां का ममत्व और उसके दादा का उसकी मां के प्रति वात्सल्य और पितृत्व समान है, किंतु उसको प्रकट करने का तरीका भिन्न है । प्रमिला का बाबा माँ की ममता को रुपयों से तौलना चाहता है, उसे १०,००० का चेक देना चाहते हैं लेकिन माँ अपनी बेटी को पाँच रुपये का नोट देकर थोड़ा प्यार देकर चली जाती है ।''[६३]

लेखिका ने बताया है कि पाँच रुपये जैसे छोटी रकम और दस हजार जैसे बड़ी रकम के परे माँ की ममता ही मूल्यवान है, जिसे रुपयों से नहीं तौला जा सकता ।

७. बाहो का घेरा :

भारतीय नारी के संस्कार पति के प्रति समर्पित भाव रखते है । यह एक अतृप्त नारी के मानसिक तौरपर भटकने की सशक्त कहानी है । नारी के व्यक्तित्व को उसके स्वाभाविक व्यवहार को नारी सुलभ महिमा को, उसकी अतृप्त आकांक्षाएँ विकृत बना लेती है, यही इस कहानी का कथासार हैं मन्नू भंडारी ने अतृप्त कम्मो के मानसिक व्यापार का चित्रण किया है ।

८. कमरे, कमरा और कमरे :

यह कहानी नारी के सीमित-असीमित व्यक्तित्व को चित्रित करती है । मन्नू भंडारी ने एक ऐसी नारी की बात की है जो ''अपना जीवन शुरु से अंत तक कमरों में ही सिमटता और बिखरता हुआ अनुभव करती है । पहले नीलू पाँच कमरों में बन्द रही बाद में नौकरी के लिए गई तब होस्टल में एक कमरे में रहने लगी शादी के बाद फ्लैट में रहने लगती है इस प्रकार पहले कमरे फिर कमरा और फिर कमरे में उसका

अपना जीवन बीखर जाता है ।''[६४] पारंपरिक मानसिकता नारी की इच्छाओं एवं उसके व्यक्तित्व को दमित करती है ।

६. ऊँचाई :

इसमें आधुनिक नारी के अंतः संघर्ष को चित्रित किया है । इस कहानी में नारी-पुरुष सम्बन्धो के स्थापित मूल्य और नये जीवन मूल्यो के बीच टकराव को मन्नूजीने बताया है । अतीत के टूटे संबंधो को फिर से जोड़ने से वर्तमान पति-पत्नी संबंधो में जो उद्विनता आती है उसी का चित्रण इस कहानी में किया गया है ।

शिवानी और शिशिर के दाम्पत्य जीवन में सुखी थे । शिवानी ग्यारह वर्ष के बाद अपने विवाहपूर्व प्रेमी से मिलती हैं और शिशिर को इस बात का पता चलता है तब कहती है कि - ''मेरे जीवन में तुम्हारा जो स्थान है उसे कोई नहीं ले सकता''[६५] और दोनों फिर से सुखी जीवन बिताते है ।

(५) त्रिशंकु :

'त्रिशंकु' मन्नूजी का पंचम कहानी संग्रह है इसमें १० कहानियां संग्रहीत हैं । जो इस प्रकार हैं ।

(१) आते जाते यायावर : (२) दरार भरने की दरार
(३) स्त्री सुबोधिनी (४) शायद
(५) त्रिशंकु (६) रेत की दीवार
(७) तीसरा हिस्सा (८) अलगाव
(९) एखा ने आकाश नाई (आकाश के आइने में)
(१०) असामयकि मृत्यु :

१. आते जाते यायावर :

इस कहानी में मन्नू भंडारी ने बताया है कि ''पुरुष प्रकृति से

यायावार है और भारतीय नारी समाजमान्य पारंपरिक संस्कार और रुढ़ियों से बंधी हुई हैं । वह इन बंधनो को तोड़ना चाहकर भी नहीं तोड़ सकती । वैचारिक धरातल पर पुरुष जाति से बदला लेने की भावना रखते हुए भी प्रत्यक्ष में उसकी दयनीय स्थिति से द्रवित होती है किंतु पुरुष फिर उसे छलता है और अपने यायावरी वृत्ति को सिद्ध करता है । अभिनय उसका धर्म है, नारी को छलना उसका नियम हैं ।''[६६]

इस कहानी में मन्नू भंडारीने पुरुष द्वारा छली गई नारी के अन्तर्द्वन्द्व को चित्रित करते हुए पुरुष के वास्तविक रुप का चित्रण किया हैं ।

२. दरार भरने की दरार :

इसमें दाम्पत्य जीवन में जीवन में होनेवाली घटनाओं की चर्चा करते हुए मन्नू भंडारी ने मनुष्य के मनोभावों का चित्रण करने का प्रयास किया है ।

‘‘नंदिता की घनिष्ठ मित्र है श्रुति । श्रुति अपने पति से अलग होना चाहती है । पर नंदिता दोनों में समझौता करने का प्रयास करती है । लेकिन श्रुति अलग घर लेकर पति से अलग रहना चाहती है, तो नंदिता उसके लिए घर भी ढूंढ लेती हैं । इसी बीच पति-पत्नी दोनों फिर एक हो जाते है और नंदिता के लिए मिठाई और साडी लेकर आते हैं तब नंदिता अपने को बहुत अपमानित-सा महसूस करती है । उनके चले जाने के बाद नंदिता को लगता है - ‘‘जैसे बच्चे को पहले तो कोई बहुत आश्वासन दे और फिर एक दो होकी से बहलाकर चलता बने ।''[६७]

३. स्त्री सुबोधिनी :

इस कहानी में विवाहित पुरुष द्वारा छली गई नारी का चित्रण मन्नूजी ने किया है । शैली इस कहानी के द्वारा सन्देश देती है कि - ''भूलकर भी शादीशुदा आदमी के प्रेम में मत पडिए । अन्य कहानियों से इस कहानी की शैली बिल्कुल अलग है । वह आयकर विभाग में काम करती है वहाँ अपने बोस शिंदे के प्रति आकर्षित होती है । बाद में उसे पता चलता है कि शिंदे विवाहित ही नहीं एक बच्चे का पिता भी है तो वह उससे अलग होना चाहती है, लेकिन शिंदे उसे समझाता है कि शादी दुःखपर्यवसायी है इसलिए वह अपनी पत्नी से तलाक लेना चाहता है । पर ऐसा करता नहीं और उसका तबादला भी होता है । शैली उससे अलग हो जाती है पर उसके एक गृहप्रवेश के अवसर पर उसे बुलाता है तो शैली वहाँ जाती है और उसकी प्रसन्न पत्नी एवं सुन्दर बच्चे को देखकर खुद को संभालती है ।''[६८] शैली समाज की अन्य मासूम युवतियों को पुरुष-स्वभाव से अवगत कराना चाहती है ।

४. शायद :

इस कहानी में आर्थिक परिस्थितियाँ किस प्रकार एक परिवार को नष्ट कर देती है, उसका चित्रण मन्नूजी ने किया हैं ।

राखाल जाहज पर मैकेनिक था । इस बार तीन साल के बाद दो महीनों की छुट्टी पर वह घर आया है । वह रोमांटिक मूड में है, पर पत्नी उसके रोमांस का बोझ उठाना नहीं चाहती । तीन सालों के बीच के पारिवारि दुख और बच्चों की समस्याने उसे यान्त्रिक बना दिया है । वह नौकरी करने को भी मजबूर हो गई है । राखाल के घर आने पर उसकी पत्नी माला अपने भाई-भाभी, मेकानिक शंकर तथा

अन्य पडोसियों की सहृदयता की बात करती है तो राखाल को अपने ही घर में परायापन महसूस होने लगता है । जब छुट्टी समाप्त होने पर जहाज पर लौटता है तो वहाँ उसे सुनाई पड़ता है - ''यार तुम जैसे लोगों को बहुत घुलना मिलना नहीं चाहिए बीबी बच्चो में, बेटा अपनी जिन्दगी तो इन मशीनों के साथ है समझे ! इनको तेल पिलाओ और चलाओ ।''[६६]

५. त्रिशंकु :

'त्रिशंकु' कहानी में मां और बेटी के दृष्टिकोणों से दो पीढ़ियों के अन्तर को स्पष्ट किया है । मां ने प्रेमविवाह किया था और नाना ने इसका विरोध किया था । इसलिए मां अपनी बेटी पर अंकुश लगाना नहीं चाहती । हर पीढ़ी अपने आगे आनेवाली पीढ़ी को छूट देना चाहती है, लेकिन इसकी एक सीमा होती है पर इन सीमाओं में बंधे रहना अगली पीढ़ी नहीं चाहती है तभी संघर्ष होता हैं । इस बात का चित्रण किया है ।

६. रेत की दीवार :

यह कहानी बेरोजगारी के कारण आज के सुशिक्षित युवा मानस की कुंठा और निराशा को उद्घृत करती है । इस कहानी के द्वारा लेखिका ने हमें यह सीख दी है कि बच्चों के भविष्य के बारे में सपने देखना रेत की दीवार की तरह है जो कभी भी टूट जाने की अवस्था में हैं । रेत से दीवार चुनना असंभव है वैसे ही बेटे की शिक्षा द्वारा भविष्य के महल की आशा भी व्यर्थ है ।

७. तीसरा हिस्सा :

'तीसरा हिस्सा' कहानी में मन्नू भंडारी ने संपादक के खण्डित व्यक्तित्व का चित्रण किया हैं । आज समाज का कोई भी क्षेत्र

भ्रष्टाचार से मुक्त नहीं है सब कहीं मनुष्य को धन के नाम पर मूल्य दिया जाता है । ऐसे भ्रष्ट समाज ईमानदार व्यक्ति के व्यक्तित्व को हिस्सो में बाँट देता है । इस सब के बीच कुछ लोग ऐसे हैं जो समयानुसार अपने को बदल नहीं पाते हैं । ऐसा व्यक्ति है शेरा बाबू । भ्रष्ट शासकों के प्रति वह खुल्लम-खुल्ला अपने समाचार-पत्र में लिखता है, परन्तु सभी के द्वेष आदि के कारण वह अखबार ही बन्द हो जाता है । वह फिर से कल्पना करता है कि भ्रष्टाचार के विरोध में वह कुछ करेगा । पर सब उसकी कल्पना मात्र रह जाता है । वर्तमान में वह कुछ कर ही नहीं पाता है ।

८. अलगाव :

मन्नू भंडारी को बचपन से राजनीति से विशेष लगाव रहा है । आये दिन जन साधारण पर होनेवाले अत्याचार की खबरें पढ़कर उनका मन विचलित हुआ और 'बेल छी' के हत्याकांड ने तो उन्हें हिला दिया । इस कांड को आधार बनाकर मन्नू भंडारी ने 'अलगाव' कहानी लिखी और आगे चलकर इसको 'महाभोज' नामक उपन्यास में रूपांतरित कर दिया ।

आज की राजनीति की असलियत को उघाड़नेवाली अनुपम कहानी है 'अलगाव' ।

९. एखा ने आकाश नाई : (आकाश के आइने में) :

इस कहानी में मन्नूजी ने शहरी और ग्रामीण परिवेश में अलग-अलग कोणों से नारी की समस्याएँ पाठकों के सम्मुख रखी गयी है । दोनों परिवेशों में नारी असंतुष्ट दीखती हैं । जैसे सुरक्षित हैं, स्वावलंबी हैं, विवाहित हैं, जीवन से पूर्ण संतुष्ट हैं, किंतु तिहरी घर नौकरी और पढ़ाई की जिम्मेदारियों ने उनका रस निचोड़ लिया हैं

और वह हड्डियों का ढांचा मात्र रह गयी हैं ।

इस कहानी केस भी पात्र खुले आकाश के नीचे आशा-आकांक्षा के अनुरुप जीना चाहते हैं, लेकिन उनकी चाहत-चाहत ही रह जाती है । शहर हो या गाँव नारी की अपनी -अपनी समस्याएँ होती है ।

लेखा शहर में रहती है, तो शहर से ऊब जाती है वह कहती है - ''यहाँ न खूली, न साफ हवा मिलती है, न अच्छा खाने-पीने को ही उपलब्ध हो पाता है । इस प्रकार वह जिस धारणा को लेकर गई थी, वह झूठी सिद्ध हुई । उसे गाँव का जीवन शहर से बुरा लगने लगा । गाँव में सबकी अपनी-अपनी समस्या है और सभी का दम घुट रहा है उस वातावरण में । लेखा वहाँ से भागना चाहती है । वह बड़ी तीव्रता से अपने पति की राह देख रही है ताकि यहाँ से जल्दी कहीं दूर पहाड़ पर जा सके ।[७०] इस कहानी में मन्नू भंडारी ने एक बंगाली गीत की पंक्तियों का चित्रण भी किया है -

''शोनो बन्धु शोनो प्राणहीन हे शहरेर इतिकथा
ईंटेर पांजोडे लोहार खांचाए दारुण मर्म व्यथा
एखाने आकाश नाई, एखाने आकाश नाई,
एखाने अन्धगलीर नरके मुक्तिर व्याकुलता ।''[७१]

१०. असामयकि मृत्यु :

'त्रिशंकु' कहानी की यह कहानी मन्नू भंडारी की सुंदर कहानी है । समाज में मध्यवर्ग के अर्थार्जन करनेवाले मुख्य व्यक्ति की मृत्यु होती है तो पूरा घर रास्ते पर आ जाता है । यह दीपू के कला रूप की असामायिक मृत्यु की कहानी है । उसके पिता महेश बाबू की मृत्यु ४४ साल की आयु में ओफिस में काम करते-करते हो जाती है । दीपू को नाटक में ज्यादा रुचि थी । नाटक के जाने माने कलाकार

उत्पल दत्त ने उसे ट्राफी देते हुए प्रोत्साहित किया था । उन्होंने पूना की अभिनय संस्थान का प्रवेश-पत्र भी मँगवाया था, किन्तु अचानक पिता की मृत्यु ने दीपू की दुनिया को बदल दिया । दीपू के कलाकार की मृत्यु हो गई । इसी बात का लेखिका ने चित्रण इस कहानी में किया है ।

उपर्युक्त पाँचो कहानी-संग्रहों के अलावा 'आंखो देखा झीठ' बालोपयोगी कहानी-संग्रह है उसका प्रकाशन १९७६ में हुअ और इसमें सात कहानियाँ संकलित है । इसे मैंने अपने अध्ययन की सीमा में नही रखा है ।

❖ **नाटय साहित्य :-**

❖ **नाटककी परिभाषा :**

पाणिनी नाटय की उत्पत्ति 'नट्' धातु से मानते है और रामचन्द्र गुणचन्द्र ने 'नाटयदर्पण' में इसका उद्भव 'नाट्' धातु से माना है । 'नट्' धातु का अर्थ गात्रविक्षेपण एवं अभिनव दोनों था । दशरूपककारने नृत, नृत्य और नाटय का अन्तर स्पष्ट किया है । नृत्त ताल-लय के आश्रित होता है, नृत्य भावाश्रित होता है, किन्तु नाटय रसाश्रित होता है । संस्कृत साहित्य में नाटक को काव्य ही माना गया है । उसका उद्देश्य आनन्द प्राप्ति बताया गया है । नाटक साहित्य की वह विद्या है, जिसकी सफलता का परीक्षण रंगमंच पर होता है ।

नाट्यकला की परिभाषा देते हुए रवीन्द्रनाथ ने कहा है कि विभिन्न वेशभूषा और अंग विक्षेप के अनुकरण द्वारा प्रकृति प्रतिबिम्बित करनेवाली कला नाटक है । वस्तुतः नाटक देखने की चीज है । उसके दर्शक और श्रोता होते है, जो पात्रों द्वारा चरित्रों के अभिनव से प्रभावित होते है इसलिए आचार्यो ने उसे द्रश्यकाव्य की संज्ञा दी है । नाटक

शब्द, पात्र, वेश-भूषा, आकृति, भावभंगी और क्रियाओं आदि के अनुकरण द्वारा तथा भावों के प्रदर्शन द्वारा दर्शकों को यथार्थ जीवन के निकट लाता है । अभिनय नाटक का प्रधान अंग है । सफल नाटक वह है जिसे देखते हुए दर्शक यह अनुभव नही कर पाये कि वह नाटक देख रहा है । नाटककार का सबसे प्रधान गुण यह है कि वह मानव मनोविज्ञान का सूक्ष्म पारखी हो ।

भारतीय-समीक्षा-शास्त्र के अनुसार नाटक के तीन प्रमुख तत्व है - वस्तु, नायक और रस । पर पाश्चात्य समीक्षा शास्त्रियों ने छह तत्व स्वीकार किये है । कथावस्तु, पात्र, कथोपकथन, देशकाल, उद्‌देश्य । शैली, हिंदी के आधुनिक नाटकों में इन दोनों प्रकार के तत्वों का समारोह हो गया है ।

(१) बिना दीवारो के घर :

यह मन्नूजी की मौलिक रचना है । दाम्पत्य जीवन में विफल हुए दो वैवाहिक-जोड़ो की यह संयुक्त कहानी है । शोभा और अजित तथा मीना और जयंत पति-पत्नी है । शोभा अपने चहार दीवारी में बंद रूप को त्यागकर कामकाजी नारी का रूप धारण कर लेती हैं । इसके लिए उसकी आर्थि परिस्थिति बहुत हद तक जिम्मेदार है । वस्तुतः आर्थिक मोर्चे पर विफल सिद्ध होने की व्यथा पुरुष को उतनी ही टीसती है जितनी कामक्षेत्र में अपने पुरुषत्व के दुर्बल होने की भावना । शोभा अध्यापिका है और बाद में प्रिंसीपल बनती है अजित विवशता के कारण पत्नी के कामकाजी रूप को बदलकर फिर से गृहिणी के रूप में नहीं लौटा सकता । और अजित की यह विवशता विकृति का रूप धारण कर शोभा के कामकाजी रूप की करु आलोचना करने पर उसे उकसाती है । इस विडंबना को पहले नहीं कर पाती ।

अतः दोनों के बीच दरार उत्पन्न होती है ।

शोभ और अजित के बीच उत्पन्न दरार को पाटने का प्रयास अजित की बहन जीजी करती है परन्तु वह प्रयास विफल हो जाता है । जयंत के प्रयास विफल ही नहीं होते बल्कि उस दरार को और आधिक चौड़ा करने में सहायक होते हैं । इसके लिये अजित की संशयवृत्ति कारणभूत है ।

जयंत शोभा और अजित दम्पति का अन्तरंग मित्र हैं । जयंत अपने मित्र और मित्र-पत्नी के बीच सौदाई-संबंध चाहता है, इसके लिए वह उन दोनों के बीच उभरनेवाले मतभेदों को समाप्त करने के लिए कभी-कभार शोभा के पक्षा का समर्थन भी करता है । उसका यह समर्थन अजित के मन में शोभा और जयंत के बीच अनुचित स्तर तक प्रगाढ़ संबंध होने कि शंका जगाता है । विडंबना यह होती है कि अजित के हाथ से एक नौकरी निकल जाने के बाद उसके लिए दूसरी नौकरी का प्रबंध करने में शोभा और जयंत का संयुक्त प्रयास सफल हो जाता है उस सफलता के प्रति अजित को आभारी रहना था वहां वह उस सफलता को शोभा और जयंत के बीच के अनुचित संबंधो के प्रमाण के रूप में मान बैठता है ।

अजित की इस चरम संशय वृत्ति के कारण शोभा को घर त्यागने पर विवश होना पड़ता हैं ।

(२) महाभोज का नाट्य रूपान्तर :

सन् १९८२ में मन्नू भंडारी ने 'महाभोज' उपन्यास का नाट्य रूपान्तर किया । श्रीमती अमाल अलना, उषा गंगोली, प्रेम भाटियानी आदि के निर्देशन में उसे 'राष्ट्रीय नाट्य विद्यालय' ने बड़े उत्साह के साथ दिल्ली के मंच पर प्रस्तुत किया । स्वयं मन्नू भंडारीने साक्षात्कार

में मुझे कहा कि 'महाभोज' का मंचन बहुत सी सफल रहा । 'महाभोज' में लेखिका ने अपने व्यक्तिवादी जीवन-दर्शन को त्यागकर बृहत्

समाज

और देश की ओर ध्यान दिया है और समाज का वास्तविक चित्र हमारे सामने प्रस्तुत करते हुए यह भी स्पष्ट किया है कि राजनीति का स्वरूप कितना घृणित हो गया है । आज कहीं भी मानव मूल्यों और मानव जीवन के लिए कोई महत्त्व नही रहा ।

'महाभोज' उपन्यास में ही नाटकीयता संवादात्मकता और चरित्र-चित्रण की कुशलता विद्यमान है उक्त सभी गुण 'महाभोज' नाट्य रूपांतर में भी है । नाट्य रूपांतर की सफलता इन दिनों मंचीयता के गुण पर निर्भर मानी जाती है इस कसौटी पर मन्नू भंडारी का प्रस्तुत नाट्य रूपांतर खरा उतरा है ।

'महाभोज' उपन्यास में विस्तृत चर्चा की है इसलिए यहाँ इस बात को दोहराती नहीं हूँ ।

संदर्भ - ग्रंथ सूची

क्रम	पुस्तक	लेखक	पृष्ठ संख्या
१.	मन्नू भंडारी का रचना संसार	डॉ. बीना ईप्पन	६३
२.	मन्नू भंडारी का रचना संसार	डॉ. बीना ईप्पन	६४
३.	एक इंच मुस्कान	मन्नू भंडारी एवं राजेन्द्र यादव	६६
४.	मन्नू भंडारी के कथा साहित्यका मनोविश्लेषणात्मक अध्ययन	डॉ. ममता शुक्ला	५८
५.	मन्नू भंडारी का रचना संसार	डॉ. बीना ईप्पन	३०
६.	कथाकार मन्नू भंडारी	अनीता राजूरकर	७८
७.	आधुनिक हिन्दी उपन्यास	डॉ. निर्मला जैन	२८५
८.	मन्नू भंडारी एक अध्ययन	माधूरी बाजपेयी	८०
९.	आपका बंटी	मन्नू भंडारी	२५
१०.	आपका बंटी	मन्नू भंडारी	६४
११.	महाभोज	मन्नू भंडारी	७
१२.	मन्नू भंडारी का उपन्यास साहित्य	नन्दिनी मिश्र	१३१
१३.	मन्नू भंडारी के कथा साहित्यका मनोविश्लेषणात्मक अध्ययन	डॉ. ममता शुक्ल	
१४.	स्वामी	मन्नू भंडारी	
१५.	कथाकार मन्नू भंडारी	अनिता राजूरकर	
१६.	मन्नू भंडारी का रचना संसार	डॉ. बीना ईप्पन	
१७.	कलवा	मन्नू भंडारी	४१
१८.	कलवा	मन्नू भंडारी	४३
१९.	नई कहानी दिशा, दशा, संभावना	डॉ. इन्द्रनाथ मदान	२०७
२०.	स्वातंत्र्योत्तर प्रतिनिधि कहानीकार	डॉ. भैरुलाल गर्ग	
२१.	स्वातंत्र्योत्तर हिन्दी कहानी	डॉ. रामकुमार गुप्त	१९
२२.	स्वातंत्र्योत्तर हिन्दी कहानी	डॉ. रामकुमार गुप्त	२४
२३.	स्वातंत्र्योत्तर हिन्दी कहानी	डॉ. रामकुमार गुप्त	२५

क्रम	पुस्तक	लेखक	पृष्ठ संख्या
२४.	बोध और व्याख्या (साहिति यक निबन्ध)	डॉं. कामेश्वर शर्मा	८८
२५.	बोध और व्याख्या (साहिति यक निबन्ध)	डॉं. कामेश्वर शर्मा	८९
२६.	बोध और व्याख्या (साहिति यक निबन्ध)	डॉं. कामेश्वर शर्मा	९२
२७.	साहित्यिक कोश पारिभाषिक शब्दावली		१८१
२८.	ईसा के घर इन्सान (मैं हार गई कहानीसंग्रह)	मन्नू भंडारी	१०
२९.	ईसा के घर इन्सान (मैं हार गई कहानीसंग्रह)	मन्नू भंडारी	१२
३०.	गीत का चुम्बन (मैं हार गई कहानीसंग्रह)	मन्नू भंडारी	२७
३१.	गीत का चुम्बन (मैं हार गई कहानीसंग्रह)	मन्नू भंडारी	२९
३२.	गीत का चुम्बन (मैं हार गई कहानीसंग्रह)	मन्नू भंडारी	३३
३३.	जीती बाजी की हार (मैं हार गई कहानीसंग्रह)	मन्नू भंडारी	४०
३४.	कमजोर लड़की की कहानी (मैं हार गई कहानीसंग्रह)	मन्नू भंडारी	६३
३५.	सयानी बुआ (मैं हार गई कहानीसंग्रह)	मन्नू भंडारी	६८
३६.	अभिनेता (मैं हार गई कहानीसंग्रह)	मन्नू भंडारी	७७

क्रम	पुस्तक	लेखक	पृष्ठ संख्या
३७.	अभिनेता (मैं हार गई कहानीसंग्रह)	मन्नू भंडारी	८२
३८.	श्मशान (मैं हार गई कहानीसंग्रह)	मन्नू भंडारी	८५
३९.	दीवार बच्चे और बरसात (मैं हार गई कहानीसंग्रह)	मन्नू भंडारी	९८
४०.	पंडित गजाधर शास्त्री (मैं हार गई कहानीसंग्रह)	मन्नू भंडारी	१०३
४१.	कील और कसक (मैं हार गई कहानीसंग्रह)	मन्नू भंडारी	१२४
४२.	दो कलाकार (मैं हार गई कहानीसंग्रह)	मन्नू भंडारी	१३८
४३.	मैं हार गई (मैं हार गई कहानीसंग्रह)	मन्नू भंडारी	१४०
४४.	तीन निगाहो की एक तस्वीर (तीन निगाहो की एक तस्वीर)	मन्नू भंडारी	१९
४५.	अकेली (तीन निगाहो की एक तस्वीर)	मन्नू भंडारी	३१
४६.	अकेली (तीन निगाहो की एक तस्वीर)	मन्नू भंडारी	३१
४७.	अनचाही गहराईया (तीन निगाहो की एक तस्वीर)	मन्नू भंडारी	४७
४८.	खोटे सिक्के (तीन निगाहो की एक तस्वीर)	मन्नू भंडारी	५७
४९.	घुटन (तीन निगाहो की एक तस्वीर)	मन्नू भंडारी	६१

क्रम	पुस्तक	लेखक	पृष्ठ संख्या
५०.	हार (तीन निगाहो की एक तस्वीर)	मन्नू भंडारी	८१
५१.	चश्मे (तीन निगाहो की एक तस्वीर)	मन्नू भंडारी	१११
५२.	क्षय (यही सच है कहानीसंग्रह)	मन्नू भंडारी	
५३.	मन्नू भंडारी का रचना संसार	डॉ. बीना ईप्पन	४६
५४.	तीसरा आदमी (यही सच है कहानीसंग्रह)	मन्नू भंडारी	३९
५५.	सजा (यही सच है कहानीसंग्रह)	मन्नू भंडारी	७२
५६.	नकली हीरे (यही सच है कहानीसंग्रह)	मन्नू भंडारी	८५
५७.	नशा (यही सच है कहानीसंग्रह)	मन्नू भंडारी	९५
५८.	इन्कम-टैक्स और नींद (यही सच है कहानीसंग्रह)	मन्नू भंडारी	१०३
५९.	रानी माँ का चबूतरा (यही सच है कहानीसंग्रह)	मन्नू भंडारी	१२२
६०.	मन्नू भंडारी के कथा साहित्य में मानवजीवन की समस्याओं का निरुपण	डॉ. दिलीप मेहरा	७३
६१.	यही सच है (यही सच है कहानीसंग्रह)	मन्नू भंडारी	१३४
६२.	यही सच है (यही सच है कहानीसंग्रह)	मन्नू भंडारी	१३५

क्रम	पुस्तक	लेखक	पृष्ठ संख्या
६३.	नई नौकरी (एक प्लेट सैलाब कहानीसंग्रह)	मन्नू भंडारी	११
६४.	बंद दराजो के साथ (एक प्लेट सैलाब कहानीसंग्रह)	मन्नू भंडारी	२३
६५.	छत बनानेवाले (एक प्लेट सैलाब कहानीसंग्रह)	मन्नू भंडारी	४९
६६.	संख्या के पार (एक प्लेट सैलाब कहानीसंग्रह)	मन्नू भंडारी	८५
६७.	कमरे कमरा और कमरे (एक प्लेट सैलाब कहानीसंग्रह)	मन्नू भंडारी	१०७
६८.	मन्नू भंडारी का रचना संसार	डॉ. बीना ईप्पन	५४
६९.	आते जाते यायावर (त्रिशंकु कहानीसंग्रह)	मन्नू भंडारी	१३
७०.	दरार भरने की दरार (त्रिशंकु कहानीसंग्रह)	मन्नू भंडारी	२७
७१.	स्त्री सुबोधिनी (त्रिशंकु कहानीसंग्रह)	मन्नू भंडारी	३९
७२.	शायद (त्रिशंकु कहानीसंग्रह)	मन्नू भंडारी	४५
७३.	एखाने आकाश नाई (त्रिशंकु कहानीसंग्रह)	मन्नू भंडारी	१२६
७४.	एखाने आकाश नाई (त्रिशंकु कहानीसंग्रह)	मन्नू भंडारी	१३१
७५.	बिना दिवारों के घर	मन्नू भंडारी	१५
७६.	महाभोज का नाट्यरूपांतर	मन्नू भंडारी	८

:: तृतीय अध्याय ::

❁ मन्नू भंडारी का कथा साहित्य विषद् परिचय

★ मन्नू भंडारी का उपन्यास साहित्य

१. एक इंच मुस्कान

२. आपका बंटी

३. महाभोज

४. स्वामी

५. कलवा

★ मन्नू भंडारी का कहानी साहित्य

१. मैं हार गई कहानीसंग्रह

२. तीन निगाहों की एक तस्वीर कहानीसंग्रह

३. यही सच है कहानीसंग्रह

४. एक प्लेट सैलाब कहानीसंग्रह

५. त्रिशंकु कहानीसंग्रह

★ मन्नू भंडारी का नाट्य साहित्य

१. बिना दीवारों के घर

२. महाभोज नाट्य रूपान्तर

तृतीय अध्याय

❖ मन्नू भंडारी के कथा साहित्य का विषद परिचय :-

⁘ उपन्यास साहित्य :

उपन्यास आज साहित्य की अत्यंत लोकप्रिय एवं सशक्त विद्या हैं । मनोरंजन का तत्त्व उसे लोकप्रियता और जीवन का व्यापक अंकन शक्ति संपन्नता देता हैं । नाटक और कहानी भी आदमी का मनोरंजन करते हैं, परंतु नाटक जहाँ रंगमंच की सीमाओं से बँधा हुआ हैं, वहाँ कहानी भी जीवन के संश्लिष्ट एवं वैविध्यपूर्ण पक्षों को चित्रित करने में अक्षम हैं । उपन्यास की सफलता जीवन को उसकी समग्रता एवं व्यापकता के साथ समाहार करने की दृष्टि से महाकाव्य के समकक्ष हैं ।

उपन्यास जीवन के हर गली-कूचे में घूम सकता है, आवश्यकतानुसार हर छोटी-बड़ी चीज का चित्र अंकित कर सकता हैं । अर्थात् उसका मूल उदेश्य होता हैं - ''यथार्थ का विश्वास दिलाते हुए आगे चलना ।'' उपन्यास को मात्र मनोरंजन की वस्तु मानना उसकी मूल शक्ति और महत्त्व की अवमानना करना हैं ।[१]

हिंदी उपन्यास मूलतः सामाजिक यथार्थ का संवाहक रहा हैं । हिंदी के पहले उपन्यास 'परीक्षा गुरु' में तत्युगीन भारतीय समाजका चित्र, पुनर्जागरण की चेतना और मूल्यों की ध्वनि झंकृत होती है । इसके बाद मनोरंजन प्रधान तिलिस्मी, एय्यारी और जासूसी उपन्यास लिखे गए, परंतु हिंदी उपन्यास की विकास-यात्रा में उनका महत्त्व सिर्फ पाठकों में अध्ययन रुचि जाग्रत करने की द्रष्टि से हैं ।

प्रेमचन्द ने सबसे पहले सामाजिक यथार्थ को पहचान, मानव-मन की दुर्भेध तहों में झाँका और व्यक्ति तथा समाज का

सापेक्षिक चित्र प्रस्तुत करते हुए हिंदी उपन्यास साहित्य के भंडार को भरा ।

प्रेमचन्द की इसी परंपरा का विकास समाजवादी और सामाजिक चेतना के उन्नायक उपन्यासकारोंने किया ।

साहित्यकार संवेदनशील प्राणी है । सामाजिक तो वह होता ही है । सामाजिक परिस्थितियाँ अपने घात-प्रतिघात से उसे निरंतर प्रभावित करती हैं । अपनी अभिव्यक्ति के लिए वह साहित्य की किसी भी विद्या का प्रश्रय क्यों न ले, युग-चेतना के स्वरों का उसकी रचना में निनादित हो उठना अवश्यंभावी है एक ही युग-चेतना भी भिन्न-भिन्न विचारधारा के व्यक्तियों द्वारा अपनी निजी संवेदना के अनुरुप ग्रहण की जाती हैं ।

साहित्यकार युगीन यथार्थ को अपनी संवेदना एवं व्यक्तित्व के साँचे में ढालकर उसे एक नया रूप, नया मार्दव देता है । उपन्यास चाहे सामाजिक हो, मनोवैज्ञानिक या ऐतिहासिक हो, वही लेखक की संवेदना का मुखर बयान करता है ।[२]

उपन्यास शब्द संस्कृत का है जिसका अर्थ है - निकट रखना । नाट्यशास्त्र में प्रतिमुख संधि का एक उपभेद भी इसी नाम से अभिहित है -

''उपस्थितिकृतोह्यर्थः उपन्यासः प्रकीर्तितः''[३]

अर्थात् युक्तियुक्त रूप में प्रस्तुत अर्थ उपन्यास माना जाता है । तेलुगू आदि दक्षिण भारत में उपन्यास के लिए 'नवल' शब्द का प्रयोग होता है । जो अंगरेजी के 'नोवेल' पर आधारित है । मराठी में 'कादम्बरी' के नाम से (Novel) जाना जाता है ।

हिन्दी के पाश्चात्य और भारतीय समीक्षको एवं साहित्यकारों ने उपन्यास की विभिन्न परिभाषा दी है -

❈ प्रेमचंद :

‘‘मैं उपन्यास को मानव चरित्र का चित्र मात्र समझता हूँ । मानवचरित्र पर प्रकाश डालता और उसके रहस्यो को खोलना ही उपन्यास का मूल तत्त्व है ।’’[४]

❈ डॉ. त्रिभुवन सिंह :

‘‘साहित्य क्षेत्र में उपन्यास ही एक ऐसा उपकरण है जिसके द्वारा सामूहिक मानव जीवन अपनी समस्त भावनाओं एवं चिंताओ के साथ सम्पूर्ण रूप से अभिव्यक्त हो सकता है । मानव जीवन के विविध चित्रों को चित्रित करने का जितना अधिक अवकाश उपन्यासों में मिलता है उतना अन्य साहित्यिक उपकरणो में नहीं. ।’’[५]

❈ श्यामसुन्दर दास :

मनुष्य के वास्तविक जीवन की काल्पनिक कथा उपन्यास को मानते है ।

❈ बाबु गुलाबराय :

बाबू गुलाबराय की परिभाषा पूर्णता के निकट है । ‘‘उपन्यास कार्य-कारण श्रृंखला में बंधा हुआ वह गद्य कथानक है, जिसमें अपेक्षाकृत अधिक विस्तार तथा पेचीदगी से सम्बन्धि वास्तविक काल्पनिक घटनाओं द्वारा मानव-जीवन के सत्य का रसात्मक रूप से उद्घाटन किया जाता है ।’’[६]

उपन्यास विद्या में जितनी गतिशीलता, विविधता और व्यापकता है और किसी साहित्यिक की सुप्रसिद्ध एवं बहुत चर्चित कथाकार मन्नू भंडारी के कथा साहित्यका क्रमशः विश्लेषण किया जा रहा है ।

❈ मन्नू भंडारी के उपन्यास :

मन्नू भंडारी के पांच उपन्यास प्रकाशित हुए है । एक उपन्यास

राजेन्द्र यादव के सहलेखन में लिया गया है और एक बालपयोगी उप हैं ।

(१) एक इंच मुस्कान :

मन्नू भंडारी ने मुख्य रूप से कहानियों की रचना की है, किन्तु अपनी पति राजेन्द्र यादव के साथ सम्मिलित रूप से 'एक इंच मुस्कान' उपन्यास की भी रचना की हैं । इस उपन्यास से पहले हिंदी में 'बारह खंबा' का प्रयोग सहयोगी उपन्यास के रूप में किया गया था । किंतु पाँच-छः खंबो से आगे प्रगति नहीं की जा सकी थी ।

'ग्यारह सपनों का देश' अवश्य पूरा हो सका था । उसके बाद 'एक इंच मुस्कान' प्रकाशित हुआ । जिसमें ३०२ पृष्ठ हैं । अन्त में २५ पृष्ठों में राजेन्द्र यादव और मन्नू भंडारी ने अपना-अपना वकतव्य लिखा हैं, जिनसे इस तथ्यों का बोध होता है -

(१) आलोच्य उपन्यास की रचना अत्यंत संघर्षशतल परिस्थितियों में हुई है ।

(२) इसका कथानक मुख्य रूप से श्रीमती मन्नू भंडारी का था

(३) जब यह उपन्यास धारावाहिक रूप से 'ज्ञानोदय' में प्रकाशित हुआ था तब लेखिका द्वारा लिखित परिच्छेद पाठकों ने अपेक्षाकृत अधिक पसन्द किये थे ।

इस उपन्यास में चौहद परिच्छेद हैं, जिनमें विषम संख्यक पहला, तीसरा, पाँचवा..... परिच्छेद राजेन्द्र यादव द्वारा लिखित हैं और समसंख्यक परिच्छेदों की रचना मन्नू भंडारी ने की हैं ।[७]

प्रस्तुत उपन्यास को मूलतः मन्नू भंडारीने लिखा था । उस मूल रूप का नामकरण राजेन्द्र यादव ने किया था । मन्नू के उपन्यास की कहानी मूलतः 'अमला की कहानी' थी किंतु सहयोगी उपन्यास में

वह कहानी 'अमर की कहानी' बन गई हैं ।

ऋग्वेद का एक मंत्र हैं, जिसमें यह कहा गया है कि एक वृक्ष पर दो पक्षी रहते हैं । उनमें से एक पक्षी वृक्ष के स्वादिष्ट फलों का उपभोग करता हैं तथा दूसरा द्रष्टा मात्र बना रहता हैं । कलाकार व्यक्ति के संबंध में यह मंत्र प्रयुक्त किया जा सकता है । उसकी देह में एक साथ पिता, पुत्र आदि संबंधो के माध्यम से जीवन को भोगनेवाला 'आदमी' और इस आदमी को तटस्थ रूप से देखनेवाला कलाकार दोनों होते हैं । 'आदमी' का द्रष्टा बनने बाला व्यक्तित्व भोगनेवाले व्यक्तित्व से सर्वथा अप्रभावित बना रहे, यह केवल कल्पना में ही संभव हैं ।

कलाकार का व्यक्तित्व अपनी कला साधना के प्रति समर्पित हो, तभी वह अपनी कला को निखार सकता हैं । कलेतर क्षेत्र की जिम्मेदारियां उसे कलाकार की निस्संग दृष्टि से वंचित रखती है ।[८] इसलिए कलाकार को जिम्मेदारियों से मुक्त रहना चाहिए । ऐसा माना जाता है । अगर जिम्मेदारी से मुक्त रहने के लिए नौकरी नहीं करती और अहं की सुरक्षा के लिए किसी का आश्रित बनकर नहीं रहना, तो एकमात्र मार्ग लेखन का पेशा हैं । यह पेशा भी सम्मानजनक बन सकना चाहिए । यहां लेनिन का विचार हमारे ध्यान में आता है । लेनिनने कला-साधना को स्वतंत्र व्यवसाय के रूप में मान्यता नहीं दी थी । अर्थाधिष्ठित होने पर कला में विकृतियों के आने से वह आशंकित था । जो भी हो, 'एक इंच मुस्कान' का अमर लेखन को स्वतंत्र एवं सम्मानजनक पेशे के रूप में अपनाना चाहता हैं ।

'एक इंच मुस्कान' में मुख्य रूप से तीन पात्र हैं - अमर, रंजना और अमला । समस्त कथानक में तीनो पात्रो की परिस्थितियों, मनःस्थितियों क्रियाओं एवं प्रतिक्रियाओं का ही आलेखन हुआ है ।

अमर के मनोविज्ञान को राजेन्द्र यादव ने प्रस्तुत किया है और रंजना और अमला की ओर से मन्नू भंडारी ने लिखा है । अमर एक लेखक है वह बाह्य परिस्थितियों की अपेक्षा अपनी मानसिक प्रतिक्रियाओं में अधिक जीता है । रंजना उसकी प्रेयसी थी, जो उसके व्यक्तित्व को उसकी सम्पूर्ण दुर्बलताओं एवं सबलताओं के साथ चाहती थी ।[६] अमरने भी पहले उसे अपना पूरक माना था, उसे लेकर विवाह तथा अन्य सुख-सुविधाओं के स्वप्न सँजोये थे । उसी की प्रसन्नता के लिये रंजना अपने माता-पिता से लड़-झगड़कर दिल्ली चली आई थी और एक कॉलेज में अध्यापन कर स्वतन्त्र जीवन यापन कर रही थी । विवाह के पूर्व अमर अपने उपन्यासों की पाठिका एवं पत्र-मित्र अमला से मिला जो उच्च वर्ग की विडम्बना से प्रताड़ित, पति द्वारा त्यकता, अहम्मनया नारी थी । उसने अमर को परामर्श किया कि वह विवाह न करके स्वतन्त्र जीवन-यापन करे तो उसका सृष्टा व्यक्तित्व अधिक ऊँचा ऊठ सकेगा । उसकी यह बात अमर के अन्तःकरण पर इतनी छा गई कि फिर उसने चाहे अपने घनिष्ठ मित्र टंडन और उसकी पत्नी मंदा के आग्रह से रंजना से विवाह कर लिया, किन्तु उसका विवाहित जीवन सुखी न हो सका । उसका जीवन मानसिक अन्तद्वन्द्व का स्थान बन गया । एक ओर थी रंजना, उसका प्रेम, समाज-संस्कार और दूसरी ओर थी अमला की सायास मुस्कान जो उसे दूसरी ओर से मुक्त हो जाने की भावना से भरती हुई सृजन की प्रेरणा देती थी । इस खींचातानी का परिणाम यह हुआ कि अन्त में उसकी पत्नी रंजना निराश होकर उसे त्याग कर चली गई । उधर रहस्यमयी अमला ने भी एक दिन जीवन से ऊबकर आत्मघात कर लिया ।

अमर उपन्यास का नायक है, उसका 'व्यक्ति' खंडित, स्खलित

एवं द्वन्द्वमय है । अपने 'लेखक' व्यक्तित्व को सर्वोपरि रखने की चाह उसमें इतनी प्रबल है कि उसका 'व्यक्ति' अमर विशेष उभर ही नहीं पाता और अन्त तक उनका जीवन एक दुःखमयी विडम्बना बनकर रह जाता हैं । प्रेमी, पति, लेखक, मित्र किसी रूप में भी वह विशेष सफल नहीं हैं । अमला और रंजना भिन्न स्वभाव एवं भिन्न वर्गो की दो प्रताड़िता नारियाँ हैं - ''अमला को उच्च वर्ग की विडम्बना ने मारा था और रंजना को एक सनकी की प्रवंचना ने ।[१०] यों पाठको की सहानुभूति दोनों के साथ है, किन्तु अमला का व्यक्तित्व एक कुंठित रहस्य-सा बनकर रह गया हैं ।[११] समाज तथा परम्परागत संस्कारो का उसके पास कोई मूल्य नहीं । वह अपने 'अहं' में जीती है और अपने सम्पर्क में आनेवाले प्रत्येक पुरुष को अपने से प्रभावित देखना चाहती हैं। उसकी वासना प्रेरित मानसिक ग्रन्थियाँ उसके मनमें अनेक अनैतिक भावनाओं को जन्म देती है और उनकी तृष्टि के लिये वह अपने सम्पर्क में आनेवाले पुरुषों को साधन बनाती हैं ।[१२] रंजना परम्परागत संस्कारों से प्रभावित एक सीधी एवं समर्पिता नारी हैं । वह अमर से प्रेम करती है तो उसके लिये माता-पिता, धन, सुख-ऐश्वर्य सब को ठुकरा देती है। अन्य पत्नियों की भांति उसकी भी यह इच्छा है कि उसका पति केवल उसका होकर रहे, उनका सुन्दर और स्वच्छ घर हो, बच्चे हों किन्तु 'अमर' की 'सनक' के रहते उसकी कोई कामना तृप्त नहीं हो पाती । नीरस जीवन का बोझ ढोने से ऊबकर अन्त में पति-गृह को त्याग देती है, जिससे अमर निर्द्वन्द्व होकर जीवन-यापन कर सके । इन दोनों नायिकाओं के मन की व्याख्या करने में मन्नू भंडारी को सफलता मिली हैं ।

विवाह के बाद रंजना के पजेसिव रूप को अमर नहीं सह सका ।

वह दांपत्य जीवन को तन्मय होकर नहीं जी सका । इसलिए रंजना को शिकायत रही ....

''निकटतम क्षणों में भी मैंने तुम्हारे शरीर का दबाव ही महसूस किया है, उस गर्मी का कभी अहसास ही नहीं हुआ जो प्यार से उत्पन्न होती है और जिसमें मन की जड़ता गल जाती है और अलगाव की सीमाएं डूब जाती हैं ।''?[१३]

अमर ने रंजना से विवाह करने के बाद पाया कि रंजना और उसका लेखन पूरक न हो सकेगा । अमर की महिला - मित्रों को रंजना सहजता से अपना न सकी । यह कहा जाए कि रंजना अमर की कला को न समझ पाई । दूसरी ओर अमर जैसे व्यक्ति के लिए विवाह साधन था । रंजना के समान वह विवाह को साध्य नहीं मान सकता था । अमर ने रंजना को इसलिए चाहा था कि वह ''अपनी साधना को दुगुनी शक्ति और निष्ठा से चलाए रख सके ।''[१४]

मन्नू भंडारी ने पात्रों के मनोविज्ञान को स्पष्ट करने के लिए उनकी चिन्तना को व्यक्त किया है, वहाँ संवादो ने भी योग दिया हैं उनके कथोपकथन में कहीं वे सामान्य हैं, कहीं विशेष कहीं लघु है और कहीं दीर्घ । संवादो की विशेषता यह है कि वे सर्वत्र वकता के व्यक्तित्व को साकार करने में सहयोगी रहे हैं । संवादों की भाषा भी प्रायः पात्रानुरुप हैं । वार्तालाप करते हुए पात्रों की मुखाकृति, भाव भंगिमा आदि का इतना सजीव उल्लेख हुआ है कि पाठक को सब कुछ प्रत्यक्ष प्रतीत होने लगता हैं - जैसे

''तुम्हारे जाने के कुछ देर बाद ही अचानक अमला आ गई अपनी ओर देखती रंजना की दृष्टि से बचने के लिए ही जैसे अमरने कहा - आप तो कश्मीर गई थी न ? इतनी जल्दी लौट आई ? फिर

खबर सूचना कुछ भी नहीं ? रंजनाने कुछ इस ढंग से पूछा माने, अमर के 'अचानक' शब्द की सत्यता को अच्छी तरह जान लेना चाहती हो । 'मेरे प्रोग्राम तो मेरी सनक पर निर्भर करते है और सनक हरक्षण बदलती रहती हैं ।' फिर सोफे पर बैठती हुई बोली, 'खबर-सूचना तो मैं कभी देती नहीं - अचानक मिलकर सामनेवाले को स्तम्भित कर देने का भी एक आनन्द होता हैं, रंजना ।' और अमला मुस्करा दी ।''[१५]

भाषा और शैली की द्रष्टि से देखे तो दोनों लेखकों में भिन्नता हैं - राजेन्द्र यादव की भाषा प्रायः प्रौढ़ एवं गम्भीर है, किन्तु मन्नू भंडारीने सरस, रोचक एवं प्रवाहपूर्ण भाषा-शैली का प्रयोग किया हैं । इसका मूल कारण यह है कि मन्नू अधिक भावुक हैं तथा राजेन्द्र की प्रकृति अधिक चिंतनशील । मन्नू के अध्यायों के अंत प्रायः भावुकता के कारण पाठकों को अपने साथ बहा ले जाते हैं जैसे - चौथे अध्याय के अंत का प्रसंग - रंजना सोचती हैं - ''अमर को उसकी आवश्यकता नहीं तो उसे भी अनचाहे व्यक्ति की तरह किसी के जीवन में प्रवेश करने का शौक नहीं । मेरा भी आत्मसम्मान है, अपना अहं हैं, नहीं नहीं नहीं ! मेरा कोई आत्मसम्मान नहीं, कोई अहं नहीं मेरा तो अमर हैं .... केवल अमर हैं .... ।''[१६]

राजेन्द्र यादव की शैली मानसिक द्वंद्वो के कारण प्रवाह की द्रष्टि से गंभीर हैं । पहला ही अध्याय मानसिक द्वंद्व का निदर्शक हैं । उपन्यास के प्रारंभ में ही इसे देखा जा सता हैं अमर सोचता है - ''यह सागर पानी का नहीं तरल अंधकार का हैं........ और यह तरल अंधकार बाहर नहीं, भीतर ही कहीं दूर-दूर के क्षितिज बहाता चला आया हैं ।''[१७]

हम कह सकते है कि राजेन्द्र यादव की शैली में सागर का आलोड़न हैं और मन्नू की शैली में नदी का प्रवाह ।

प्रस्तुत उपन्यास में राजेन्द्र यादव ने विभिन्न लेखकों के उद्धरणों का प्रयोग किया हैं । अमरने रंजना के पजेसिव प्यार के प्रसंग में हाउसमैन की पंक्तियां पढ़ी हैं - एफ योर हैंड ओर फुट ऑफेड यू । कट इट ओफ, लैंड एण्ड बी होल ।''[१८]

अमर के अंतर्द्वंद्व के संदर्भ में ये पंक्तियाँ महत्त्वपूर्ण हैं । अमर ने एक बार गाना सूना । - ''उम्रे दराज मांग के लाए थे चार दिन दो आरजू में कट गए दो इंतजार में ।'' इस गीत की पंक्तियाँ उसके भीतर उतर गई । ''सचमुच, उसने बेचारी रंजना के साथ धोखा ही तो किया हैं .... कह दो इन हसरतों से कहीं और जा बसें - इतनी जगह कहां हैं दिले दागदार में ....'' उस बेचारी ने अमर के लिए क्या नहीं किया ? है कितना बदनसीब जफर दफन के लिए .... दो गज जमी भी मिल न सकी कूए यार में ....'' असहाय .... अकेला .... अनसमझा ।''[१९]

मन्नू भंडारी और यादव ने पत्रों का उपयोग किया हैं । 'एक इंच मुस्कान' का बारहवां अध्याय पत्रों के रूप में हैं । अमर और अमला के पत्र आत्मीयतापूर्ण शैली में उपन्यास में जहां-तहां हैं । डायरी शैली का प्रयोग किया हैं । नौवां परिच्छेद पूरा का पूरा अमर की डायरी के रूप में लिखा गया है । अमर की मनःस्थिति को समझने के लिए रंजना ने अमर की डायरी चोरी से पढ़ी हैं ।

शैली की दृष्टि से यह एक नूतन प्रयोग है कि एक ही उपन्यास में पुरुष लेखकने पुरुष पात्रों के मनोविज्ञान को प्रस्तुत किया है और मन्नू भंडारीने स्त्री पात्रो के अन्तर्जगत् एवं बहिर्जगत् की क्रियाओं

प्रतिक्रियाओं का चित्रण किया हैं । लेखिका के अभिव्यंजना-शिल्प की विशेषता यह है कि वे पात्रों के साथ एकाकार होकर उनका जीवन अंकित करती हैं इसके बारे में राजेन्द्र यादव ने कहा है -

''मेरे और मन्नू के लेखन में यही मौलिक अन्तर हैं वह कथा के पात्रो के साथ इतनी अधिक एकाकार हो जाती है कि उनका 'दुर्भाग्य' उसे अपना 'दुर्भाग्य' लगता है ।''[२०]

मन्नू भंडारी ने अपने इस उपन्यास के विषय में स्वयं लिखा है कि - ''इसमें सन्देह नहीं कि पहला अध्याय मुझे बहुत - बहुत पसन्द आया और दूसरा अध्याय अच्छी ही नहीं आशा से अधिक अच्छा लिखा गया । .... वही तीसरा और चौथा अध्याय शिथिल बन गया । अपने-अपने वकतव्य के अन्तर्गत लेखिकाने स्वीकार किया है कि वह हमेशा अमला और रंजना के बीच में ही रही है । रंजना के प्रति अमर का व्यवहार उसे बेहद कष्ट देता था । रंजना ने दो अध्यायों में मुझे सचमुख बहुत रुलाया, अमला जब-जब आती मन एक गहरे अवसाद एक अजीब-सी खिन्नता, उदासी और विरक्ती से भर उठता । यह मैं आज भी नहीं जानती कि पात्रों के साथ अपने को यू एकाएक कर देने के वृत्ति लेखन में सहायक है या बाधक । वह बनाती है या बिगाड़ती पर इस एकात्मकता को इस बार मैंने अनुभव किया और बड़ी गहराई से .... एक और भी अनुभव किया वह उतना ही नया था ।''

मन्नू भंडारी अमला को बर्दाश्त नहीं कर पाई वह जिस रूप में अमला को चाहती थी वह उससे सवर्था भिन्न थी । अमला के विषय में उसने लिखा है कि विशिष्ट वर्ग में चली बुद्धिवादिनी अहम्‌वादिनी अमला जब सबको ही झुठलाती, अस्वीकारती चली गई यो भला मेरे

वश में क्यों आती ।........

अलंकार प्रयोग की दृष्टि से विचार करे तो उपन्यास में अलंकारो का प्रयोग कहीं भी स्वतंत्र होकर अलग से नहीं हुआ अमला ने अपने एक पत्र में अमर को लिखा हैं -

''इस समय तो हमारे दिमाग में धुआंधार की संगमरमर की चट्टानें, उनके बीच छोटी सी 'झील' और अकेली डोंगी .... शरदपूर्णिमा की रात की उंगलियों में थिरकता, सुनहरा शराबभरा बिल्लौरी पैमान ।''[२१]

रंजना का विवाह निश्चित होने पर उसकी प्रसन्नता - ''रंजना आसमान की ओर ताकती हैं, तो सतरंगी इंद्रधनुष खिल उठते हैं और नीचेकी और निहारती है तो क्यारियों में रगं-बिरंगे फूल झूमझूमकर मुस्करा उठते हैं ।''[२२]

उपन्यास के शीर्षक पर विचार करे तो 'एक इंच मुस्कान' में 'सृष्टा व्यक्तित्व की उच्चतर मुक्तिकामना' की अभिव्यक्ति हुई हैं । इस उपन्यास की रंजना का प्रेम सच्चा और गहरा है किंतु उसका प्रेम ना हैं । देखों और कूं ना तुझ देखन देऊं' के रूप का है । 'दृष्टा' कलाकार बहिरंग और अंतरंग आंखों को बंद कर ले तो सृष्टा कैसे बन सकता हैं ? किसी की दर्द से बंधी बिखरी मुस्कान उसे आंखे खोलकर देखने को विवश कर देती हैं ।

'एक इंच मुस्कान' में कलाकार के जीवन की समस्या पर बड़ी गहराई से विचार किया गया हैं ।

शीर्षक के विषय में मन्नू भंडारी का कहान है कि - ''यह शीर्षक मुझे इस उपन्यास के लिए सार्थक नहीं लगता । और राजेन्द्र अभी भी इसे सार्थक मानते हैं ।''[२३]

(२) आपका बन्टी :

मन्नू भंडारी का यह उपन्यास 'आपका बंटी' इस नकली आधुनिकता से दूर आज की महानगरी जिन्दगी के एक पहलू की तीखी वास्तविकता का सही बोध करानेवाला उपन्यास हैं । हिन्दी का यह पहला उपन्यास है जिसमें एक विशेष परिस्थिति में पड़े हुए बच्चे की मनःस्थिति का इतने विस्तृत फलक पर चित्रांकन किया गया हैं ।

'' 'आपका बंटी' में बंटी नाम के एक ऐसे बालक की कथा है जिसे अपने पिता का स्नेह परिस्थितिवश नहीं मिल पाता और माता के लाड़-प्यार से उसके स्वतंत्र व्यक्तित्व का विकास ही नहीं हो पाता । अंततः वह अपनी माता के लिए ऐसी कटुस्थिति निर्माण कर देता है जिसके कारण कह उससे मुक्त होने की बात सोचने के लिए विवश हो जाती हैं ।''[२४]

मन्नू भंडारी का यह सर्वप्रथम मौलिक उपन्यास हैं । इसमें उन्होंने दाम्पत्य सम्बन्धों के विघटन और भावी पीढ़ी पर उसके प्रभावों को प्रस्तुत किया । बंटी की मानसिक स्थिति को लगभग दो सौ पृष्ठ में अभिव्यक्त किया हैं । बंटी के माता पिता शकुन और अजय है जो कि आधुनिक स्वतंत्र विचार धारा से प्रभावित हैं । दोनों अहं भावना से ग्रस्त है । शकुन और अजय कभी समझौता नहीं कर पाते हैं, जिसके कारण तनाव उत्पन्न हो जाता हैं परिणामतः दोनों एक दूसरे से कटकर रहने लगते हैं । शकुन अजय को छोड़कर, दिल्ली में बंटी के साथ रहने लगती हैं । वहाँ एक कॉलेज में प्रिंसीपल हैं । प्रिंसीपल ममी जितनी सख्त है, बंटी की ममी के रूप में उतनी ही कोमल । शकुन बंटी के साथ सात वर्षो से रहती है । अजय कलकता से बंटी से मिलने अक्सर आया करता था, वह खिलौने इत्यादि भी भेंट करता था तथा

घुमाने भी ले जाता था अजय बंटी को कलकता चलने को भी कहता है । बंटी ममी से बेहद प्यार करता है इसलिए ममी से दूर नहीं रह सकता । पति से अलग सहज अलग हुई पत्नी सन्तान के साथ रहने पर भी उसे ममत्व का सहज दस्य नहीं दे पाती या तो कम देती है या अतिरिक्त । बंटी चाहता है कि ममी-पापा साथ-साथ रहे । वह अपने ममी-पापा की लड़ाई और तनाव को नहीं समझ पाता है । अजय शकुन अलग तो पहले ही हो चुके थे । परन्तु कुछ समय पश्चात तलाक हो जाता है । शकुन बंटी का न तो हथियार के रूप में ही उपयोग कर सकी और नही उसे 'टार्चर' कर सकी । बंटी को वह सेतु के रूप में भी देखती है जो अजय और उसकी दूरी को मिटा देगा । परन्तु 'बंटी' सेतु भी नहीं बन पाता । शकुन का पति अजय उसके तलाक देने से पहले ही मीरा नामक दूसरी स्त्री से विवाह कर लेता है । इसलिए दोनों में तलाक अनिवार्य होता है । अजय से तलाक लेने के बाद शकुन ने भी अजय की तरह अपनी जिन्दगी को बदलने का प्रयत्न किया शकुन भी दूसरा ब्याह करती है, तब बंटी का भविष्य अँधेरे में पड़ जाता है । बंटी न तो डॉ. जोशी को - जिससे शकुन दूसरी शादी रचती हैं अपने पिता के रूप में स्वीकार कर सकता है, न अजय की दूसरी पत्नी मीरा को अपनी माँ के रूप में स्वीकार कर पाता है । फलस्वरूप उसे होस्टेल में रहने के लिए भेजा जाता हैं । शकुन डाक्टर जोशी से विवाह करती है यह दिखाने के लिए कि यदि अजय मीरा के साथ विवाह कर सकता है तो क्या वह विवाह नहीं कर सकती ? फूकी इस विवाह परिणाम को जानते हुए विद्रोह भी करती है परन्तु शकुन डॉ. जोशी से विवाह कर लेती है डॉ. जोशी विधुर है तथा पहली पत्नी से उनके एक पुत्र अमि तथा पुत्री जोत हैं । उसका व्यक्तित्व आकर्षक तथा सुलझा हुआ हैं, वह कठिन से कठिन समस्या

को भी आसानी से तथा सहज ढंग से हल कर देते हैं इन्हीं गुणों से शकुन डाक्टर जोशी से आकर्षित होती है ।

डाक्टर जोशी से विवाह करने के पश्चात शकुन अपनी कोठी छोड़कर जोशी की कोठी में बंटी के साथ रहने लगती है । बंटी सबके बीच भी अकेलापन महसूस करता है क्योंकि उसका फूल, माली, बाग बगीचे जिनसे उसका विशेष लगाव था वह सब पीछे ही छूट गए थे । बंटी महसूस करता है कि एक ममी ही तो उसकी थी परन्तु लगता है वो भी उसकी नहीं रही है । अमि-जोत, शकुन को माँ के रूप में स्वीकार कर लेते हैं परन्तु बंटी डॉ. जोशी को पापा के रूप में स्वीकार नहीं कर पाता । जोशी से जुडने के पश्चात् बन्टी के व्यक्तित्व के कई पहलू उभर कर आते है । उसके सोचने का दृष्टिकोण बदल जाता है । वह स्वयं को अपेक्षित महसूस करता है । और बंटी का व्यवहार बिल्कुल बदल जाता है और ममी को दुख पहुँचाने में उसे सुख की अनुभूति होती है और डाक्टर जोशी के शब्दों में यही से वह 'थोड़ा प्राब्लम चाइल्ड' बन जाता है ।

बंटी अपने पापा (अजय) को नहीं भुला पाता है तथा एकान्त में उन्हें पत्र भी लिखता है । बंटी की मनोस्थिति समझते हुए शकुन उसे उसके पापा के साथ कलकत्ता भेजने को राजी हो जाती है । अजय बंटी को कलकत्ता ले जाता हैं, बंटी वहां भी अपने को अकेला महसूस करता है वह ममी के रूप में मीरा को नहीं अपना पाता । पापा के पास आकर बंटी को ममी की बहुत याद आती है पर वह कुछ कह नही पाता । वह भीतर ही भीतर घुटने लगता है, सहज जिंदगी नहीं जी पाता । कभी विद्रोह, कभी उदासी, कभी अकेलापन उसे संत्रस्त बनाए रखता हैं ।

बंटीकी पीड़ा के प्रति अपनी संवेदनशीलता की वजह लेखिकाने खुद बताई है .... ''इस पूरी स्थिति की इस विडंबना यह है कि इस संबंधों के लिए सबसे कम जिम्मेदार और सब ओर से बेगुनाह बंटी ही इस ट्रेजडी के त्रास को सबसे अधिक भोगता है । शकुन-अजय के संबंधो का तनाव और चटख बंटी की नस-नस में ही प्रतिध्वनित होती है । स्थिति की इस विडंबना ने ही मेरे मन में एक आतंक जगाया था । शकुन-अजय के आपसी संबंधो में बंटी चाहे कितना ही फालतू और अवांछनीय हो गया हो, परंतु मेरी दृष्टि को सबसे अधिक उसीने आकर्षित किया । वस्तुतः उपन्यासकार के लिए अप्रतिरोध्य चुनौती, सहानुभूति और मानवीय करुणा के केन्द्र सिर्फ वे ही लोग हो पाते है, जो कहीं न कहीं फालतू हो गए हैं ।'' बंटी के पापा (अजय) उसे होस्टेल भेजने की व्यवस्था कर रहे हैं । ममी से तो वह पहले ही कट चुका होता है और यहाँ आकर वह पापा से भी कट जायेगा । वह अकेला ही रह जायेगा ।

''यह आधुनिक जीवन की जटिलता का शाप है जिसे हम पहचानते तो है परन्तु जिसका समुचित हल या निदान हमारे पास नहीं हैं ।''[२५]

यहाँ एक प्रश्न यह उठता है कि बंटी वर्गगत पात्र है या व्यक्तिगत पात्र ? लेखिका ने तो उसे वर्ग-पात्र ही बनाना चाहा है, तभी वह 'आपका बंटी' हो गया है । लेकिन भारतीय समाज में न तो ये पारिवारिक स्थितियाँ अधिसंख्य मिलती है और न ही हर बालक में एक अतिरिक्त जीवन संवेदना ही होती है । किंतु बंटीने अपने परिवेश के प्रति भी अत्यंत संवेदनशील है । वह वर्ग पात्र होकर भी व्यक्ति पात्र ही अधिक हैं ।

बंटी को माध्यम बनाकर शकुन और अजय एक-दूसरे के प्रति अपने भीतरी असंतोष और आक्रोश को समर्पण भाव में बदलने की कोशिश करते हैं । उनका निष्ठुर अहं बंटी के संवेदनशील व्यक्तित्व के कोमल तंतुओं को धीरे-धीरे नष्ट करता रहता हैं । बंटी के लिए एक घर में उसकी ममी है, किंतु पापा नहीं दूसरे घर में उसके पापा है, किंतु ममी नहीं । इसलिए उसकी नियति वहाँ रहने में हैं जहाँ दोनों में से कोई नहीं और शायद वह खुद भी नहीं हैं । बंटी को होस्टेल भेज दिया जाता है । इस परिवर्तन को बंटी नहीं चाहता, पर इसमें उसकी इच्छा-अनिच्छा का सवाल नहीं हैं । यहाँ कोई विकल्प ही नहीं हैं । सब कुछ नया खरीद दिया गया है । जैसे बंटी की अब तक की सारी पहचान, सारी अनुभूतियाँ ही निःशेष कर दी गई हो । एक स्थिति से दूसरी स्थिति तक संक्रमण के बीच उसकी सारी चेतना संवेदनशून्य भौंचक-सी हो उठी हैं ।

इस उपन्यास में बंटी की पीड़ा पाठकों पर मर्मस्पर्शी प्रभाव डाले बिना नहीं रहती । लेकिन केवल पाठकों की करुणा जगाना लेखिका के उपन्यास लिखने का प्रयोजन नहीं हैं । वह बुद्धि के स्तर पर पाठकों को इस ज्वलंत समस्या के विषय में सोचने को प्रेरित करना चाहती हैं । आज के जीवन में व्याप्त रिक्तता, उदासी और परिस्थितिजन्य विवशता के कारण व्यक्ति भीतर-ही भीतर टूटते जाने की नियति इस उपन्यास में चित्रित है । एक और आज की नारी की पीड़ा को इसमें बड़े संवेदनशील हाथों से छुआ गया है, तो दूसरी ओर आधुनिक जीवन की कृत्रिमता और खोखलेपन के भयावह संत्रास्त को भी बड़ी सूक्ष्मता से पकड़ा गया है । उपन्यास के विविध पात्र अपनी-अपनी उलझनों में फँसे रहने पर भी संघर्षो से जूझने की क्षमता, आत्मस्वीकृति

का साहस और समय-सत्य से साक्षात्कार करने का बल रखते हैं । हाँ बंटी अपनी आयु के बालकों से कहीं ज्यादा समझदार दिखाया गया है । इस प्रक्रिया में वह सर्वाधिक प्रतिभा संपन्न या अनुभूति-प्रवण बालकों को भी पीछे छोड़ जाता हैं, इसीलिए पूर्णतया काल्पनिक एवं अविश्वसनीय लगता है । डॉ. जोशी को पापा न कह पाने की यंत्रणा तो ठीक हैं, पर अजय के संदर्भ में ममी के उतार-चढ़ाव एवं सूक्ष्म अनुभूतियों का विश्लेषण करना, सेंट की घटना अपने पापा का परिवर्तित परिस्थितियों में विस्तार से विवेचन करना, कलकत्ते जाने पर अपनी नई मम्मी को 'वे' का संबोधन देने का गांभीर्य बहुत तर्कसंगत या स्वाभाविक नहीं प्रतीत होता ।

परंतु यह आलोचना उचित नहीं है । बंटी की कुशाग्र बुद्धि उसके बुद्धिजीवी माता-पिता की वंशानुगत देन है, तो उसका प्रौढ़ सोच और परिपक्व गांभीर्य उन परिस्थितियों की उपज है, जो उसे सामान्य बालक की भाँति देखने, सुनने, महसूस करने और यहाँ तक कि जीने भी नहीं देती । ''बंटी वर्ग-पात्र न रहकर व्यक्ति पात्र हैं । अपने ढंग का अकेला हमारा-आपका-सबका बंटी होते हुए भी लेखिका की नितांत निजी कलाकृति । जब उसकी परिस्थितियाँ आम बच्चों की जैसी नहीं हैं, तो उसका व्यवहार आम बालकों जैसा कैसे हो सकता हैं ?''[२६]

मन्नू भंडारी ने अजय का चित्रण अहंग्रस्त पुरुष के रूप में किया हैं पत्नी से वैचारिक विषमता होने पर वह उससे अपने सम्बन्ध समाप्त कर देता है लेकिन पुत्र बंटी के प्रति उसके मन में बेहद प्यार होता है । वह अक्सर बंटी से मिलने जाता है किंतु शकुन के लिए उसके मन में कोई लगाव नहीं रहता । शकुन के व्यक्तित्व को लेकर वह परेशान

रहता है । शकुन के विषय में अजय का मत एक 'डामिनेटिंग स्त्री' के रूप में था । निरन्तर तनाव की स्थिति में परेशान होकर अलग रहने लगते हैं । अलगाव के इस दौर में ही अजय मीरा के सम्पर्क में आता है पर बंटी का मोह उसे हमेशा ही रहता है ।[२७] जब वह तलाक की कार्यवाही के लिए शकुन के शहर आता है तो वह बंटी को अपने साथ कलकत्ता ले जाने के लिए वह उसे तरह तरह के प्रलोभन भी देता है । जिससे स्पष्ट ही प्रतीत होता है कि वह शकुन से सम्बन्ध पूरी तरह तोड़ कर बंटी के रूप में भी वह स्वयं को शकुन के पास मौजुद नहीं रहने दे सकता और आगे चलकर सफल भी होता हैं ।

अजय को मीरा सामान्य घरेलू स्त्री के रूप में ही मिलती है अतः मीरा और अजय का पारिवारिक जीवन सामान्यतः अच्छा ही रहता है । मीरा शकुन के विपरीत किसी हद तक अजय के अहं को तृष्टि प्रदान करती है और इसीलिए दोनो में बनती भी है । शकुन का पत्र पाकर अजय बंटी को लेने डॉ. जोशी के घर आता है । पर बंटी के एकाएक कलकत्ता जाने के निर्णय को लेकर उसके मनमें बंटी की दुरवस्था का सन्देह होता है कि कही बंटी प्रताड़ित तो नहीं किया जा रहा । वह एकान्त में बंटी से पूछता है - ''अच्छा बंटी ये डाक्टर साहब तुम्हें कैसे लगते है ?[२८] उनके बच्चों के विषय में भी पुछता है पर बंटी द्वारा सभी के लिए 'अच्छे हैं' कहे जाने पर उलझन में पड़ जाता है कि वह कारण नहीं जान पा सका बंटी फिर उनके साथ रहना क्यों नहीं बना पाता अतः उसे होस्टेल भेजने का निर्णय लेता है अजय को बंटी की चुप्पी बुरी तरह खलती है । 'क्या हाल हो गया है बच्चे का ? कितना सहमा-सहमा, डरा-डरा रहता है, यह सबसे कटकर रहेगा, अपने बराबरी के बच्चों के बीच में ही रहेगा तभी नार्मल होगा

हो खर्चा, जो भी हो । अंततः बंटी को समझा बुझाकर होस्टेल ले जाता है ।

बंटी के व्यक्तित्व-विघटन के मूल्य में उसके माता-पिता के टूटते रिश्ते काम करते हैं । उसके जीवन में जो बिखराव आया, जो संत्रास और कुंठा आई, उसके मूल में शकुन और अजय का टूटता संबंध है । बंटी का जीवन यातनाग्रस्त हो जाता है ।

शकुन का जीवन टूटन, घुटन, तनाव, बिखराव और यातना से ग्रस्त है । परिस्थितिर्यां के चक्रवात में बुरी तरह फंसने के कारण वह विवश और असहाय-सी बन गई है । अच्छी शिक्षा तथा बड़ा ओहदा (पद) प्राप्त करने के बावजूद मन से शकुन दुःखी है उसके हृदय में एक प्रकार की हलचल सी पैदा होती रहती है । पति के टूटते हुए सम्बन्धों के कारण उसका अन्तर्मन घोर यातना का शिकार बन जाता है तथा उसके अन्दर एक रिस बराबर सालती रहती है । पति के प्यार का बंधन ढीला होने के कारण उसने बेटे को कसकर पकड़ लिया था । पति द्वारा तिरस्कृत प्यार को भी उसने बेटे पर ही उँड़ेल दिया था । अतएव बंटी के प्रति उसका प्रेम भाव दुहरा था । वस्तुतः अपने पति अजय के रूप कों भी वह बंटी में देखा करती है, क्योंकि वह जानती है कि बंटीने अजय को ज्यों का त्यों इनहेरिट कर लिया है । परिस्थितियों ने शकुन को इस तरह झकझोर दिया है कि वह एकदम विवश और असहाय-सी बन गई हैं । उसकी जिन्दगी कई-कई त्रासदियों के बीच जूझती हुई झूल रही है । अपने अन्तः को सम्भाल पाना उसके लिए मुश्किल है । उसके मन का तो नहीं, किन्तु हृदय और भावना का सन्तुलन खराब हो गया है । इसलिए वकील चाचा की कही हुई बात पुनः उसे याद हो आती है कि .... ‘‘अजय

बहुत इगोइस्ट भी है और बहुत पजेसिव भी । अपने आप को पूरी तरह समाप्त करके ही तुम उसे पा सको तो पा सको । अपने को बचाए रखकर तो उसे खोना ही पड़ेगा ।''[२६]

शकुन अपने को समाप्त नहीं कर सकी थी, इसलिए उसे अजय को खोना पड़ा । वकील चाचा के परामर्श के अनुसार शकुन तलाक के कागज पर हस्ताक्षर करे देती है । वकील चाचा ने डॉक्टर जोशी के प्रति उसकी सुषुप्त प्रणय-संवेदना को उकसाकर वैवाहिक सम्बन्ध स्थापित करने का संकेत दिया था । समय और परिस्थितियों की सापेक्षता में उसकी प्रेम-संवेदना अंकुरित-विकसित होते होते एक दिन वैवाहिक सम्बन्ध में परिणत हो जाती है । शकुन नयी परिस्थिति में आकर थोडी-बहुत खुश भी होती है किन्तु बंटी के कारण उसकी परेशानी बढ़ती ही गई, यहाँ तक कि उसका सन्तुलन भी ढीला पड़ता गया ।

नारी चाहे पद और प्रतिष्ठा में कितनी भी बड़ी हो जाय किन्तु वह उस वल्लरी के समान होती है, जो किसी पुरुष रूपी वृक्ष को आलिंगित करके ही सन्तुलित व्यक्तित्ववाली बन पाती है । अजय द्वारा परित्यक्त होने के बाद उसका व्यक्तित्व रिक्त-सा हो गया है । उस रिक्तता को भरने के लिए वह डॉक्टर जोशी के साथ वैवाहिक सम्बन्ध स्थापित कर लेती हैं ।

शकुन का अजय से सम्बन्ध-विच्छेद हो चुका है, फिर भी उसे अजय की याद आती है । हालाँकि डॉक्टर जोशी को अजय के स्थान पर पति के रूप में उसने वरण कर लिया है, फिर भी मौके-बेमौके उसे उसकी स्मृति हो आती है । वह मन ही मन सोचती और कहती

है कि - ''डॉक्टर जान लें कि इस घर के लिए बंटी चाहे अनावश्यक हो, फालतु हो पर कोई है एक ऐसा भी घर है जहाँ बंटी की आवश्यकता है, बंटी की प्रतिक्षा हैं ।''

अजय और शकुन दोनों ही बंटी को एक माध्यम मानते रहे एक दूसरे को टोर्चर के लिए । यह एक मनोवैज्ञानिक तथ्य है । दोनों में दुःखअमूलक प्रवृत्ति काम करती है अर्थात् एक दूसरे के दुख में सुख की अनुभूति करते रहे ।

शकुन ने शादी कर ली और इससे अजय के अहं को कहीं चोट लगी है बंटी को ले जाकर वह केवल अपने उस आहत अहं को सहलाना चाहता है । वह शकुन को टोर्चर करना चाहता हैं ।

शकुन अपनी स्वार्थपूर्ति के लिए और पति से प्रतिशोध लेने के लिए बच्चे के बारे में सोचे बिना डॉ. जोशी से शादी करती है । वह बच्चे को पति से प्रतिशोध लेने का माध्यम भी समझती है । इसलिए वह बंटी को होस्टल भी नहीं भेजती है जिससे कि अजय बेटे से स्वतन्त्रापूर्वक मिल न सके । वह सोचती है - ''वह बेटे को कभी भी होस्टेल नहीं भेजेगी वह जानती है अजय बंटी को बहुत प्यार करता है, पर अब से वह बंटी को मिलने भी नहीं देगी । और बंटी से न मिल पाने की वजह से अजय को जो यातना होगी उसकी कल्पना मात्र से उसे एक क्रूर सा सन्तोष मिलने लगा ।''[३०]

शकुन स्वार्थपूर्ति और प्रतिशोध के लिए डॉ. जोशी से शादी करती है । उसे वकील चाचा की कही हुई बात बार-बार याद आती है -

''अजय अपनी जिन्दगी की नई शुरुआत कर सकता है तो तुम क्यों नहीं कर सकती ।''[३१]

मन्नू भंडारीने शकुन के माध्यम से यह समझाने का प्रयास किया है कि नारी पहले मात्र शरीर थी, अब तो वह अर्थ भी है । उसकी अर्जित सम्पति पति और परिवार की है पर उसका विकसित होता हुआ व्यक्तित्व तनाव का कारण है । उसका व्यक्तित्व उसकी चेतना उसके निर्णय किसी को स्वीकृत नहीं है । इसलिए अब परिवार टूटने लगे है । आज की नारी का आन्तरिक संकट पुरुष के साथ बनते बिगड़ते सम्बन्धों को लेकर उपन्यास में प्रकट हुआ है ।

❖ डॉक्टर जोशी :

डॉक्टर जोशी का प्रथम परिचय शकुन से बंटी की बीमारी के दौरान होता है । बंटी उसके इलाज से ठीक हो जाता है । यही परिचय सम्बन्धों को बढ़ाने के सहायक होता है । जोशी अपनी पहली पत्नी की मृत्यु हो जाने पर शकुन से शादी करता है उन्होंने अपनी पत्नी की मृत्यु की सूचना शकुन के जीवन के अकेलेपन को लक्ष्य कर कही थी । लेखिका के शब्दो में - उन्होंने बिना कुछ कहे ही बहुत कुछ कह दिया था । शायद ऐसी बातें कभी शब्दों की मुहताज नहीं रहती । लेकिन शकुन की ओर से कोई रुचि प्रदर्शित न किए जाने पर शकुन प्रतिस्पर्धा की भावना से प्रेरित होकर डॉक्टर जोशी की ओर झुकाव प्रदर्शित करना आरंभ करती है तो उनकी परस्पर आत्मीयता बढ़ने लगती है । डॉ. जोशी शकुन की शिक्षा सौंदर्य और रहन-सहन से प्रभावित होकर उससे समान स्तर पर पेश आते हैं उसे एक गंभीर और सुशिक्षित महिला के रूप में अपना कर पत्नी के अभाव की पूर्ति करना चाहते हैं । डॉ. जोशी के व्यक्तित्व में किसी किस्म का विरोध और कचकानापन नहीं है वे अत्यंत सुलझी हुई मनोवृत्ति के व्यक्ति है । उनके व्यक्तित्व की गंभीरता, उदारता के सम्मुख शकुन नत हो

जाती है । मानसिक यातना में डूबी हुई शकुन महसूस करती है कि -

''डॉक्टर की बातों में उसके सारे व्यक्तित्व में कुछ ऐसा है, जो शकुन की आश्वस्त करता है । डॉक्टर की सुलझी हुई जीवन द्रष्टि उसे बहुत सी उलझनों से उबार लेती हैं ।''

शकुन की दुनिया को वे भली भांति समझते है । वह शकुन से कालेज के मेनेजर ने डॉ. जोशी के विषय में पूछताछ की तो वह बौखलाकर नौकरी छोड़ने की बात करती है तब डॉ. जोशी ने उसके आवेश को शान्त करते हुए कहा - ''तुम नौकरी करो या छोड़ो यह बिल्कुल तुम्हारी अपनी इच्छा पर है आज मैनेजर को आपत्ति हुई तो तुमने नौकरी छोड़ दी और कल शहर को आपत्ति होगी तो तुम शहर छोड़ने की कहोगी इन आपतियों पर एक मिनट भी जाया करना मैं उचित नहीं समझता । इन लोगों का क्या हक है तुम्हारे व्यक्तिगत जीवन में हस्तक्षेप करने का ।''

उस बात को शकुन ने जितनी गंभीरता से ली थी डॉ. जोशी ने उतने ही हल्के रूप में लिया और अपना सुलझा हुआ मत शकुन को दिया ।

डॉ. जोशी ने बंटी की मानसिक जटिलता को भी महसूस किया । वे बंटी से बड़े ही सहज रूप में पेश आते है । बंटी की जिद और आग्रही वृति के लिये परिस्थितियों को जिम्मेदार मानते हैं । जोशी के मतानुसार शकुन बंटी पर जरूरत से ज्यादा हावी रही तभी वह पूरी तरह से लड़का नही बन पाया पर शकुन की भावनाओं का ख्याल करके बे कहते है - ''मैं तुम्हें दोष नहीं दे रहा, इस तरह की स्थिति में ऐसा हो जाया करता है, मैं तो स्थिति बता रहा था बंटी और शकुन के सम्बन्धों का विश्लेषण भी वे करते हैं - 'यह तुम मां

बेटों का चूमने और गले में बांहे डाल-डालकर लिपटनेवाला जो रवैया है वह अब बंद होना चाहिए ।'

इस कथन में बंटी के असामान्य होते जाने के कारणों की ओर संकेत है । बंटी को पिता का प्यार नहीं मिला था पर मां का प्यार आवश्यकता से अधिक मिला यही कारण है कि शकुन की डॉ. जोशी से निकटता बंटी को खलती थी । बंटी का यह भाव शकुन की पीड़ा का कारण बनता है । लेकिन डॉक्टर के अनुसार चीजों को सही ढंग से लिया जाय तो किसी दुविधा की संभावना नहीं रहेगी । बंटी को लेकर शकुन की परेशानी भी वह सहजता से लेते हुए कहते हैं -

''देखो शकुन तुम अपने पति की रोशनी में बंटी को देखोगी तो शायद कुछ गलत कर बैठो । मैं जानता नही, पर सोच सकता हुँ कि उनके लिए शायद तुम्हारे मन में कटुता होगी ..... अनजाने ही तुम उसी कटुता ..... पर यह ठीक नहीं होगा ।[३२]

इस वक्तव्य में डॉक्टर की समझ और उदारता द्रष्टव्य है । शकुन की क्षुब्धता जहा उसे सही ढंग से सोचने का मौका नहीं देती । डाक्टर वहाँ धैर्यपूर्वक काम लेते हैं । डाक्टर चाहते है कि अतीत की सारी क़ड़वाहट को भूलकर वह नई जिन्दगी की शुरुआत करे बंटी को अजय के पुत्र के रूप में न लेकर अपने बेटे के ही रूप में ले तो शकुन के लिए ज्यादा बेहतर होगा । शकुन की अत्यधिक परेशानी देखकर समस्या का हल खोजते हुए कहते है -

''अच्छा तुम बंटी की बात मुझ पर छोड़ दो । इस बात को लेकर अब तुम्हें ज्यादा परेशान होने की जरूरत नहीं है ।''[३३]

डॉ., शकुन को उसकी सम्पूर्णता में सुख-दुःखों के साथ अपना रहे हैं और उनकी यही सहृदयता और समझदारी शकुन को अपने

अनुकूल बना सकने में समर्थ होती है ।

डाक्टर, चंद्रकांत वांदिवडेकर ने ठीक ही लिखा है कि - 'डॉ. जोशी ने पूरी समझदारी और जिम्मेदारी के साथ उसे अपनाया ।

डॉ. जोशी में जिन्दादिली है, जिन्दगी के प्रति रूचि है, जीने की कला है । वह ऐसे किसी प्रसंग का स्मरण नहीं करना चाहते जिससे मन को तकलीफ हो हीनता का बोध हो । वे शकुन से उसके विगत दांपत्य जीवन के विषय में कभी भी पूछ-ताझ नहीं करते । वे शकुन से विवाहोपरान्त उसके स्वागत में अपनी कोठी नए ढंग से संवारते है । शकुन और बंटी का सपरिवार और आत्मीयतापूर्वक स्वागत करते हैं । बंटी उनके लिए वही है जो अमि और जोत हैं । वे बंटी के लिए अपनी दवाओं की आलमारी खाली कर देते हैं । उसके पढ़ने के लिए नयी मेज बनवा देते हैं । बंटी द्वारा नयी मेज अस्वीकृत करने पर वह बंटी से डांटते है - ''बंटी फिर तुमने वही किया ? ठीक हैं, तुम्हारी मेज हम कल ही वापस भिजवा देंगे । तुम जमीन पर ही काम करोगे समझे । और आगे इस तरह की जिद करोगे तो हम बिल्कुल बर्दास्त नहीं करेंगे । समझे ।''[३४]

डाक्टर का यह कथन बंटी को अंतिम निर्णय की स्थिति में पहुँचा देता है । बंटी की मानसिक उलझन को महसूस करते हुए जोशी ने उनके मनमें घर के प्रति लगाव और अपनेपन को पैदा करने की कोशिश भी की । उन्होंने बंटी को वहाँ के माहौल में फिट करना चाहा । इसीलिए मेजवाली घटना के बाद वे उसे अकेले लम्बी ड्राइव पर ले जाने का वादा करते हैं ताकि अकेले में उससे घुलमिल कर बाते कर सकें और उसे तसल्ली दे सके, उसकी मनःस्थिति समझ सकें । डॉ. जोशी ही सम्पूर्ण उपन्यास में एक मात्र ऐसे पात्र हैं जो सारी स्थिति को

एकदम तटस्थ होकर देखते हैं निर्मला जैन के शब्दो में -

''वे शकुन और उसके चारों ओर की सन्तुलित जिन्दगी को भरसक ढहराव देते हैं ।''[३५]

अजय के साथ भी सारे समय उनके व्यवहार में सौजन्यता झलकती हैं । बंटी के प्रति किसी प्रकार का दुराव उनके मन नहीं रहता वो लगातार शकुन को इस सन्दर्भ में समझाते है कि बंटी के विषय में वह कहीं गलत निर्णय न ले । फिर भी अजय और शकुन मिलकर जो भी निर्णय ले उसमें वह कोई आपत्ति नहीं मानते क्योंकि वे अपनी सीमाओं को जानते हैं ।

फूफी शकुन के साथ उसकी सेविका और संरक्षिका के रूप में रहती है । वह घर के सारे काम-काज के अतिरिक्त बंटी की देख-रेख भी करती हैं । बंटी के प्रति फूफी के मनमें जो स्नेह है वह मातृस्नेह से किसी भी रूप में कम नहीं है । वह बंटी को बेहद प्यार करती है । फुर्सत के क्षणों में वह बंटी को तरह तरह की कहानियां भी सुनाती है और बंटी की शंकाओं का समाधान भी करती है । और बंटी की जिद को झेलना तो फूफी का मानो परम कर्तव्य है । बंटी के नाज-नखरे तथा उसकी हर उल्टी-सीधी हरकत को वह सहज स्वाभाविक रूप में ग्रहण कर लेती हैं । बंटी को कभी उसकी माँ डाँटती है परंतु फूफी सदैव दुलारती-पुंचकारती हैं और नई-नई सीख भी देती है । वह पुराने संस्कारों से युक्त ग्रामीण नारी है । फूफी शकुन का साथ वहीं तक देती है जहाँ तक उसकी द्रष्टि में शकुन का आचरण सामाजिक द्रष्टि से ग्राह्य रहता है किन्तु जैसे ही उसे लगता है कि शकुन समाज की सुस्थापित परम्पराओं का अतिक्रमण कर रही है, वैसे ही वह उस परिवार से अपना नाता ही तोड़ लेती है और सदा के लिए हरिद्वार

चली जाती है ।

फूफी के हरिद्वार जाने के निश्चय को सुनकर शकुन उसे पूछती है कि क्या आप मुझसे नारज है, तो फूफी कहती है - ''अरे हम नौकर आदमी, हम कइसे नारज होंगे ? पर भगवान जीभ तो दी है तो बोलेंगे जरुर । अगर आप सौ जूता मारेंगी तो हम तनिको चिन्ता नाही करेंगी, पर बोले बिना हमसें रहा नहीं जायेगा .... जब आप जो कर रही है, बालक बच्चा को लेकर, सो आपको शोभा देता हैं ।''[३२]

फूफी को बिदा करते समय शकुन उसे सौ रुपया देना चाहती है जिन्हें वह अस्वीकार करते हुए शकुन से वचन लेती है, उसमें उस की निर्लोभी वृत्ति तथा बंटी के प्रति अगाध ममत्व झलक उठता है । वह कहती है - भगवान के दरबार में जा रहे है, रुपया-पइसा का होगा क्या ? देना ही है तो एक वचन दे दो कि हमारे बंटी भइया को जैसा आपने बिसरा दिया है आजकल, वैसा और मत करना । बाप के रहते यह बिना बापका हो रहा । अब माँ के रहते यह बिना माँ का न हो जाए । और फूफी ने सीड़ी में मुंह छिपा लिया ।''

'आपका बंटी' का वकील चाचा भी रूढ़ि का विरोध करनेवाला है । वह अजय और शकुन के बीच सन्देशवाहक का काम करता है । जब उनका सम्बन्ध पूर्ण रूप से टूट जाता है और शकुन बिल्कुल असहाय होती तो चाचा उसे दूसरी शादी करने की सलाह देते है । - ''चीजों को सही तरीकों से लेना सीखो शकुन । जब आदमी एक जगह धोखा खाता है तो उसे लगता है सब जगह धोखा ही धोखा है । पर ऐसा नहीं हैं । फिर उसने कहा तुम केवल बंटी की माँ ही न हो इसलिए तुम केवल बंटी की माँ की तरह मत जियो शकुनी की तरह भी जियो ।''

अंत में चाचा ने शकुन से चुनौती का सामना करने के लिए यह भी बताया - अगर अजय अपनी जिन्दगी की नई शरुआत कर सकता है तो तुम क्यों नहीं कर सकती । क्यों अपने को इतना बाँध-बाँधकर रखती हैं । तुममें क्या नहीं है ? बुद्धिमान हो, पढ़ी लिखी हो प्रिंसीपाल हो सारे शहर में तुम्हारा मान सम्मान है ।''

यों वकील चाचा शकुन को नई जिन्दगी शुरु करने की प्रेरणा देता हैं ।

मन्नू भंडारी के इस उपन्यास पर क्रायड़, युंग, मार्क्स, सार्त्र का प्रभाव है । फ्रायड़ के अतृप्त-इच्छापूर्तिका सिद्धांत तो इस उपन्यास पर व्यापक रूप से देखा जा सकता है । एडलर और युंग द्वारा प्रतिपादित 'लघुत्व की भावना' तथा 'अहं भावना' भी सहज रूप में दिखाई देती है । सार्त्र के अस्तित्ववाद का प्रभाव भी उस उपन्यास पर पूरजोर रूप में दिखाई पड़ता है ।

रूपा वोहरा और अरुण के. सेन द्वारा लिखित 'भारतीय कामकाजी नारियों की समस्या' नामक लेख के ठीक ही लगता है -

''जैसे ही नारी कमानी लगती है, वह पुरुष के अहं को ठेस पहुंचती है तथा उसके मन में हीनता की ग्रंन्थी पैदा हो जाती है, जिस पर परदा डालने के लिए वह प्रभुत्व ग्रन्थि को धारण करने लगता है और जरुर यह नारी के लिए असुविधाजनक बन जाता है ।''

यह बात मन्नू भंडारी ने इस उपन्यास में भलीभाँति दर्शायी हैं । 'आपका बंटी' की शकुन और अजय में तनाव इतना बढ़ जाता है कि उनका एक साथ रहना भी सम्भव नहीं होता है । शकुन अपने वैवाहिक जीवन के बारे में सोचती है -

''दस वर्ष का यह विवाहित जीवन, एक अँधेरी सुरंग में चलते

जाने की अनुभूति से भिन्न था । आज जैसे एकाएक उसके अन्तिम छोर पर आ गई है । पर आ पहुँचने का सन्तोष भी तो नही है, ढकेल दिए जाने की विवश कचोट भार है । पर कैसा है यह छोर ? न प्रकाश न वह खुलापन, न मुक्ति का एहसास ।''[३६]

शकुन एक आधुनिक नारी है जो अपने व्यक्तित्व को स्थापित करने के लिए तलाक तो ले लेती है लेकिन उसके मन में अतीत की पीड़ा रह जाती है । इससे यह बता सकता है कि नारी कितनी ही व्यावहारिक होकर जीने का प्रयास करे उसकी मानसिक स्थिति उसे विभिन्न बन्धनों में बाँध देती हैं ।

मन्नू भंडारी का 'आपका बंटी' एक मनोविश्लेषणात्मक उपन्यास हैं । इस उपन्यास के माध्यम से उन्होंने जड़ीभूत और निष्क्रिय परंपरा से अलग हटकर नये द्रष्टिकोण तथा आधुनिक परिवेश में नये मूल्यों की खोज की है ।

मन्नू भंडारी ने विषय प्रतिपादन के लिए जिस भाषा-शिल्प का प्रयोग किया है वह अपने आप में आत्यन्तिक महत्त्वपूर्ण है । इनकी भाषा संयत होने के साथ ही साथ नई अर्थवत्ता को सम्प्रेषित करती चलती है । 'आपका बंटी' की भाषा पात्रों के अनुरुप है । इस उपन्यास में सुशिक्षित और अशिक्षित पात्र हैं । शिक्षित पात्रों के अन्तर्गत शकुन, डॉ. जोशी, अजय, वकील चाचा, बंटी, अमी, जोत आदि और अशिक्षित पात्रों के अन्तर्गत फूफी, चपरासी, बंसीलाल आदि हैं, फूफी ग्रामीण परिवेश से जुड़ी हुई हैं । इस कारण वह ग्रामीण भाषा का प्रयोग करती है । जैसे -

''अभी से तुम्हारा ये हाल है, तो बड़े होकर पता नहीं क्या सुख दोगे अपनी महतारी को ।''[३७]

मन्नू भंडारी ने इस उपन्यास की भाषा में अंग्रेजी संस्कृत के तत्सम, तद्भव, अरबी, फारसी के शब्दो का सुंदर कलात्मक ढंग से प्रयोग किया है । इस उपन्यास के हरेक पात्र के संवाद हमारे हृदय को झकझोरते है, जब फूफी हरिद्वार जा रही थी, तब वह शकुन से आर्थिक मदद लेने के बजाय वचन लेते हुए कहती है - ''देना ही है तो एक वचन दे दो कि हमारे बंटी भैया को जैसा आपने बिखरा दिया है आजकल, वैसा और मत करना । बाप के रहते यह बिना बाप का हो रहा अब माँ के रहते यह बिना माँ का न हो जाय ।''[३८]

डॉ. सुरेश सिन्हाने 'आपका बंटी' का मूल्यांकन करते हुए कहा है - इस उपन्यास में भावाभिव्यंजना की सूक्ष्मतः एवं भाषा की नई अर्थवत्ता का सौन्दर्य जिसकी विशेष चर्चा होनी चाहिए । इधर कम ही उपन्यास ऐसे हैं - जिनमें चमत्कारों एवं कृत्रिम दुर्बोधता से बचकर आज की जिंदगी को चित्रों की भाषा और सार्थक प्रतीकों के माध्यम से प्रस्तुत किया गया हैं । मन्नू भंडारी ने इस उपन्यास में प्रतीक, बिम्ब और चित्रात्मक भाषा का भी प्रयोग किया है । भाषा सहज, स्वाभाविक और बोलचाल की हैं । पात्रों की चरित्रगत भावुकता तथा तनाव की मनःस्थिति में भावुकता से ओतप्रोत भाषा का प्रयोग किया गया हैं ।

(३) महाभोज :

'महाभोज' मन्नू भंडारी का राजनीतिक पृष्ठभूमि पर आधारित है और नौ परिच्छेदों में विभन्न है । लगभग एक सौ तिरासी पृष्ठों के 'महाभोज' उपन्यास की कथा में कुछ विशालता सी दीख पड़ती है क्योंकि लेखिका ने इस उपन्यास में समकालीन राजनीतिक गतिविधियों का सजीव चित्रण करते हुए अपने द्रष्टिकोण का संकेत भी किया है ।

'महाभोज' उपन्यास के प्रारम्भ में बिसेसर की लाश का उल्लेख कहता है कि लावारिस लाश नहीं थी क्योंकि बिसेसर के माँ-बाप जीवित थे । यदि वह लाश लावारिस होती तो उसे गिद्ध नोच-नोचकर खा जाते पर देखते ही देखते बिसेसर की लाश के पास सरोहा गाँव के अधिकांश लोग जमा हो गये । यह सरोहा गाँव शहर से लगभग बीस मील दूर था और पहले तो गाँव में घटी घटनाओं की ओर शहर का जरा भी ध्यान नहीं जाता था परन्तु अब गाँव में जो कुछ भी घटता, उसको लेकर अच्छे खासे पैमाने पर शहर में खलबली मच जाती । महीने भर पहले गाँव की सरहद के पासवाले हरिजन टोली की कुछ झोपडियों में आग लगा दी गयी थी और झोपड़ियों के साथ साथ उसमें रहनेवाले भी जलकर राख हो गये । लोग दौड़कर थाने पहुँचे पर थानेदार साहब ने यह दिन छुटी ली थी........ और उपस्थित दो लोगों ने यह कहकर बात टाल दी कि थानेदार साहब के आने पर ही जाँच होगी । इसके बाद गाँववाले शांत हो गये और केवल उनकी साँसों के साथ निकला हुआ एक एक गुस्सा तथा नफरत ही भारी तनाव बनकर हवा में यहाँ से वहाँ तक सनसनाता रहा ।

दूसरी ओर जब यह समाचार शहर में पहुँचा तब वहाँ से मन्त्रियों, नेताओं और अखबारन वीसों की गाड़ियों का ताता सरोहा गाँव में लग गया तथा कई दिनों तक उनका आना जाना चालू रहा । नेताओं ने रुँधे हुए गले और गीली आँखों से दुख प्रकट करते हुए कई आश्वासन दिये तथा समाचार पत्रों के संवाददाता उस राख के ढेर की फोटो खींचकर ले गये । उन्होंने दूसरे दिन इस घटना का सचित्र विवरण समाचार पत्र में छापकर यह समाचार घर-घर पहुँचा दिया और पाठकों के चेहरे पर विषाद की गहरी छाया पुत गयी पर कुछ समय बाद लोग

इस घटना को भूल गये ।

बात यहीं समाप्त नहीं हुई और विरोधी दल के नेताओं ने विधानसभा में इस घटना को लेकर हंगामा मचा दिया था तथा मन्त्रियोंने आत्मग्लानि में डूबकर रुँधे गले से खेद प्रकट करते हुए भविष्य के लिए आश्वासन दिये । साथ ही सत्तारुढ़ दल के विधायकों ने इस अमानुषिक घटना को लेकर अपना असन्तोष और आक्रोश प्रकट करने का अवसर मिल गया । वे सब इस घटना को पार्टी के माथे पर कलंक मानकर मुख्यमन्त्री से त्यागपत्र की माँग करने लगे परन्तु मुख्यमन्त्री को लगा कि जब तक वे असली अपराधी का पता लगवाकर उसे सजा नहीं दिलवा देते उनकी आत्मा बोझमुक्त नहीं होगी । यह सब सत्ता पर रहकर ही सम्भव था और आत्मा के आगे मजबूर मुख्यमन्त्री ने सारा मामला गहरी जाँच पड़ताल के लिए बड़े-बड़े अफसरों को सौंप दिया । उन्होंने अपना बड़प्पन दिखाने के लिए सरोहा गाँव के थाने के दोनों कांस्टेबलो को सस्पेंड कर दिया ।

अभी स्थिति पूरी तरह सँभली नहीं थी कि सरोहा गाँव में एक दिन सुबह बिसेसर की लाश सड़क के किनारे पुलिया पर पड़ी मिली । बिसेसर कोई महत्त्वपूर्ण व्यक्ति नहीं था । परन्तु बीसू की लाश को लेकर शहर में हंगामा मचने का डर था इसीलिए थानेदारने जरा भी ढील नहीं की और तुरन्त मौके पर हाजिर होकर कई लोगों के बयान लिख लिये तथा बिसू की लाश शहर भेज दी गई । वास्तव में इस समय सरोहा गाँव में साधारण सी घटना भी अत्यधिक महत्त्व रखती थी क्योंकि डेढ़ महिने के बाद वहाँ चुनाव होनेवाला था । यह चुनाव विधानसभा की एक सीट के लिए था बहुत महत्त्वपूर्ण था क्योंकि उस जगह के लिए भूतपूर्व मुख्यमन्त्री सुकुलबाबु खड़े हो रहे थे ।

'महाभोज' उपन्यास के दूसरे परिच्छेद में दा साहब के व्यक्तित्व का चित्रण और उनके कमरे का वर्णन किया गया है । इस कमरे में दा साहब चिन्तन-मनन के क्षणों में ही बैठते थे और यहाँ सबका प्रवेश सम्भव नहीं था । यहाँ केवल दा साहब के खास आदमी ही आ सकते थे और उनका विश्वस्त व्यक्ति लखनसिंह बिना रोक-टोक आ सकते थे । लखन ने दसवीं पास करने के बाद ही दा साहब के साथ रहकर उनकी सेवा करना शुरु कर दिया । इसी लखन को दा साहब ने सरोहा चुनावक्षेत्र से खड़ा किया पर उनके दल के बहुत से व्यक्तियों ने इस बात का विरोध किया । उनका यह तर्क था कि इस प्रांत के दस वर्ष तक मुख्यमन्त्री रहनेवाले सुकुल बाबू के मुकाबले खड़ा होनेवाला व्यक्ति उनकी ही टक्कर का होना चाहिए । परन्तु दा साहबने इस तर्क की ओर ध्यान नहीं दिया क्योंकि वे जानते थे कि उनके दल के अन्य नेता अपने अपने आदमियों को खड़ा करना चाहते थे । दा साहब हमेशा सतर्क रहते थे और उन्हें विरोधियों के साथ साथ अपने दल के असन्तुष्ट लोगों को भी सँभालकर रखना पड़ता था । अन्यथा पार्टी के झन्डे की नीचे ही नीचे मुख्यमन्त्री दा साहब की जड़े काटने का काम चालू रहता । इसीलिए सरोहा की घटनाओं के प्रति वे भी उदास नहीं थे और विसू की लाश के समाचार को जानकर वे अपने निजी कमरे में कुछ सोच विचार कर रहे थे । उस वक्त लखन ने कमरे में प्रवेश किया और दा साहब ने स्नेहपूर्वक उसका स्वागत किया परन्तु उसके तमतमाये चेहरे को देखकर पूछा, क्या बात हैं, बाहर बहुत गर्मी है क्या ? लखन ने उत्तर दिया बाहर क्या, गर्मी तो मेरे भेजे में घुसी हुई है । यह जोरावर बाज नहीं आयेगा अपनी हरकतो से । खुद तो मरेगा ही, हमको भी ले डूबेगा ।

लखन दा साहब के संरक्षण में पला हुआ व्यक्ति था परन्तु वह उनके स्वभाव के ठीक विपरीत था । छोटी-छोटी बातें लखन को बेहद उत्तेजित कर देती और वह बोलते समय आवेश में हलकाने लगता परन्तु दा साहब कभी भी नाराज नहीं होते । वे तो हँसकर इतना ही कहते कि तुम मेरे पूरक हो भाई और उनकी इस उदारता ने लखन को एक हद तक ठीठ बना दिया तथा वह अक्सर फनफनाता रहता । लखन ने कहा, अभी तो कुछ नहीं हुआ, बहुत मामूली सी बात हुई है । सरोहा में बिसेसर नाम के एक आदमी को मरवा दिया । असली बात तो तब होगी जब हरिजनों के सारे वोट सुकुल बाबू के नाम पड़ जाएँगे । सब लोगों का अनुमान है कि यह जोरावर का काम हैं । यह सब सुनकर दा साहब के चेहरे पर किसी तरह का कोई विकार नहीं आया और लखन कहने लगा कि सारे गाँव में भारी तनाव है जोरावर को लेकर उसके सिवाय कोई नहीं करवा सकता यह काम, ऊँचे स्तर पर तहकीकात हो रही है । घरेलू उद्योगों के लिए आर्थिक सहायता की योजना के मरहम ने घावों को काफी कुछ भर दिया था । .... इसी स्थिति में चुनाव हो जाता तो अच्छा था .... दा साहब ने लखन को अधिक बोलने नहीं दिया और बीच में ही रोककर कहा घरेलू उद्योग की इस योजना से उनकी गरीबी पर जरुर मरहम लगाया जा सकता है, पर प्रियजनों के बिछुडने के दुख पर नहीं । आदमी का दुख जिस दिन पैसे से दूर होने लगेगा - इन्सानियत उठ जायेगी इस दुनिया से ।

लखन की बातों को सुनकर दा साहब शांत रहे । उन्होंने समझाया कि जब तक पुलिस मामले की पूरी तरह जाँच पड़ताल न कर ले तब तक किसी नतीजे पर पहुँचना उचित न होगा तथा प्रमाण जुट जाने पर

अपराधी अवश्य अपने जुर्म की सजा पायेगा । अब लखन ने कहा कि ‘ वह तो सजा पायेगा अपने जुर्म की, पर उससे भी बड़ी सजा तो हम पायेंगे वह भी बिना कोई जुम किये’ । दा साहब ने कहा होता है कभी-कभी ऐसा भी । एक की मूर्खता का फल दूसरे तो भुगतना पड़ता है । लखन का आवेश अभी भी शांत नहीं हुआ और वह कहने लगा आप है कि इसी मूर्ख का पल्ला पकड़े हुए हैं । मारा है गरीबों को तो भुगतने दीजिये सजा । नहीं चाहिए हमें जोरावर के वोट । अब इसके वोटों के चक्कर में हरिजनों के सारे वोट तो गये ही .... गाँव के दूसरे लोगों के वोट भी न मिलेंगे । सारा हिसाब लगाकर देख लिया मैंने, ले डूबेगा जोरावर का साथ । माथे पर कलंक और आत्मा पर बोझ, सो अलग ।’

आत्मग्लानि से लखन का सारा चेहरा विकृत हो उठा परन्तु दा साहब ने धैर्य का परिचय दिया और वे थोड़ा सा हँसकर रह गये । जब लखन का आवेश शांत नहीं हुआ और वह पीठ का तकिया खींचकर उसी पर हाथ फटकारने लगा तब दा साहब ने इस आवेश के लिए उसकी उम्र को दोषी मानते हुए समझाया ‘आवेश राजनीति का दुश्मन है । राजनीति में विवेक चाहिए । विवेक और धीरज ! पद पर बैठोगे तो पद की जिम्मेदारी स्वयं सब सिखा देगी । लखन अभी भी शांत नहीं हुआ और उसने कहा कि कहा रखा है पद वद ! भूल जाइए अब सब । विरोधी दल के नेता इस घटना को ऐसा भुनाएँगे कि हम सब टापते ही रह जायेंगे । यह बिसू की नहीं समझ लीजिए एक तरह से मेरी हत्या हुई है, मेरी ।’

लोचन ने बतलाया ‘नौ’ तारीख को यानी तीन दिन बाद ही मीटिंग का ऐलान हो गया है उनकी तरफ से । सुकुल जी खुद आ रहे

हैं भाषण देने । जानते हो सुकुल जी के भाषण का करिश्मा । आग उगलते है आग । गाँव वैसे ही सन्नाया बैठा है एक ही भाषण में बहाकर ले जाएँगे सारे गाँव को अपने साथ । उसने 'मशाल' नामक समाचार पत्र के सम्बन्ध में संकेत किया कि वह उल्टा सीधा जो भी मरजी में आये छाप देता है और इसने आगजनी के सम्बन्ध में कैसे कैसे सम्पादनीय छापे तथा तस्वीरें भी छापी और वह अगले अंक में बिसू की मृत्यु के सम्बन्ध में सनसनी खेज समाचार प्रकाशित करेगा ।

लोचनने संकेत किया कि 'मशाल' इमजेन्सी के समय बन्द हो गया था और उसकी वर्तमान कार्यप्रणाली पर कुछ नियन्त्रण जरुरी हो गया है पर दा साहब समाचार पत्रों की स्वाधीनता के कट्टर समर्थक जान पड़े । अब लखन ने बतलाया कि - 'जानते तो है, लोचन भैया कितने दिनों से अपनी खिचड़ी अलग पका रहे हैं । देखिए इस घटना से कैसा उफान आता है उनकी खिचड़ी में । जोड़ तोड़ करके अविश्वास का प्रस्ताव ले आए तो आपको भी लेने के देने पड़ जाएँगे ।'[३६]

दा साहब ने उसे बीच में ही रोक दिया और कहा कि 'जिस दिन अपने लोगों का विश्वास खो दूँगा .... उस दिन कुर्सी पर नहीं बैठुगा । सब के विश्वास पर ही टिकी हुई है मेरी कुर्सी । सबके सद्भाव पर ही जिन्दा हूँ मैं ।' लखन ने कहा - 'ठीक है सब के विश्वास पर आप अपनी कुर्सी जमाइए । .... सुकुल बाबू अपनी मीटिंग जमाएँ .... दत्ता बाबू अपना अखबार जमायें .... बस .... हम ही अपनी कबर खोद लेते हैं ।'

इस बीच फौन की घन्टी बजी और वार्तालाप में कुछ रुकावट आ गई तथा दा साहब मन्द स्वरों में बातचीत करने लगे लखनने उन्हें

पुनः उत्तेजित करना चाहा । दा साहबने अविचलित होकर कहा, कुछ ठण्डा पिओगे ? दा साहबने शरबत लाने का आदेश दिया और अपनी नजरें शून्य की ओर कर दीं । लखन को मालूम है कि दा साहब की नजरें शून्य में गड़ जायें तब समझ लेना चाहिए कि वे खुद समस्या के गरहे धँस गये और वे जरुर कोई न कोई समाधान ढूँढ लेंगे ।

कुछ देर बाद दा साबह ने अपनी नजर लखन के चेहरे पर गड़ा दी । दा साहब ने अपना मौन त्याग दिया और बतलाया कि आज सबेरे डी.आई.जी. ने फोन पर सूचना दी कि बिसेसर आठ महने पहले ही जेल से छूटकर आया है और वह चार साल तक जेल में बंद रहा । लखन सोचने लगा कि दा साहब इस दिशा में सक्रिय हो चुके हैं । उन्होंने स्पष्ट किया कि वह तो चाहते है कि पुलिस बयानों और प्रमाणों के आधार पर स्वतन्त्रापूर्वक ईमानदारी से रिपोर्ट तैयार करे तथा यदि ऊपर कोई आदेश थोपा गया तो न्याय नहीं होगा । - उन्होंने सख्त आवाज में लखन को कहा - ''अपनी आकांक्षाओ को भोड़ी लगाम दो लखन, वरना मेरे साथ चलना मुश्किल होगा ।''[४०]

एक क्षण के लिये लखन सिटपिटा गया और दा साहब फोन उठाकर वित्त मन्त्री से किसी योजना के सम्बन्ध में बात करने लगे तथा लखन भीतर ही भीतर कुढ़ता तिलमिलाता रहा । उसे तो इस समय दुनिया की सबसे महत्त्वपूर्ण बात बिसू की मौत ही लग रही थी । और उसके प्रति उदास रहना उसे उचित नही समझता था । दा साहब ने बतलाया कि डी.आई.जी. प्रमोशन के लिये छटपटा रहा है तथा ऊपर से आदेश आने के कारण अब तक जो आई.जी. का तबादला रुका हुआ था वह अब ऊपर से आदेश आने के फलस्वरुप हो रहा है । उन्हें लखन का यह आदेश अनुचित्त प्रतीत होता है कि डी.आई.जी. को

बुलाकर किसी भी प्रकार का आदेश दिया जा ।

लखन को लगा कि दा साहब को पूरी तरह जानना मुश्किल है ।

दा साहब ने लखन का चेहरा देखकर समझाया कि - ''मेरे लिए राजनीति धर्मनीति से कम नहीं । इस राह पर मेरे साथ चलना है तो गीता का उपदेश गाँठ बाँध लो । निष्ठा से अपना कर्तव्य किये जाओ, फल पर दृष्टि ही मत रखो ।' दा साहबने कहा - सुकुल बाबू की मीटिंग नौ तारीख को है ? तो ऐसा करो कि चार पाँच दिन बाद अपनी भी एक मीटिंग रख लो । गाँववालों से बात करेंगे । वैसे भी एक हादसा हुआ है - जाना तो चाहिए ही, बिसू की माँ-बाप को भी तो तसल्ली देनी चाहिए ।''[४१]

तीसरे परिच्छेद के प्रारम्भ में सुकुल बाबू के निवास स्थान का उल्लेख मिलता है । सुकुल बाबू का ज्योतिष पर बहुत अधिक विश्वास है । सुकुल बाबु सारे दिन सोचते रहे कि 'शाम के भाषण में कौन-कौन से मुदे उठाने हैं । उनका मन बिसू के प्रति कृतज्ञता से भर गया और इसी बीच उन्हेन यह भी याद आया कि कहीं उनकी मीटिंग में जोरावर हुड़दंग न मचवा दे क्योंकि पूरे गाँव और पंचायत में उसका दबदबा हैं ।

कई दिनों के बाद सरोहा गाँव की गली-गली में यह घोषणा हुई - आज शाम छः बजे हरिजन भाइयों के हमदर्द दोस्त श्री सुकुल बाबू आप लोगों से बातचीत करने आयेंगे । बिसेसर की मौत सरासर जुलुम है, इसे बरदास्त नहीं किया जायेगा । आइये और सुकुल बाबू की आवाज में आवाज मिलाकर बिसू की मौत का जवाब तलब कीजिए ।

सुकुल बाबूने छः बजे गाँव में प्रवेश किया और भाषण में स्वयं

को गाँववालों का हमदर्द बताते हुए हरिजनों पर किये जानेवाले अत्याचारों का उल्लेख किया और सरकार पर अत्याचारियों का साथ देने का आरोप भी लगाया और चेतावनी देते हुए कहा - 'गाँठ बाँध लीजिए कि यह सरकार आप लोगों के लिए कुछ नहीं करने जा रही । उसे लगाव आप से नहीं अपनी कुर्सियों से है ।

उन्होंने कहा - 'मुझे दा साहब से न्याय माँगना है । बातें और आश्वासन नहीं नौं-नौं आदमियों को मारनेवाला मुजरिम चाहिए । बिसू को मारनेवाला हत्यारा चाहिए ।'[४२]

सुकुल बाबूने कहा 'बिसू के घर तो गये ही नहीं । और उनके घर चल पड़े ।

मन्नू भंडारी व्यक्तिगत समस्याओं को महत्त्वपूर्ण मानते हुए भी सामाजिक समस्याओं को अधिक महत्त्वप्रदान करने के पक्ष में रही है । लेकिन उनकी द्रष्टि में राष्ट्र के मौजूदा प्रश्नों की उपेक्षा करना भी उचित नहीं रहा है । राजनीतिक परिवेश को आधार बनाकर 'महाभोज' का सृजन इसी सोच का परिणाम रहा हैं । 'महाभोज' व्यक्तिगत दुःख, दर्द, अन्तद्वन्द्व को देखने से भिन्न विद्यमान परिस्थितियों के बीच राजनीतिक सन्दर्भ में मनुष्य की नियति का आलेख प्रस्तुत करता है । महाभोज को राजनैतिक उपन्यास कहा जाता है और उसमें समकालीन राजनीतिक परिस्थितियों का चित्रण भी किया गया है ।[४३]

आज के युग में चुनाव एक आवश्यक राजनैतिक प्रक्रिया है । 'महाभोज' उपन्यास के माध्यम से इस चुनाव की बीच मानवीय त्रासदी करुणा और पीढ़ी की नियति की सच्चाई को अभिव्यंजित करने का सशक्त प्रयास लेखिका ने किया है ।

उपन्यास के प्रारम्भ में बिसेसर की लाश का उल्लेख किया गया है । बिसू एक सामान्य व्यक्ति है, जो अपनी जन प्रियता के लिए लोगो को पीढ़ा की पहचान के कारण और लोगों के प्रति अपने लगाव के अपराध के कारण सतारुढ़ दल के विरोध और आक्रोश का निरन्तर शिकार एक दल की सरकार का सत्य की निष्ठा के लिए यदि उसे निरपराध होने पर भी अकारण चार वर्ष के हेतु जेल भेज देती है वहाँ से टूटा-फूटा घायल शरीर लेकर निकलता है तो दूसरे दल की सरकार सत्यनिष्ठा के दन्डस्वरुप वह आगजनी कांड के प्रमाण एकत्र कर लेता है । परन्तु उसकी हत्या कर दी जाती हैं । हत्या के कुछ दिनों बाद चुनाव होनेवाला है । बिसेसर का गांव सुकुली बाबू के चुनाव क्षेत्र में आता है ये भूतपूर्व मुख्यमन्त्री है और कांग्रेस के टिकट से चुनाव लड़ रहे हैं । उनका लखन से सीधा मुकाबला हैं, जिसे तत्कालीन मुख्यमन्त्री दा साहब का समर्थन प्राप्त है । इसी कारण हर घटना को इस सीट से जोड़कर ही देखा परखा जा रहा है वरना और दिन होते तो क्या बिसू और क्या बिसू की मौत ।

‘‘मुख्यमन्त्री होने के कारण दा साहब की परेशानियों और चिंताओं की भी कुछ कमी न थी । अपना मुख्यमन्त्री का आसन बनाये रखने के लिए दा साहब फूंक-फूंक कर कदम रखते थे ।’’४४ सुकुल बाबू और दा साहब राजनीति में मंजे हुए खिलाड़ी है और वर्तमान राजनीति की अन्दरुनी स्थितियों को समग्रता के साथ प्रतीकाचित करते हैं । स्वास्थ्य मन्त्री राव और विकास मन्त्री चौधरी को भी दा साहब वाक् पटुता से चित्त कर देते है तथा लोचन भइया को बड़ी चतुराई के साथ मन्त्रीमंडल से बर्खास्त कर देते हैं । जोरावर सरोहा गाँव का जमींदार है तथा गरीबों का शोषणकर्ता हैं, दा साहब

का खास आदमी भी है जो उन्हें वोट दिलाने में खास मदद भी करता है । जोरावर राजनैतिक गुंडा हैं । उसके षडयन्त्र का शिकार बिसू बनता हैं क्योंकि बिसू मजदूरों को उनके हक के लिए उन्हें उकसाता हैं । सुकुलजी के भड़काने पर जोरावर चुनाव में खड़े होने के लिए तैयार हो जाता है परन्तु दा साहब बड़ी आसानी से अलग कर देते है । दा साहब जोरावर को प्रमाण सहित बिसू की हत्या का दोषी ठहरा देते हैं तथा कह देते है कि - ''मामला अभी जुबानी है फाइल में आ जाने से निपटाना कठिन होगा ।''[४५]

जोरावर दा साहब के प्रभाव से प्रभावित हो नामांकन नहीं भरता । सक्सैना जिसे बिसू की हत्या के मामले की जांच के लिए भेजा जाता है । सक्सैना, ईमानदार, कर्तव्यनिष्ठ अधिकारी है । परन्तु दा साहब उस पर भी दोषारोपण करते है । और मामला डी.आई.जी. को सौंपा जाता है और दा साहब के इच्छानुसार बिन्दा को गिरफ्तार कर लिया जाता है । बिन्दा की गिरफ्तारी और सक्सैना को नौकरी से निलम्बित कर दिया जाता है ।

मन्नू भंडारी ने अपने अनुभवों विचारों जिए गए सत्यों को बहुत धैर्य से योजनाबद्ध तरीके से प्रभावपूर्ण कथात्मक स्वाव दिया है । यह आकस्मिक नहीं है कि प्रभाकर माचवे ने 'महाभोज' को बेहद जीवन्त और सशक्त रचना माना हैं ।

'महाभोज' में मन्नू भंडारी ने बताया है कि चुनाव के दिनों में छोटी से छोटी घटना के प्रति राजनेता किस प्रकार सक्रिय हो उठते हैं । उन्होंने राजनीतिक भ्रष्टाचार, छल, प्रपंच, अक्सरवादिता को प्रस्तुत किया है । बिसू की हत्या व बिन्दा के साथ हुआ अन्याय मानव की नैतिकता पर प्रश्नचिन्ह लगा देता है किन्तु आज न जाने

कितने ही सिरोहा जैसे प्रदेशो में 'बिसू' की हत्याएं की जा रही है ।

सुकुल बाबू अपने स्वार्थ के अनुसार घटना को मोड़ते हुए दा साहब के सामने आते है । वह पिछले चुनावो में हार गए थे किन्तु अब पुनः राजसत्ता में आना चाहते है । दा साहब धाध राजनेता है । परिस्थिति को अपने अनुकूल परिवर्तन कर लेना उनके बाएं हाथ का खेल है वह सिरोहा जाकर सारे सिरोहा निवासियों पर जादू सा कर जाते हैं । वह उसे बिसू काण्ड की ऊँच स्तरीय जांच का आश्वासन देते हैं ।

एस.पी. सक्सैना को जांच का कार्यभार सौंपा जाता है । जब सक्सैना घटना की जांच करते है तो हत्या का रहस्य अनावृत होने लगता है । बिसू का मित्र बिन्दा उसे बतलाता है कि बिसू ने गत आगजनी काण्ड के कुछ प्रामाणित दस्तावेज एकत्रित कर लिए थे और प्रमाणों के आधार पर वह आगजनी के रहस्य को सामने लाना चाहता था और संभवतः यही बात बासू की हत्या का कारण हो । सक्सेना जब घटना की जांच करता है तो उसकी आत्मा उसे सत्य पथ पर चलने को कहती है । फलतः वह दा साहब व डी.एस.पी. साहब द्वारा प्रस्ताविक रिपोर्ट पर हस्ताक्षर करने से इंकार कर देता है परिणाम स्वरुप उसे 'सस्पेंशन' मिल जाती हैं ।

दूसरी और दा साहब नकली रिपोर्ट तैयार करवा कर बिन्दा को हत्यारा साबित करे देते है और एक बार फिर राजतंत्र का कुचक्र गरीब को पीसकर रख देता है ।''[४६]

'महाभोज' में राजनीतिक चेतना स्वरुप द्रष्टिगोचर होता है कि देवतुल्य राजनेताओं के बीच कुर्सी की लड़ाइयाँ हो रही है । आज की राजनीतिक में गाली गलोच और हत्या तक मान्य हो गई है ।

वोटों के लिए राजनीति लड़ाने, काले और सफेद और सफेद और काला करने की राजनीति आज जोरों पर है । इस कटु यथार्थ को 'महाभोज' में उद्‌घाटित किया गया हैं । आज के राजनेताओं द्वारा आश्वासनों तथा इन्कवायरी के ढोंग और उनकी असलियत की भी पड़ताल इस उपन्यास में की गई ।

'महाभोज' सामाजिक उत्पीड़न और उस पर टिकी हुई व्यवस्था पोषक राजनीतिक के विरुद्ध संवेदनशील की विनम्र किन्तु साहसपूर्ण प्रतिक्रिया हैं । 'महाभोज' लोकतांत्रिक समाजवादी विचारधारा पर आधारित हिन्दी उपन्यास है । इसके अन्तर्गत दलित और शोषित वर्ग पर पुलिस और लोकतांत्रिक समाजवादी व्यवस्था के भ्रष्ट राजनीतिज्ञों के अत्याचार को बतलाया गया है । बिसू के हत्यारे को राजनीतिक शरण मिलने पर लोचन बाबू दुखित होकर कहता है - ''आत्याचारी को संरक्षण दो और पीड़ितों को कुचलो यही थे हमारे आदर्श और सिद्धांत जिन्हें लेकर चले थे ।''

'महाभोज' के अन्तर्गत मार्क्सवादी विचारधारा भी द्रष्टिगत होती है । मार्क्सवाद पूंजीवाद का कट्टर विरोधी है । वह सम्पत्ति के समान बंटवारे पर जोर देता है एवं पैसे के आधार पर सत्ता और शोषित वर्ग के बिसू व उसने साथियों पर पुलिस तथा लोकतान्त्रिक समाजवादी व्यवस्था के भ्रष्ट राजनीतिज्ञों के अत्याचार को बतलाया गया है । लोचन बाबू कहते है कि - मजदूरों की सरकारी रेट पर मजदूरी न मिलना, आदमियों को जिन्दा जला दिया जाना, दिन व दिन बढ़ते अत्याचार, असुरक्षा, बिसू की मौत इस सबसे तो चार-चाँद लग रहे है न पार्टी की इमेज पर ? पार्टी का ध्यान ही किसे रह गाय है आज ।

दत्ता साहब दा साहब से कहते है कि - ''गाँव में पहले ही तनाव

है और बढ़ जायेगा, आपस में ही मार काट मचेगी और इस सबका परिणाम ? पिसेगा बेचारे गरीबों का तबका, सम्पन्न लोग तो जैसे तैसे बच ही जाते है - पैसे के जोर से, ताकत के जोर से, मरता है तो गरीब ही है ना ?''[४७]

इस उपन्यास में लेखिका ने गाँधीवादी विचारधारा के आधार पर गांधीजी के धर्म सम्बन्धी कर्तव्यों और अर्थ का समर्थन करते हुए गाँववालों को कहा है - ''मुझे तो ऐसे निर्भीक और उत्साही नवयुवकों की आवश्यकता है इस योजना के लिए चाहता हूँ कि घरेलू योजना को आप लोग ही संभाल ले, आप ही चलाये कितना बड़ा .... सपना था बापू का कि हर गाँव और ग्रामीण आर्थिक रूप से स्वतन्त्र बने .... समर्थ बने ।''[४८]

सुकुल बाबू - 'महाभोज' उपन्यास में सुकुल बाबू का चरित्र उन कपटी नेताओं का प्रतिनिधित्व करता है जो चुनाव को जीतने के लिए विघटित मार्ग का अनुसरण करते हैं । विवेक उनसे अत्यन्त दूर है । भ्रष्टाचार व्यक्ति के व्यक्तित्त्व के विघटन का निकृष्टतम प्रतिमान है ।

सुकुल बाबू भी ऐसे ही भ्रष्टाचारी नेता हैं । यह विपक्षी दल के सदस्य है तथा पिछले चुनाव में पराजित होकर अब उस हार को जीत में बदलने के कृत संकल्प है । जिस देश में देवतुल्य राजनेताओं की परम्परा रही है । वहां राजनीति का ऐसा पतन ।

मन्नू भंडारी ने सुकुल बाबू के व्यक्तित्त्व का परिचय देते हुए लिखा है - ''सांवला रंग, नाटा कद, थोड़ा थुलथुल शरीर, दा साहब की तरह सौम्य-संयत भी नहीं, सुरा-सुन्दरी से किसी तरह का कोई परहेज नहीं, बल्कि कहना चाहिए अनुरागी हैं दोनों के, जग के 'सकल

पंदारथ' न पानेवाले करम हीनों में अपने को वे शुमार नहीं करवाना चाहते मस्त फक्कड़ है एकदम । निजी दोस्तों के बीच फूहड़ भाषा का प्रयोग करते है धड़ल्ले से । गाली गलौच से भी कोई परहेज नहीं । उनका ख्याल है कि वाक्य में गाली का बन्ध लगा कि बाते में धार आयी । पर बाहर के लोगों के बीच अपने को काफी साधकर चलते हैं ।''[४६]

उपर्युक्त विवरण से सुकुल बाबू का परिचय एक अमर्यादित आचार भ्रष्ट व्यवहार कुशल राजनीतिज्ञ के रूप में मिलता है ।

सुकुन बाबू की कपटता का प्रत्यक्ष परिचय तब मिलता है जब वह बीसू की मौत को थाली में परसा मौका मानते हैं तथा अवसर का लाभ उठाकर अपनी हार को जीत में बदलने के अभियान में जुट जाते है । और सारे दिन अपनी गोटियां ही बिठाते रहे । शाम के भाषण में कौन-कौन से मुदे उठाने है .... कितने वोट खाने हैं और कितने पाने है ? अभी तक हरिजनों के बूते पर ही चुनाव जीतते आये थे । पिछली बार इन लोगों ने आंख फेरी तो मुंह की खानी पड़ी । बिसू सारी जिन्दगी इन्ही लोगों के लिए तो लड़ता था । सुकुल बाबू के लिए बिसू की मौत का विषय इसलिए महत्त्वपूर्ण है क्योंकि इसे आधार बनाकर वे जनता को अपनी ओर आकृष्ट करने में सफल हो सकते हैं । यहां उसका अपना निजी स्वार्थ हैं । जो राजलिप्सा की कामना से आवृत्त है तथा सुकुल बाबू का यह आचरण उनके दुराचारी व्यक्तित्व का परिचायक है ।

सुकुल बाबू सिरोहा में बिसू की मौत का शोक करने जाते हैं किन्तु मंच पर पहुंचकर अपने सामने एकत्रित हुए लोगों को देखकर वह सोचते है - ''इअ घटना से लोगों के दिमाग उस जमीन जैसे हो

रहे होंगे जो वर्षो के स्पर्श मात्र से फूट पड़ने को तैयार रहती है । आज वे ऐसी वर्षा करके जाएगें कि फसल उनके हिस्से ही पड़े ।''[५०]

सुकुल बाबू की यह मानसिकता उनकी आचरण हीनता को रेखांकित करती है । वह लोगो को दिशा देने के बजाय दिग्भ्रांत्त करते हैं । उन्हें वर्तमान सरकार के प्रति भड़काते हैं तथा अप्रत्यक्ष रूप से उन्हें अपने पक्ष का समर्थन करने के लिए कहते है -

''यह अच्छी तरह जान लीजिए कि इस हत्या के लिए कुछ नहीं होने जा रहा है । कौन करेगा ? पंचायत इनकी .... पुलीस इनकी, और अब तो विश्वास हो गया होगा आपको अन्याय दिलाने के लिए .... आपका हक दिलाने के लिए कौन आएगा ?''[५१]

एक नेता का दायित्व यह है कि वह समाज को संगठन की ओर ले जाए, किन्तु यहां पर स्थिति यह है कि सुकुल बाबू समाज को विघटन की ओर उन्मुख कर रहे हैं । सुकुल बाबू का बिसू के पिता के घर जाकर सांत्वना देना भी उनके छली चरित्र का ही अंश है वह सोचते है -

''बिसू के घर तो गए ही नहीं, उसका बाप तो सभा में भी नहीं आया होगा शायद और आया भी हो तो घर जाकर मिलने और दिलासा देने का और ही असर होता है । गाँववाले तो इन छोटी छोटी बातों पर बिक जाते है बेचारे ।''[५२]

सिरोहा में दा साहब की मीटिंग को विफल करने के लिए किया गया सुकुल बाबू का प्रयास उनके इसी प्रापंचिक व्यक्तित्व की उपज हैं ।

इसके बारे में लेखिका ने कहा -

''बिहारी भाई के साथ बैठकर पूरी योजना बनायी थी सुकुल

बाबू ने और पिछले पांच दिनों से लोगों को भड़काने और तनाव फैलाने में किसी तरह की कसर नहीं रखी थी । बिहारी भाईने जिम्मा लिया था इस काम का कि ऐसा माहौल तैयार कर देंगे गांव में कि दा साहब की सभा हो ही न पाये । थोड़ी मार-पीट और खून खराबा होने का डर जरुर था .... पर यह कोई खास बात नहीं - यह सब तो चुनाव-अभियान का जरुरी हिस्सा हो गया है । इस तरह की घटनाओं से सरगमी और बढ़ती है - जोश और उत्तेजना फैलती है लोगो में ।''[५३]

'महाभोज' में सुकुल बाबू भ्रष्ट आचरणवाले नेता का प्रतिनिधित्व करता है । वह जनता को गुमराह करता है, हिंसात्मक एवं प्रपंचात्मक तरीके से चुनाव प्रचार में भाग लेता है, सांत्वना का नकाब ओढ़कर लोगों से कपटता करता है, लोगों में तनाव को प्रसारित करता है और उसके व्यक्तित्व को प्रकट करनेवाले ये सूत्र उसके विघटित व्यक्तित्व के परिचायक हैं ।

दा साहब :

'महाभोज' के दा साहब मुख्यमन्त्री पद पर आसीन है । उसमें कुछ ऐसी विशेषताएँ है जो उन्हें विशिष्ट व्यक्तित्व में सम्मलित करती हैं । वो आम आदमियों की तरह छोटी-छोटी बातों से उत्तेजित नहीं होते वे मानते है कि आवेश राजनीति का दुश्मन है । राजनीति में विवेक चाहिए । दा साहब व्यक्तियों की कमजोरियों पर सीधा प्रहार करते हैं वे मनोवैज्ञानिक तौर पर सीधा प्रहार करते हैं, वो मनोवैज्ञानिक तौर पर प्रभावित करने में सफल होते हैं । दा साहब का चमचा लखन जब ज्यादा ही उल्टी सीधी बात करता है तो दा साहब बहुत ही सहज ढंग से कहते है - ''मेरे साथ चलना है तो भाई जबान पर लगाम और

व्यहार में ठहराव चाहिए ....''[५४]

इसी प्रकार पत्रकार से दा साहब कहते है कि जब आपने पाँच-छ महीने पहले इन्टरव्यु के लिए समय माँगा था नही दे सका था । दता बाबू की कमजोरियों पर अपने बुद्धि चातुर्य से प्रभाव डालते हुए कहते है - आप लोगों ने जो भूमिका अदा की वे किन अक्षरों में लिखेंगे आप ? चापलूसी और जीहजूरी की भूमिका तो नहीं है अखबार नवीसों की ।....... फिर आपका अखबार तो अश्लीलता के आरोप पर बन्द हुआ था ।[५५]

अखबारवालों को अपनी तरफ मिलाने के लिए दा साहब सभी मनोवैज्ञानिक हथकण्डे अपनाते है और इसी कारण अखबारवालों को विज्ञापन तथा कागज को बड़ी सरलता से उपलब्ध कराते है । इस तरह दा साहब वार्तालाप तथा बुद्धि चातुर्य के माध्यम से व्यक्ति पर न केवल अपना प्रभाव डालते है बल्कि धीरे-धीरे उसे अपनी विचारधारा के प्रवाह में बहा ले जाते है ।

दा साहब अपने आप को गांधी विचारधारा के अनुयायी बताते है और दूसरी और झूठ बोलना अनुचित नहीं समझते उनका कहना था कि कभी-कभी परिस्थिति के दबाव से झूठ बोलना ही पड़ता हैं । दा साहब झूठ का सहारा भी अपनी साख बनाये रखने के लिए करते हैं । 'अच्छा किया कि तुम आ गये .... वरना मैं बुलानेवाला ही था । आज पाँडे आया ही नहीं वरना उसी के हाथ सन्देशा भेजता ।'

जोरावर मुख्यमन्त्री दा साहब का ही सहयोगी था परन्तु जब वह दा साहब के ही मुकाबले में चुनाव खड़े होने का विचार करता है तो दा साहब ऊपरी तौर से अन्त तक ये ही जाहिर करते है कि उन्हें इस

विषय में कुछ नहीं पता परन्तु वह जोरावर का मनोबल गिराने से भी नहीं चूकते -

''यह मत भूलो कि पुलिस और कानून के हाथ बहुत लम्बे होते है और आँखे बहुत तेज । न देखें तो हाथी तक न देखें पर उतर आएं तो फिर चींटी भी नहीं बच सकती । न नजर से न गिरफ्त से । जोरावर ही बिसू का हत्यारा है तो इस संकेत को वह समझ जाता है । परन्तु फिर दबी जुबान से अपने चुनाव में खड़े होने की बात करता है जिसे सुनकर दा साहब कहते हैं - 'उधर बिसू ने आगजनी के जो प्रमाण जुटाये थे उन्हे लेकर बिन्दा दिल्ली जानेवाला है, इधर सक्सैना ने सारे प्रमाण जुटा दिये है कहीं तुम्हें जेल .... ।''[५६]

और वह यह भी कहते हैं कि ''तुम अवश्य चुनाव में खड़े हो में कभी मना नहीं करुंगा । बल्कि एक तरह से मुक्त हो जाऊँगा ।''[५४]

इसे सब बातों का परिणाम यह हुआ कि जोरावरने न केवल चुनाव लड़ने का विचार त्याग दिया बल्कि गाँव वापस लौटने के पूर्व दा साहब के समक्ष आत्मसमर्पण करते हुए कहा कि यह आपकी जिम्मेदारी है कि हमारे साथ ऐसा वैसा कुछ नहीं होना चाहिए ।

विचार पूर्वक देखा जाय तो दा साहब को पूरी तरह जानना मुश्किल ही है एक चतुर राजनीतिज्ञ होने का परिचय वे हमेशा देते हैं । भले ही वे बाहर से निर्लिप्त जान पड़ते हों और उन्हें जल्दी आवेश भी न आता हो पर सत्ता बनाये रखने को लिए वे हर संभव उपाय करने में पीछे नहीं रहते, एक ओर तो वह कहते हैं मेरे लिए राजनीति धर्मनीति से कम नहीं इस राह पर मेरे साथ चलना है तो गीता का उपदेश गाँठ बाँध लो, निष्ठा से अपना कर्तव्य किये जाओ बस फल पर द्रष्टि ही मत रखो' दूसरी ओर अपने पक्ष में वातावरण निर्माण करने के लिए

भी सजग रहते है और प्रतिस्पर्धी को चतुराई के साथ काटने में या पराजित करने की ओर भी ध्यान देते हैं । इसीलिए सरोहा गाँव में सुकुल बाबू की मीटिंग के चार-पाँच दिन बाद अपनी मीटिंग रखने का निश्चय करते है और कहते है - ''बात करेंगे गाँववालों से वैसे भी हादसा हुआ है - जाना तो चाहिए - बिसू के माँ-बाप को भी तो तसल्ली देनी चाहिए ।''[५७]

उनके व्यक्तित्व में उनकी हर बात और हर काम में जबरदस्त ठहराव है इस ठहराव की वजह से ही वे शायद कुर्सी पर ठहरे हुए हैं। वरना पिछले दस महीनों में विरोधियों ने और उनके अपने दल के असंतुष्ट लोगों ने जैसी-जैसी तिकड़में की है, कभी भी कला मुण्डी खा गये होते ।

दा साहब एक कुशल राजनीतिज्ञ के साथ साथ स्पष्टवादी भी है वह अपने घनिष्ट परिचितों और विश्वस्त व्यक्तियों के समक्ष ही दा साहब कोई भी बात साफ-साफ कह देते हैं अन्यथा वे अपनी भावनाओं को छिपाने में निपुण है । वे अपने बहुत ही विश्वासपात्र लखन के समक्ष भी अपनी भावी योजनाओं को एकदम से प्रकट नहीं कर देते परन्तु अन्त में विदा करते समय उसके पास आकर बड़े स्नेह से उसकी पीठ पर हाथ रखकर कहते है कि -

''आजका तुम्हारा आवेश देखकर अच्छा नहीं लगा मुझे, मेरे साथ चलना है तो भाई, जबान पर लगाम और व्यवहार में ठहराव चाहिए .... समझे ।''[५८]

दा साहब के व्यक्तित्व में हर काम में जबरदस्त ठहराव है । और इस ठहराव की वजह से ही वे शायद कुर्सी पर ठहरे हुए हैं ।

दा साहब बाहर से भले ही निर्लिप्त दिखाई दे और उन्हें जल्दी

आवेश न आता हो पर अपनी कुर्सी अर्थात् सत्ता बचाये रखने के लिए हर सम्भव उपाय करने में पीछे नहीं रहते । अपने पक्ष में वातावरण निर्माण करने के लिए भी वे सजग रहते हैं और प्रतिस्पर्धी को चतुराई के साथ काटने में या पराजित करने की और भी ध्यान देते हैं - दा साहब जहाँ अपनी पार्टी के असंतुष्ट सदस्यों द्वारा लाये गये अविश्वास के प्रस्ताव के खतरे से भी विचलित नहीं होते और स्पष्ट कर देते है -

''जिस दिन अपने लोगों का विश्वास खो दूँगा .... उन दिन कुर्सी पर नहीं बैठुगा ।''[५६] और दूसरी ओर वही दा साहब हमेशा यह जानने के लिए सतर्क रहते हैं कि कहाँ क्या हो रहा है और चारों ओर की खबरें उन्हेन समय-समय पर प्राप्त होती रहती हैं तथा अपना मुख्यमन्त्री का आसान बनाये रखने के लिए फूंक-फूंक कर कदम रखने के आदी हैं ।

दा साहब कभी भी अपने असली रूप में सबके सामने नहीं आते । आदर्शवादी, देशप्रेमी जनता तथा देश के शुभचिन्तक का मुखौटा लगानेवाला यह चरित्र हमेशा अपने स्वार्थपरकता से ऊपर नहीं चढ़ पाता ।

❖ त्रिलोचन सिंह या लोचन भैया :

'महाभोज' उपन्यास का लोचन या लोचन भैया को त्रिलोचन सिंह रावत के नाम से बहुत लोग जानते है सब के बीच तो वे लोचन भैया के नाम से ही जाने-पहचाने जाते हैं । वह केवल नाम से ही लोचन नहीं, सचमुख वे जनता के प्रिय लोचन हो गये थे । जब सुकुल बाबू मुख्यमन्त्री थे तब लोचन विधानसभा के सदस्य थे और सुकुल बाबू की पार्टी से ही सम्बन्ध रखते थे । आपातकालिन स्थिति के समय लोचनने अपने ही बलबूते पर सुकुल बाबू का विरोध किया

और प्रजातन्त्र का समर्थन किया तथा सर्वमान्य जनता की आजादी की माँग दोहरायी । इस विरोध की कीमत भी लोचन को चुकानी पड़ी लेकिन उसी दिन से वो जनता के प्रिय लोचन भैया बन गये और मुकदर के कुछ ऐसे सिकन्दर निकले कि चुकायी कीमत को भरपुर वसूलने का मौका भी उन्हें शिघ्र प्राप्त हुआ । देश में चुनाव का अवसर आने पर कुछ प्रमुख विरोधी दलों ने मिल जुल कर एक पार्टी बनायी और लोचन भैया का भी इस पार्टी के निर्माण में महत्त्वपूर्ण योग रहा तथा विधानसभा के लिए होनेवाले चुनाव में लोचन भी एक उम्मीदवार थे । जनता ने अपने लोचन भैया को भारी बहुतम से जिताकर बाइज्जत विधानसभा में ला बिठाया और जब दा साहब मुख्यमन्त्री बने तब उन्होंने लोचन की लोकप्रियता को ध्यान में रखकर उन्हें अपने मन्त्रिमंडल में शिक्षा मन्त्री बनाया ।

यदि जनता ने अपने प्यार का प्रमाण दे दिया था तो अब लोचन के लिए यह आवश्यक हो गया था कि अपनी ईमानदारी का निर्वाह करें । चुनाव के समय उन्होंने बहुत बड़ी बड़ी बाते की थी और लम्बे चौड़े आश्वास दिये वह उनके सामने चुनौती बनकर खड़ा है, लोचन इस चुनौती से कतई कतराना नहीं चाहते ।

लोचन को यह देखकर अत्याधिक दुख होता है कि मुख्यमन्त्री दा साहब जमींदारों को न केवल उनके सुख-सुविधाएँ प्रदान करते है बल्कि उन्हें निर्धन ग्रामवासियों के शोषण की छूट भी प्रदान करते हैं । जब सरोहा जोरावर सिंह ने आग लगवा दी थी तब लोचन भैया का मन सुलग उठा । और जब दा साहब ने सब के साथ लखन को खड़ा करवाया तो लोचन के मनमें लगी आग और भी भड़क उठी । वह बिसू हरिजनों एवं मजदूरों को जाग्रत करता था और उन्हें इस बात के

लिए उत्तेजित कर रहा था कि वे पूरी मजदूरी लिये बिना जमींदारों के खेत में काम न करें जमींदार उस पर बहुत नाराज थे । इस प्रकार बिसू की मौत को साधारण मृत्यु न समझकर हत्या ही कहना उचित होगा और इसलिए लोचन के मन में एकदम लपटें उठने लगीं ।

निर्भीक स्पष्टवादी होने के कारण ही लोचन यह कहने का साहस कर पाता है कि - ''आप लोग इस बात को तो शायद भूल ही गये है कि दा साहब के व्यक्तित्व से परे भी पार्टी का कोई अस्तित्व हैं और वह अप्पा साहब से यह प्रश्न भी करता है इस पार्टी के माध्यम से हमने कुछ बहुत बड़ी-बड़ी बातें करने के दावे भी तो किये थे । क्या हुआ उन सबका ?''

लोचन के क्षोभ का अप्पा साहब पर कोई खास प्रभाव नहीं पड़ता और वह सड़क का उदाहरण देकर उसकी शंकाओं का समाधान करते है परन्तु लोचन तर्कसंगत उतर देता है 'जो सड़क रोज एक गज बनती है और दो गज खुदती है उसके पूरी होने पर क्या आप सचमुच विश्वास करते हैं ? आप भ्रम में रहना चाहते हैं, जरुर रहे पर अब यह दोहरी जिन्दगी जीना मेरे बस का नहीं ।'[६०]

इस प्रकार लोचन ने अन्तिम फैसला सुना दिया । अप्पा साहब ने उसे समझाने का प्रयत्न किया परन्तु उसने स्पष्ट कहा कि -

''हम पाँच मन्त्री अपना त्यागपत्र देने जा रहे हैं और इस बार पार्टी और एकता की आड़ लेकर आप हमें निर्णय से नहीं डिगा पायेंगे ।''[६१]

जब लोचन को मन्त्रिमण्डल से बर्खास्त कर दिया तब उन्होंने स्वेच्छा से पार्टी से भी त्यागपत्र दे दिया परन्तु उनका मन शांत नहीं रह पाया और हजारों प्रश्न उनके मनमें उठने लगे । लोचन यही सोचते

रहते कि 'अपने आस-पास और चारो तरफ जो कुछ हो रहा है, उसे आँख मुँदकर स्वीकारते रहे एकदम उदासीन और तटस्थ होकर ? रह सकता है कोई भी जीवित इस तरह ? नहीं रह सकते थे, तभी तो एक बहुत बड़ी क्रांति के एक छोटे से वाहक बने थे । पर कैसी हुई यह क्रांति ? कहीं से कुछ भी तो नहीं बदला । अब कहाँ से होगी दूसरी क्रांति और कौन करेगा ? आज तो परिवर्तन का नाम लेनेवाले की आवाज घोंट दी जाती है - उसे काटकर फेंक दिया जाता हैं ।

इस प्रकार लोचन 'महाभोज' उपन्यास का एक महत्त्वपूर्ण पात्र माना जाएगा ।

❖ बिंदा (बिंदेश्वरी प्रसाद) :

'महाभोज' उपन्यास में केवल 'बिन्दा' शब्द का ही उल्लेख हुआ है परन्तु बिन्दा का पूर्ण नाम बिन्देश्वरी प्रसाद है और वह एक उत्साही एवं जागरुक पात्र ही जान पड़ता है तथा इस उपन्यास की कथावस्तु के विकास में उसका उल्लेखनीय योग भी रहा हैं ।

बिन्दा शहर का रहनेवाला एक शिक्षित युवक है और वह शहर में ही नौकरी करता है । उसका विवाह सरोहा गाँव में रहनेवाली रुक्मा से होता है । रुक्मा मातृहीना थी और अपने पिता की इकलौती बेटी थी तथा वह घर का सारा कामकाज भी निपटाती थी । विवाह के बाद रुक्मा को अपने पति बिन्दा के साथ शहर जाना पड़ा लेकिन कुछ समय बाद उसका पिता बीमार हो गया और उसे अपने पिता की देखरेख के लिए सरोहा आना पड़ा तथा वह लौटकर शहर नहीं जा सकी । रुक्मा के पिता की मृत्यु हो गई और उसकी बीस बीघा खेती के साथ-साथ कुआँ, गाय, बैल, भैस एवं अमराई आदि बहुत कुछ जायदाद थी जिसकी अधिकारिणी रुक्मा थी और उसने बिन्दा से कह

दिया कि मैं अब शहर नहीं आ सकूंगी तथा गाँव में रहकर बाप की खेती देखूंगी । यदि बिन्दा को शहर में रहना हो तो वह रह सकता है अन्यथा उसे गाँव आकर खेती सँभालनी चाहिए । इस प्रकार बिन्दा ने शहर की नौकरी छोड़ दी और वह भी सरोहा आ गया तथा अपने ससुर की खेती आदि सँभालने लगा ।

बिसू की हत्या के अपराध में निर्दोष बिन्दा को पुलिसने गिरफ्तार कर लिया और उस बेचारे निरपराधी के शरीर को मार-मार कर रुई की तरह धुनकर रख दिया परन्तु पुलिस की बेंतो और ठोकरों की बौछार के बीच वह यही कहता रहा ''मैंने बिसू को नहीं मारा .... मैं बिसू को मार ही नहीं सकता । मुझे तो उसकी आखिरी इच्छा पूरी करनी है । मैं उसे पूरी करके रहूंगा .... चाहे जैसे भी हो जो भी हो .... ।''[६२]

फिर भी पुलिसवालों का मारना-पीटना बंद नही होता परन्तु बिन्दा का चिलाना भी बंद नहीं होता और वह आवेश में थरथराता हुआ चीखता रहता हैं, मार डालो, मार डालो - तुमने बिसू को मार डाला, मुझे भी मार डालो लेकिन देखना बिसू की इच्छा कोई नहीं मार सकता ।''

''एक व्यक्ति की मौत राजनीति के अखाड़े में खेलनेवालों के लिए मानो गिद्धों के महाभोज का जुगड़ भर गयी - इन राजनीतिक गिद्धों के लिए भोजन इस्तेमाल की चीज मात्र रह गयी ।''

❖ स्वामी :

मन्नू भंडारी का 'स्वामी' उपन्यास बंगला के महान कथाकार शरत्चन्द्र की कहानी 'स्वामी' पर आधारित एक लघु उपन्यास है । इसके सन्दर्भ में उनका स्वयं कथन है कि - ''शरदचन्द्र की कहानी

'स्वामी' का लेखन मेरे द्वारा हो यह मात्र एक संयोग ही हैं ।''[६३]

शरतचन्द्र की कहानी को मन्नू भंडारी ने उपन्यास में ढालने के लिये थोड़ा परिवर्तन किया है जो इस प्रकार है - मन्नूजी के शब्दो में ''हाँ पात्रों और स्थितियों की परिकल्पना में दो पीढ़ियों की मानसिकता और दृष्टि का अन्तर बहुत शिद्त के साथ महसूस हो रहा था । मैं अपनी सौदागिनी में आत्माभर्त्सना और आत्म-धिक्कार का वह भाव भर ही नही सकती थी, जिसमें शरद की सौदामिनी आद्यत सराबौर रहती है । न तो पूर्व प्रेमी नरेन्द्र का सौदामिनी को कलकत्ते जाकर एक कमरे में बन्द कर देना मेरे गले उतर रहा था न प्रेमी को भाई बना लेनेवाली हास्यास्पद स्थिति । एसलिए मैने कहानी का अन्तिम हिस्सा एकदम ही बदल दिया । शरद की तरह मैने उसे एक ऐसी पथभ्रष्ट कुलवधू का रूप नही दिया जो पति के चरणो में गिरकर अपने उस गुरुत्तर पाप कर्म की क्षमा माँगने के लिए छटपटाती है । मेरे द्रष्टि में सौदामिनी ने कोई पाप नही किया था । वरन् सम्बन्धों का कुछ ऐसी मनोवैज्ञानिक उलझनें थी जिनमे वह निरन्तर उलझती ही चली गई । पारिवारिक कलह और अपमान ने उसके आत्मसम्मान मे इस तरह आघात किया कि उसने घर छोड़ दिया । लेकिन स्वतंत्र निर्णय लेने की अपनी इस क्षमता के कारण वह नरेन्द्र के साथ जाने के लिए भी अपने को तैयार नही कर पाई । वह अपनी माँ के घर गई । माँ का घर जल चुका है । लेकिन माँ एकदम निर्द्वन्द्व-अविचलित है । उन्होंने अपना सब कुछ ईश्वर के हाथ सोंप रखा है । उसकी गहरी आस्था और निष्ठा सौदामिनी के मन मे एक प्रकाश किरन आलोकित कर देती है और यही कहानी एक ज्यादा गहरा और व्यापक अर्थ ध्वनित करने लगती है, जिसमे सौदामिनी की यह यात्रा अविश्वास से

विश्वास अनास्था से आस्था और नास्तिकता से आस्तिकता किसी काल्पनीक ईश्वर के सामने समर्पित नही है वह परत दर परत मानवीय गुणों और गरिमा को अन्वेषण करती है । घनश्याम के प्रति उसका पहला भाव प्रतिरोध और विरोध का है जो क्रमशः विरक्ति और उदासीनता से होता हुआ सहानुभूति, समझ, स्नेह, सम्मान सी सीढ़ियों को लांघता हुआ श्रद्धा और आस्था तक पहुंचता है । सौदामिनी की ससुराल मे तनाव की स्थिति की तीव्रता देने के लिए ही मैने टुन्नी की कल्पना की । इसके माध्यम से पारिवारिक सदस्यों के विभिन्न मंतव्यो को सहज ही संघर्षो मे लाने की सुविधा भी मिल गयी और घनश्याम के चरित्र की दृढ़ता को उजागर करने का अवसर भी ।

मन्नू भंडारी अंत में कहती है कि शरतचन्द्र की कहानी आत्म धिक्कार और पाप बोध की कहानी थी, मैने उसे एक सहज मानवीय अन्तर्द्वन्द्व की कहानी का रूप है ।

❖ कहानी साहित्य :

अध्ययन एवं विश्लेषण की सुविधा के लिए स्वातन्त्र्योंतर कहानी को नई कहानी कहा गया हैं । 'नई कहानी' में यथार्थ की 'प्रमाणिकता' पर अधिक बल दिया गया है । इसलिए कहानी में भोगे हुए यथार्थ चित्रण को महत्त्व प्राप्त हुआ । कहानी अब जीवनी का प्रतिबिम्ब नहीं बल्कि जीवन का हिस्सा अनुभवया खण्ड मात्र बन गई । स्वातंत्र्यपूर्व की कहानी जीवन का चित्र या प्रतिक्रिया थी । चित्र में जीवन की वास्तविकता नहीं होती, थोड़ी कृत्रिमता या बनावटीपन होता है जब कि नई कहानी इस बनावटीपन को दूर कर जिन्दगी के किसी अंश के हिस्टरी के रूप में आती है । नए कहानीकारों ने पुराने कहानीकारों का रास्ता नहीं पकड़ा बल्कि उसमें परिवर्तन भी किया । उसमें नई दिशाएँ नई मान्यताएँ भी दिखाई देती हैं । इतना ही नहीं उनमें नए भावबोध को ग्रहण करने की प्रवृत्ति भी दिखाई देती है ।

कहानी में घोषित होने के कारण उसमें बहुत अधिक विश्वसनीयतां आ गई । नई कहानी का व्यक्ति अपने माध्यम से समाज को तलाशता है । इसलिए नई कहानी में मानवीय रिश्तों सम्बन्धों पर बहुत अधिक लिखा गया है ।

स्वतन्त्रा प्राप्ति से पूर्व लिखी गई कहानी स्वातन्त्र्योत्तर कहानी से भिन्न थी । स्वातन्त्रोत्तर परिस्थितियाँ बदल जाने से पाठकों की मांग भी बदली । वह आदर्श की नहीं बल्कि यथार्थ की कहानी चाहता था । पाठक समय का कटु यथार्थ जानना चाहता है । स्वातन्त्रता पूर्व का कहानीकार अपनी समस्या को मानव समस्या बनाकर चित्रित नहीं कर सकता परन्तु स्वातन्त्र्योत्तर कहानीकार की निजी समस्या मानव समस्या बन सकती है । कहानीकार समाज का प्रतिनिधि बनकर

अपनी समस्या को समाज की समस्या के रूप में चित्रित कर सकता हैं ।[६४]

कहानी में एक विचार व्यक्त करने की अपेक्षा वास्तविकता से अधिक से अधिक स्तरों को उभारने की कोशिश हो रही है । इसलिए स्वातन्त्र्योत्तर कहानी में मानवजीवन का जितना स्पष्ट चित्रण हुआ है उतना स्वातन्त्रपूर्ण कहानी में नहीं हुआ ।

कमलेश्वर ने कहा कि -

‘‘वर्तमान लेखक स्रष्टा द्रष्टा और भविष्यवक्ता होने के खोल उतारकर फेंक देता है क्योंकि वह सीधे सीधे मानवीय संकट का सामना करता है और अपनी हर कहानी में यथार्थ को खोजता और अभिव्यक्त करना चाहता है ।’’[६५]

नई कहानी ने बंधी-बधाई परिपाटी को तोड़कर नए परिपेक्ष्य में प्रवेश किया हैं, जो साहित्य का मूल्यांकनकारी परिवर्तन ही है । इस नई कहानी के यथार्थने मानवमन की छटपटाहटता, घुटन, संत्रासनद्वेष, वैमनस्य की अपेक्षा मोहभंग का चित्रण किया है । कहानी पहले भी थी पर मानवमनकी चाह जानने का प्रयास स्वातन्त्र्योत्तर कहानी में जिस तरह किया गया वह एक नया प्रयोग ही कहा जाएगा । जिस युग में जैसी जरुरत होती है उसी द्रष्टिकोण से लेखक अपनी कलम चलाता है । स्वयं मध्यवर्गीय लेखकों ने इस युग की परिस्थितियों की झेला है, महसूस किया हैं ।

नई कहानी ने स्त्री-पुरुष सम्बन्धों की स्वच्छन्दता और आधुनिकता बोध को रेखांकित किया है जो यथार्थ है ।

कहानी की परिभाषा :

कहानी कथा साहित्य की दूसरी महत्त्वपूर्ण विद्या है । कहानी

साहित्य में एक स्वतंत्र कला के रूप में विकसित हो चुकी है । आधुनिक हिन्दी साहित्य में यह रूप भी बंगला के माध्यम से पाश्चात्य साहित्य से आया है । अंग्रेजी में जिसे 'शोर्ट स्टोरी' कहते है । हिन्दी में गल्प नामका किसी मात्रा में प्रचलन रहा है । परन्तु कहानी शब्द ही सर्वाधिक स्वीकृत है । कभी-कभी लघुकथा भी कहा जाता है ।

कहानी की व्याख्या करते हुए जयशंकर प्रसाद लिखते है -

''सौन्दर्य की एक झलक का चित्रण करना और उसके द्वारा इसकी सृष्टि करना ही कहानी का लक्ष्य होता है ।''

एच जे. वेल्स लिखते ह -

''कोई मधुर कथात्मक रचना जो सरलता से बीस मिनट में पढ़ी जा सके, कहानी कहा जा सकत है ।''

विश्व प्रसिद्ध कहानीकार एडगर ऐलन पो ने कहानी की परिभाषा देते हुए कहा है कि-

''कहानी आधे घण्टे से लेकर एक या दो घण्टों के बीच पढ़ लिया जानेवाला गद्य वृतांत है । कहानी एक गद्यात्मक कथा है जो एक बैठक में ही पढ़ ली जा सके ।''

नई कहानी की पहली पीढ़ी की सफल लेखिका के रूप में मन्नू भंडारी का नाम बड़े सम्मान से लिया जाता है । महिला कहानीकारों में मन्नू भंडारी का नाम आदर से लिया जाता है । वैसे हिन्दी में कहानी लिखनेवाली महिलाओं का अनुपात पहले से ही बहुत कम रहा है । और उसमें मन्नू की तरह व्यक्तित्व में क्रांतिकारी तत्त्वों को लिये हुए आधुनिकता बोध करानेवाली कहानियाँ लिखनेवालें नही के बराबर हैं । मन्नू भंडारी की रचनाएँ पुरुष की आकांक्षाओं से प्रेरित होकर नारी का चित्र उपस्थित नहीं करती बल्कि

नारी का नारी की द्रष्टि से चित्रण करती है मन्नू भंडारी की कहानियों की प्रमुख विशेषता अनुभवों की सच्चाई और संवेदनशीलता हैं ।

साहित्य की तीन प्रमुख विद्याओं में मन्नू भंडारी ने अपनी प्रतिभा दिखाई है लेकिन उनकी विशेष ख्याती कहानीकार के रूप में है । कुछ समीक्षकों ने मन्नू भंडारी की कहानियों को मुख्यतः वैयक्तिक चेतना पर आधारित माना है ।

डॉ. इन्द्रनाथ मदान ने लिखा हैं - ''मन्नू भंडारी की कहानीकला का मूल स्वर भी वैयक्तिक चेतना से प्रेरीत हैं । इनकी कहानियों में सदैव व्यक्ति की कुंण्ठाओं का चित्रण तथा रोमांटिक प्रेम का व्यंग्यात्मक निरुपण हैं, घूटन, पराजय तथा विवशता की अभिव्यक्ति हैं ।''

यद्यपि इनकी कहानियों का मूल स्वर वैयक्तिक चेतना पर आधारित है किन्तु उसमें विराटता और व्यापकता इतनी अधिक है कि कहीं वैयक्तिक चेतना आगे चूनकर सहसा महान सामाजिक सन्दर्भो से जुड़ जाती है ।

मन्नू भंडारी की कहानियों के बारे में -

डॉ. भैरुलाल गर्गने - स्वातंत्र्योत्तर प्रतिनिधि कहानीकार नामक लेख में बताया है कि -

मन्नू भंडारी की कहानियाँ सोदेश्य होती है और जीवन के निकट कहानियों में अनुभूति की गहनता और नए मूल्यों को उभारने की क्षमता भी ।''

मन्नू भंडारी की कहानियों के पात्र कुंठाग्रस्त है । परिस्थिति के खिलाफ जरुर कुछ करना चाहते हैं पर प्रत्यक्षतः कुछ कर नहीं पाते । स्त्री पर अधिकार जताना पुरुष अपना धर्म और पौरुषत्व समझते है ।

केवल पति ही नहीं समाज का हर पुरुष नारी के प्रति संकुचित द्रष्टिकोण रखता है । सदियों से स्त्री को दबाए रखने की जो परम्परा है उस परम्परा से पुरुष वर्ग बाहर नहीं निकल पाया है । चाहे स्त्री कमानेवाली हो, राजनीति में हो या सामाजिक संस्थाओं से जुड़ी हो हर क्षेत्र में स्त्रियों के प्रति पुरुषो संकीर्ण द्रष्टिकोण ही रखता है । इसलिए स्त्री अब पुरुष के खिलाफ जा रही है अब समाज में स्त्री का रवैया बदलने लगा हैं ।

आज का कहानीकार परिवेश के दबाव से उत्पन्न हर स्थिति को उद्घाटित करता है । मन्नू भंडारी की 'क्षय' कहानी में आर्थिक संकट से उत्पन्न घुटन का चित्रण है । 'रानी माँ का चबूतरा' में अंधविश्वास के खिलाफ लड़नेवाली गुलाबी माँ का चित्रण है । किसी चबूतरों या चौखट पर दिया जलाकर संतान प्राप्ति हो सकती है लेकिन उन बच्चों के पालन-पोषण की समस्या खड़ी हो जाती है इस सामाजिक यथार्थ को मन्नी भंडारी ने कलात्मकता से चित्रित किया है । 'यही सच है' कहानी की दीपा पहले निशीथ से और बाद में संजय से प्रेम करती है । निशीथ से अपमानित होकर भी दीपा उसके साथ पार्टी में जाने के लिए इन्कार नहीं कर सकती । यह आज के युवा पीढ़ी की कमजोरी ही है ।

मन्नू भंडारी के पूर्व जो महिला साहित्यकार साहित्य-जगत में आई उन्होंने 'आँचल में दूध और आँखों में पानी' वाली नारी की कोमल तथा गरिमामय प्रतिमा अधिक चित्रित की । लेकिन मन्नू को इस प्रतिमा से विशेष लगाव नहीं था और इसी कारण उन्होंने नारी मन की घुटन-टूटन तथा आक्रोश अपनी कहानियों में चित्रित किया उन्होंने अपनी कहानियों में नारी मन की अनुभूतियों को अभिव्यक्त

किया है ।

मन्नू भंडारीने पाँच कहानी संग्रहो का सृजन किया जो इस प्रकार हैं ।

	कहानी संग्रह	प्रथम संस्करण
१.	मैं हार गई	सन् १९५७
२.	तीन निगाहों की एक तस्वीर	सन् १९५९
३.	यही सच है	सन् १९६६
४.	एक प्लैट सैलाब	सन् १९६८
५.	त्रिशंकु	सन् १९७८

अब तक ५० कहानियाँ लिखी है ।

अब हम एक-एक कहानी को विस्तार से देखेंगे ।

(१) मैं हार गई :

मन्नू भंडारी का यह पहला कहानी संग्रह १९५७ में प्रकाशित हुआ । यह कहानी इस संग्रह की अंतिम कहानी है तथा इसी कहानी के आधार पर कहानी संग्रह का नामकरण हुआ है इस संग्रह में १२ कहानियां संग्रहित है ।

१. ईसा के घर इन्सान :

मन्नू भंडारी के 'मैं हार गई' कहानीसंग्रह की ये प्रथम कहानी है । इस कहानी में धार्मिक कुप्रवृतियों पर व्यंग्य किया है ।

पहाड़ियों से घिरे शहरमें मिशनरी लड़कियों का कॉलेज है । सब जगह हरा-भरा दिखाई देता है । सामने एक जेल है । सरीन जेल की ऊँची-ऊँची दीवारों को देखा करती है और सोचती है कि कॉलेज के लिए यह जगह क्यों चुनी गई ? और कैदियों के जीवन की विचित्र कल्पनाएँ करती रहती है । कैसा जीवन होगा उसका न आनन्द न

उल्लास न रस । इसी कॉलेज की मदर बहुत अच्छी है और ज्यादातः स्टाफ नन्स का है । ऐनी और सिस्टर जैन भी बहुत अच्छी है वह हमेशा हँसती रहती है । रत्ना सिस्टर्स को हिन्दी पढ़ाती है उसे कॉलेज और फादर के प्रति बेहद कौतूहल और भय है । ऐनी और जैन अपनी इच्छा से सब कुछ छोड़कर नन बनी थी । इन्होंने जिन्दगी में चर्च और कॉलेज के सिवा कुछ देखा ही नहीं वे कॉलेज के पीछेवाले चर्च में रहती है और कॉलेज मे काम करती है, बस यही है उनका जीवन मेरी और लूसी के चेहरों पर मुर्दनी छाई रहती है न किसी से बोलती है, न हँसती है ।

''जूली उम्र में इनके बराबर होगी पर चहकती रहती है बाते करेंगी तो ऐसी लच्छेदार कि तबियत भड़क उठे । हँसेगी तो ऐसे कि सारा स्टाफ-रुम गूँज जाए, उसका तो अंग-अंग जैसे थिरकता रहता है ।'' एकबार जूली फोर्थ इयरका क्लास ले रही थी और कीडस की कोई कविता समझाते हुए एक लड़की को चूम लेती है । मदर नाराज हुई और जूली को चर्च भेज दिया वे फादर के पास गई फादर उसकी आत्मा शुद्धि करते हैं ।

''यहाँ के फादर एक अलौकिक पुरुष है एकदम दिव्य ! कोई कैसा भी पतित हो या किसी का मन जरा भी विकारग्रस्त हो, इनके सम्पर्क में आने से ही उसकी आत्मा की शुद्धि हो जाती है । दूर-दूर तक बड़ा नाम है फादर का । बाहर की मिशनरीज से कितने ही लोग आते है फादर के पास आत्माशुद्धि के लिए ।''[६६]

जब लूसी चर्च में आई तब वे भी जूली से कम चंचल न थी । फादर ने तीन दिन में ही उसकी कायापलट कर दी । फादर चाल-ढाल से एक बड़ी भव्य मूर्ति लगते थे और उसे देखकर मन श्रद्धा से भर उठे

ऐसी व्यक्त्त्व हैं उनका उसमें ऐसी कौन-सी शक्ति है जो आत्मा की शुद्धि कर देती है । फादर ने दो दिन में क्या किया कि जूली हँसना भूल गई, उसकी सारी शोखी, सारी हँसी, सारी मस्ती जैसे किसीने सोख ली हो । यें जूली का नया रूप था लगता था जैसे जूली नहीं उसकी जिन्दा लाश घूम रही है ।

सिस्टर ऐनी ने कहा कि - ''फादर ने उसकी आत्मा को पवित्र कर दिया उसकी आत्मा के विकार मिट गए ।''[६७]

चर्च में एक खूबसूरत नन् एंजिला को लाया जाता है । वह पागलों जैसा व्यवहार करती हैं । इसी कारण वह फादर के पासे भेजी जाती है लेकिन वह फादर के काबू में नहीं आती । वही कहती हैं - ''मुझे कोई नहीं रोक सकता, जहाँ मेरा मन होगा मैं जाऊँगी । मैंने तुम्हारे फादर .... फिर ओठ चबाकर बात तोड़कर बोली .... अब वे कभी फालतू की बातें नहीं करेंगे ।''[६८]

एंजिला फादर के ढ़ोग का पर्दाफाश करती है और इस बात से लूसी प्रसन्न होती है फादर की नाकामयाबी पर । और एक दिन लूसी चर्च से भाग जाती है । इस घटना के बाद चर्च तथा कॉलेज के चारों और ऊँची-ऊँची दीवारे खड़ी की जाती हैं ।

इस कहानी में मन्नू भंडारी ने धर्म के नाम पर होनेवाले नारी शोषण के खिलाफ 'एंजिला' द्वारा आवाज उठायी है । मानसिक संस्कारों एवम् आत्मशुद्धि के नाम पर चर्च के फादर युवतियों से अपनी कामतृप्ति कर उन्हें लाश बना देते है । एंजिला इस अन्याय के प्रति विद्रोह करती है उसने फादर का नशा डाउन कर दिया और फादर का भंडाफोड किया ।

फादर इस असफलता पर आत्मग्लानि के मारे मरे जा रहे थे ।

इस प्रकार लेखिका ने ईसाई मिशनरी संस्थानों में चलनेवाले अनैतिक भ्रष्टाचार का पर्दाफाश करके अपनी सही धर्म निरपेक्ष द्रष्टि का परिचय दिया हैं ।

२. गीत का चुम्बन :

प्रस्तुत कहानी आधुनिक एवं प्राचीन परंपरा के बीच छटपटाती नारी के अव्यक्त प्रेम का चित्रण बड़े ही सशक्त ढंग से करती है ।

कनिका इस कहानी की नायिका है वह अच्छी गायिका है । माथुर साहब के यहाँ समारोह में जहाँ शहर के कवि, साहित्यकार, चित्रकार, गायक जुटने वाले थे वहाँ कनिका को मौसीने भेज दिया इसी समारोह में कनिका का परिचय कवि निखिल से हो गया जिसके अनेक गीत वह गाती थी । मिसेज माथुर के आग्रह पर कनिका ने निखिल का एक गीत गाया जिसको निखिलने बहुत पसन्द किया ।

निखल कनिका के घर आने-जाने लगा । कनिका रेडियो पर गाने लगी । कनिका और निखिल अनेक विषयों पर चर्चा करते है । स्त्री-पुरुष संबंधो पर भी चर्चा हुई । कनिका का कहना था -

‘‘बाते हम कितनी ही बड़ी-बड़ी बना ले, निखिल दा पर व्यवहार में हम आगे नहीं बढ़ पाते है । आप जो यहाँ बैठकर इतनी लम्बी चौड़ी बाते कर रहे हो मान लो कल को आपके बीवी आये और किसी दूसरे पुरुष के साथ वह अपना शारीरिक सम्बन्ध रखे तो बर्दाश्त कर सकेंगे आप ? यों ड्रोंइगरुम में बैठकर बाते बनाना सरल होता है । पर वे बाते भर ही रहती है, कोरे सिद्धांत ।’’[६९]

एक दिन निखिलने कनिका को बांहोमें भरकर चूम लिया । तब उसने निखिल को एक चांटा मार दिया । सप्ताह के बाद निखिल का पत्र आया जिसमें लिख था -

‘‘सच तुमने मेरी आँखे खोल दी कि शारीरिक संबंध के परे भी लड़के की मित्रता का कोई आधार हो सकता है, और इसीलिये मुझे उस दिन का अपना व्यवहार कचोट रहा है । मुझे तुम पर जरा भी गुस्सा नहीं, अपने पर ही ग्लानि है ।’’७०

यह कहानी परंपरा और संस्कारों में जकड़ी नारी कनिका के प्रेम की कुंठा को चित्रित करती है । वह निखिल से प्रेम करती है, लेकिन व्यक्त नहीं कर पाती । इन दोनों के प्रेम के विकास में किसी तरह की पारिवारिक या आर्थिक बाधायें नहीं होगी इसके लिए कनिका के संस्कार जिम्मेदार हैं ।

आज की नारी पूर्णरूप से न तो आधुनिक बन पायी है न अपनी सभ्यता एवं संस्कार को छोड़ सकती है । इस कहानी के द्वारा लेखिका ने विजातीय आकर्षण और नारी हृदय के शाश्वत सत्य को प्रतिपादित किया है ।

३. **जीती बाज़ी की हार :**

यह एक नारी की ऐसी कहानी है जो प्रकृति के विरुद्ध जाकर जीतकर भी हार जाती है ।

तीन लड़कियाँ आशा, नलिनी और मुरला एक ही कॉलेज में पढ़ती है । विवाह के बारे में इन सभी का मानना था कि अपने व्यक्तित्व का खून करके इस प्रकार पति के रंग में रंग जाना उनकी कल्पना के बाहर की बात थी । लेकिन नारी सुलभ भावना के फलस्वरूप आशा एवं नलिनी विवाह कर लेती हैं । मुरला अपने सिद्धांतो पर अड़ग रहती हैं । वह एम.ए. में युनिवर्सिटी में प्रथम स्थान प्राप्त करके आगे कोर्स करना आरंभ करती हैं । वह अंत तक अविवाहित रहना चाहती है और इस बात पर आशा से शर्त

लगाती है । आशाने कहा -

''इतना जानती हूँ कि जिससे शर्त लगा रही हूँ वह सबकुछ होकर भी नारी है । और नारी को एक साथी चाहिए, एक सहारा चाहिए, परिवार चाहिए और चाहिए बच्चे । उच्च से उच्च शिक्षा भी उसकी इस भावना को नहीं चुक सकती ।[७१]

मुरला कहती है कि - ''क्या दकियानुसी लोगों जैसे बातें करती है । सहारा उसे चाहिए जो अपने को अबला समझे ! मैं सबला हूँ, मुझे किसी का सहारा नहीं चाहिए ।''[७२]

मुरला अविवाहित थी और शिक्षा-विभाग के एक ऊँचे पद पर पहुँच गई थी । वह एक सभा का सभापतित्व करने इलाहाबाद गई कि पन्द्रह वर्षो के बाद उसकी मुलाकात आशा से होती है । आशा उसे अपने घर ले गई वहाँ उसे आशा का घर उसके तीनों बच्चे सभी कुछ बहुत अच्छा लगा । आशा जीती बाजी की याद दिलाकर मुरला से इनाम माँगने के लिये कहती है । तब मुरला आशा की पाँच वर्षीय लड़की माँगती है ।

''तो अपनी यह बिटिया मुझे दे दे ।''[७३]

इस कहानी में मन्नू भंडारी ने नारी पर मातृत्व की विजय प्रस्तुत की हैं । कोई भी नारी अपने नारी-सुलभ भावनाओं के कारण पति के रूप में एक साथी, एक सहारा, भरा-पूरा परिवार और बच्चे चाहती है । मुरला इसी प्रकृति के विरुद्ध जाकर अंत तक अविवाहित रहती है पर उसे शांति हासिल नही होती । नारी का 'नारीत्व' मातृत्व से और अधिक निखर आता है । नारी 'मातृत्व' के बिना अधूरी है, यहीं मुरला की हार है । उसने बाजी तो जीत ली पर वस्तुतः वह हार गयी हैं । वास्तव में यह एक सामाजिक कहानी हैं ।

४. एक कमजोर लड़की की कहानी :

मन्नू भंडारी ने प्रस्तुत कहानी में प्रेम को न पाने की छटपटाहट व्यक्त की है । नायिका 'रूप' है वह वैचारिक द्रष्टि से विद्रोह करती है, पर यथार्थ में कमजोर पड़ जाती है ।

'रूप' अपनी विमाता के कारण स्कूल छोड़कर घर में पढ़ाई करने लगती है । सौतेली माँ के कठोर नियंत्रण के कारण वह हमेशा डरी डरी सहमी-सहमी रहती है । इसी कारण उसके पिता रूपको उसके मामा-मामी के पास भेज देते हैं । वहाँ रहकर रूप मैट्रिक की परीक्षा पास कर लेती है । जहाँ उसका परिचय एक अनाथ लड़के 'ललित' से होता है । जो मामा का पालक पुत्र है उसके साथ रूप का प्रेम धीरे-धीरे बढ़ता जाता है । ललित रुप के प्रति प्रेम प्रकट करता है और उसे हिम्मत देकर उच्च शिक्षा के लिये विदेश चला जाता है ।

ललित के जाने के बाद रूप की शादी वकील साहब से हो जाती है । रूप इज्जत खंडित होने के भय से दूसरों की थोपी हुई इच्छाओं को स्वीकार कर अपने अरमानों का गला घोंट देती है । स्कूल की पढ़ाई से लेकर विवाह तक के मामलों में वह स्वयं निर्णय नही ले पाती । उसे हर बार पिताजी की इच्छा के आगे झुकना पड़ता है । पिताजी की बात उसे विद्रोह करने से रोकती है -

''कौन, रूप बेटी ! अरे यह बड़ी समझदार लड़की है, मेरा कहना वह कभी टाल सकती है भला ! आज के जमाने में ऐसी लड़की बड़े भाग्य से मिलती है । रूप को लगा जैसे उसका सारा विरोध, सारा क्रोध बह गया है ।''[७४]

रूप के पति उदार दिल के इन्सान है । पति की व्यस्तता के कारण और ललित की याद से व्यथित होकर रूप अपने घर में

अकेलापन महसूस करती है । अमरीका से लौटकर ललित वकील साहब के घर महेमान बनकर रहता है । रूप अब शादी-सुधा के कारण ललित से एक दूरी बनाये रहती है और उसके साथ बहुत कम बोलती है । ललित रूप को दकियानूसी बातें त्याग कर अपने साथ भाग निकलने के लिए उकसाता है । रूप लोकलाज के डर से पहले मना कर देती है । पर ललित के समझाने पर रूप भागने के लिए तैयार हो गई । ललित रूप के मन को पूरे सप्ताह भर द्रढ़ बनाता रहा । विदेश की बातें बताकर उसने उसे पुरी तरह समझा दिया कि जो कुछ भी वे करना जा रहे हैं वह किसी भी द्रष्टि से अनुचित नहीं है, और रूप ने भी अपने आपको पूरी तरह तैयार कर लिया, ललित ने कहा -

''अच्छा रूप ! कल रात को हमलोग चल देंगे । मैं सवेरे ही यहाँ से बिदा लेकर धर्मशाला में जा टिकूँगा । तुम रात बारह बजे के करीब स्टेशन रोडवाले चबूतरे पर मुझे मिलोगी समझीं ? डरोगी तो नहीं ना ?''[७५]

रूप ने कहा - ''नहीं ललित एक बार कमजोरी का फल भुगत चुकी हूँ, उससे जन्म भर के लिए सबक मिल गया ।''[७६] योजना की रात ही वकील साहिब रूप को अपने मित्र की पढ़ी-लिखी पत्नी के भाग जाने का समाचार सुनाते हैं -

''बड़ी मुसीबत में था बेचारा । उसकी स्त्री अपने किसी आशिक के साथ भाग गई ।''[७७]

और रूप से वकील साहब कहते है कि - ''पढ़ी-लिखी तो तुम भी हो, भागने की बात तो दूर रही, दो साल हो गये, मुझे कभी याद नहीं आता कि तुमने आँख उठाकर किसी अन्य पुरुष से बात भी की है ।''[७८]

इन्हीं बातों के परिणाम स्वरुप रूप ललित के साथ भाग नहीं सकती और कमज़ोर पड़ जाती है और अंत तक वकील साहब की पत्नी बनी रहती है ।

यह कहानी ऐसी भारतीय लड़की की कहानी है जो प्रेमी और पति दोनों के प्रति ईमानदार रहना चाहती है । रूप कोई विदेशी नारी नहीं कि शादी के बाद भी प्रेमी के साथ भाग जाए । परंपरा एवं संस्कारों के कारण ही रूप शिथिल पड़ जाती है । परंपरा एवं संस्कारो का निर्वाह करना भारतीय नारी की विडम्बना है इसी उदेश्य को प्रतिपादित करना इस कहानी का लक्ष्य था । संस्कार एवं रूढियों के बन्धन नारी को किसी कदर दुर्बल बना देते हैं । इसकी अनुभूति इस कहानी के द्वारा व्यक्त हुई है ।

५. सयानी बुआ :

इस कहानी में अनुशासनप्रिय 'सयानी बुआ' का चित्र लेखिकाने चित्रित किया है ।

बचपन से ही वे समय की जितनी पाबन्ध थी अपना सामान संभालकर रखने में जितनी पटुथी और व्यवस्था की जितनी कायल थी उसे देखकर चकित हो जाना पड़ता था । कहते है - ''जो पेंसिल वह एक बार खरीदती थी वह जब तक इतनी छोटी न हो जाति कि उनकी पकड़ में भी न आए तब तक उससे काम लेती थी । जो रबर उन्होंने चौथी कक्षा में खरीदी थी उसे नवीं कक्षा में आकर समाप्त किया ।''[७८]

सयानी बुआ के विवाहित के समय मिले काँच और चीनी के बर्तन पन्द्रह सालों के बाद भी सही सलामत रखती है । परिवार के सभी लोगों पर बुआ का आतंक छाया हुआ है । बुआ की अति

अनुशासन प्रियता का शिकार उनकी पाँच वर्षीय पुत्री 'अन्नू' बन जाती है । वह एक अज्ञात भय से घिरी रहती है, खानपान की अत्यधिक सतर्कता के बावजूद भी 'अन्नू' बीमार हो गई । डॉक्टर ने राय दी कि - ''बच्ची को पहाड़ पर ले जाया जाए और जितना अधिक उसे प्रसन्न रखा जा सके रखा जाए । सबकुछ उसके मन के अनुसार हो यही उसका सही इलाज है ।''[७६] डॉक्टर की सलाह के अनुसार उसे पहाड़ पर ले जाया गया । कुछ समय लगातार बुआ को पत्र के द्वारा समाचार मिलते रहे, परंतु एक महिने के बाद भी पति का कोई पत्र नहीं आया तो वह चिंतित हो उठी । वे रात को सो न पाई और सारी रात दुःस्वप्न देखती रही और रोती रही । मानो उनका वर्षो से जमा हुआ नारीत्व पिघल पड़ा था और अपने पूरे वेग के साथ बह रहा था । वह देखती है कि उसके पति अकेले चले आ रहे है, अन्नू साथ नहीं है और उनकी आँखे भी लाल है और वह फूट-फूटकर रो पड़ी । उस वक्त पति का लिखा पत्र मिलता है । पत्र की पहली पंक्ति पढ़कर ही वह रोने लगी जैसे कोई बहुत बड़ी दुर्घटना घटित हुई हो । बाद में पता चलता है कि पतिने जो लिखा है वह अन्नू के लिए न होकर पचास रूपयेवाले सेध के को प्याले टूट जाने की घटना के बारे में है । यह वास्तविकता जानकर रोते-रोते बुआजी हँसने लगी । पाँच आनेकी सुराही तोड़ देने पर नौकर को बुरी तरह पीटनेवाली बुआजी पचास रुपयोंवाले सेट के टूट जाने पर भी हंस रही थी । मानो उन्हें स्वर्ग की निधि मिल गयी हो ।

सयानी बुआ का स्वभाव विशेष ही इस कहानी का कथ्य है । पागलपन की सीमा तक व्यवस्था और समय की पाबन्दी मनुष्य को मनुष्य नहीं मशीन बना देती है । मानो 'रोबोट' हो जो समय से काम

करे । बुआ का घर शोरूम की तरह सजा हुआ रहता था, जहा व्यवस्था के नाम पर सभी सदस्यों को जेल के कैदी के समान रहना पड़ता था । शायद इसी आतंक से अन्नू बीमार पड़ी और बुआ का मार्शल लो शिथिलि हो गया । सख्त मां का ममत्व जागृत हुआ । सेट के दो प्याले टूटने पर सयानी बुआ दिल खोलकर हंसने लगी और सामान्य इन्सान बनने का उल्लास अनुभव करने लगी ।

६. अभिनेता :

इस कहानी में प्रेमी के द्वारा छली गई नारी की व्यथा को प्रस्तुत किया गया है । आधुनिक समाज में अपने नकली आचरण से युवतियों को ठगनेवाले युवकों की मानसिकता का चित्रण मन्नू भंडारी ने इस कहानी में किया है ।

कहानी का शीर्षक है - 'अभिनेता' किंतु यह कथा है एक अभिनेत्री की व्यथा की । रंजना अभिनेत्री है उसे अभिनय का शौक स्कूल जीवन से ही था । कॉलेज के रंगमंच पर अपने अभिनय को निखारते हुए वह फिल्मी सितारों की कतार में आ गई । वह एक नामी फिल्म अभिनेत्री है । रंजना को चाहनेवालों की संख्या अधिक है, परंतु जिसे वह खुद प्रेम कर सके ऐसा कोई न था । वह अपने खाली जीवन को किसी के प्रेम से भर देना चाहती है ।

रंजना की मित्र कामिनी अपनी सालगिराह की पार्टी में उसे ले गयी । वहा दिलीप से मुलाकात हुई । वह बिजनेस करने बम्बई आया था । रंजना दिलीप की ओर आकृष्ट हुई । दिलीप का बिजनेस जम गया था । उसने बंगला-गाडी ले लिया था और रोज शाम वह रंजना के साथ गुजारता था । उसे अभिनय पसंद नही था । रंजना को विवाह के बाद काम छोड़देने की बात करता था । रंजना कहती है -

‘‘आजकल मैं नए कॉंट्रेक्ट भी नही लेती । तुम्हें चिढ़ है न सौ अब यह सब छोड़ दूँगी ।’’[८०]

‘‘तुम कहो, तो मैं ऐसे सौ काम कुर्बान कर सकती हूँ ।’’[८१]

दिलीप बिजनेस के लिये चला गया । पन्द्रह दिन बाद लौट आया । एक दिन दिलीप ने कहा जानती हो कामिनी तलाक देने की सोच रही है । रंजना कहता है हां रोज की किटकिट से एक बार ही किस्सा खत्म । तब दिलीप कहता है - ‘‘प्रेम की एकान्तिका में मेरा विश्वास है तुम चाहे मुझे दक़ियानूस कहो या पुराणपन्थी पर लैला मजनू का प्रेम ही मेरे प्रेम का आदर्श है । कल मान लो किसी कारण से मैं तुम्हें नही पा सकूँ तो सच कहता हूँ जान दे दूँ ! तुम्हारे बिना तो मैं अपने जीवन की कल्पना भी नही कर सकता ।’’[८२]

निष्कपट रंजना ने दिलीप पर विश्वास कर लिया । और पैसे की आवश्यकता पर दिलीप को कोरा चेक भी दे दिया । उसमें उसने बारह हजार रुपये भरे और पन्द्रह दिन के लिये दहेरादून-दिल्ली चला गया । दिलीप के तीन-चार पत्र आये और उसके बाद रंजना प्रतीक्षा करती रही । दिन बीतते गये । रंजना उसके घर गयी घर पर नौकर था, उसके पास कोई खबर नहीं थी । रंजना घबरा गयी । कागज के लिये मेज की दराज खोली । उसमें ढ़ेर सारे पत्र थे । दहेरादून से रेखा के प्रेमपत्र थे । एक पत्र दिलीप के पिताजी का था । जिसमें उसकी पत्नी और बच्चे के समाचार थे, साथ ही किसी वकील साहब से बारह हजार रुपये लेने की बात थी । यह देखते रंजना का मोहभंग हुआ । दिलीप स्त्री और पैसा दोनों दृष्टि से भ्रष्ट था । रंजना तो रंगमंच पर अभिनय करती थी परंतु दिलीप का तो सारा जीवन ही अभिनय साबित हुआ । आचार और विचार के दोहरे स्तर पर पुरुष द्वारा संवेदनशील

नारी का मन छला गया है । रंजना दिलीप को पत्र लिखती है -

''मैं तो केवल रंगमंच पर ही अभिनय करती हूं पर तुम्हारा तो सारा जीवन ही अभिनय है । बड़े ऊँचे कलाकार और सधे हुए अभिनेता हो तुम मेरे दोस्त ।''[८३]

दिलीप शादीशुदा है ये पर्दाफाश हो जाता है । वह रंजना का विश्वासघात करता है । यह कहानी एक नारी की व्यथा की कहानी है और सामाजिक कहानी है ।

७. श्मशान :

मन्नू भंडारी की इस कहानी में वैवाहिक जीवन में स्त्री और पुरुष के बीच उत्पन्न होनेवाले आकर्षण की गहराई का व्यंग्यात्मक वर्णन है । मानवीय संवेदना तथा मनोभावों का चित्रण किया गया है । उसमे श्मशान और पहाड़ी का संवाद है ।

इस कहानी का नायक तीन बार शादी करता है । और तीनों पत्नी मर जाती है। लेकिन जब जब शव को जलाने वह श्मशान जाता है - तब तब कहता है कि मैं अपनी पत्नी को बहुत प्यार करता हूँ मैं उसके बिना नही रह सकता । तब श्मशान अवाक्-सा रह जाता है ।

उसने पहाड़ी से कहा - ''इस व्यक्ति की व्यथाने मेरे हृदय को मथ डाला । यों तो यहाँ रोज ही ऐसे कितने ही व्यक्ति आते है, पर जाने क्यों इसके दुख में इसकी वेदना में ऐसा क्या था जो मैं कभी नहीं भूल सकूँगा । तुम देखना अब यह जीवित नही रहेगा ।''[८४]

तीन वर्ष बीत गए वह युवक किसी शब को लिए श्मशान गया । श्मशान ने सोचा वह अभी जीवित है । वह युवक विलाप करता है तुम मुझे छोड़कर चली जाओगी ये मैने स्वप्न में भी नही सोचा था । अब मैं तुम्हारे बिना कैसे जीवित रहूँगा । मुझे अपने पास बुला लो ।

उस युवक की दूसरी पत्नी मर गई ।

दो वर्ष भी नहीं बीते होगे कि फिर श्मशान के कानों में फिर वही परिचित स्वर सुनाई पड़ा । वह युवक इस बार अपनी तीसरी पत्नी के शव को जलाने आया था । उसका क्रन्दन उतना ही करुण था । उसके पहलेवाले रुप में और आज में कोई अन्तर न था ।

एक ही पुरुष को अपनी तीन-तीन पत्नियों के पीछे एक ही प्रकार का विलाप करते नजर आता है ।

''तुम मुझे छोड़कर कहाँ गई ? याद है, कितनी बार तुमने कसमें खाई थी कि ज़िन्दगी-भर तुम मेरा साथ दोगी - तुम तो मुझे अकेला छोड़कर चली गई । अब मैं तुम्हारे बिना जीवित नहीं रह सकती । तुम मुझे अपने पास बुला लो नही तो मुझे तुम्हारे पास आने का कोई उपाय करना पड़ेगा । तुम नहीं तो मेरे जीवन का कोई अर्थ नहीं, कोई सार नहीं कोई रस नहीं, तुम्हीं तो मेरा जीवन थी, मेरी प्रेरणा थी । अब मैं जीवित रहकर करुंगा ही क्या ? मुझे अपने पास बुला लो, मैं तुम्हारे बिना नहीं रह सकता ।''[८५]

वह युवक हरबार विलाप करते हुए एक ही बात दोहराता है कि वह इसके बिना जीवित नहीं रह सकता । तीसरी बार वह दावे के साथ कहता है कि तीसरी पत्नी से ही उसका सच्चा प्रेम था । पहली उसकी अनुगामिनी थी, दूसरी सहगामिनी तो तीसरी प्रिय मित्र जिसके बिना वही एक कदम भी आगे नहीं बढ़ सकता । हर बार एक ही बात कंठस्थ पाठ की तरह दोहराता रहता है ।

श्मशान की बातें सुनकर पहाड़ी केवल मुस्कराती हैं ।

श्मशान के मनमें वर्षो से मनुष्य के अलौकिक प्रेम की जो धारणा जमी हुई थी उसको धक्का लगता है । उसको पता चल जाता है कि

मनुष्य का भावना के साथ कोई संबंध नहीं है । इन्सान के स्वार्थी अलौकिक प्रेम को देखकर श्मशान का हृदय पत्थर हो उठता है ।

उसकी हालत देखकर पहाड़ी उसे समझाती हुई कहती है -

''तुम इतना ही नहीं समझते कि जो इन्सान प्रेम करता है उसे जीवन से भी कम प्यार नहीं होता वह कोरी भावुकता पर जिन्दा नहीं रह सकता । वह जीवन की पूर्णता के लिए फिर प्रेम करता है, जीवित रहने का प्रयत्न करता है । वह हर वियोग झेल लेता है, व्यथा सह लेता है । क्योंकि सबसे अधिक प्रेम तो मनुष्य अपने आपसे करता हैं ।''[८६]

इस कहानी का कथ्य सर्वथा नवीन और मौलिक है। मन्नू भंडारी ने श्मशान और पहाड़ी को सजीव पात्र के रूप में निर्मित कर मानवजीवन के शाश्वत सत्य को उजागर किया है । वह जितनी एक निष्ठता और तन्मयता से प्रेम कर सकता है, उतनी ही सहजता से उसके वियोगी को भी सह लेता है । हर पुरुष के लिए नारी एक आवश्यकता है । इसी तथ्य को कहानी के माध्यम से उभारा गया है ।

मानव की जीवन जीने की आकांक्षा प्रेम भावना से अधिक बलवान है । कोरी भावुकता या प्रेम के सहारे ही इन्सान जिन्दा नहीं रह सकता । जीने की आरजू प्रेम भावना से अधिक प्रबल होती है । इसी शाश्वत सत्य को लेखिकाने इस कहानी में प्रस्तुत किया है ।

८. दीवारी, बच्चे और बरसात :

लेखिकाने इस कहानी में परम्परा से जकड़ी अशिक्षित नारियाँ शिक्षित नारी के सम्बन्ध में न जाने क्या-क्या चर्चाएँ करती रहती है । इन अशिक्षित नारियों के मनोभावों का यथार्थ चित्रण किया है ।

शन्नो और शैल शिक्षित लड़कियाँ है । शैल के घर में औरतें

दुपरह में हमेशा गपसप करती रहती है । उसी मोहल्ले में एक शिक्षित दम्पति रहने आया है । पत्नी साहित्य में रूचि रखती है तो उसे मिलने के लियें लोग आते-जाते है । उसके नाम पत्र आते है । उसके लेख अखबारों में छपते हैं । पति को यह सब पसंद नही था । एक दिन वह खाना बनाकर मीटिंग में चली जाती है और रात को देर से लौटती है तो पति शक करता है । पति-पत्नी में कहा-सुनी हो गई । रात में जब लौटी तो आदमीने भी झौंटा पकड़कर दो झापटे रख दिए और कह दिया -

''निकल जा मेरे घर से, जिन यार-दोस्तो में घूमती फिरे है, उन्हीं के घर जाकर बैठ ।''[८७]

भाभीने कहा पड़ोस में ऐसा कांड हो जावे तो पड़ोसी होने के नाते हमारा भी कुछ धरम हो ही जावे । सौ भई, मैं भी हिम्मत करके गई । सोचा कह दूँगी कि पैर पकड़कर माफ़ी माँग ले । पर वह तो मेरे ऊपर बरसने लगी बोली -

''बहिनजी ! गलती करुँगी तो सौ बार माफ़ी माँग लूगी पर जिसे मैं गलती समझूँ ही नहीं, उसके लिए क्यों माफ़ी माँगूँ ? आज माफ़ी माँग लूँ और कल फिर वह करुँ इससे क्या फायदा ? हम दोनों का साथ निभ न सके तो साथ रहने से क्या फायदा ? .... चलो किस्सा खत्म ।''[८८]

पतिने उसे घर से निकल जाने का आदेश दिया । वह पहने हुए कपड़ो में ही घर छोड़कर चली जाती हैं ।

यह एक प्रतीकात्मक कहानी हैं । यहाँ दीवार पुरानी रूढ़ियों का, बच्चे नयी पीढ़ी का तथा बरसात नये विचार और सामाजिक मूल्यों का प्रतीक है । मंडली जलाकर दबी जबान और रहस्यात्मक

ढंग से पराये घरों के बातें उछालना, परनिंदा करना आदि भारतीय स्त्रियों के लिये नई बात नहीं है । आधुनिक नारी की यह दुखभरी कहानी भी रही है कि वह दोनों तरफ पिसती रहती है । एक तरफ पुरुष प्रधान समाज और दूसरी और परंपरागत रूढ़ियों में आबद्ध नारी समाज, नारी ही नारी का दुश्मन है । नारी को ऊपर उठाने में मदद नहीं करती, बल्कि उसकी अपेक्षा करती है ।

शिक्षित नारी अपना स्वतंत्र व्यक्तित्व चाहती है, जबकि उसका पति उसमें बाधा उत्पन्न करता है । तब वह अपने स्वतंत्र व्यक्तित्व की रक्षा के लिए घर छोड़ देती है । इसी बातको लेकर गँवार रूढ़िग्रस्त और अशिक्षित नारियाँ इस पढ़ी लिखी नारी की उपेक्षा करती है ।

यहाँ मन्नू भंडारीने दो पीढ़ियों के संघर्ष की बात बताई है । एक और परंपरागत सामाजिक नैतिकता से बांधी पुरानी पीढ़ी की नारियाँ है तो दूसरी और परंपरागत संस्कारों को तोड़ नये मूल्य स्थापित करनेवाली नई पीढ़ी है । पुरानी पीढ़ी की नारियाँ आज भी अपने को पुरुष की दासी और भाग्या ही मानती है । तभी तो भग्गो कहती हैं -

''तुम अपने घर में मरदो को सेजों का सुख नहीं दे सको तो तुम्हें क्या पूजने को ब्याह किया हैं ।''[८६]

इस कहानी में ऐसी मण्डली का चित्रण है जो परंपरावादी होने के कारण किसी नए सामाुजिक परिवर्तन को एकदम नहीं स्वीकारता । यहाँ नये-पुराने आदर्शो के बीच तालमेल न बैठ पाने के कारण पति-पत्नी के संबंधो में उत्पन्न तनाव और पारिवारिक बिखराव की स्थिति को उजागर किया गया हैं ।

६. पंडित गजाधर शास्त्री :

यह कहानी अपने आपको महान साहित्यकार समझनेवाली

शास्त्रीजी की चरित्र प्रधान कहानी हैं ।

एक साहित्यकार से शास्त्रीजी की मुलाकात समंदर के किनारे पर हो जाती हैं । पं. गजाधर शास्त्री अहंवादी हैं । पंडितजी स्वयं को महान साहित्यकार बताते है -

''तो मैं हूँ कहानी लेखक पं. गजाधर शास्त्री ! यदि हिन्दी साहित्य से आपका थोड़ा भी परिचय होगा तो आपने गजाधर शास्त्री का नाम अवश्य सुना होगा वह नाचीन मैं ही हूँ ।''[९०] साहित्यकार ने कहा - ''यों हिन्दी साहित्य तो मेरा अपना विषय ही है, इस ओर रुचि भी है पर बात यह है कि स्मरण शक्ति ज़रा कमजोर है, इसलिए कुछ याद नहीं कर पा रहा हूँ । आप अपना किसी प्रकाशित पुस्तकका नाम बताइए, शायद उससे कुछ याद आ जाएँ ।''[९१] पंडित गजाधर शास्त्री ने कहा साहित्य में आप नए खिलाड़ी मालूम पड़ते हैं, और कहा कि पुस्तक अभी तक तो कोई छपी नहीं हैं, पर शीघ्र ही तीन-चार छपनेवाली हैं । आज से सात साल पहले 'रश्मि' में एक कहानी निकली थी 'अमीरी-गरीबी' । हिन्दी की शायद ही कोई ऐसी पत्रिका होगी, जिसके सम्पादक का पत्र न आया हों कि शीघ्र ही अपनी रचना भेजिए ।

एक दिन साहित्यकार ने देखा कि शास्त्रीजी बड़े ही संतृष्ण नेत्रों से किसी युवती हो स्नान करते हुए देख रहे है और उसी में उन्हें कहानी का प्लोट नजर आया । दूसरे दिन शास्त्रीजी व्हिक्टर हुगों के 'ला मिजरबल का चोरीवाला' हिस्सा ज्यों का त्यों लिखकर अपनी कहानी के रूप में लेखक को दे देते हैं । अपनी कहानी में चोर से सहानुभूति जतानेवाले यह शास्त्रीजी रात के अंधेरे में बर्तन उठाने आये होटल के छोकरे को चोर समझकर पीटते हैं ।

आज समाज में ऐसे अनेक व्यक्ति मौजूद हैं, जो बहुत ही सामान्य लेख या एकाध रचना के द्वारा अपने को बड़ा साहित्यकार या लेखक मान लेते हैं । झूठी प्रशंसा के द्वारा अपने चरित्र की दुर्बलता को छिपाने का प्रयास करते है, जिसका उदाहरण शास्त्रीजी है । लेखिका ने आज के लेखकों की झूठी अहमवादिता पर व्यंग्य करके उनका सच्चा प्रतिबिंब हमारे सामने प्रस्तुत किया है । ऐसे साहित्यकार या लेखक उनकी साहित्य संबंधी अल्पज्ञता से समाज को नुकसान पहुँचाते हैं । साहित्य के क्षेत्र में ज्यादातर लेखक मौलिकता के अभाव में तस्कर वृत्ति ग्रहण करते हुए नजर आते हैं । लेखिका ने पंडितजी के कथन के द्वारा ही अपने उदेश्य को स्पष्ट कर दिया हैं ।

''गजाधर शास्त्रीने खिन्न मन से कहा बड़ा दुःख होता है, आजकल के लेखकों को देखकर कोई अनुभव नही, अध्ययन नहीं, साधना नहीं बस प्रतिभा का राग अलाप-अलाप कर कलम चलाते है मानों साहित्य लिखना कोई घास काटना हो ।''[६२]

मन्नू भंडारीने इस कहानी में अहं से पीड़ित शास्त्रीजी का चरित्र चित्रण प्रस्तुत किया है । उसे साहित्य की कोई गंध नही है और हमेशा आत्म-प्रशंसा में लीन रहते है और स्वयं को महान साहित्यकार समझते हैं ।

१०. काल और कसक :

इस कहानी में लेखिका ने एक विवाहित नारी 'रानी' की वेदना भरी घुटन चित्रित की हैं ।

रानी का विवाह कैलाश से हुआ है । कैलाश यथार्थ में काला है, उसका चेहरा मुँहासो और चेचक के दागों से भरा हुआ है । उसके ऊपर बारह हजार का कर्जा है । इसलिये दिन रात प्रेस में काम करता

रहता है । वह चौबीसों घण्टे प्रेस की मशीनों के बीच काम करते करते स्वयं मशीन बन जाता है । भावहीन एवं रसहीन कैलाश को न रानी में दिलचस्पी थी, न घर में कैलाश शादी के लिए राजी न था उसकी मा ने जोर-जबरदस्ती से शादी करवा दी ।

रानी के यहां एक पेइंग गेस्ट आता था । जिसका नाम शेखर था वह सुंदर था । रानी अपने पति की उदासीनता के कारण शेखर की ओर आकृष्ट होती है । एक बार पानी भरने रानी नीचे जाती है और भरी बाल्टी लिए ऊपर चढ़ते गिर पड़ी । कैलाश प्रेस जाने के लिए नीचे उतर रहा था उसे देर हो गई थी वह कहता है देखकर क्यों नही चलती हो ? वह चला जाता है । तब शेखर आया उसने रानी को हाथ पकड़कर उठाया बोला -

''अरे यह क्या ? तुमने तो अँगुली काट ली, और जेब से रुमाल निकालकर उसने बड़े दुलार से बाँध दिया । प्रेम से बाँधी गई उस गाँठ में अनायास ही रानीका हृदय भी बँध गया ।''[६३]

शेखर का ब्याह उसकी जीजीने एक सुंदर लड़की से करा दिया । रानी के मन में शेखर की पत्नी के प्रति सौतियाडाह उत्पन्न हुआ । रानी वैसे ही बिकर जाती है जैसे भूखी शेरनी का शिकार कोई और हथिया ले । रानी अब बात-बात पर शेखर की पत्नी से झगड़ती रहती है । एक दिन तो शेखर से भी उलझ गई । शेखर झगड़ो में कभी नही आता पर जब रानी ने बोरी में से कोयले निकाल कर फेंकने आरम्भ किए तो शेखर को बोलना पड़ा - हट जाओ यहाँ से, अपने हिस्से की छत पर रहो, नही तो हाथ पकड़कर निकाल दूँगा ।'' तब रानी कहती है ले पकड़, पकड़ तो हाथ असल मरद का बच्चा है तो पकड़कर ही दिखा दे और वह चिल्लाने लगी । शेखर अन्दर चला

गया पर रानी की चीख पुकारों ने सारी अड़ोस-पड़ोस इकट्ठा कर दिया इस झगड़े से तंग आकर कैलाश मकान बदल लेता है । रानी अपनी काम-अतृप्ति को लेकर रोती रहती हैं । अतृप्त इच्छाओं को कल की कसक से उसे अंततक छुटकारा नहीं मिलता ।

आजकी परिस्थिति का निर्माण पाश्चात्य प्रभाव से हुआ है । आधुनिक समाज में व्यक्ति की दौड़ रुपयों के पीछे है । इस दौड़ में अपनी पत्नी के प्रति पति जिम्मेदारी को भी भूल जाता हैं । पत्नी घर में पड़ी अकेलापन महसूस करती है परिणाम स्वरूप स्त्री अन्य पुरुष का सहवास ढूंढती है और जब स्त्री की यह इच्छा पूर्ण नहीं होती तो अतृप्ति के कारण नारी अनेक प्रकार की विकृतियों का शिकार हो जाती है ।

लेखिकाने यद्यपि नारी के विकृत व्यक्तित्व को वाणी दी है तथापि बदलते हुए मानदण्डों और स्त्री-पुरुष के परिवर्तित संबंधो पर अच्छा प्रकाश डाला है ।

११. दो कलाकार :

ललित कला में प्रवीण चित्रा और मानव सेवा करनेवाली अरुणा इन दोनों के मनोभावों का यथार्थ चित्रण इस कहानी में लेखिका ने प्रस्तुत किया है ।

चित्रा तथा अरुणा दोनों अच्छी सहेलियाँ थी और साथ-साथ होस्टेल में रहती हैं । वैचारिक मतभेदों तथा व्यवहारिक भिन्नताओं के बावजूद भी दोनों में प्रगाढ स्नेह हैं । चित्रा चित्रकार है, तो अरुणा समाज सेविका । अरुणा उदार व्यक्तित्ववाली लड़की है गरीबों के दुःख दूर करना तथा उनके बच्चों को पढ़ाना उसे अच्छा लगता हैं । अरुणा से बिलकुल विपरित स्वभावकी चित्रा है । चित्रा

अमीर बाप की लाड़ली बेटी है । वह एक सीमा तक स्वार्थी तथा अन्तमुर्खी लड़की है । उसे पेइन्टिंग के अलावा किसी भी कार्य में दिलचस्पी नहीं है ।

एक दिन मुसलाधार वर्षा के कारण एक भिखारिन की मौत हो जाती है । दोनों सहेलिया भिखारिन के बच्चें को अपनी माँ के शव के पास चिपका हुआ देखती है । चित्रा उस द्रश्य को अपने कैमरे में कैद करके कलात्मक आनंद का अनुभव करती है । परंतु अरुणा उसे बच्चों को सहारा देती है उसकी लालन पालन करती है । चित्रा भिखारिन की तस्वीर विदेश में भेजती है, जहाँ उसे प्रथम पुरस्कार प्राप्त होता है, तीन साल बाद एक प्रदर्शनी में चित्रा की भेंट अरुणा से होती है । उसके साथ दो छोटे-छोटे बच्चे है । उस बच्चे के बारे में पूछने पर अरुणा बताती है कि दरअसल यह वही बच्चे है जिसका चित्र चित्राने बनाया है । यह सुनकर चित्रा विचार मग्न हो जाती हैं ।

दो कला-प्रेमियों के जरिए कोरी भावुकता और निरर्थक कला की अपेक्षा ठोस कार्य और मानवता के महत्त्व को प्रतिपादितप किया गया है । कहानी में वर्तमान समाज की विसंगतियों को प्रस्तुत किया गया है । चित्रा जहाँ कल्पना लोक में, अपने ही चित्रलोक में विहार करती है वहाँ दूसरी ओर अरुणा यथार्थ में अपने काम में मग्न है । मानो कर्म ही उसका जीवन हो । बाढ़ पीड़ितो के चित्र, भिखमंगी अनाथ बच्चों का चित्र चित्रित कर उसका प्रदर्शन कर चित्रा ख्याति प्राप्त कर लेती है । वहीं अरुणा उन बाढ़ पीडितों की सेवा करती हैं । उन अनाथ बच्चों को गोद लेती है । कोरी भावुकता से आत्म संतुष्ठी नहीं मिलती जितनी अरुणा को दीन-दुःखीयों की सेवा करने से उनकी दुःख दुर करने से आत्मानंद मिलता हैं । चित्रा दुःख को सिर्फ कागज

पर उतारती हैं पर अरुणा यथार्थ में उस दुःख का निवारण करती हैं ।

इसी तरह मन्नू भंडारी ने चित्रा और अरुणा इन दोनों कलाकारों के माध्यम से चित्रकला से बढ़कर जीवन उपयोगी कर्म को श्रेष्ठ सिद्ध किया हैं ।

१२. मैं हार गई :

प्रस्तुत कहानी द्वारा मन्नू भंडारी ने आज के राजनीतिज्ञों पर तीखा व्यंग्य किया है । यह कहानी आत्मकथात्मक शैली में लिखी गयी है ।

कवि सम्मेलन में एक कवि 'बेटे का भविष्य' नामक कविता सुनाता हैं ।

एक पिता अपने बेटे के भविष्य की अनुमान लगाने के लिए उसके कमरे में एक अभिनेत्री की तस्वीर, एक शराब की बोतलें और एक गीता रखता हैं और स्वयं छिपकर खड़ा हो जाता हैं । बेटा आता है और सबसे पहले अभिनेत्री की तस्वीर को उठाता है और सीने से लगाता है, चुमता है और रख देता है उसके बाद शराब की बोतल से दो-चार घूँट पीता है । थोडी देर बाद मुँह पर अत्यन्त गम्भीरता के भाव लाकर बगल में गीता दबाए बाहर निकलता हैं । बाप बेटे की यह करतूत देखकर उसके भविष्य की घोषणा करता है -

''यह साला तो आजकलका नेता बनेगा ।''[६४]

कहानी का प्रारंभ ''बेटे का भविष्य' कविता से है, जहाँ बेटे की हरकतों में आज के नेताओं की वास्तविक तस्वीर दिखाई देती है । नेता के दामन पर लगे दाग को मिटाने के लिए लेखिका दो भिन्न वर्ग से दो आदर्श नेताओं का निर्माण करती है । दोनों ही नेता अलग अलग कारणों से पदभ्रष्ट होते हैं । उनकी असफलता में ही लेखिका

ने अपनी हार दिखाकर कहानी के अंत को बड़ा ही चोटदार बना दिया है ।

मन्नू भंडारी ने सोच-विचार के बाद 'कमल कीचड़ में ही उत्पन्न होता है' अनुसार अपने पहले नेता का जन्म किसान के सामने जब तक रोटी का प्रश्न नहीं था तब तक बड़े आदर्श देश-सेवा, नव निर्माण तथा क्रान्ति की बातें करता हैं । लेकिन पिता की मृत्यु, माँ और क्षयग्रस्त बहन की आहों को सुनकर अपनी विधाता समान लेखिका से उठ कहता - ''मैं अपनी अंधी माँ की दर्द-भरी आहों की उपेक्षा किसी भी मूल्य पर नहीं कर सकता । तुम मुझे कहीं नौकरी क्यों नहीं दिला देती ? गुजारे का साधन हो जाने से मैं बाकी सारा समय सहर्ष देश-सेवा में लगा दूँगा । तुम्हारे सपने सच्च कर दूँगा । पर पहले मेरे पेट का कुछ प्रबन्ध कर दो ।''[९५]

अपनी असफलता पर उसका मन भड़क उठता है । अपनी नैतिकता का दमन करके चोरी जैसा जधन्य कार्य करने पर मजबूर हो जाता है ।

दूसरा पात्र आभिजात्य वर्ग से जुड़ा है । इस नेता का जन्म करोड़पति के यहाँ करा देती है जहाँ सुख ही सुख है । लेकिन आर्थिक सम्पन्नता ही उसके अधःपतन का कारण बन जाती है । विलासिता में डूबकर वह भी अपनी नैतिकता, सेवा, देश-प्रेम इत्यादि को भूल जाता है उसका मानना है कि -

''यह उम्र दुनिया की रंगीनी और घर की अमीरी । बिना लुत्फ़ उठाये यों ही जवानी क्यों बर्बाद की जाये ? यह सब करके क्या नेता नहीं बना जा सकता ?''[९६]

यह देखकर मन्नू भंडारी आदर्श नेता का खात्मा कर देती है और

अंत में स्वीकार कर लेती है कि वह हार गई हैं, बुरी तरह हार गयी हैं ।

आज के युग में आदर्श नेता की कल्पना करना भी असंभव हैं । व्यक्तिगत स्वार्थो और विलासिता में लिप्त रहने के कारण आज विशुद्ध समाज सेवा करने के लिए नेता असमर्थ है । वर्तमान सामाजिक संदर्भो में आदर्श चरित्र मूल्यहीन हो गये हैं । समाज में प्रमुख समस्या आर्थिक असन्तुलन की है । समाज में आर्थिक संतुलन होता तो जिन विकृतियों का भोग दोनों नेता बनते हैं वे उनसे बच जाते । आज के देशव्यापी सामाजिक भ्रष्टाचार के मूल में यही असंतुलन मुख्य कारण है । वर्तमान सामाजिक व्यवस्था का भी सजीव चित्र प्रस्तुत किया गया है । आज के नेताओं का एक मात्र उदेश्य विशुद्ध राष्ट्रसेवा की अपेक्षा सत्ता या कुर्सी को प्राप्त कर व्यक्तिगत हिस्से या स्वार्थो के पूरा करना ही रह गया है । समाज इसी तरह दिशाहारा की तरह भटकता रहा तो उसे मंजिल कभी प्राप्त नहीं होगी मन्नू भंडारीने अपने दायित्व के प्रति समाज को जागृत किया हैं ।

(२) तीन निगाहों की एक तस्वीर :

मन्नूजी का यह दूसरा कहानी-संग्रह है जो सन् १९५९ में प्रकाशित हुआ था । इस कहानी संग्रह में आठ कहानियाँ संकलित हैं ।

१. तीन निगाहों की एक तस्वीर :

लेखिका ने इस कहानी में 'दर्शना' की अंतर्पीडा को प्रस्तुत किया हैं । दर्शना के द्वारा लेखिका ने एक ऐसी नारी की कहानी प्रस्तुत की है जो पति की दीर्घ क्षणावस्था के कारण नाम तृप्ति के लिए तड़पती हैं । अतृप्त लालसा उसे पड़ौसी हरीश की ओर आकृष्ट करती है ।

नैना 'दर्शना' की बड़ी बहन की लड़की है और वह अपनी बीमार

मौसी को देखने आयी है । लेकिन दर्शना नैना को पहचान नहीं सकती । अतः विवश होकर नैना वही रुकती है क्योंकि वह अपनी मौसी से प्यार करती है । लेकिन अंत तक वह उससे मिल नहीं पाती । दर्शना नैना से मिले बिना ही दम तोड़ देती है । नैना दर्शना की डायरी के कुछ पन्ने तथा हरिश नामक लेखक की कहानी हासिल करती है । और यहीं से दर्शना की कहानी शरु होती हैं ।

दर्शना टी.बी. से बीमार पति की सेवा करती है । अपना सारा समय वह पति सेवा में बिताती है । वह बड़ी लगन एवं तत्परता से पतिकी देखभाल करती है । रिश्तेदारों से सिर्फ मौखिक सहानुभूति मिलती है । वे टी.बी. जैसी बीमारी के कारण उसकी और झाँककर भी नहीं देखते । आर्थिक अभाव के कारण दर्शनाने एक कमरा किराये पर दे रखा है । उस कमरे में अविवाहित हरीश रहता है, जो लेखक हैं । परिस्थितिवश तन-मन से प्यासी दर्शना हरीश की ओर आकर्षित होती है । दर्शना हमेशा हरीश को निहारती रहती है । दिन-ब-दिन पति की गिरती हालत देखकर दर्शना रोती है । तब हरीश सोचता है कि -

''एक बार उचित-अनुचित का ज्ञान भूलकर बड़ी जोर से इच्छा हुई कि उसे रोती बेबस नारी को जाकर अपनी बाहों में भर लूँ, अपने लिए नहीं उसके सन्तोष के लिये, उसकी सांत्वना के लिये, लेकिन फिर ख्याल आया, इस आग को जलाने से लाभ ?''[९७]

दर्शना का हरीश के प्रति लगाव देखकर उसका पति उसे मारता पीटता है और घर से बाहर निकाल देता है । वह दर्शना की माँ, बहन, भैया आदि संबंधियों को पत्र लिखकर उनकी मौखिक सहानुभुति को भी नफरत में परिवर्तित कर देता है । दर्शना घर छोड़

देती है । लेकिन यही दर्शना अपने पति की मृत्यु का समाचार सुनकर कहती है -

''मेरी तो सारी भावनायें ही जैसे मर गई है । मैं ही जाने क्यों जिंदा हूँ ।''[६८]

अंत में विवश होकर दर्शना एक स्कूल में संगीत की शिक्षिका बनकर जीवन याचन करती हैं ।

इस प्रकार मन्नू भंडारीने 'फ्लैश बैंक' पद्धति से कहानी चित्रित की हैं ।

एक स्वस्थ नारी अपने बीमार पति से इच्छा तृप्त न होने के कारण पर-पुरुष की ओर आकर्षित होती है । हिन्दू परंपरा के अनुसार विवाहित स्त्री का अन्य पुरुष की ओर आकर्षित होना अनैतिक माना गया है ।

कहानी में दाम्पत्य सीमाओं में बंधी नारीकी अतृप्त काम मनोदशा का चित्रिण किया हैं । 'तीन निगाहों की एक तस्वीर' इस कहानी में तीन निगाहे हैं, नैना, हरीश और स्वयं दर्शना की ।

२. **अकेली :**

लेखिका ने इस कहानी में सोमा बुआ का मार्मिक चित्रण प्रस्तुत किया हैं ।

सोमा बुआ बुढ़िया है, सोमाबुआ परित्यक्ता है सोमाबुआ अकेली है ।

सोमाबुआ का जवान बेटा चला गया तो उसके पति को ऐसा सदमा पुहँचा कि वे संन्यासी बन गये । हर साल एक महिने के लिए सोमाबुआ के पति घर आकर रहते हैं । पति के स्नेह हीन व्यवहार के कारण बुआ को अपनी जिन्दगी पास-पडोसवालों के भरोसे ही करनी

पड़ती है । पास-पड़ौस के घर मुंडन हो, छट्ठी हो, या शादी बुआ वहाँ लगनपूर्वक काम करती है। जब उनके पति सन्यासी महाराज घर आते तो उन्हें बुआ का इस कदर दूसरों के घर काम करना अच्छा नहीं लगता ।

एक बार दूर के समधी के यहाँ लड़की की शादी थी । बुआ को विश्वास था कि समधिन अवश्य बुलायेंगी । समधी पैसेवाले होने के कारण बुआ लड़की को अच्छी भेंट देना चाहती है इसलिए आर्थिक संकटों में घिरी बुआ पुत्र की अंतिम निशानी रुपी अंगुठी को बेचकर चाँदी की सिंदुरदानी-साडी और ब्लाउज मंगवाती है । और बुआ कलफ़ लगी साडी और नई चूडियाँ पहनकर निमंत्रण की राह देखती है । ''कितने बज गए राधा ? क्या कहा, तीन ? सरदी में तो दिन का पता ही नहीं लगता है । बजे तीन ही है और धूप सारी छत पर से ऐसे सिंमट गई मानो । शाम हो गई हो ।''[९९]

मुहरत का समय बीत जाने पर भी बुलावा न आया ।

सात बजे राधाने ऊपर से देखा तो छत की दीवार से सही, गलीं की ओर मुँह किए एक छाया मूर्ति दिखाई दी । तो उसका मन भर आया राधाने इतना ही कहा - ''बुआ ! सर्दी में खड़ी-खड़ी यहाँ क्या कर रही हो ? आज खाना नही बनेगा, क्या ?''[१००]

आखिर टूटे हृदय और थके कदमों से बुआ खाना पकाने के लिए उँगीठी जलाने बैठ गई ।

इस कहानी में सोमाबुआ के द्वारा व्यक्ति के अकेलेपन की स्थिति को यथार्थ चित्रण किया गया हैं । इस कहानी में बुआ एक ऐसी चरित्र है जो सामाजिक संबंधो को निरंतर बनाये रखने के लिए प्रयत्नशील है एक जगह वह कहती है -

''ये तो साल में ग्यारह महिने हरिद्वार में रहते हैं इन्हें तो नाते रिश्तेवालों से कुछ लेना-देना नहीं, पर मुझे तो सबसे निभाना पड़ता है । मै भी सबसे तोड़-तोड़कर बैठ जाऊँ तो कैसे चले ।........ सारा धरम करम ये ही लूटेंगे, सारा जस ये ही बटोरेंगे और मैं अकेली पड़ी-पड़ी यहाँ इनके नाम को रोया करुँ । उस पर से कहीं आऊँ जाऊँ वह भी बर्दाश्त नहीं होता ।''[१०१]

सोमा बुआ की अंतपीड़ा का सुन्दर चित्र लेखिका ने इस कहानी में प्रस्तुत किया है ।

३. अनचाही गहराइयाँ :

मन्नू भंडारी ने इस कहानी में एक दरिद्र ज्ञानोपासकी लड़के को प्रस्तुत किया है ।

मिस सुनंदी अपने भैया और भाभी के पास रहती है । वह अध्यापिका है । प्रिन्सीपाल के आदेशानुसार वह एक गरीब लड़के शिवनाथ को हिन्दी और इतिहास पढ़ाने लगती है । उसे एक टयुशन भी दिलवा देती है । कभी कभार उसे पैसे भी देती रहती है ।

शिवनाथ सुनंदा के यहाँ सप्ताह में तीन दिन पढ़ाने के लिए आता है । कुछ दिनों के बाद वह रोज आने लगता है । उसका रोज-रोज का आना भैया-भाभी को पसंद नही । वह सुनंदा का मजाक उड़ाते हैं । एक बार सुनंदा को बुखार आता है । शिवनाथ हर रोज आकर हाल पूछकर चला जाता है । एक दिन शिवनाथ सुनंदा के कमरे में प्रवेश करता है । कमरे में कोई नहीं । सुनंदा की भाभी शिवनाथ को सुनंदा के पास देखती है । इस घटना के बाद भैया-भाभी शिवनाथ को पढ़ाने के लिए सुनंदा को मना करते हैं । शिवनाथ पर सुनंदा भी क्रोधित हो जाती है । और शिवनाथ को घर आने के लिए

मना कर देती है -

''अब मैं तुम्हे पढ़ा नहीं सकूँगी । कॉलेज के कामके बाद मैं बहुत थक जाती हूँ - इतना 'स्ट्रेन' मुझसे बर्दाश्त नहीं होता ।''[१०२]

एक दिन शिवनाथ कुछ कठिनाइयाँ हल करने हेतु एक किताब सुनंदा को देता है जिसमें एक प्रेम-पत्र था । उस पत्र को पढ़कर सुनंदा तर-बतर होती है और शिवनाथ के गाल पर तमाचे जड़ देती है । दुसरे दिन सुनंदा कॉलेज चली जाती है तो वहाँ उसे पता चलता है कि शिवनाथ ने आत्महत्या की है । तीन-चार दिन के बाद एक लड़का उससे मिलने आता है । वह कहता है कि शिवनाथ ने दी हुयी किताब में उसका प्रेमपत्र है क्योंकि उसके प्रेमपत्र शिवनाथ ही लिखता था । सुनंदा शिवनाथ को बेकसूर मानती है और अपने कमरे में जाकर अपने दोनों हाथ का-काटकर लहुलुहान कर देती हैं । वास्तव में शिवनाथ ज्ञान का प्यासा है । ज्ञान पाने के लिए वह सुनंदा के घर रोज आता है । उसे सुनंदा से लगाव है लेकिन वह अपना अनादर बर्दाश्त नहीं कर पाता । अतः वह आत्महत्या कर लेता है । सुनंदा प्रथम उसे जली-कटी सुनाती है पर भ्रम निरास होने पर अपने आपको हत्यारिन समझती है ।

४. खोटे सिक्के :

लेखिका ने इस कहानी में मजदूरों के शोषण को प्रस्तुत किया है । टकसाल में काम करनेवाले श्रमिकों के शोषण को चित्रित किया है । यह एक सामाजिक कहानी है ।

खन्ना साहब टकसाल के इच्च पदाधिकारी है । वे लखनऊ के कॉलेज की छात्राओं को टकसाल देखने की अनुमति देते है तथा स्वयं टकसाल दिखाने लगते हैं । उन्होंने उन भठियों को दिखाया

जहाँ कच्चे धातु को गलाया जाता है । वहाँ एक बड़े हाल में देत्याकार मशीने है जहाँ मजदूर भी मशीन की तरह निरंतर काम करते है । कुछ मजदूर खोटे सिक्कों को अलग निकालने का काम करते है । छात्राएँ उन मशीनों के बीच झुलसते मजदूरों को देखकर कहती हैं कि -

''यह तो बड़ा ही खतरनाक काम है, जरा-सी चुक में अलाख़ सीधी टाँग पर ही आ गिरे ।''[१०३]

खन्ना साहब कहते है हाँ बहुत-सी दुर्घटनाएँ होती है । अभी कोई दो महीने पहले ही एक आदमी की दोनों टाँगे कट गई । छात्राएँ कहती है - ''फिर भी ये लोग यहाँ काम करने आते है, अपनी जान को जोख़िम में डालकर ।[१०४] तब खन्ना साहब कहते है - ''काम करने अरे, एक ही जगह खाली हो तो पचासो टूट पड़ते है । आप जानती नहीं हमारे देश में इन्सान की जान बड़ी सस्ती हैं ।''[१०५]

इन मजदूरों को मासिक वेतन ६० रुपये मिलते है यह जानकर छात्राएँ आश्चर्य चकित हो जाती है ।

यहाँ लेखिका ने बेरोजगारी भी समस्या को भी चित्रित किया हैं ।

इस दौरान टाँगे कटे हुए मजदूर की पत्नी खन्ना साहब से बिनती करती हैं कि उसके पति को खोटे सिक्के चुनने का काम दिया जाय । लेकिन खन्ना साहब उसे दुत्कारते है । चपरासी उसे बाहर धकेल देता है । सारी छात्राएँ उस द्रश्य से व्यथित हो जाती है ।

''अब कहाँ जाएँ सरकार ? बीस साल तक आप लोगों की नौकरी की, आपकी नौकरी में ही टाँग गई, अब कहाँ-जाएँ सरकार ? हम पर दया करिए, नहीं तो बाल-बच्चे भूखें मर जाएँगे ।''[१०६]

खन्ना साहबने लड़कियों के चेहरों पर करुणा को देखा तो प्रसंग बदलकर ऐसे चुटकुले सुनाना शुरु किया कि लड़कियाँ हँस-हँसकर टुहरी होने लगी ।

टकसाल में काम करनेवाले मजदूरों की समस्या की कहानी का कथ्य बनाकर लेखिकाने सामाजिक समस्याओं की श्रृंखला में एक कड़ी और जोड़ दी है । जान जोखिम में डालकर भावशून्य चेहरों से मशीनवत काम करना और दुर्घटना ग्रस्त होने पर मजदूरों की उपयोगिता खोटे-सिक्के के समान भी न होना आदि बाते दिखाकर लेखिका ने कहानी में जान डाल दी हैं ।

औद्योगिकरण के इस युग में आज भी मजदूर वर्ग पूंजीपतियों के शोषण को सहता हुआ त्रासदीपूर्ण जिन्दगी जी रहा है । अपनी जान देकर खुन-पसीना बहाकर पूंजीपतियों को समुद्ध करनेवाले मजदूरों की जानकी कीमत उन पूंजीपतियों की नजर में कितनी सस्ती है यह दिखाकर लेखिका ने हमारी सामाजिक व्यवस्था पर करारी चोट की है ।

५. घुटन :

मन्नू भंडारी ने प्रस्तुत कहानी में दो नारियों की घुटन को चित्रित किया है ।

प्रतिमा अध्यापिका है । उसका पति नेवी में है और साल में एक महिने के लिए घर आता है । उनकी शादी को चार साल हुये हैं और उन्हें एक छोटी बच्ची भी है । जब उसका पति घर आता है प्रतिमा उसके साथ रहना चाहती है लेकिन उसके पति का दोस्तों के साथ शराब पीना, अश्लील मजाक करना उसे पसंद नहीं है । इसलिए वह अपनी बच्ची के साथ रहती है । प्रतिमा के इस व्यवहार से पति उसे

दकियानूसी और नीरस कहता है ।

प्रतिमा पति के आगमन से खुश नहीं होती । उसमें अब वह उमंग और जोश नहीं है । उसका पति आता है, अपने बेटी को प्यार करता है और फिर देश-विदेश से लायी चीजें दिखाता रहता है । रात में प्रतिमा से शराब पीने की जिद करता है -

''आज तो तुम्हें पीना ही होगा डाँर्लिंग, घर आने की खुशी में, मिलने की खुशी में आज तो मैं पिलाकर ही छोडूँगा ।''[१०७]

प्रतिमा उसकी बात टाल देती है । इसके बाद वह उसे अपनी फौलादी बाँहों में जकड़ता है । प्रतिमा का दम घुटने लगता है वह उससे छुटकारा पाना चाहती है पर हार जाती है ।

मोना प्रतिमा की पड़ोसन है । वह अविवाहिता है और अरुप से प्रेम करती है । मोना की विधवा माँ उसकी शादी नहीं होने देती मोना शादी कर लेगी तो उसके छोटे भाई-बहिनों को कौन पालेगा ? बुढ़ी माँ की बिमारी का खर्चा कहाँ से आएगा ? घर की समस्या, भाई बहनों की समस्या के आगे मोना का व्यक्तित्व हार चुका है । वह रात भर रोती है, दिन-दिन घुलती और घुटती है पर इसके आगे कुछ नहीं कर सकती ।

एकबार मोना अरुप के साथ भाग जाने की योजना बनाती है । यह खबर वह प्रतिमा को भी देती है । रात में गर्मी से तंग आकर प्रतिमा-छत पर खुली हवा में टहलने लगती है और सोचने लगती हैं कि शायद मोना अरुप के साथ भाग गयी होगी । लेकिन उसने देखा कि मोना घर में है और उसकी माँ ने बाहर से ताला लगाया है और मोना रो रही है ।

मन्नू भंडारी ने इस कहानी में दो नारियों की घुटन को चित्रित

किया है । एक है विवाहित प्रतिमा जो अपनी पति के फौलादी बाँहों में जकड़े जाने के भय से कसमसाती है तथा घुटन महसूस करने लगती है । तो दूसरी नारी है मोना जो अविवाहित है और अपने प्रेमी के साथ भाग जाना चाहती है, विवाह कर अपने पति की बाँहो में समाए जाना चाहती है । उसका विवाह नहीं हो रहा है, इसलिए वह घुटती जा रही है ।

लेखिका ने इन दो नारियों के मनोव्यथाओं का सुन्दर चित्र चित्रित किया हैं ।

मोना द्वारा एक सामाजिक समस्या का चित्रण किया है । नारी का अर्थोपार्जन कभी-कभी उसकी भावना और व्यक्तित्व को मार डालता है । घर की आर्थिक जिम्मेदारी के कारण उसकी माँ उसका विवाह भी टालती रहती हैं । ऐसी स्थिति में लड़की की शादी की उम्र भी बीत जाती है और अंत में विकृति का शिकार हो जाती हैं ।

६. हार :

लेखिका ने स्वतंत्र व्यक्तित्व चाहनेवाले पति-पत्नी के द्वन्द्व को इस कहानी में प्रस्तुत किया है ।

दीपा राजनीतिक माहौल में पली हैं उसके पिता राजनीतिक दलों में दिलचस्पी रखते है और उनकी आलोचना करते हैं । दीपा अपने पिता की अनुपस्थिति में विरोधी दलों के लोगों से बातचीत, बहस और आलोचना करती है उसे स्वच्छंदता विरासत में मिली है । कुछ दिनों के उपरांत वह एक राजनीतिक दल की सक्रिय सदस्य बन जाती है । उसने राजनीति को ही जीवन का क्षेत्र बनाने का संकल्प किया है । अतः वह विरोधी पार्टी के सदस्य शेखर से विवाह करती है ।

दीपा के पति विरोधी दल से चुनाव में खड़े रहे थे । ज्यों-ज्यों चुनाव नज़दीक आने लगे विरोधी पार्टी के साथ-साथ वह पति का भी विरोध करने लगी । दीपा शेखर के खिलाफ भाषण देने लगती है । वह उसकी धज्जियाँ उड़ाती है । पति-पत्नी के बीच तनाव पैदा हो गया । शेखर ने दीपा को इस व्यवहार पर कोई आपत्ति नहीं उठायी । दीपा पुरुषों की वृत्ति पर व्यंग्य करते हुए कहती है - ''चाहे कोई कितना ही उदार हो, आखिर पुरुष ही हैं । वह बस यही चाहता है कि नारी उसी का अनुसरण करें । कहनेको ये बड़ी-बड़ी बाते करते थे, पर जब मौका आया तो सहा नहीं गया ।''[१०८]

पति-पत्नी अपने-अपने तरीके से एक-दूसरे को नीचा दिखाने की कोशिश करते है । फलस्वरुप उनके दाम्पत्य संबंध में हलका-सा तनाव उत्पन्न हो जाता हैं, पर दीपा उसकी परवाह नहीं करती । दीपा की अपनी पार्टी में प्रशंसा होती है । चुनाव प्रचार का काम निपटा कर वह रात देर से घर लौटती है उसी वक्त शेखर अपने मित्र से बाते कर रहा है - ''मेरी जीत की संभावना ही मुझे खिन्न बनाये दे रही है । सोचता हूँ मैं हार भी गया तो उस लज्जा को सह लूँगा । पुरुष हूँ और सहने का आदी । पर जीत गया तो दीपा का क्या होगा । तुम देखते हो - पगली हो गयी है इसके पीछे वह हार का धक्का बर्दाश्त नहीं कर सकेगी और सच्च पूछो तो इसीलिए चाहता हूँ कि मैं हार जाऊँ ।''[१०९]

शेखर की बातें सुनकर दीपा सहसा अस्वस्थ हो जाती है । वह सुबह अपना वोट पति की पेटी में डाल देती है ।

मन्नू भंडारी ने पति-पत्नी के द्वंन्द्व को अपनी कहानी में प्रस्तुत किया है । पति-पत्नी अधिकार और कर्तव्य के प्रति जागरूक बनकर

एक दूसरे के विरोध में खड़े होते हैं । वे दोनों आपस में प्यार करते हैं पर राजनीतिक क्षेत्र में दोनों एक-दूसरे से लड़ते हैं । शेखर कहता है कि वह हार भी गया तो सह लेगा दीपा सोचती है क्या सिर्फ पुरुष ही सहनशील होते हैं नारी नहीं ? चूँकि वह राजनीतिक क्षेत्र में उससे विरोध दर्शाती है और अब भावना के क्षेत्र में भी वह उससे आगे बढ़ना चाहती है । इसीलिए अपना वोट पति की पेटी में डाल देती हैं ।

भारतीय नारी के मनोविज्ञान का सुन्दर चित्रण लेखिका ने किया है । इस कहानी में 'व्यक्ति स्वातंत्र्य' की भावना व्यक्त हुई है । नारी पुरुष पर हावी होना चाहती है पर पुरुष ही अपने उदेश्य में सफल होता है ।

आधुनिक नारी ने पारिवारिक दायरों को तोड़कर राजनीति में प्रवेश तो कर लिया है पर उसकी कोमल भावनाएँ, उसके परंपरागत संस्कार ही उसे बाँधे रखते है । दीपा की हार नारी समाज की हार हैं ।

७. मजबूरी :

प्रस्तुत कहानी में मन्नू भंडारी ने बूढ़ी अम्मा का हृदयस्पर्शी चित्रण प्रस्तुत किया है ।

बूढी अम्मा देहात में रहती है । उसका बेटा रामेश्वर बंबई में नौकरी करता है । उसके पति वैध है अतः दिनभर औषधालय में रहते है । बेटा-बहू तीन बरस बाद घर आ रहे है । इसी खुशी में बूढी अम्मा दर्द भूलकर उनके स्वागत की तैयारियाँ कर रही है, खास कर पोतो की । रामेश्वर का एक बेटा है और दूसरा होनेवाला है । बेटा, बहू और पोता तीनों आ जाते है । बूढी अम्मा आनंदित होती है । बेटे को वह छाती से लगाती है, प्यार दुलार करती है । अब बेटू

अम्मा के पास ही रहेगा, बहू के इस निर्णय से अम्म अत्यंत पुलकिता हो उठती हैं । मानो अम्मा का बचपना फिर से लौट आता है । वह अच्छी तरह से बेटू की देखभाल करने लगती है ।

दूसरे साल बहू दूसरे बेटे पप्पु को लेकर आई तो बेटू की हालत देख परेशान हो उठी । पर दो बच्चों को संभालना मुश्किल था । इसलिए बेटू को अम्मा के पास ही छोड़कर चली गई । दो साल बाद वापस आई तो देखा पप्पू बड़े अदब से बात करता है पर बेटू वैसा ही हैं, जैसा रमा उसे छोड़ गई थी । रमा बेटू को अपने साथ शहर ले आई । बेटू को शहर माफिक नहीं आता और बूढी अम्मा की याद में बीमार हो जाता है । बूढी अमा को पता चलते ही वापस बेटू को गाँव में ले आती है । एक साल बाद रमा फिर बेटू को शहर ले आई, रमा बेटू को अपने से हिलामिलाने के लिए उसे ताँगो में घुमाने लगती है, मिठाईयाँ खिलाती हैं मनौती मनाती है कि किसी भी प्रकार बेटू रमा से हिलमिल जाए । बेटू रमा से काफी घुल मिल जाता है । इस बार अम्माँने कंपाउन्डर शिब्बू को बहू के साथ शहर भेजकर कहा कि बेटू का मन न लगे तो उसे वापस ले आएँ । सात दिन के बाद शिब्बूने आकर बताया कि अब बेटू तुम्हें भूल गया है । अम्मा यह सुनकर कहती है - ‘‘क्या कहा .... बेटू मुझे भूल गया वहाँ जम गया ? सच, मेरी बड़ी चिन्ता दूर हुई । इस बार भगवान ने मेरी सुन ली जरुर परसाद चढ़ाऊँगी ।’’[११०]

अम्मा शिब्बू को सवा रुपया देकर प्रसाद लाने को कहती है ।

मजबूरी कहानी का कथ्य एक वात्सल्यमयी वृद्धा माँ के अकेलेपन की पीड़ा से जुड़ा हुआ है । बूढी अम्मा एक ममतामयी नारी हैं । अम्मा अपने बेटे का गम भुलाना चाहती है जो दूर शहर में

जा बसा है । पोते की वजह से वह दुःख भूल भी जाती है लेकिन उसे भी जी भरकर प्यार-दुलार नही कर पाती । 'अकेली' की सोमा बुआ की तरह बूढी अम्मा का चरित्र सुन्दर एवं मार्मिक बन पड़ा है । लेखिका ने बूढ़ी अम्मा के अंतर्पीड़ा का सुन्दर चित्रण प्रस्तुत किया है ।

८. **चश्में :**

मन्नू भंडारी की यह कहानी कलात्मक है मि. वर्माने अपनी बीमार प्रेमिका शैली को त्याग कर विवाह किसी ओर से किया । इस घटना का स्मरण कर वह स्वयं को दोषी ठहराते हैं । मि. वर्मा की इसी अंतपीड़ा का चित्रण लेखिका ने इस कहानी में किया हैं ।

मि. वर्मा और मिसेज वर्मा अपने दाम्पत्य जीवन में सुखी है । मिसेज वर्मा साहित्य प्रेमी है । मि. वर्मा हर समय फाइलों में व्यस्त रहते हैं। मिसेज वर्मा, मि. वर्मा को कहानी सुनाना चाहती है पर मि. वर्मा फाइलों में उलझे थे । इसी कारण मिसेज वर्माने मि. वर्मा का चश्मा उतार दिया, जिससे वर्मा काफी असहाय हुये । वे कहानी सुनने लगे और कहानी सुनते-सुनते उन्हें अपना अतीत याद आ गया और वे उसी में खो गये ।

मि. वर्मा तब निर्मल वर्मा थे और 'शैल' से बेहद प्यार करते थे । निर्मल को चिकन-पॉक्स निकला था । छत-छात की बिमार होने के बावजूद भी शैल उसकी देखभाल करती रही । नतीजा यह हुआ कि वह बीमार पड़ गयी । और उसे टी.बी. हो गया । दोनों शादी करनेवाले हैं । लेकिन बीमार शैल को देखकर निर्मल आगे नहीं बढ़ पाता । वह ट्रेनिंग के लिए चला जाता है । डाक्टरों का कहना था कि अगर शैल की शादी हुई तो वह अच्छी हो सकती हैं । शैल के पिता ने

यही खबर निर्मल को दी लेकिन निर्मल कुछ न कर सका । और २३ मई को शैल की मृत्यु होने का समाचार निर्मल को मिलता है ।

मि. वर्मा अपने अतीत से जाग पड़े और चिल्लाने लगे -

''मैं कहता हूँ मेरा चश्मा दो, नहीं तो मेरा दम घुट जाएगा ।''[१११]

जब आँखों पर चश्मा चढाया तब मि. वर्मा को राहत मिली । मि. वर्मा वर्तमान में बापस लौट आये और अपने बीवी-बच्चे को देखने लगे ।

मन्नू भंडारी ने अतीत और वर्तमान का संघर्ष अत्यन्त सुन्दरता से चित्रित किया है । पुरुष के स्वकेन्द्रित वृत्ति पर लेखिका ने तीखा व्यंग्य किया है । आधुनिक व्यक्ति त्याग की अपेक्षा सिर्फ सुख भोगना चाहता है । इसी कारण वह दुःख से दूर भागता है । अतीत का दुःख वर्तमान में भी उसका पीछा नहीं छोड़ता और मि. वर्मा व्यथित हो उठते है ।

''मैं हार गयी' इस कहानी संग्रह की तुलना में 'तीन निगाहों की एक तस्वीर' और 'चश्मे' कहानियों में एक नयापन है अपनी एक विशेषता है । 'तीन निगाहों की एक तस्वीर' कहानी में 'दर्शना' की अंतर्पीड़ा प्रस्तुत की है तो 'चश्मे' कहानी में मि. वर्मा की अंतर्पीड़ा प्रस्तुत की है । दोनों की अंतर्पीड़ा भिन्न-भिन्न है । 'अकेली' और 'मजबूरी' इन कहानियों में वृद्धा का चित्रण किया है जो लगभग एक सा है । 'खोटे-सिक्के' में मजदूरों का शोषण प्रस्तुत किया हैं । 'घुटन', 'हार' इन कहानियों में नारी के मनोभावों का सुन्दर चित्र लेखिकाने उपस्थित किया हैं ।

(३) यही सच है :

मन्नू भंडारी का यह तीसरा कहानी संग्रह सन् १९६६ में प्रकाशित

हुआ । इस कहानी संग्रह में आठ कहानिर्यां संकलित हैं ।

१. **क्षय :**

प्रस्तुत कहानी मध्यवर्गीय परिवार की आर्थिक तंगी के फलस्वरूप टूटते मूल्यों का उद्‌घोष है । कुंती की इच्छाएँ एवं आदर्श धीरे-धीरे क्षयग्रस्त होते जा रहे है ।

कुंती आदर्श और स्वाभिमानी अध्यापिक है । सारे परिवार का उत्तरदायित्व उसी पर है । घर में क्षयग्रस्त पिता और छोटा भाई दुन्नी है ।

कुंती स्नेह और सहानुभूति पूर्ण व्यवहार से छात्रों के खोये हुये आत्मविश्वास को जगाती है । उन्हें पूरी मेहनत से पढ़ाती है । इसी कारण छात्राओं की 'परम प्रिय बहनजी' बन जाती है । वह अल्प वेतन पाती है इसलिये धनवान बाप की बेटी सावित्री का टयूशन लेती है । सावित्री की मर्ां पैसे के बलबूते पर दुनिर्यां की हर चीज खरीदना चाहती है, यर्हां तक की शिक्षा भी । घर, स्कूल और टयूशन से ऊब जाने पर कुंती रात में वायलिन बजाना पसंद करती है । दुनियादारी निभाते-निभाते कुंती पूरी तरह टूट चुकी है । वह अपने आप को असहाय महसूस करती है । ऐसी परिस्थिति में उसके मुँह से निकलता है -

''हे भगवान अब तो तू पापा को उठा ले । मुझसे बर्दाश्त नहीं होगा । मैं टूट चुकी हुँ ।''[११२]

इतनी बड़ी दुनिया में क्या कोई भी ऐसा नहीं है जो उसकी पीठ पर आश्वासन-भरा हाथ रखकर दो शब्द सांत्वना के कह दे ?

सावित्री की मर्ां ने पता लगा लिया कि सावित्री दो विषयों में फेल है । ''अब आप कुछ करे बहनजी नहीं तो हमारे इतने रुपयों पर

पानी फिर जायेगा ।''

सावित्री की माँ कुंती से उसकी अध्यापिकाओं से मिलकर जरूरत पड़ने पर रुपया पैसा खर्च करके भी उसे पास करवाने का आग्रह रखती है । कुंती तो यह सब अच्छा नहीं लगता, किन्तु वह सावित्री की माँ के एहसानों से दबी होने के कारण अनिच्छा होने पर भी उसके स्कूल पहुँचती है । वहाँ पहुँचकर भी आदर्शवादी कुंती किसी से कुछ कह नहीं सकी । जब वहाँ से बाहर निकलती है तब वह बुरी तरह खाँसने लगी है । कुंती मन ही मन सोचने लगती है -

''उसकी यह खाँसी, यह खोखली-खोखली आवाज पापा की खाँसी के कितनी मिलती-जुलती है हूबहू वैसी ही तो हैं ।''[११३]

कुंती आर्थिक परिस्थितियों के कारण विवश बन चुकी है । अपनी इच्छा के विरुद्ध जाकर आचरण करती हैं और स्वयं ही दुःखी बन जाती है । कुंती मन से क्षयग्रस्त हो जाती हैं ।

लेखिका ने तत्कालीन परिवेश के अनुरुप ही आदर्श और यथार्थ के बीच संघर्ष दिखाकर अंत में आदर्श की हार दिखाई है । इसमे हमें एक मध्यमवर्गीय परिवार की जिन्दगी के टूटने की चरमाहट साफ सुनाई देती है ।

लेखिका ने शिक्षा - जगत में व्याप्त भ्रष्टाचारों की झलक भी प्रस्तुत की है ।

२. तीसरा आदमी :

मन्नू भंडारी ने इस कहानी में मनोग्रंथियों से ग्रस्त 'सतीश' के अंतद्वन्द्व का चित्रण किया है । लेखिकाने पुरुष की हीनता-ग्रन्थि को कहानी का कथ्य बनाया है ।

सतीश और शकुन पति-पत्नी है । वे एक दूसरे को बहुत चाहते

है । विवाह के तीन साल बाद भी संतान प्राप्ति का कोई चिहन नजर नहीं आता है । इस कारण शकुन अपनी डॉक्टरी जाँच करवा लेती है, लेकिन सतीश में अपनी डॉक्टरी जाँच करवाने की हिम्मत नहीं होती । इससे सतीश अपने आप को नपुंसग समझने लगता है । सतीश को कई बार होता है कि वह डॉक्टर से जाँच करा ले और शकुन को बता दे कि वह पूर्ण पुरुष है - लेकिन पौरुषहीनता की ग्रंथी से ग्रस्त सतीश डॉक्टर के पास नहीं जा सकता । सतीश शकुन के काम में हाथ बँटाने हेतु अपनी माँ को अपने घर बुलाना चाहता है, लेकिन शकुन मना करती हुई कहती हैं -

''तुम मुझसे चौगुना काम करवा लो पर रात को तुम्हारी बाँहे नहीं छोड़ सकती । वहाँ आते ही सारी थकान मिट जाती है, अगले दिन के लिए ताज़गी आ जाती है ।''[११४]

शकुन अपने प्यार में सास को बाधक समझती हैं । एक बार उसका एक पुराना मित्र आकर टिक गया था । शकुन शिष्टता की सीमा लाँघकर उसके साथ पेश आयी तब सतीश को गुस्सा भी आया था ।

शकुन का एक परिचित 'आलोक' तीसरा आदमी बनकर उन दोनों के जीवन में उपस्थित होता है । आलोक लेखक है । शकुन और आलोक में सहित्यिक पत्र व्यवहार चलता रहता है । 'आलोक' के आ जाने से सतीश विचलित हो जाता है । अपनी पत्नी के चरित्र के बारे में न जाने क्या-क्या सोचता है । वह शकुन और आलोक को रंगे हाथ पकड़ना चाहता है । अतः विवश होकर सड़कों पर भटकता रहता है । वह कभी अपने आप में पौरुषता का अभाव महसूस करता है तो कभी शकुन का व्यवहार उसे उचित लगता

है । आलोक वापस चला जाता हैं । सतीश फिर से अपनी पत्नी को चाहने लगता है ।

मन्नू भंडारी ने इस कहानी में स्त्री-पुरुष के बदलते सम्बन्धों पर प्रकाश डाला है । यह एक दुर्लब व्यक्ति की कहानी है । पौरुष हीनता की ग्रंथि से ग्रस्त सतीश अपनी पत्नी पर शक करता है । लेकिन वह शक को प्रकट करने में असफल रहता है । सतीश जैसे व्यक्ति के मनोभावों का सुक्ष्म विश्लेषण करना लेखिका का उदेश्य रहा है ।

सामाजिक संदर्भ में देखे तो प्राचीन एवं नवीन मूल्यों के टकराहट की कहानी है । आज नारी-पुरुष के परंपरागत स्थूल संबंधो में काफी परिवर्तन आया है ।

३. सजा :

सजा कहानी में मन्नू भंडारी ने आज के न्यायतंत्र पर तीखा व्यंग्य किया है । यह कहानी सामान्य परिवार की यातनापूर्वक जीवन को प्रस्तुत करती है ।

आशा के पिता पर बीस हजार रुपये गबन करने का इल्जाम लगाया जाता है । कोर्ट में केस चल रहा है । आशा के दादाजी घर गृहस्थी चलाने के लिए पच्चीस रुपयों में हिसाब लिखने का काम करने लगे और अपने बेटे को पैसे भेजने लगे । आर्थिक अभाव के कारण बच्चे अपने चाचा के यहाँ मुसीबतों में दिन काटते हैं और माँ अपने भाई के घर चली जाती है । इस तरह एक सुखी परिवार न्याय की प्रक्रिया की लपेट में फँसकर उजड़ जाता है । आशाने स्कूल बस छोड़ दी । आशा की माँ अक्सर बीमार रहने लगी लेकिन इलाज करना असंभव था । पिताजीने चुप्पी साध ली थी । दादाजी का काम छूटने पर वे अपनी पेन्शन में से पन्द्रह रुपये भेजने लगे । आशा लीला

चाची कठोर थी इसी कारण मुन्नु के देखभाल के लिए चाचा के वहाँ गयी । आशा ने अपनी पढ़ाई छोड़ दी और घर का सारा काम करने लगी ।

अंतमें आशा के पिताजी को निर्दोष करार दिया जाता है । आशा खुशी से उछल पड़ती है तो दादा दादी फूटकर रो पड़ते हैं ।

आशाने कहा - ''मुन्नू पापा रिहा हो गये .... रिहा हो गये ....'' बाबाने कहा - ''मैं कहता न था बेटे भगवान के घर में देर है, अंधेर नहीं ।''[११५]

भारतीय कानून की लम्बी और खर्चीली प्रक्रिर्यां में यह मध्यम वर्गीय परिवार बुरी तरह बरबाद हो जाता है । आशा के पिता का केस कोर्ट में पाँच साल तक चलता रहां न्याय-व्यवस्था बड़ी आसानी से इमानदार व्यक्ति को भी मुजरिम करार देकर उसे कटघरे में खड़ी कर देती है । सारा समाज उस व्यक्ति की ओर तथा उसके परिवार की ओर घृणाभरी नजरों से देखता है । उनकी उपेक्षा करता है ।

इस प्रकार कोर्ट की 'सजा' से भी बढ़कर यही 'सजा' बिना किसी अपराध के सारे परिवार को भुगतनी पड़ती हैं । इससे एक सुखी परिवार तहस-नहस हो जाता है । और उस व्यक्ति तथा उसके परिवार को अंतहीन यातनाओं का सामना करना पड़ता हैं ।

भ्रष्ट व्यवस्था और तंत्र की आम व्यक्ति और समाज को किस तरह निष्प्राण और संज्ञा शून्य बना देती है इसका यह कहानी एक उदाहरण है । आशा के ये प्रश्न इस बात की गवाही देते हैं - ''पर पप्पा को क्या हुआ है ? वह खुश क्यों नहीं हो रहे है ? उनका भावहीन चेहरा गढ़े में धँसी हुई निस्तेज, निर्जीव आँखो में से खुशी की चमक क्यों नहीं आ रही ?''[११६]

इस विकृत न्याय-पद्धति के कारण न केवल आशा के पापा का परिवार बिखरा बल्कि समाज में उस जैसे न जाने कितने ही परिवार टूटकर बिखर गये होंगे ।

४. नकली हीरे :

प्रस्तुत कहानी में मन्नू भंडारी ने उच्च वर्ग के एक ऐसी नारी की कथा वर्णीत की है जिसके पास सुख-सुविधाएँ है लेकिन वह पति प्रेम से वंचित रहती है । पति प्रेम के अभाव में उसे सारा ऐश्वर्य झूठा और नकली लगता है ।

मिसेज सरन और इन्दु दोनों बहने हैं । इनके पापा बड़े राज्य के पूर्व मुख्यमंत्री है । मिसेज सरन का विवाह पापा की इच्छा के मुताबिक मिल मालिक से हुआ था, जबकि इन्दु अपनी इच्छा से ही एक स्कूल मास्टर से विवाह कर लेती है । परिणाम स्वरुप पिता-पुत्री में तनाव पैदा हो जाता है । इन्दु अपनी घर-गृहस्थी में खुश है । उसका पति उसे बहुत चाहता है । इन्दु कुछ दिनों के लिए सरन के घर रहने आती है । बहन के घर आये पाँच दिन भी नहीं हुए और उसके पति के पाँच पत्र भी आ गये । मिसेज सरन इन्दु के लिए हार लेना चाहती है पर इन्दु उसे मना कर देती है । वही हार वह अपने लिए खरीदती है । इन्दु को वापस बुलाने के लिए पति का टेलीग्राम आता है । इन्दु घर जाने से पहले जीजा से बात करने फोन करती है पर वे अनीता नामक एक लड़की के साथ बाहर चले गये हैं, ये सुनकर वह उदास हो जाती है । इन्दु के चले जाने पर सरन हीरे का हार निकालती है पर पति के एकनिष्ठा प्रेम के अभाव में उसे वह हार नकली लगता है ।

‘‘इन हीरों में तो चमक ही नहीं, ये तो नकली हैं । कही जौहरी उनके साथ धोखा कर गया । इतने विश्वास का जौहरी और धोखा !

कल जाने कैसे उन्हें भ्रम हो गया । उन्होंने फिर एक बार गौर से देखा - नहीं-नहीं, ये हीरो नहीं हो सकते । इतने फीके और मंदे .... बिल्कुल सादे कांच के टुकडों की तरह .... ! ''[११७]

इस कहानी में दो बहने समाज के दो वर्गो का प्रतिनिधित्व करती है । मिसेज सरन उच्च वर्ग का, तो इन्दु मध्य वर्ग का । उच्च वर्ग की नारियाँ भौतिक सुख-सुविधा को ही जीवन का चरमा सुख मान लेती है । परंतु साधारण जीवन याचन करनेवाली नारी के दाम्पत्य सुख को देखकर ही उनका मोह भंग होता है ।

मन्नू भंडारी ने इस कहानी में भौतिक संपन्नता पर भावात्मक समृद्धि की विजय दिखाई हैं ।

५. नशा :

मन्नू भंडारीने इस कहानी में एक प्रौढ़ा का अपने पति के प्रति असीम प्रेम तथा सहानुभूति को व्यक्त किया है ।

दस वर्षीय आनंदी का विवाह शंकर से हुआ । शंकर कुछ कमाता नहीं था । आनंदी जो कुछ कमाकर लाती है वह छीन लेता है और शराब पीता है । आनंदी की सास दिनभर उससे काम करवाती तथा ताने मारती है । सास की मृत्यु के बाद घर की पूरी जिम्मेदारी आनंदी को उठानी पड़ी क्योंकि शंकर शराबी था । आनंदी के दो बच्चे मर गये और फिर अकेला किशनू रह गया । माँ दिनभर पिता का मार खाकर आँसू बहाती है यह देखकर किशनू घर छोड़कर चला जाता है । लोगों की मजदूरी कर जो भी पैसे प्राप्त होते वह शंकर को शराब पीने के लिए दे देती है । आनंदी अपने हाड गला-गलाकर शंकर को शराब पिलाती रही और शंकर पीता रहा ।

किशनू बारह वर्षो के बाद माँ-बाप की सुध लेता है । शंकर बेटे

के आने की खबर आनंदी को देता है और उससे पैसे लेकर, शराब पीने चला जाता है । आनंदी सोचती है कि - ''शंकर आज के दिन भी शराब पीने गया । क्यों नहीं सारे मुहल्ले में दौड़ता फिरा ? क्यों नहीं उसने घर-घर जाकर खबर दी कि किशनू आ रहा हैं ?''[११८]

किशनू आता है और देखता है कि उसका पिता अब भी शराब पीता है । और माँ को पीटता है । आनंदी रोने लगी - और कहती हैं -

''मुझे यहाँ से ले चल, किशनू....... यहाँ से ले चल ! मैं अब एक दिन भी इस घर में रहना नहीं चाहती । मैंने बहुत सहा है, अब और नहीं सहा जाता, मुझे यहाँ से ले चल आज ही ।''[११९]

किशनू ने कहाँ आज ही तुझे ले चलूंगा माँ आज ही कक्का को भी ले चलूँगा ये सोचा था पर अब नहीं ये उसके लायक नहीं है । किशनू अपनी माँ को लेकर घर से नीकल गया । बहू-बेटा आनंदी का अच्छा ख्याल रखते थे । फिर भी आनंदी उदास रहती थी । अड़ोस-पड़ोस के यहाँ जाकर वह सिलाई-बुनाई करने लगी । और जो पैसे मिले वह शंकर को भेजती थी । जब किशनू को इस बात का पता चला तो उसने कहा कि सिलाई-बुनाई करने की क्या आवश्यकता है, उससे कह देती तो वह रुपये दे देता ।

अपना पति शराबी होते हुए भी आनंदी उसे 'परमेश्वर' मानती है । और अपने हाड़ गला-गला कर शंकर को शराब पीने के पैसे देती है । शंकर को पीने का नशा है तो आनंदी को पिलाने का यह नशा दोनों को है । एक को अपनी कर्तव्य भावना का तो दूसरे को अपनी गलत आदत का । इस कहानी में मन्नू भंडारी ने आर्यनारी की बात की है जो भारतीय संस्कृति से बन्धी है ।

६. इन्कम-टैक्स और नींद :

इस कहानी में मन्नू भंडारी ने मध्यवर्गीय परिवार के व्यक्ति के बारे में बताया है । जो भीतर से खोखला होकर भी मिथ्या आत्मसम्मान के कारण हंसी का कारण बनता है । कहानी में दो पीढ़ियों के बीच के अंतर को स्पष्ट किया गया है ।

डॉ. दयाल प्रसाद चतुर्वेदी बाल विशेषज्ञ हैं । गाँव में उनके पास बहुत कम मरीज आते हैं जिसके कारण आर्थिक अभाव बना रहता था लेकिन इस बात को स्वीकार नहीं करते । उनके भाई लखनऊ में रहते है । उसकी भतीजी महिमा एलोपेथी की डॉक्टर है । डॉ. दयाल का बेटा महिम उसका हमउम्र है । वो इसे भी डॉक्टर बनाना चाहते थे किंतु डॉ. दयाल को एलोपेथी में विश्वास नहीं और वे उसे इजीनियर या वकील बनाना चाहते थ । महिम इन्कम-टैक्स बचाने के लिये हिसाब लिखनेवाला क्लर्क बन गया । डॉ. दयाल पुराने विचारो के है उसकी बेटी सरोज मैट्रिक में पढ़ती है उसके लिए लड़का देखते है उसके विचार से लड़किया गृहकार्य में दक्ष होनी चाहिए । वे सोचते है २६ वरस की बिना ब्याही डॉ. महिमा की जिन्दगी भाई साहबने खराब कर दी । डॉ. दयाल अहं में डूबे हीन ग्रंथि से ग्रसित है । उनकी डिस्पेंसरी नही चलती किंतु महिमा के सामने अपनी डिस्पेंसरी की भीड़ का उल्लेख बार-बार करते है । महिमा सरकारी अस्पताल में नौकरी करती है और प्राइवेट प्रैक्टिस भी । डॉ. दयाल अपनी हर बात को उचित और उसकी हर बात को अनुचित बताते है । डॉ. दयाल पुराने विचारों के प्रतीक है तो डॉ. महिमा आधुनिक विचारों की । डॉ. दयाल का ज्ञान रुका हुआ है वह समय की धारा को समझ नही पाते सिर्फ अपने बड़प्पन को प्रस्थापित करना

चाहते है । डॉ. दयाल कहते है -

''डिस्पेंसरी में भीड़ यो ही लगी रहती है ? लोग शहर के बड़े बड़े डॉक्टरों को छोड़कर गली की उस छोटी सी डिस्पेंसरी मे यों ही आते है ? जब शहर के सारे डॉक्टरो के यहाँ धक्के खाकर निराश हो जाते है तब हमारे यहाँ आते है ।''[१२०]

डॉ. दयाल अपनी हीनग्रंथि के अहंकार के कारण उपहास के पात्र बने है । डॉ. दयाल मनोविकार के शिकार हैं ।

७. रानी मां का चबूतरी :

इस कहानी में लेखिकाने निम्नवर्ग का प्रतिनिधित्व करनेवाली नारी के चरित्र को उजागर किया है । इस कहानी में दो वर्ग है - एक अंधविश्वास एवं भूत परंपरा का प्रतिनिधित्व करता है और दूसरा इन मान्यताओं के विरुद्ध विद्रोह करनेवाला समाज, जिसका प्रतिनिधित्व एक स्त्री गुलाबी करती है ।

नगर सेठ की पत्नी रानी मां ने अपने बेटे को शीतला माई के कोप से दूर रखनेके लिए साधु के कहने पर सात दिन तक अन्न-जल का त्याग कर दिया था । बच्चा अच्छा हो गया पर रानी मां जाती रही । सेठजी ने उनकी याद में चबूतरा बनवाया । हर पूनम मासी को औरते वहां दीया जलाकर बच्चों के लिए मनौती मानते है ।

गुलाबी दो बच्चो के साथ रहती है । शराबी पति को घर से निकाल दिया है । वह दिनभर मजदूरी करती है । तब शाम को जैसे तैसे बच्चों के और अपने पेटमें दो रोटी डालती है । काम पर पहुँचने को देर हो गई तो ठेकेदार दूसरे मजदूर को काम पर लगा देता है इसीलिए रीते बच्चों को कमरे में बंद कर गुलाबी काम पर जाती है । गांव के लोग गुलाबी पर ताने मारते है, कुछ दया भी दिखाते है । गुलाबी न

लोक निंदा की पर्वाह करती है और न ही उनकी दया की कायल है । वह जानती है कि लोग कोरी सहानुभूति जताते है । वह रात-दिन अपने बच्चे की सुरक्षा में जुटी रहती है । काका गुलाबी के बच्चों के लिए चंदा इकट्ठा करना चाहते थे किंतु वह बात उसे रुचती नहीं । किसी के दान-पुण्य पर जीना गुलाबों को पसन्द नहीं था ।

गुलाबी मजदूरी के साथ कुछ अन्य काम भी करनने लगती है । लेकिन मोहल्लेवालें न जाने कैसी कैसी अफवाए फैलाते है । वह अपने बच्चों को घर में बन्द कर काम पर जाती है इसलिए गाँव की स्त्रियाँ उसे कोसती है । अन्त में मजदूरीन तथा अन्य काम करके वह निठाल सी हो जाती है । कुछ लोग उसको अचेत शरीर उठा कर ले आते हैं । तब उसके अँगिया में से 'शिशु सुरक्षा केन्द्र' की रसीद और काँच की हरी छोटी चूडियाँ निकलती हैं ।

इस कहानी में गुलाबी निम्नवर्ग की नारी का प्रतिनिधित्व करती है । रानी माँ के चबूतरे पर जाने की अपेक्षा उसे अपने आप पर विश्वास है । मजदूरी करके अपने बच्चों की परवरिश करती है । किसी की दया या भीख उसे नहीं चाहिए । गुलाबी आत्मनिर्भर नारी है । खुद तीन दिन तक भूखी रहकर अपने बच्चों के लिए 'शिशु सुरक्षा केन्द्र' में पाँच रुपये जमाकर आती है । जहाँ बच्चो की पढ़ाई एवं आरोग्य की देखभाल की जाती है । गुलाबी अपनी बेटी के लिए चुडियाँ खरीदती है । मुहल्लेवाले चाहे उसे 'डायिन' कर्कशा, 'चुडैल' कहे लेकिन वह तो ममता की मूर्ति है । गुलाबी मजदूरी करके अपने बच्चों की परवरिश करती हैं ।

८. यही सच हैं :

'यही सच हैं कहानी इसी कहानी संग्रह की अंतिम कहानी है

और इसी कहानी के आधार पर इस कहानी संग्रह का नामकरण हुआ हैं । इस कहानी में मन्नू भंडारी ने नारी-मनोभावों को डायरी शैली में प्रस्तुत किया है ।

दीपा के जीवन में प्रथम 'निशीथ' का आगमन होता है । दीपा सहपाठी निशीथ के साथ चाँदनी रातों में घूमती-फिरती है । दीपा के पिता की मृत्यु के बाद निशीथ से उसकी अनबन हो जाती है जिसके कारण वह कानपुर में जाकर अपना शोधकार्य करने लगती है ।

दीपा के जीवन में फिर संजय का आगमन होता है । संजय हसमुख है, हर मुलाकात के समय रजनीगंधा के फूल लाता है । संजय को पाते ही दीपा, निशीथ को भूल जाती है । दीपा सोचती है और कहती भी जाती है कि -

''मैं तुम्हें प्यार करती हूँ, बहुत-बहुत प्यार करती हूँ ? विश्वास करों संजय, तुम्हारा-मेरा प्यार ही है निशीथ का प्यार तो मात्र छल था, भ्रम था, झूठ था ।''[१२१]

जब इन्टरव्यू के लिए दीपा कलकत्ता जाती है तो वहाँ उसकी भेंट निशीथ से होती है । निशीथ दीपा की मदद करता है । फिर एक बार दीपा के मन में निशीथ के लिए प्यार उमड़ आता है । तब वह सोचती हैं -

''प्रथम प्रेम ही सच्चा प्रेम होता है, बाद में किया हुआ प्रेम तो अपने को भुलाने का, भरमाने का प्रयास-मात्र होता हैं ।''[१२२]

निशीथ की अस्पष्टता के कारण वही फिर से उससे नाता तोड़ लेती है और संजय को चाहने लगती है । संजय के चुंबन, स्पर्श, आलिंगन उसे सत्य लगते हैं । दीपा को लगता है - यह स्पर्श, यह सुख, यह क्षण ही सत्य है, वह सब झूठ था, मिथ्या था,

भ्रम .... था ।''

मन्नू भंडारी की यह कहानी बहुत लोकप्रिय बनी इसी पर 'रजनीगंधा' नामक फिल्म भी बनी, इस कहानी के लोकप्रियता के कारण इस संग्रह का नामकरण 'यही सच है' किया हैं ।

(४) एक प्लेट सैलाब :

मन्नू भंडारी का यह कहानी संग्रह सन् १९६८ में प्रकाशित हुआ इसमें कुल ९ कहानियाँ संकलित है ।

१. नई नौकरी :

यह एक सामाजिक कहानी है । इस कहानी में मन्नू भंडारी ने पुरुष की भौतिकवादी द्रष्टि और उसमें बली होती हुई नारी की नियति का चित्रण किया है ।

रमा इतिहास की प्राध्यापिका है। कुंदन और रमा साथ रहते है । डॉ. फिर नई नौकरी पर कुंदन की नियुक्ति करते हैं । उसे कंपनी द्वारा फ्लैट मिला फ्लैट सजाने की जिम्मेदारी रमा पर है । इसी वजह से वह अपना लेक्चर तैयार नहीं कर पाती । उसे कुंदन के साथ पार्टी में जाना पड़ता है । फ्लैट का फर्नीचर, परदे, डेकोरेशन करना, महेमानों की आवभगत करना इन्हीं में रमा खो जाती है । कुंदन रमा की नौकरी छुड़वा देता है जिससे रमा का अस्तित्व पूरी तरह मिट जाता है । रमा कॉलेज पर अपनी सहेलियों के लिये लंच ले जाना चाहती है पर कुंदन के मेहमान उसी समय आनेवाले है इसी कारण रमा को अपने पति का आदेश मानना पड़ता है और वह घर पर ही रहती हैं ।

इस प्रकार रमा का व्यक्तित्व पुरुष प्रधान संस्कृति का शिकार है । उसके सामने दो बातें हैं - नई नौकरी के अनुरुप पतिका साथ दे या अपनी अस्मिता को बनाए रखें । वह सामाजिक प्रतिष्ठा के पीछे

पड़ने के कारण शिक्षित पत्नी होने पर भी कुंदन के जीवन में एक शो पीस मात्र बन जाती है । इस प्रकार रमा कॉलेज की नौकरी छोड़कर घर की इस नयी नौकरी में व्यस्त हो जाती है । रमा के घुटन, टूटन और मानसिक तनाव को लेखिका ने चित्रित किया है ।

२. बंध दराजों का साथ :

इस कहानी में मन्नू भंडारीने यह चित्रित किया है कि विवाह पूर्व प्रेम पारिवारिक विघटन के लिए कारण बन सकता है । मंजरी न अपनी पिछली जिंदगी को छोड़ पाती है न ही चुनी हुई जिंदगी को अपना सकती है । मंजरी की इसी अंतरद्वद्वात्मक स्थिति का लेखिका ने चित्रण किया है ।

मंजरी प्राध्यापिका हैं विपिन और मंजरी अपने दाम्पत्य जीवन में सुखी है । अचानक मंजरी को विपिन की पिछली जिन्दगी का पता चलता है । विपिन के किसी नारी के साथ सम्बन्ध थे तथा उससे बच्चा छी हुआ था । मंजरी गर्भवती थी । उसने सोचा शायद आनेवाला बच्चा दाम्पत्य जीवन की दरार मिटा देगा । लेकिन विपिन के व्यवहार से तंग आकर वह अलग हो गई । वह अपने तीन साल के बेटे असित के साथ रहने लगी ।

मंजरी के जीवन में 'दिलीप' का आगमन हुआ । मंजरीने दिलीप से शादी की । उसने लोक-निंदा ने कारण कॉलेज की नौकरी भी छोड दी । मंजरी अपनी गृहस्थी में सन्तुष्ट थी । असित छुट्टियों समाप्त होने पर असित लौटने लगा तथी स्कूल से छः महनी का बिल आया । दिलीपने फीस देने से इन्कार किया । तब मंजरी को पहली बार अपनी नौकरी छोड़ने पर अफसोस हुआ । मंजरी की जिन्दगी दो टुकडों में बँट गई थी एक दिलीप के साथ और दूसरी बेटे अति केस

था । तब मंजरी सोचती हैं -

''आज जिन्दगी का हर पहलू हर स्थिति और हर सम्बन्ध एक समाधान हीन समस्या होकर ही आता है, जिसे सुलझाया नहीं जा सकता, केवल भोगा जा सकता है, जिसमें आदमी निरंतर बिखरता और टूटता चलता हैं ।''[१२३]

इस कहानी में लेखिका ने नारी के खंडित व्यक्तित्व को चित्रित किया है । मंजरी ऊपर से शांत दिखाई देती है पर अन्दर से पूरी तरह टूट गई है मंजरी के इस मनःस्थिति का लेखिका ने सुक्ष्मता से वर्णन किया हैं ।

३. एक प्लेट सैलाब :

मन्नू भंडारी ने इस कहानी में भिन्न भिन्न लोगों की मानसिकता का वर्णन किया हैं । हर उम्र की अपनी दुनिया और अपनी समस्या है । उम्र के साथ समस्याएँ परिवर्तित होती है । यही इस कहानी का कथ्य हैं ।

शामको पुरुष आफिस से थक कर और औरतें घरों से ऊब कर मन बहलाने के लिए होटल गेंलार्ड में आती है । यहाँ न गर्मी है न शोर बस हलका-शीतल प्रकाश है। टेबलों पर से उठते हुए फुसफुसाते स्वर संगीत में ही विलीन होते है । मंच पर एक लड़की झूमती मुस्कुराती हुई गीत गा रही है । उसके साथ युवक झुन-झुने सा बजा रहा हैं युवक परेशान है । युवती हंस रही है । एक टेबल पर एक स्थूलकीय खद्‌रधारी व्यक्ति भाषण दे रहा है जिसे एक दुबला-सा व्यक्ति सुन रहा है । बीच की टेबल पर कॉलेज की लड़कियों का झुंड बैठा है । वे सारी आधुनिकता है । कोनो की टेबल पर एक प्रौढ़ा बैठी है जो घर से ऊबकर काफी पीने के बहाने यहाँ आयी है । अंत में

नन्हें-मुन्ने बच्चे रंगीन गुब्बारे लेकर उस होटल में प्रवेश करते है और उनके आगमन से शांती एक झटके के साथ बिखर जाती है ।

इस कहानी में पाठक किसी एक पात्रके साथ एकाकार नही हो सकता । युवक-युवती, नेता, कॉलेज गर्ल्स, प्रौढ़ा आदि अपनी अपनी समस्यायें लेकर इस कहानी में उपस्थित होते है । इन्हीं लोगों की मानसिकता की लेखिका ने वर्णन किया है ।

४. छत बनानेवाले :

प्रस्तुत कहानी में लेखिका ने शहरी और देहाती प्राचीन और नई पीढ़ी के जीवन-दर्शन का भेद स्पष्ट किया हैं ।

शरद लेखक है और वह लखनऊ में रहता हैं । शरद घूमने के लिये तथा अपने बचपन की यादें ताजी करने मेरठ आया है जहाँ उसके ताऊजी रहते है । ताऊजी धार्मिक है । इनके लड़के मन्दिर जाकर चरणामृत लातें है । ताऊजी ने इन्हे प्रोविजन और जनरल स्टोर पर बिठा दिया है । छोटु कायस्थ लड़की से विवाह करना चाहता था पर ताऊजी ने उसकी अपनी मर्जी से शादी करा दी । शरद चाय पीना चाहता है तब ताऊजी दूध-लस्सी के फायदे और चाय से होनेवाले नुकशान को सुना देता है । ताऊजीने मकान तो बनवा लिया पर ऊपरी मंजिल नहीं बनायी । उन्होंने सीमेंट फकट्ठी की है । पोतों को खेलने कुदने के लिये उन्होंने छत छोड़ की है ।

सारे परिवार पर ताऊजी की हुकूमत चलती है । ताऊजी स्वयं अपने तरीके से जीवन जी रहे हैं और दूसरों को भी जीने के लिये बाध्य करते है । वे बाह्य जगत से स्वयं अछूते हैं और अपने बच्चों को भी रखते हैं । ताऊजी को अपने आप पर भरोसा है, आनेवाली पीढ़ियों पर नहीं ।

५. एक बार और :

इस कहानी में परम्परागत नैतिकता के प्रति खुला विद्रोह और आदर्श है । 'बिन्नी' पहले प्रेम की असफलता से निराश हो जाती है। वह नया जीवन जीने का साहस नहीं करती उसकी इसी अंतद्वद्वात्मक स्थिति का यथार्थ वर्णन लेखिका ने किया है ।

बिन्नी दर्शनशास्त्र की प्राध्यापिका है । वह अपनी सहेली सुषमा के साथ गाँव में रहती है । सुषमा के पति श्याम विदेश गये हैं । बिन्नी कुंज से प्रेम करती है । नैनीताल में वे दोनों पति-पत्नी बनकर होटल में रह चुके हैं । लेकिन कुंजने मधू से शादी की और बिन्नी के साथ सम्बन्ध बनाये रखे हैं । बिन्नी इस सम्बन्ध को तोड़ना चाहती है पर कुंज की प्यार भरी बातें उसे कमजोर बना देती है । कुंज अपनी पत्नी मधु के आदेश से बिन्नी को किसी और से शादी कर लेने की सलाह देता है । तब बिन्नी समझ गई कि कुंज के साथ उसके सम्बन्ध समाप्त हो चुके है । बिन्नी के भैया उसका विवाह नन्दन से कराना चाहते है । नन्दन उसी गाँव में एक प्रोजेंक्ट पर आया है । उसका नाम है 'आदिवासियों की विवाह पद्धति' सुषमा भी बिन्नी को नन्दन से परिचय बढ़ाने के लिए प्रेरित करती है । बिन्नी कुंज के मोह से छुटकर नन्दन से जुड़ना चाहती है पर क्या करुँ ? क्यां न करुँ ? इसी उधेड़बुन में पड जाती हैं ।

मन्नू भंडारी ने इस कहानी में 'पहले प्रेम' को महत्वपूर्ण बताया है । नारी अपने प्रथम प्रेम को सच्चा प्रेम मानती है । उसके असफल हो जाने पर निराश हो जाती है न किसी ओर से जुडने का साहस कर पाती है । नन्दन के बारे में उचित निर्णय जल्द से नही ले पाती । वह जिस बनने-टूटने की यात्रा से गुजरती है इसी का यथार्थ वर्णन लेखिका

ने किया है । कुंज के साथ सम्बन्ध टूटने के उपरांत्त नन्दन से जुड़ना बिन्नी के लिये असंभव था । वह अंतद्वंद्वात्मक स्थिति में जीती है । नारी मन की इसी नाजुक भावना को मन्नू भंडारी ने अत्यन्त सहजता से चित्रित किया है ।

६. संख्या के पार :

इस कहानी में मन्नू भंडारी ने बताया है कि दुनिया में ममता वात्सल्य की कोई कीमत नहीं होती वे अनमोल है । उन्हें रुपयों से तोला नहीं जा सकता । इसमे एक ऐसी युवती के जीवन का चित्रण किया है जिसे माँ का प्यार नहीं मिला ।

प्रमिला कॉलेज में पढ़ती है । उसकी विधवा माँ बचपन में उसे नाना-नानी के पास छोड़कर भाग जाती है । लेकिन उसके विधवा होने के बाद ससुरालवालों ने उसका सौदा कर दिया था और अफवाहें फैलायी कि वह भाग गयी । बाबा और आजी प्रमिला को बेहद चाहते है । बाबा प्रमिला के नाम से चिढ़ते हैं । उसके आने से वे क्रोध में आकर घर की तस्वीरे, फलदाना रिकार्ड तोड़ देते है । और उसे प्रमिला से मिलने नहीं देते । आजी आपनी बेटी के लिये रोती रहती है । एक बार प्रमिला की माँ घर आती है । प्रमिला को देखती ही रहती है और फिर उसे खीचकर अपने सीने से लगा लेती है उसी क्षण बाबा प्रवेश करते है । ''निकल जाओ तुम मेरे कमरे से .... तुमने उसे आने ही क्यो दिया ? इस घर में तुमने उसे घुसने ही क्यों दिया ? क्यों नही उसे घसीटकर बाहर कर दिया ?''[१२४]

बाबा अपनी बेटी को दस हजार का चैक देना चाहते हैं । लेकिन प्रमिला की माँ उसे छुती तक नही । वह अपने बेटी का सर छाती से चिपकाकर बालों पर हाथ फेरती है और पाँच रूपये का नोट प्रमिला

के हाथ में पकड़ाकर झटके से बाहर चली जाती है । प्रमिला आँसू भरी आँखो से देखती ही रहती है । पाँच रुपये जैसे छोटी संख्या और दस हजार जैसे बड़ी संख्या के परे माँ की ममता ही मूल्यवान है, जिसे रुपयों से तौला नहीं जा सकता । माँ की ममता के सामने रुपयों का कोई मूल्य नहीं है । इसी शाश्वत सत्य को लेखिका ने अपनी कहानी में प्रस्तुत किया है ।

७. बाँहों का घेरा :

यह कहानी अतृप्त नारी के मानसिक तौर पर भटकने की सशक्त कहानी है । नारी के व्यक्तित्व को उसके स्वाभाविक व्यवहार को नारी सुलभ महिमा को यौनकालीन अतृप्त आकांक्षाएँ विकृत बना लेती है । यही इस कहानी का कथ्य है ।

कम्मो को बचपन में माँ का प्यार नहीं मिला । सौतेली माँ अपने बेटे दुन्नी को बाँहों में भरकर चूमती रहती है । जब कम्मो अठारहा वर्ष की हो गई तब वह प्रेमी शैलेन की ओर आकर्षित होने लगी । उसके पत्र पढ़कर उसकी बाँहों में समा जाने का सपने देखने लगी । लेकिन मित्तल हमेशा अपने काम में मशगुल रहता है । सारे गृहस्थी की बागडोर कम्मो के हाथ में है । उसका बेटा शोन हमेशा सास के पास रहता है । उसे पैसों की कोई कमी नहीं है बस प्यार का ही अभाव है । ऐसे में कम्मो की भतीजी शम्मी और उसका मंगेतर इद्र का आगमन होता है । उनके उनमुक्त प्रेम को देखर कम्मो तनमन से सुलग उठती है ।

कम्मो बचपन से विवाहीत हो जाने तक चाहती है कि कोई उसे बाँहों में प्यार करे । ऐसे में सास को बुखार आने के कारण शौन कम्मो के पास सोया है । रात में चीखता हुआ वह कम्मो से चिपक

जाता है । उसे अपनी बाँहों में कस लेता है । इससे कम्मो गहरी नींद से सो जाती है ।

मन्नू भंडारीने कम्मो की मनोदशा का यथार्थ वर्णन इस कहानी में चित्रित किया है । कम्मो मनोग्रंथियों से ग्रस्त है । वह चाहती है कि कोई उसे बाँहों में भरकर प्यार करें लेकिन कोई उसकी इच्छा पूर्ति नहीं करता ।

८. कमरे, कमराँ और कमरे :

यह एक ऐसी नारी की कहानी है जो अपना जीवन शुरु से अंत तक कमरों में ही सिमखता और बिखरता हुआ अनुभम करती है ।

नीलू की अम्मा बीमार रहने के कारण घर की सारी व्यवस्था संभालती है । घर में पाँच कमरे हैं । इन्ही पाँचो कमरों में घुम-घुमकर नीलू पढ़ाई करती है और एम.ए. में प्रथम श्रेणी प्राप्त करती है । नीलू की नियुक्ति दिल्ली के कॉलेज में हो जाती है । मीरा उसकी घनिष्ठ मित्र है जो स्कालर शिप लेकर स्टेटस चली जाती है । नीलू की दुनिया उस कमरे में सिमट जाती है । मीरा के चले जाने से नूलू अकेलापन महसूस करने लगती है । ऐसे में उसकी मूलाकात जयपुर में श्री निवास से हो गयी । ‘‘श्री निवास एक धनी, शिष्टता और निहायता ही सोफेस्टिकेटेड किस्म का आदमी है ।’’

दोनों विवाहबद्ध हो जाते हैं । श्री निवास जयपुर छोड़कर दिल्ली आ गया तो नीलू कॉलेज, होस्टेल छोड़कर श्री निवास के फ्लैट में आ गयी । श्री निवास हमेशा अपने व्यवसाय में व्यस्त रहते हैं । जिसके कारण नीलू उबने लगती है । अतः पति की इच्छा के अनुसार उसके कारोबार में हाथ बटाने लगती हैं । जिसके कारण उसका निजी व्यक्ति टूटता चला जाता है ।

प्रस्तुत कहानी में लेखिका ने नीलू के निजी व्यक्तित्व का चित्रण किया है । 'कमरे, कमरा और कमरें' में नीलू का अस्तित्व और व्यक्तित्व बनता-बिखरता जाता है । नीलू पहले पाँच कमरों में रहती है । नौकरी की वजह से होस्टेल के एक कमरे में आकर रहती है श्री निवास से परिचय हो जाने पर उसके फ्लैट में रहने लगती है । इस प्रकार पहले कमरे फिर कमरा और फिर कमरें इसी में उसका निजी व्यक्तित्व संवरता बिखरता जाता है । पति के कारोबार में हाथ बटाने के कारण एक क्रियाशील प्राध्यापिका की चाह पति की चाह के नीचे दब जाती है । लेखिका ने नायिका की मनःस्थिति को बड़े स्वाभाविक ढंग से चित्रित किया है ।

९. ऊँचाई :

इस कहानी संग्रह की अंतिम कहानी है 'ऊँचाई' इस कहानी में मन्नू भंडारी ने आधुनिक नारी के अंतद्वन्द्व को चित्रित किया है । आधुनिक नारी अब पत्नी बोध से मुक्त हो गई है जिसमें केवल पतिव्रता धर्म ही उसके जीवन का प्रमुख सार था । अब वह पति और प्रेमी इन दोनो मे कोई भेद नहीं करती । पति के होते हुए किसी पर पुरुष से प्रेम करना उसके लिए पतिव्रत भंग नही है । मन्नू भंडारी ने दाम्पत्य जीवन की नई सच्चाइयों को बड़े साहस एवं निर्भीकता के साथ प्रस्तुत किया है ।

शिवानी और शिशिर अपने आठ साल के दाम्पत्य जीवन मे सुखी है उनका बच्चा प्रिटी होस्टेल में रहता है । अचानक शिवानी की मुलाकात ग्यारह वर्षो के बाद विवाह पूर्व प्रेमी अतुल से होती है वह अब तक अविवाहित है । अतुल शिवानी के विरह में जिंदा लाश बना है । शिवानी प्रिटी को स्कूल छोड़कर अचानक अतुल के घर

पहुँची अतुल को सुख देने के हेतु उसके मना करने के बावजुद भी वह उसे शरीर-सुख देकर कलकत्ता लौटती है । शिशिर को यह बात एक पत्र द्वारा मालूम हुई तब शिशिर कहता है - ''दौहरी चोट तुमने मुझ पर की एक ओर बेवफाई तो दूसरी ओर धोखा छल ।''[१२५]

शिशिर घर छोड़कर चला गया । १५ दिन बाद लौट उसने शिवानी को तलाक दो चाहा इस बात पर दोनों में चर्चा होती है शिशिर चाहता है कि शिवानी अपने अपराध को स्वीकार कर उससे क्षमा माँगे, प्रायश्चित कर ले । लेकिन शिवानी ने शिशिर को विश्वास दिलाया कि - ''मेरे जीवन में तुम्हारा जो स्थान है उसे कोई नही ले सकता, लेना तो दूर उस तक कोई पहुँच भी नही सकता । किसी के कितनी ही निकट चली जाऊँ चाहे शारीरिक संबंध भी स्थापित कर लूँ पर मन की जिस ऊँचाई पर तुम्हें बिठा रखा है वहाँ कोई नही आ सकता । किसी से तुलना करने में भी तुम्हारा अपमान होता है ।''[१२६]

इसी चर्चा के बाद दोनों में सुलह हो जाती है वे दोनों फिर से सुखी जीवन याचन करने लगते है । विवाहित शिवानी पुरानी रीति रिवाजों को तोड़कर अतुल से शरीर संबंध प्रस्थापित करती है । शरीर से दुसरे की होकर भी मन की 'ऊँचाई' पर पति पत्नी के सम्बन्धों की पवित्रता बनाए रखती है ।

(५) त्रिशंकु :

मन्नू भंडारी का यह पाँचवा कहानी संग्रह १९७८ में प्रकाशित हुआ । इससे १० कहानियाँ संग्रहित है ।

१. आते जाते यायावर :

प्रस्तुत कहानी में एक पुरुष द्वारा छली गयी नारी का अंतद्वन्द्व प्रस्तुत किया है । नायिका मिताली अविवाहिता है । वह प्राध्यापिका

है और होस्टेल मे रहती है । मिताली के साथ उसके सहपाठी ने प्रेम के नाम पर शरीर संबंध स्थापित किया, लेकिन विवाह दूसरी लड़की से किया। तब से मिताली ने किसी से मेलजोल नही बढ़ाया । उसका परिचय नरेन के साथ हुआ । वह अपनी अमेरिकन पत्नी से विच्छेद कर भारत आया है उनके अनेक स्त्रियों से संबंध रह चुके है । नरेन के जीवन से परिचित होने पर भी मिताली उसके प्रति आकर्षित होती है लेकिन फिर एक बार छली जाती है । पुरुष चायावर प्रकृति का है । वह अपने अभिनय द्वारा नारी को छलता है । और विवाह किसी और से करता है । अपने अतीत से मुक्त हो जाता है । भारतीय नारी पुराने संस्कारों को तोड़ नहीं सकती ।

२. दरार भरने की दरार :

प्रस्तुत कहानी 'त्रिशंकु' कहानी संग्रह की है । लेखिका ने मनुष्य के मनोभावों का सुन्दर चित्रण इस कहानी में किया है । दाम्पत्य जीवन में होनेवाली घटनाओं की चर्चा की है । नंदिता की सहेली श्रुति चित्रकार है । श्रुति अपने पति से अलग होना चाहती है । नंदिता उसे मदद करती है । वह श्रुति और विभु मे समझौता कराना चाहती है । पर श्रुति विभु से अलग होना चाहती है । नंदिता श्रुति के लिए मकान ढूँढना आरम्भ करती है । वह उसकी दाम्पत्य समस्या सुलझाने में मग्न रहती है । लेकिन उधर श्रुति और विभु के संबंध फिर से अपने आप जुड़ जाते है । वे दोनों नंदिता के लिए साडी और मिठाई लेकर आते है । दोनों में मेल होने की बात से नंदिता अपने आप को अपमानित महसूस करती है । श्रुति विभु के दाम्पत्य जीवन में पड़ी दरार भरते हुये नंदिता स्वयं को महत्त्वपूर्ण समझती हैं पर जब उसका भ्रम निरास होता है तब वह अपने आप को अपमानित महसूस

करने लगती है । लेखिका ने मनुष्य के मनोभावों का सुक्ष्मता से चित्रण किया है ।

३. स्त्री-सुबोधिनी :

यह कहानी आत्मकथात्मक शैली मे लिखी है। प्रेम के नाम पर विवाहित पुरुष द्धारा छली गयी स्त्री का मन्नू भंडारी ने इस कहानी में चित्रण किया है ।

नायिका आयकर विभाग मे काम करती है और महिला होस्टेल मे रहती है । घर का उत्तरदायित्व उसी पर है । वह अपने बॉस 'शिंदे' से प्रभावित है क्योंकि वे खुबसुरत रसिक तथा कवि है । वे दोनो एकदूसरे से बहुत प्रेम करते है । लेकिन उसे बाद में पता चलता है कि शिंदे सिर्फ विवाहित ही नही अपितु एक बच्चे का बाप भी है । वह शिंदे से अपने संबंध तोड़ना चाहती है किन्तु शिंदे उससे हमेशा प्रेम जताता रहता है । वह प्रेम प्रदर्शन में सफल रहता है । हर बार उसके दिमाग मे यह बिठाने की कोशिश करता है कि शादी के बाद बीबी उबाऊ और त्रासदायक बन जाती है । उसके प्रति होनेवाला प्रेम नीरस और बेजान सा ही जाता है । वह हमेशा बीवी से तलाक लेनी की बात करता है पर अपनी बीवी को तलाक नही देता । तबादला हो जाने के बाद भी 'शिंदे' उसे प्रेम पत्र लिखता है । वह एव बार फिर उसके प्रेम मे सबकुछ भूल बैठती है । लेकिन शिंदे के नये गृह मे प्रवेश के दिन वह उसकी मोटी लेकिन प्रसन्न पत्नी बच्चा और अत्याधुनिक घर देखती है । वह सत्य स्थिति को समझ जाती है और अपनी जिन्दगी नये सिरे से संवारती है । इस कहानी की नायिका समाज की अन्य मासूम लड़कियों को पुरुष स्वभाव से अवगत कराती है ।

४. शायद :

इस कहानी में मन्नू भंडारी ने आर्थिक स्थिति किस प्रकार एक परिवार को तहस-नहस करती है उसका चित्रण किया है ।

राखाल जहाज पर मैकेनिक है । वह तीन साल बाद दो महीनो की छुट्टियों पर घर आया है । उसकी पत्नी माला घर की देखभाल करती है तो राखाल जहाज पर अपना कार्य करता है । जब राखाल घर आता है तो अपने ही घर में परायापन महसूस करता है । माला अपने भाई-भाभी कपूर परिवार, शंकर इन लोगों की चर्चा करती है । लेकिन राखाल इन व्यक्तियों का महत्त्व अपने घर में बर्दास्त नही कर पाता । घर के बच्चे अड़ोस-पड़ोस के व्यक्तियों से जुड़ जाते है । राखाल और माला अपनी अपनी जिन्दगी जीने के लिए विवश है उनकी अपनी-अपनी समस्याएँ है ।

'शायद' परिवार से अलग होकर जीविका के लिये समुद्र पर नौकरी करने गए हुए युवक की चेतना पर चढ़ते हुए ऐसे ही दबावों और उससे उपजी हुई मानसिकता और भौतिक संघर्ष के विभिन्न बिन्दुओं को किस प्रकार दाम्पत्य सम्बन्धों की औपचारिक और ठहराव भरा सम्बन्ध बनने पर विवश करता है ।

कथा के प्रति लेखिका का द्रष्टिकोण पूर्णतः आधुनिक है और वे वह समूची कथा को आज के बदलते हुए सन्दर्भो में प्रस्तुत करने मे पूरी तरह सक्षम है ।

५. त्रिशंकु :

मन्नू भंडारी ने इस कहानी में दो पीढ़ियों के अंतर को चित्रित किया है । तनु के मम्मी-पप्पा का प्रेम विवाह हुआ था । तनु के मम्मी को अपने पिता से विद्रोह करना पड़ा था । मम्मी स्वयं को

आधुनिक विचारोवाली मानती है और अपनी बेटी को भी बनाना चाहती है । लड़के-लड़कियों में मित्रता होनी चाहिए ऐसा कहते हुए अपने आपको आधुनिक बताती है । लेकिन यह मम्मी तनू की शेखर से बढती दोस्ती देखकर तिल-मिलाती है । शेखर का उसके घर आना उसे अच्छा नही लगता । तनू को शेखर के साथ पिक्चर देखने के लिए अनुमति नही देती इस बात को लेकर माँ-बेटी में तनाव होता है -

''तनु बेटे, ये लोग रोज़-रोज़ यहाँ आकर जम जाते है । आखिर तुमको पढ़ना-लिखना भी तो है । मै तो देख रही हूँ कि इस दोस्ती के चक्कर में तेरी पढ़ाई-लिखाई सब चौपट हुई जा रही है । इस तरह तो यह सब चलेगा नहीं ।''[१२७]

लेखिका ने इस कहानी मे दुहरी मानसिकता को बेखूबी से प्रस्तुत किया है । इसमें पीढ़ियों का अन्तराल ही नही अपितु आधुनिक होने की मानसिकता व आनेवाली नारी का द्वन्द्व भी है । इस प्रकार पुरानी एवं नवीन मान्यताओं का सुन्दर तथा प्रभावशाली चित्रण करने में लेखिका सफल रही है ।

६. रेत की दीवार :

प्रस्तुत कहानी में लेखिका ने शिक्षित युवक के मानसिक कुंठा तथा निराशा को प्रस्तुत किया है । इस कहानी का हर पात्र आर्थिक संकट के कारण अपने आप से लड़ता अपने आपमें टूटता है । नायक रवि इन्जीनियरिंग का छात्र है, उसके पिता घर की अन्य आवश्यकताओन को नजरअंदाज करके उसे पढ़ाते है । पर रवि शिक्षा को अपनी डिग्री का महत्त्व अच्छी तरह जानता है -

''यहा कोई भविष्य नही है इन लोगों का आजकल सैकडों इंजीनियर्स मारे-मारे फिरते है किस तरह फोरेन जाने की तिकड़म

भिड़ाओ, कनाडा में बहुत लोगों की आवश्यकता है पर इसके लिए पुल और पुशी चाहिए ।''[१२८]

रवि वे पिता रेल्वे में क्लर्क है । घर के अन्य सदस्यों की अपनी-अपनी समस्यायें है लेकिन अब तक उनकी समस्याएँ सुलझायी नही गयी क्योंकि रवि की पढ़ाई जारी है । माँ की आँखों का ऑपरेशन जरूरी है । छोटा भाई का इलाज कराना है । चंदा को कॉलेज में भर्ती कराना है । परिवार के सारे सदस्य सोचते है कि रवि की पढ़ाई होते ही नौकरी मिलेगी और घर की स्थिति सुधरेगी । सभी इसी आशा पर जी रहे है । रवि अपने आपको टूटता हुआ महसूस करता है । वह चाहकर भी कुछ नही कर पाता । अंत में निराश होता है । रवि बेरोजगारी की समस्या से त्रस्त है । रवि की इसी घुटन का निराशाजनक स्थिति का लेखिकाने चित्रण किया है । रवि बड़ा आदमी बनेगा यह ख्वाब (स्वप्न) देखना व्यर्थ है क्योंकि वे ख्वाब उसे 'रेत की दीवार' जैसे है जो कभी भी ठह सकते है ।

७. **तीसरा हिस्सा :**

प्रस्तुत कहानी में मन्नू भंडारी ने एक संपादक के खंडित व्यक्तित्व को प्रस्तुत किया है ।

'शेरा बाबू' एक पत्रिका के संपादक है । वास्तव में उनका नाम शेराबाबू नही है । शेर जैसी दहाडती हुई पत्रिका ने उन्हे यह नाम प्रदान किया है । लेकिन यह पत्रिका मित्रों के द्वेष एवं कर्ज के कारण बन्द हो जाती है । शेराबाबू की बीवी उसकी उपेक्षा करने लगी । बेटा सुधीर भी मटरगस्ती में मग्न रहता है । शेराबाबू कभी-कभी लायब्रेरी जाते है । वहाँ की पत्रिकाओं में जनता पार्टी के मंत्रियों की तस्वीरे, उनकी जीवनियाँ, उनकी प्रशंसा देखकर वह संपादकों तथा लेखकों

को गालियाँ देते है जिन्होंने वह लिखा है ।

शेरा बाबू हमेशा 'भ्रष्ट नौकरशाही जड़ से उखाड़ दूँगा' भ्रष्ट अफसरों की पोल खोल दूँगा इसी तरह की बातें बनाते रहते है पर वास्तव में कुछ कर नही पाते । आज समाज का कोई भी क्षेत्र भ्रष्टाचार से अछूता नही है । यही आज की दुनिया है पर शेरा बाबू इससे जुड़ नही पाते । समयानुसार अपने आप को बदल नही पाते ।

''उन्होने बीवी से समझौता कर लिया नौकरी से समझौता कर लिया पर पत्रिका ? नही, वहाँ वे कोई समझौता नहीं करेंगे किसी भी कीमत पर नही ।''[१२६]

लेखिकाने इसी मनोदशा का यथार्थ चित्रण किया है ।

८. अ-लगाव :

इस कहानी द्वारा मन्नू भंडारी ने आज की राजनीति पर व्यंग्य किया है ।

अलगाव को पूर्णतः राजनैतिक कहानी कहा जायेगा । क्योंकि इसमें समकालीन राजनीतिक परिस्थितियों का चित्रण किया गया है । कहानी नायक बिसेसर की लाश को लेकर शुरु होती है उसके हत्यारे को दूढ़ने की प्रक्रिया मे अनेक राजनीतिक दाँवपेच दिखाई देता है । मुख्यमंत्री दा साहब बिसेसर के घर गये । वहाँ जाकर उसके बूढ़े बाप को तसल्ली दी । जोरदार भाषण दिया । सक्सेना ने जोगेसर को पूछा -

''बिसू को जानते थे तुम ?

जी, गाँव मे सभी तो एक-दूसरे को जानते है । छोटी जगह है, न चाहो तो भी जानना ही पड़ता है ।

किस तरह का लड़का था बिसू ?

अरे एकदम सिरफिरा साहब ।''[१३०]

सक्सेना ने बयान लिया । गाँववालों ने सक्सेना की प्रशंसा की । दो सप्ताह के बाद सक्सेना ने रिपोर्ट दी कि बिसेसर ने आत्महत्या की और उसकी हत्यारा जोरावर बच जाता है । राजनीति के जोर पर वह मामला वही के वही दबाया गया ।

इस प्रकार राजनैतिक परिवेश में रंगी लेखिका की अन्य कहानियों से अलग यह कहानी है । लेखिका ने इसका बृहद रूपांतर कर 'महाभोज' उपन्यास की रचना की ।

६. एखाने आकाश नाई :

प्रस्तुत कहानी मे लेखिका ने शहरी और ग्रामणी नारी की समस्याएँ प्रस्तुत की है । कहानी की शुरुआत शहरी परिवेश से होती है और अन्त ग्रामीण परिवेश मे । पति हेमेन्द्र से अलग होकर शिप्रा स्कूल चलाती है । सुषमा नौकरी करती है इसलिए माता-पिता उसका विवाह करना नही चाहते फिर भी उसने महिम से कोर्ट मैरेज किया । घर की देखभाल, काम-काज, सास-ससुर की सेवा करने के हेतु प्रीति नौकरी छोड़ देती है जिससे पति नाराज हो जाता है । ये शहरी स्त्री पुरुषों की समस्याएँ रही । कहानी की नायिका 'लेखा' घर की देखभाल फिर पढ़ाई इन सबसे तंग आ गई है इसलिए आराम करने गाँव जाती है । शहर में जिस प्रकार शिक्षितलोगों की समस्याएँ होती है उसी तरह ग्रामीण लोगों की भी अपनी समस्याएँ है ।

लेखा का ससुराल एक संयुक्त परिवार है । परिवार के हरेक सदस्य की अपनी-अपनी समस्या है । लेखा शहरे वापस जाना चाहती है । व्यक्ति न गाँव मे सुखी है और न ही शहर में । लेखा शहर से ऊबकर गाँव आती है पर गाँव की घुटन से ऊब जाती है और फिर

शहर जाने की सोचती है । लेखा ने महसूस किया -

"इन सबके बीच वह बहुत परायी है । उस घर की एक सदस्या होकर भी वह घर से अलग है । उसे लगा इस घर और घर के व्यक्तियों के प्रति उसका बहुत-सा कर्तव्य है पर, वह पूरा नहीं कर रही ।"[१३१]

१०. असामयिक मृत्यु :

मन्नू भंडारी के 'त्रिशंकु' कहानी संग्रह की यह अंतिम कहानी है । पहले पत्रिका में छपी थी बाद में त्रिशंकु में संग्रहित किया गया । कहानी में टीपु एक कलाकार है और उसके पिता की मृत्यु हो जाने से परिवार की जिम्मेदारी टीपु पर आ जाती है । पिता की असामयिक साथ दीपू के कला रूप की असामयिक मृत्यु को प्रस्तुत किया गया है । उसके पिता महेशबाबू की मृत्यु चवालीस साल की आयु में ऑफिस में कार करते-करते हार्ट फेल हो जाने से हो जाती है । दीपू पढ़ रहा था उसे नाटक में ज्यादा रुचि थी । नाटक के जाने-माने कलाकार उत्पलदत ने उसे ट्राफी देते हुए प्रोत्साहित किया था ।

"जिंदगी का कोई भरोसा नहीं भैया ! अच्छे-भले घर से गए थे । कौन जानता था लौटकर नही आएँगे

राम तेरी माया ।"[१३२]

दीपू शाम को नाटक का रिहर्सल करता है कभी राजकपूर के संवाद कभी दिलीपकुमार के संवाद आंखे बंद कर ली तो पहचान नहीं सकते कि दीपू बोल रहा है या दिलीपकुमार । हूबहू वही आवाज़ वही लहजा । शारदा ने पीठ पर धौल जमाया - "बस अब तेरे बाप की ही नकल उतारा कर, बेशरम कहीं के ।"[१३३]

दीपू कहता है - "पीठ ठोकी है न बहुत अच्छी नकल करने के

लिए ? अरे अम्मा जीनियस है तुम्हारा बेटा जीनियस । अम्मा, अगर कोई बढ़िया मेकअप कर दे तो बाबू का रोल ऐसे अदा करुँ कि तुम पहचान ही न सकतो कि दीपू कौन और बाबू कौन ।''[१३४]

अचानक पिता की मृत्यु ने दीपू की दुनिया को बदल दिया उसके आँगन मायूसी छा गई । दीपू नौकरी करने लगता है उसके मामा उसे नौकरी दिलाने में मदद करते है । अपने भाई-बहिन और माँ की जिम्मेदारियाँ पूरी करते-करते अपनी भीतर की इच्छाओं को मिट्टी में डालना पड़ा ।

समाज में मध्यवर्ग के अर्थार्जन करनेवाले प्रमुख पात्र की मृत्यु होती है तो पूरा घर रास्ते पर आ जाता है । दीपू की माँ की मनःस्थिति को भी व्यक्त किया है वह असहाय हो गई है और परिस्थितिवश मूक बनकर जी रही है । यह स्थिति माँ की नहीं बल्कि पूरे घर की है । इसी बात का मन्नू भंडारीने इस कहानी में चित्रण किया है । यह कहानी बहुत सुंदर और सामाजिक समस्या की कहानी है ।

❖ निष्कर्ष :

मन्नू भंडारी की कहानियाँ जीवन के अधिक निकट है । नारी मन की क्षमता और दुर्बलता का चित्रण इनकी कहानियों का मुख्य प्रतिपाद्य रहा है । इनकी नारी देवी और दानवी के दो छोरों के बीच टकराती 'पहेली' नही हाड़-माँस का मानवी भी है । स्वातंत्र्योत्तर नारी जीवन में आये परिवर्तनों पर मन्नू भंडारी की कहानियों में पर्याप्त व्यंग्य किये गये है । उनकी कहानियाँ पति पत्नी के सम्बन्धों पारिवारिक जीवन और प्रेम सम्बन्ध आदि द्रष्टिकोणों को लेकर चली है। सहजता और संप्रेषणीयता ने इनकी कहानियों को लोकप्रिय बनाया है । उन्होंने बताया है कि प्राचीन जीवन मूल्य आधुनिक परिवेश में

टूट रहा है, जीवन मूल्य ही नही बल्कि व्यक्ति टूट रहा है । मन्नू भंडारी की कहानियों की विशेषता यह है कि उन्होंने बड़ी सहजता और सजीवता से मानव मन की कुष्ठाओं का चित्रण किया है ।

❖ **नाटक :**

पाणिनी नाटय की उत्पत्ति 'नट्' धातु से मानते है और रामचन्द्र गुणचन्द्र ने 'नाटयदर्पण' में इसका उद्भव 'नाट्' धातु से माना है । 'नट्' धातु का अर्थ गात्रविक्षेपण एवं अभिनव दोनों था । दशरूपककारने नृत, नृत्य और नाटय का अन्तर स्पष्ट किया है । नृत्त ताल-लय के आश्रित होता है, नृत्य भावाश्रित होता है, किन्तु नाटय रसाश्रित होता है । संस्कृत साहित्य में नाटक को काव्य ही माना गया है । उसका उद्देश्य आनन्द प्राप्ति बताया गया है । नाटक साहित्य की वह विद्या है, जिसकी सफलता का परीक्षण रंगमंच पर होता है ।

नाट्यकला की परिभाषा देते हुए रवीन्द्रनाथ ने कहा है कि विभिन्न वेशभूषा और अंग विक्षेप के अनुकरण द्वारा प्रकृति प्रतिबिम्बित करनेवाली कला नाटक है । वस्तुतः नाटक देखने की चीज है । उसके दर्शक और श्रोता होते है, जो पात्रों द्वारा चरित्रों के अभिनव से प्रभावित होते है इसलिए आचार्यो ने उसे द्रश्यकाव्य की संज्ञा दी है । नाटक शब्द, पात्र, वेश-भूषा, आकृति, भावभंगी और क्रियाओं आदि के अनुकरण द्वारा तथा भावों के प्रदर्शन द्वारा दर्शकों को यथार्थ जीवन के निकट लाता है । अभिनय नाटक का प्रधान अंग है । सफल नाटक वह है जिसे देखते हुए दर्शक यह अनुभव नही कर पाये कि वह नाटक देख रहा है । नाटककार का सबसे प्रधान गुण यह है कि वह मानव मनोविज्ञान का सूक्ष्म पारखी हो ।

भारतीय-समीक्षा-शास्त्र के अनुसार नाटक के तीन प्रमुख तत्व

है - वस्तु, नायक और रस । पर पाश्चात्य समीक्षा शास्त्रियों ने छह तत्व स्वीकार किये है । कथावस्तु, पात्र, कथोपकथन, देशकाल, उद्‌देश्य । शैली, हिंदी के आधुनिक नाटकों में इन दोनों प्रकार के तत्वों का समारोह हो गया है ।

संदर्भ - ग्रंथ सूची

क्रम	पुस्तक	लेखक	पृष्ठ संख्या
१.	हिंदी की महिला उपन्यासकारो की मानवी संवेदना	डॉ. उषा यादव	१७
२.	हिंदी की महिला उपन्यासकारो की मानवी संवेदना	डॉ. उषा यादव	३२
३.	एक इंच मुस्कान	मन्नू भंडारी - राजेन्द्र यादव	
४.	कथाकार राजेन्द्र यादव	चन्द्रभानु सोनगणे	१४१
५.	स्वातंत्र्योत्तर कथा लेखिकाएँ	उर्मिला गुप्ता	३५५
६.	स्वातंत्र्योत्तर कथा लेखिकाएँ	उर्मिला गुप्ता	३५६
७.	स्वातंत्र्योत्तर कथा लेखिकाएँ	उर्मिला गुप्ता	३५६
८.	एक इंच मुस्कान	मन्नू भंडारी - राजेन्द्र यादव	
९.	कथाकार राजेन्द्र यादव	चन्द्रभानु सोनगणे	२६१
१०.	कथाकार राजेन्द्र यादव	चन्द्रभानु सोनगणे	६९
११.	एक इंच मुस्कान	मन्नू भंडारी - राजेन्द्र यादव	१९४
१२.	एक इंच मुस्कान	मन्नू भंडारी - राजेन्द्र यादव	७५
१३.	एक इंच मुस्कान	मन्नू भंडारी - राजेन्द्र यादव	२६०
१४.	कथाकार राजेन्द्र यादव	चन्द्रभानु सोनगणे	१४४
१५.	स्वातंत्र्योत्तर कथा लेखिकाएँ	उर्मिला गुप्ता	३५७
१६.	एक इंच मुस्कान	मन्नू भंडारी - राजेन्द्र यादव	२७०
१७.	कथाकार राजेन्द्र यादव	चन्द्रभानु सोनगणे	१७३
१८.	एक इंच मुस्कान	मन्नू भंडारी - राजेन्द्र यादव	२७१
१९.	आपका बंटी	मन्नू भंडारी	
२०.	म.भं. का कथा साहित्य	ममता शुक्ल	५५
२१.	हिंदी की महिला उपन्यासकारो की मानवीय संवेदना	डॉ. उषा यादव	६८
२२.	म.भं. का कथा साहित्य	ममता शुक्ल	५६

क्रम	पुस्तक	लेखक	पृष्ठ संख्या
२३.	उपन्यास स्थिति और गति	चन्द्रकान्त बांदिवडेकर	२४३
२४.	आपका बंटी	मन्नू भंडारी	४०
२५.	आपका बंटी	मन्नू भंडारी	४२
२६.	आपका बंटी	मन्नू भंडारी	४२
२७.	आपका बंटी	मन्नू भंडारी	४४
२८.	आपका बंटी	मन्नू भंडारी	१२८
२९.	उपन्यासकार मन्नू भंडारी	मन्नू भंडारी	६९
३०.	आपका बंटी	मन्नू भंडारी	१६६
३१.	उपन्यासकार मन्नू भंडारी	मन्नू भंडारी	६८
३२.	म. भं. का रचना संसार	मन्नू भंडारी	११
३३.	म. भं. का रचना संसार	मन्नू भंडारी	६९
३४.	आपका बंटी	मन्नू भंडारी	६७
३५.	आपका बंटी	मन्नू भंडारी	
३६.	महाभोज	मन्नू भंडारी	
३७.	महाभोज	मन्नू भंडारी	
३८.	म. भंडारी का उपन्यास साहित्य	नन्दिनी मिश्र	४३
३९.	म. भंडारी का उपन्यास साहित्य	नन्दिनी मिश्र	५८-५९
४०.	म. भंडारी के कथा साहित्यका मनोविश्लेषणात्मक अध्ययन	डॉं. ममता शुक्ला	५९
४१.	महाभोज	मन्नू भंडारी	१६१
४२.	महाभोज	मन्नू भंडारी	१६३
४३.	आधुनिक हिन्दी उपन्यास व्यक्तित्व विघटन के निकष पर	डॉं. नीरज जैन	१२४
४४.	महाभोज	मन्नू भंडारी	४६
४५.	महाभोज	मन्नू भंडारी	९०
४६.	महाभोज	मन्नू भंडारी	२४

क्रम	पुस्तक	लेखक	पृष्ठ संख्या
४७.	महाभोज	मन्नू भंडारी	२८
४८.	महाभोज	मन्नू भंडारी	२९
४९.	आधुनिक हिन्दी उपन्यास व्यक्तित्व विघटन के निकष पर	डॉ. नीरज जैन	३२
५०.	आधुनिक हिन्दी उपन्यास व्यक्तित्व विघटन के निकष पर	डॉ. नीरज जैन	७१
५१.	महाभोज	मन्नू भंडारी	१९
५२.	महाभोज	मन्नू भंडारी	४३
५३.	महाभोज	मन्नू भंडारी	१४९
५४.	महाभोज	मन्नू भंडारी	१६२
५५.	म.भं. की उपन्यास साहित्य	नन्दिनी मिश्र	१०७
५६.	म.भं. की उपन्यास साहित्य	नन्दिनी मिश्र	१०८
५७.	म.भं. की उपन्यास साहित्य	नन्दिनी मिश्र	१०८
५८.	म. भं. का कथा साहित्य	मन्नू भंडारी	२३८
५९.	म.भं. की उपन्यास साहित्य	नन्दिनी मिश्र	१३३
६०.	म.भं. की उपन्यास साहित्य	नन्दिनी मिश्र	१३४
६१.	म. भं. का कथा साहित्य	मन्नू भंडारी	
६२.	म. भं. का कथा साहित्य	मन्नू भंडारी	
६३.	स्वामी	मन्नू भंडारी	
६४.	नई कहानी दिशा दशा संभावना	डॉ. इन्द्रनाथ मदान	२०७
६५.	ईसा के घर इन्सान (मैं हार गई कहानीसंग्रह)	मन्नू भंडारी	१२
६६.	ईसा के घर इन्सान (मैं हार गई कहानीसंग्रह)	मन्नू भंडारी	१२
६७.	ईसा के घर इन्सान (मैं हार गई कहानीसंग्रह)	मन्नू भंडारी	१४
६८.	ईसा के घर इन्सान (मैं हार गई कहानीसंग्रह)	मन्नू भंडारी	२१

क्रम	पुस्तक	लेखक	पृष्ठ संख्या
६९.	गीता का चुम्बन (मैं हार गई कहानीसंग्रह)	मन्नू भंडारी	३२
७०.	गीता का चुम्बन (मैं हार गई कहानीसंग्रह)	मन्नू भंडारी	३२
७१.	गीता का चुम्बन (मैं हार गई कहानीसंग्रह)	मन्नू भंडारी	४०
७२.	गीता का चुम्बन (मैं हार गई कहानीसंग्रह)	मन्नू भंडारी	४०
७३.	गीता का चुम्बन (मैं हार गई कहानीसंग्रह)	मन्नू भंडारी	४१
७४.	एक कमजोर लडकी की कहानी	मन्नू भंडारी	४५
७५.	एक कमजोर लडकी की कहानी	मन्नू भंडारी	४५
७६.	एक कमजोर लडकी की कहानी	मन्नू भंडारी	६२
७७.	एक कमजोर लडकी की कहानी	मन्नू भंडारी	६३
७८.	सयानी बुआ	मन्नू भंडारी	६५
७९.	सयानी बुआ	मन्नू भंडारी	६७
८०.	अभिनेता (मैं हार गई)	मन्नू भंडारी	७७
८१.	अभिनेता (मैं हार गई)	मन्नू भंडारी	७८
८२.	अभिनेता (मैं हार गई)	मन्नू भंडारी	७९
८३.	अभिनेता (मैं हार गई)	मन्नू भंडारी	८२
८४.	श्मशान (मैं हार गई)	मन्नू भंडारी	
८५.	श्मशान (मैं हार गई)	मन्नू भंडारी	८५
८६.	श्मशान (मैं हार गई)	मन्नू भंडारी	८९
८७.	दीवार, बच्चे और बरसात (मैं हार गई)	मन्नू भंडारी	९८
८८.	दीवार, बच्चे और बरसात (मैं हार गई)	मन्नू भंडारी	९२

क्रम	पुस्तक	लेखक	पृष्ठ संख्या
८९.	दीवार, बच्चे और बरसात (मैं हार गई)	मन्नू भंडारी	९४
९०.	पंडित गजाधर शास्त्री (मैं हार गई)	मन्नू भंडारी	१०२
९१.	पंडित गजाधर शास्त्री (मैं हार गई)	मन्नू भंडारी	१०२
९२.	पंडित गजाधर शास्त्री (मैं हार गई)	मन्नू भंडारी	१०४
९३.	काल और कसक (मैं हारी गई)	मन्नू भंडारी	११८
९४.	दो कलाकार (मैं हार गई)	मन्नू भंडारी	१३७
९५.	मैं हार गई (मैं हार गई)	मन्नू भंडारी	१४१
९६.	मैं हार गई (मैं हार गई)	मन्नू भंडारी	१४६
९७.	तीन निगाहो की एक तस्वीर (तीन निगाहो की एक तस्वीर)	मन्नू भंडारी	१९
९८.	तीन निगाहो की एक तस्वीर (तीन निगाहो की एक तस्वीर)	मन्नू भंडारी	२३
९९.	अकेली (तीन निगाहो की एक तस्वीर)	मन्नू भंडारी	३२
१००.	अकेली (तीन निगाहो की एक तस्वीर)	मन्नू भंडारी	३२
१०१.	अकेली (तीन निगाहो की एक तस्वीर)	मन्नू भंडारी	२७
१०२.	अनचाही गहराइर्यां (तीन निगाहो की एक तस्वीर)	मन्नू भंडारी	४७
१०३.	खोटे सिक्के (तीन निगाहो की एक तस्वीर)	मन्नू भंडारी	५७

क्रम	पुस्तक	लेखक	पृष्ठ संख्या
१०४.	खोटे सिक्के (तीन निगाहो की एक तस्वीर)	मन्नू भंडारी	५७
१०५.	खोटे सिक्के (तीन निगाहो की एक तस्वीर)	मन्नू भंडारी	५७
१०६.	खोटे सिक्के (तीन निगाहो की एक तस्वीर)	मन्नू भंडारी	५८
१०७.	घुटन (तीन निगाहो की एक तस्वीर)	मन्नू भंडारी	८०
१०८.	हार (तीन निगाहो की एक तस्वीर)	मन्नू भंडारी	७९
१०९.	घुटन (तीन निगाहो की एक तस्वीर)	मन्नू भंडारी	८१
११०.	मजबूरी (तीन निगाहो की एक तस्वीर)	मन्नू भंडारी	९६
१११.	चश्मे (तीन निगाहो की एक तस्वीर)	मन्नू भंडारी	१११
११२.	क्षय (यही सच है)	मन्नू भंडारी	२४
११३.	क्षय (यही सच है)	मन्नू भंडारी	२५
११४.	तीसरा आदमी (यही सच है)	मन्नू भंडारी	२८
११५.	सजा (यही सच है)	मन्नू भंडारी	७२
११६.	सजा (यही सच है)	मन्नू भंडारी	७२
११७.	नकली हीरे (यही सच है)	मन्नू भंडारी	८६
११८.	नशा (यही सच है)	मन्नू भंडारी	९३
११९.	नशा (यही सच है)	मन्नू भंडारी	९४
१२०.	इन्कम टैक्स और नींद (यही सच है)	मन्नू भंडारी	११०

क्रम	पुस्तक	लेखक	पृष्ठ संख्या
१२१.	यही सच है (यही सच है)	मन्नू भंडारी	१३४
१२२.	यही सच है (यही सच है)	मन्नू भंडारी	१३५
१२३.	बंद दराजो का साथ (एक प्लेट सैलाब)	मन्नू भंडारी	२४
१२४.	संख्या के पार (एक प्लेट सैलाब)	मन्नू भंडारी	८७
१२५.	ऊँचाई (एक प्लेट सैलाब)	मन्नू भंडारी	१२३
१२६.	ऊँचाई (एक प्लेट सैलाब)	मन्नू भंडारी	१३४
१२७.	त्रिशंकु (त्रिशंकु)	मन्नू भंडारी	७१
१२८.	रेत की दीवार (त्रिशंकु)	मन्नू भंडारी	९१
१२९.	तीसरा हिस्सा (त्रिशंकु)	मन्नू भंडारी	१०२
१३०.	अलगाव (त्रिशंकु)	मन्नू भंडारी	११२
१३१.	ईखाने आकाश नाई (त्रिशंकु)	मन्नू भंडारी	१४१
१३२.	असामयिक मृत्यु (त्रिशंकु)	मन्नू भंडारी	१४७
१३३.	असामयिक मृत्यु (त्रिशंकु)	मन्नू भंडारी	१५३
१३४.	असामयिक मृत्यु (त्रिशंकु)	मन्नू भंडारी	१५३

:: चतुर्थ अध्याय ::

꧁ मन्नू भंडारी के कथा साहित्य के प्रमुख पात्रों की विशेषताएँ

१. मन्नू भंडारी के उपन्यास के प्रमुख पात्र

२. मन्नू भंडारी के कहानी के प्रमुख पात्र

चतुर्थ अध्याय

उपन्यास और कहानीकाल के तत्त्वोमें पात्रो का अपना स्वतंत्र महत्त्व होता है । पात्रों के बिना अधूरा होता है इसलिये पात्रो को महत्त्वपूर्ण स्थान दिया गया है । उपन्यास और कहानी जीवन के यथार्थ से सम्बन्धित होने के कारण उसके पात्र भी सामाजिक जीवन से लिये जाते हैं ।

मन्नू भंडारी के कथा साहित्य में प्रमुखत वर्गगत और व्यक्तिप्रधान पात्र दिखाई देते हैं । इनमें व्यक्तित्व प्रधान पात्रों की संख्या अधिक है और वर्गगत-पात्र कम है । हिन्दी कथा साहित्य का विचार करते हुए प्रेमचंद के कथा साहित्य में वर्गगत पात्र अधिक हैं, व्यक्तित्व प्रधान पात्र कम । प्रेमचंदजी को निम्नवर्ग और ग्रामीण पात्रों के चित्रण में प्रशंसनीय सफलता मिली है । प्रेमचंद जी के पात्र स्वाभाविक और यथार्थ जान पड़ते हैं । समाज के सभी वर्गो के पात्र उसके उपन्यास, कहानी में उपलब्ध है । पूँजीपति, मजदूर, ईसाई, मुसलमान, बूढ़ा, युवक, विद्यार्थी, अध्यापक, कवि, लेखक, कंजूस, किसान, डॉक्टर, देश सुधारक, पंडित, मौलवी सभी अपनी विशेषताओं के साथ मौजूद है । जैनेन्द्रने अधिकतर कुंठाग्रस्त पात्रों का चित्रण किया है । यशपाल ने प्रायः प्रतिनिधि पात्रों का ही निर्माण किया है जो किसी वर्ग की विशेषताओं से युक्त हैं । मोहन राकेशजीने अधिकतर व्यक्तित्व प्रधान पात्रों का ही निर्माण किया है । ऐसी स्थिति में मन्नू भंडारी ने दोनों प्रकार के पात्रों का चित्रण अपने उपन्यास और कहानियों में किया हैं ।

(१) वर्गगत पात्र (२) व्यक्तित्वप्रधान पात्र

(१) वर्गगत पात्र :-

प्रा. किशोर गिरडकर जी के मतानुसार जो पात्र अपनी किन्हीं

विशेषताओं के कारण किसी वर्ग विशेष की प्रतिनिधित्व करने लगते है, उन्हें वर्गगत पात्र कहा जाता है ।

डॉ. लक्ष्मीरायजी ने वर्गगत पात्रों का विवेचन करते हुए लिखा है कि -

''ऐसे पात्र जो अपनी चारित्रिक निजताको अपने वर्ग को सौंपकर विशिष्ट वर्ग अथवा जाति की भावनाओं का प्रतिनिधित्व करते हैं

वर्गपात्रों के निर्माण के मूल में जाति, वर्ग कृति के अनुसार मनुष्य के चारित्र्य को अंकित करने की धारणा निहित रहती है । इसलिए वर्ग-पात्र वही करते है जो वे कर सकते हैं ।''

ये पात्र समाज के प्रतिनिधि का स्वरुप धारण कर लेते हैं ।

(२) व्यक्तित्वप्रधान पात्र :-

प्रा. किशोर गिरडकर जी ने व्यक्तित्वप्रधान पात्रों का विवेचन करते हुए लिखा है -

''व्यक्तित्व प्रधान पात्र वे माने जाते है जिनका निजी व्यक्तित्व रचना में प्रस्फुटित होता हुआ पाठकों के समक्ष आता है ।''

डॉ. लक्ष्मीरायजी के अनुसार ''व्यक्तित्वप्रधान पात्र अथवा व्यक्ति पात्र व्यक्ति की विशिष्ट संवेदनाओं, मनोवृत्तियों से युक्त होते हैं ।'' उन्होंने आगे चलकर यह भी लिखा है कि ''व्यक्ति पात्र में व्यक्ति विशेष की संवेदनाओं, अनुभूतियों और भावनाओं का उद्घाटन करते हुए मनोविज्ञान के आधार पर उसका विशिष्ट और निजी चारित्र्य प्रस्तुत किया जाता है ।''

व्यक्ति पात्रों के सन्दर्भ में और अधिक जानकारी देते हुये वे लिखती है व्यक्ति पात्र संवेदनशील होने के कारण प्रत्येक परिस्थिति में उचित प्रतिक्रिया करते हुए विकसित होते हैं किन्तु परिस्थिति के

प्रति उचित और अनुपातिक प्रतिक्रिया के अभाव में कभी-कभी ये पात्र कृत्रिम प्रतीत होते हैं ।

डॉ. लक्ष्मीराय जी वर्गपात्र और व्यक्ति पात्रों की तुलना करते हुए लिखा है कि -

''वर्गपात्रों की अपेक्षा गतिशील व्यक्ति पात्रों का चरित्र गहन एवं आकर्षक होता है ।''

इससे स्पष्ट है कि व्यक्ति प्रधान पात्र सर्व सामान्य पात्रों से अलग होते हैं ।

❖ मन्नू भंडारी के साहित्य में पात्र :-

मन्नू भंडारी के कथा-साहित्य के पात्र मनोविज्ञान से अत्यधिक प्रभावित होकर आये है । ये पात्र प्रायः चिन्तन प्रधान है और मानव मनोभूमि का प्रत्यक्षीकरण करनेवाले है । इन पात्रों में प्रायः असामान्य पात्रों की प्रधानता है । और इस असामान्य पात्रो में स्व अथवा अहं रहा है । मन्नू भंडारी के उपन्यासों की तरह कहानियों के पात्र भी मनोविज्ञान से प्रभावित है । ये पात्र व्यक्तित्व समान है । ये पात्र पुराने पात्रो की तरह न तो देवता लगते है न अतिमानव वरन शुद्ध मनुष्य की तरह व्यवहार करते है जो मानसिक ग्रन्थियों के शिकार हैं ये पात्र प्रायः गतिशील चरित्र हैं जो अपनी परिस्थिति परिवेश से प्रभावित होते हैं ।

मन्नू भंडारी के साहित्य में स्थिर पात्र गत्यात्मक पात्र, कुंठित पात्र, संत्रस्त पात्र, विशिष्ट पात्र है जिसका विश्लेषण मै निम्नलिखित से करती हुँ ।

❖ स्थिर पात्र :

मन्नू भंडारी ने स्थिर पात्रों का चरित्र चित्रण किया है ये पात्र

पुरानी मान्यताओं एवं मूल्यों को महत्त्व देते है आधुनिकता के साथ नही चलते और आनेवाली पीढी पर अपने विचारों को थोपना चाहते हैं गिरि का चरित्र स्थिर है लड़की अपनी शादी की बात स्वयं करे यह बड़ा अजीव है । गिरि समाज की मान्यताओं को महत्त्व देनेवाली तथा समाज के बीच रहनेवाली नारी है । उसका कहना है कि - ''तुम भगवान को नहीं मानते सो वे भगवान ठहरे कुछ कहने नहीं जायेंगे । पर समाज को नहीं मानोगे तो डंडा मारकर वह तुमसे अपने को मनायेगा ।''[१]

गिरि कभी अपनी जिन्दगी नहीं जी पाती दूसरे लोग क्या कहेंगे यही उसकी चिंता है । वह पति को सबसे ऊँचा दर्जा देती है तथा कहती है कि -

''पूजा करने जैसा स्वामी मिल जाये इससे बढ़कर औरतका और क्या भाग्य हो सकता है ।''[२]

गिरि संस्कार युक्त सामाजिक स्त्री है । इसी प्रकार मन्नू भंडारी की 'छत बनानेवाले' कहानी मे ताऊजी पच्चीस साल पहले की मानसिकता में जीते है । अपनी भतीजी के डॉक्टर होने की खबर तथा स्वतन्त्र व्यक्तित्व उनके लिए कोई अहमियत नहीं रखता । इसी वजह से भतीजी हीरा की तुलना में अपनी बेटी को श्रेष्ठ मानते है और हीरा के स्वतन्त्र व्यक्तित्व को लेकर एक भाषण देते है कि लड़कियो को कहीं इतनी छूट दी जाती है ? छोटू को लेकर भी कहते है कि मेट्रिक में फर्स्ट पोजीशन क्या आ गई अपने को लाट साहब समझने लगा । इस प्रकार ताऊजी के चरित्र की स्थिरता आधुनिक हवा को छूती नही अम्माजी का घर के सदस्य पर आधिपत्य आज की पीढ़ी के लिए असहनीय है सुरेश का लाइब्रेरी मे पढ़ना अम्मा को आवारगर्दी लगता

है और अम्माजी को लड़कियों को पढ़ाना नौकरी करना पसन्द नही वह गौरा के बारे में कहती है -

''गौरा का ब्याह करना है । हम तो बहुत कहते थे कि इसे इतना मत पढ़ाओ - लिखाओ । कोई नोकरी तो करवानी नहीं है इससे, जवान लड़की एक बार पैर घर से बाहर पड़ गया तो फिर बाहर की हो रहेगी ।''[३]

यह स्थिरपात्र अपने विचारों को नही छोड़ सकते और आधुनिकता उसे छू नही सकती ।

गत्यात्मक पात्र :

मन्नू भंडारी के कथा साहित्य में गत्यात्मक पात्र को स्थान दिया गया है । वह पात्र आस-पास के वातावरण से अप्रभावित न होते हुए घटनाओ के साथ विकसित होते रहते है । ऐसे पात्रो के माध्यम से मन्नू भंडारी ने मानव मानव मन की असंख्य अनुभूतियों और पात्रों को प्रकाश में लाने का तथा मानसिक परिवर्तन को व्यक्त करने का प्रयास किया है ।

मन्नू भंडारी के कथापात्र सहज मनुष्य के टूटने और बनने की प्रक्रिया है, परिवेश - वैषम्य के कारण अधिक टूटने पर जहा वे कुंठाओ और ग्रन्थियों से शासित होते है वहाँ टूटने से बनने की स्थिति में वे गत्यात्मक अभियोजन में भी सफल हो जाते है । जीवन की परिवर्तित परिस्थितियों से समझौता करने में सक्षम एवं उसके अनुरुप ही स्वयं को ढाल लेने में समर्थ हो ऐसे पात्रों की सृष्टि मन्नू भंडारी के कथा साहित्य में ज्यादातर विद्यमान है ।

गत्यात्मकता का रहस्य है - जिजीविषा की अदम्य कामना । असफलताएँ मनुष्य में निराशा उत्पन्न कर उसे समाप्त कर देती है

परन्तु जीवन के प्रति मोह उसे जीने की प्रेरणा देने में सहायक सिद्ध होता है - 'श्मशान' कहानी में लेखिका ने लिखा है -

''जो इन्सान प्रेम करता है, उसे जीवन भी कम प्यारा नहीं वह प्रेम की स्मृति, कल्पना और आध्यात्मिक भावना पर ही जिन्दा नहीं रह सकता । वह जीवन की पूर्णता के लिए फिर प्रेम करता है, जीवीत रहने का प्रयत्न करता है वह हर वियोग झेल लेते है व्यथा सह लेता है ।''[४]

'अकेली' कहानी में सोमाबुआ अपने जीवन के अकेलेपन को दूर करने का प्रयास करती है । वह पास-पड़ोस के लोगो में मिल जुलकर उनका काम करके उन्हीं के दिये हुए पर अपना गुजारा कर जिन्दा रहती है ।[५]

'एक इन्च मुस्कान' उपन्यास में अमला तथा नरेन जगह-जगह घूम-घूम कर तथा नये-नये मित्रों के माध्यम से अकेलेपन को समाप्त करने का प्रयत्न करे है । अम्माजी की ऊपरवाली किरायेदारनी पुस्तकों एवं पत्र व्यवहार के सहारे अपने जीवन के सूनेपन को दूर करती है ।

''सतीश विवाह के पश्चात् तीन साल तक शकुन को माँ नही बना पाता तो स्वयं को दोषी तथा पौरुषहीन समझता है । और शकुन के प्रति आलोक की घनिष्ठता सतीश के मनमें शंका को जन्म देती है जिसके कारण वह मरने का निर्णय लेता है परन्तु गत्यात्मक चरित्र के कारण समायोजन हेतु घर लौट आता है ।''[६]

मंजरी का विपिन को छोड़कर दिलीप से विवाह कर लेना तथा शकुन का अजय को तलाक देकर डॉ. जोशी से विवाह कर लेना तथा रंजना का अमर को छोड़कर नौकरी कर लेना । यह गत्यात्मकता का ही परिणाम है । पति-पत्नी के विचारों और मूल्यों में असामजस्य के

कारण वैवाहिक जीवन असफल प्रतीत होता है तो उसे अपने गत्यात्मक चरित्र के कारण स्वीकार नहीं करते और अपने आपको कहीं और 'एडजस्ट' कर लेते है । ''सारी जिन्दगी उस तनाव में काटने की अपेक्षा तो उससे मुक्त होना लाख गुना अच्चा ।''[७]

कभी-कभी पात्र की मनःस्थिति गत्यात्मकता को प्रस्तुत कर देती है । 'रानी मां का चबुतरा' कहानी में काका के सलाह देने पर कि - ''अरे गुलाबो ! देख तेरे छोरे के लिए सरकार ने केन्द्र खोल दिया है वहाँ नाम लिखा दे अपने बच्चे का ।' ''सरकार मेरी खसम है न, जो केन्द्र खोल देती मेरे लिये । ये सब तो पैसेवालों के चोंचले है । मेरे कौन मरद कमानेवाला है जो पाँच रुपये महीना दे दिया करेगा ।''[८]

इस प्रकार गुलाबो विरोध करती है पर अन्त में गुलाबो के हाथ से शिशु सुरक्षाकेन्द्र की पाँच रुपये की रसीद मिलती है । इसी प्रकार ''कुन्ती निखिल के अनायास चुम्बन को बर्दाशत नहीं कर पाती और निखिल के गाल पर चांटा जड़ देती है वही कुन्ती बाद में महसूस करती है कि निखिल का सामीप्य उसे चाहिए उसने निखिल को मारकर बहुत बड़ी गलती की है ।''[९]

व्यक्ति में गत्यात्मक प्रवृत्ति न हो तो उसे अनेक कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है और अन्त में वह अनेक मनोविकृतियों से भी ग्रस्त हो सकता है । अर्थप्रधान युग ने व्यक्ति के चरित्र को गत्यात्मक बनाने में काफी योगदान दिया है । '' 'शायद' कहानी में शरवाल जब घर आता है अपनी पत्नी माला व अन्य पुरुष शंकर के मेल-जोल को सहन करता है क्योंकि वह जानता है कि जरुरत पड़ने पर शंकर ही माला की आर्थिक सहायता कर सकता है ।''[१०]

'क्षय' कहानी में कुन्ती आदर्शवादी शिक्षिका होने के बावजूद अपने आदर्शो का खून कर देती है और सावित्री जैसे असफल व मन्दबुद्धि छात्रा की सिफारिश के लिए उसके विद्यालय जाने के लिए विवश होना पड़ता है क्योंकि कुन्ती भली भाँति जानती है कि उसके बिमार पिता तथा घर की खस्ता हालत को सावित्री की माँ ही सम्भाल सकती हैं ।[११]

सन्तान की इच्छा के समक्ष भी माँ-बाप को अपना निर्णय बदलना पड़ता है, ''रंजना के पिता नही चाहते कि रंजना अमर से विवाह करे परन्तु रंजना की जिद के आगे उन्हें अपना निर्णय बदलना ही पड़ता है ।''[१२]

'स्वामी' उपन्यास में मिनी के मामा को पता है कि मिनी नरेन को प्रेम करती है उसी से विवाह करना चाहती है मामा नरेन को स्वीकार कर लेते है परन्तु घनश्याम को देखकर उसका विचार बदल जाता है । और उस गत्यात्मक प्रवृत्ति के कारण घनश्याम से मिनी का विवाह तय कर देते है ।[१३]

निम्न वर्ग का पात्र जो आवाज तक नहीं निकालता था आज गत्यात्मक चरित्र के कारण चिल्ला-चिल्लाकर प्रशासन प्रणाली को गालियाँ देता है । 'महाभोज' उपन्यास का विन्दा अपने दोस्त बिसू की मौत पर आक्रोश प्रकट करता है तथा कानून नेताओं को कोसने से बाज नहीं आता । एस. पी. को कहता है - ''जुर्म जुर्म की पहचान रह गयी है आप लोगों को ? बड़े-बड़े जुर्म आप लोगों को जुर्म नहीं लगते । जिन्दा आदमियों को जला दो, मार दो यह जुर्म नहीं है न आपकी नजरों में क्या हो गया है आप लोगों को कोई ईमान धरम नहीं रह गया है लानत है सब पर ।''[१४]

इतना ही नही यह गत्यात्मक प्रवृत्ति 'महाभोज' के पात्रों में प्रचुर मात्रा में दिखाई देती है - ''ज़ोरावर, दा साहब के विरुद्ध मुख्यमंत्री पद हेतु चुनाव में खड़ा होना चाहता है परन्तु दा साहब के प्रभाव में चुनाव में होने के बजाय दा साहब की जीतका जिम्मा लेता है । इस गत्यात्मक प्रवृत्ति के कारण ही नेता एक दल को छोड़कर दूसरे दल का सहयोग करते है । पत्रकार दत्ता साहब अपने अखबार में दा साहब पर कटाक्ष तथा व्यंग्य छपवाते है किन्तु दा साहब से मुलाकात होने पर उनकी प्रशंसा के पुल बांध देते है ।''[१५]

मन्नू भंडारी के कथा के पात्रों में गत्यात्मक पात्रों की संख्या सर्वाधिक मिलती है ।

कुंठित पात्र :

''असहज जीवन कुंठा को जन्म देता है । जैनेन्द ने कुंठा को जीवन के भोजन के बीच गुठला माना है । वह भोजन जो अधपका होता है और जीवन के स्वस्थ्य के लिए अहितकर भी उसे कुंठा कहा जा सकता है । अगर हम सामान्य अर्थ करे तो रुकावट या अवरुध्धता कुंठा कहलाती है । या जीवन का क्रम अवरुध्ध हो जाता है या ठहर जाता है तो कुंठा को जन्म मिलता है। मनुष्य का मन अपनी इच्छा या अभिलाषा को पूरा नही कर पाता तो वह क्षुब्ध हो जाता है यह क्षोभ मानसिक तनाव को जन्म देता है । मानसिक तनाव मनुष्य को चिंतित बनाता है । इस चिंता के कारण मान अविकसित और अव्यवहारिक हो जाता है । यही अव्यवहार या असामान्यता कुंठा को जन्म देती है । वह कभी हीनता-ग्रन्थि को जन्म देती है ऐसे लोग विद्रोहात्मक व्यवहार करते है तो कहीं तनावग्रस्त दिखाई देते है ।''[१६]

मन्नू भंडारी के कथा पात्रों में कुंठित चरित्रो मनस्तापी या

न्युरोटिक की अवधारणा के समीप ही है । इनके मनस्ताप के मूल में काम, हीनता, अर्थाभाव, आदि कारण रहे है ।

मन्नू भंडारी की 'बाहें का घेरा' कहानी में कम्मो ऐसी अतृप्त पात्र है जिसे मां का प्यार नहीं मिला उसकी सौतेली मां अपनी एक साल की टुन्ती पर अपना प्यार न्यौछावर कर देती है । कम्मो को लालसा होती है कि मां ऐसे ही उसे प्यार करे पिताजी भी टुन्ती को प्यार किया है । यौवनावस्था में प्रेमी के रुप में शैलेन को मिलती है पर शादी अन्य जगह हो जाने पर शैलेन की यादे रह जाती है । शैलेन की अनुभूति ज्यों की त्यों है यह कामनाएं अतृप्त होकर आज भी दबी नही । वह असहाय सी, बेबस टीसती रहती है । शादी के बाद मित्तल पति के रुप में मिलता है वह अपने बिजनैस में व्यस्त रहता है । मित्तल से कम्मो सम्पूर्णता प्राप्त नहीं कर पाती । मित्तल का प्यार उसे यांत्रिक और जड़ लगता है । उसमें उत्साह, प्यार की गर्मी, आतुरता, कुछ भी नही था । पतिकी यह जड़ता और व्यस्तता कम्मो को अतृप्त बनाकर उसे कुंठित बना देती है ।

'कल और कसक' रानी अपने पति कैलाश की व्यस्तता और उपेक्षा से अतृप्त हो कुंठित हो जाती है - ''कैलाश कभी उसकी कोमल भावनाओं को समझने की चेष्टा नहीं करता अंततः रानी का झुकाव शेखर की ओर होता है । शेखर का विवाह हो जाने पर रानी के प्रति आकर्षण समाप्त हो जाता है । यह काम अतृप्ति शेखर के प्रति काम भावनाओं के दमन की कील कसक-कसक कर उसे व्यथित दुखी करती है ।''[१७] इस प्रकार ''एक बार और की बिन्नी अपने प्रेमी कुंज का विवाह अन्यत्र हो जाने पर तथा कुंज से उपेक्षा मिलने पर टूट जाती है उसका व्यक्तित्व कुंठित हो जाता है फलतः

वह नन्दन को स्वीकार नहीं कर पाती ।[१८] 'घुटन' की प्रतिमा अपने पति के अमानवीय प्रेम व्यवहार से अतृप्त है । पति पत्नी का विरोधी स्वभाव प्रतिमा के कुण्ठा के मूल में है ।''[१९]

मनुष्य हीन भावना से भी कुंठित होता अपने आपको असहाय और असुरक्षित महसूस करता है । मन्नू भंडारी की कहानी 'तीसरा आदमी' की सतीश शकुन को मां न बना सकने के कारण स्वयं को पौरुषहीन समझता है और उसके मनमें यह भावना बहुत गहरे तक बैठ गई है कि वह पौरुषहीन है ।[२०]

मन्नू भंडारी के उपन्यास 'आपका बन्टी' में बंटी अभि और जोत को कार में स्कूल जाते देखकर और खुद को बस से जाने से हीन भाव से ग्रस्त होकर कुंठित होता है । और यह भावना उसे विद्रोहात्मक व्यवहार करने के लिए प्रेरित करती है ।

आज के युग में व्यक्ति अर्थ के कारण सभी जगह हारता टुटता जा रहा है । व्यक्ति के मनमें संघर्ष होता है जिसके कारण वह जो बनना चाहता है नही बन पाता । अंत में वह अपने आदर्शो और मूल्यों को छोड़ देने के लिए मजबूर हो जाता है । तब वह कुंठित बन जाता है । मन्नू भंडारी की 'क्षय' कहानी की कुन्ती एक ऐसी ही अध्यापिका है जो अर्थ के अभाव में अपने आदर्शो की रक्षा नही कर पाती और आदर्शो और मूल्यों को छोड़ देती है ऐसी स्थिति में कुंठित हो जाती है । अर्थाभाव मे शरवाल अपनी पत्नी की उपेक्षा पाता है तो तनावग्रस्त हो जाता है । दयालबाबू अपनी बेटी जी एक डाक्टर है उसकी तुलना में अपनी शान बढ़ाने की कोशिष करते है फिर अनेक मनोरोगों से घिर जाते है । दयाल बाबू होम्योपैथिक वैद होने से दो चार मरीज ही आने से वह कुंठित हो जाते है ।

'रानीमा का चबूतरा' की नारी गुलाबों में विद्रोहात्मक भाव, चिड़चिड़ापन अर्थाभाव की ही उपज है । गुलाबो दिन रात मजदूरी मेहनत करती है फिर भी बच्चो के लिए दो वक्त का खाना नही मिलता । इसी कारण गुलाबों के व्यवहार में झलकने लगती है । उसका व्यवहार इतना रूखा और सख्त हो गया है कि वह बात-बात पर बिगड़ जाती है कभी सामान्य जवाब नहीं दे पाती -

''मै तो कहखनी हूँ क्यों मेरे मुंह लगते हो ? ज्यादा बकवास की तो दो-चार तुम्हें भी सुना दूंगी । बड़े आये है दरद दिखानेवाले ।''[२१]

गुलाबों के इस व्यवहार में कुंठा मानव व्यवहार को कुंठा कई रुपों में काम अतृप्ति, हीनता ग्रन्थि तथा अर्थाभाव को प्रभावित करती है । एक व्यक्ति के द्वारा दूसरे व्यक्ति के विकास में उत्पन्न किया गया अवरोध किसी भी पात्र के व्यक्तित्व और व्यवहार को कुंठित बना देता है ।

संत्रस्त पात्र :

इस प्रकार त्रास, भय में दुःख के कारण पलायन की वृत्ति काम करती है । त्रास व्यक्ति को अन्दर ही अन्दर सालता रहता है । संत्रास एकान्त भय की स्थिति है । 'आपका बंटी' उपन्यास में बंटी घर में सभी के होते हुए भी अपने आपको अकेलापन महेसूस करता है । बंटी के मन का दुख धीरे धीरे डर में बदलने लगा । इस प्रकार ''एक इच मुस्कान' में रंजना अपने होनेवाले बच्चे के जन्म से पहले नष्ट किए जाने पर अन्दर ही अन्दर दुखी होती है तथा भय के प्रति आशंकित कि अमर व उसके बीज जो सेतु था वो हमेशा के लिए टूट गया और उसका भविष्य नीरस, शुष्क रह गया ।

'एक इन्च मुस्कान' में अमर अति बौद्धिकता और जड़ता से

त्रस्त है । रंजना के छोड़कर चले जाने के कारण अमर अपने को भावनाहीन संवेदनहीन हो जाता है, इसी कारण त्रस्त रहता है ।''[२२]

आज का व्यक्ति उच्चवर्ग के कारण अपने नीचे काम करने से मन में भय पैठ गया है कि तनीक सी चोट उसे पदच्युत कर देगी । संत्रास के कारण उसका व्यक्तितत्व ही मर जाता है । और वह दयनीय हो जाता है । 'महाभोज' उपन्यास में बिस्सू के हत्यारे को सारा गाँव जानता है परन्तु संत्रास के कारण ही कोई नाम नहीं लेता । क्योंकि उसका हत्यारा राजनैतिक गुण्डा है । गांववाले राजनैतिक प्रभाव के भय के कारण उसका नाम लेने से कतराते है ।''[२३]

रुग्णता जन्य संत्रास के कारण व्यक्ति अतर्क संगत रुप में त्रस्त होने लगता है । 'तीन निगाहों की एक तस्वीर' कहानी की दर्शना अपने पति की गिरती हालत से ग्रस्त रहती है । सब और निराशा, उदासी, न दिन को चैन न रात को नींद । विचित्र-विचित्र सपने आते है कलके सपने का ही क्या अर्थ हुआ भला ? देखा, छोटी-छोटी पहाड़ियों की चोटियों से जल के झरने झर रहे है फिर भी आस-पास कही हरियाली नहीं, रेगिस्तान ही रेगिस्तान है । कोई उस जल को पीनेवाला नहीं कोई फूल उस जल से खिलनेवाला नहीं ।

'तीसरा आदमी' कहानी का सतीश स्वयं को पौरुषहीन समझकर डाक्टर के पास जाने कि हिम्मत नही करता । इस प्रकार की शारीरिक रुग्णता व्यक्ति में 'चिन्ता-मनस्ताप' को जन्म देती है । इस प्रकार दर्शना मेडिकल कालेज जाने पर हड़्डियों का ढांचा देखकर जो प्रतिक्रिया व्यकत करती है, वस संत्रस्त मनःस्थिति का उदाहरण है ।

'एक इंच मुस्कान' की रंजना पति से उपेक्षित संत्रस्त जीवन व्यतित करती है । अमर की उपेक्षा उसे भीतर ही भीतर सालती रहती

है । अमर का अमला के साथ बढ़ते सम्बन्ध अज्ञात भयको जन्म देते हैं । 'तीसरा आदमी' का सतीश पत्नी की उपेक्षा से मनस्तापी बन संशयग्रस्थ बन जाता है । सतीश को आशंका है कि शकुन उससे दूर हो रही है । उसके शरीर से भी और मन से भी । शकुन को मां न बना सकने के कारण अपनी इस दुर्बलता के सामने घुटने टेक कर उदारता सेक हता है कि वह जैसे भी वे अपनी इच्छा पूरी कर ले । सतीश का मन द्वन्द्व से ग्रस्त है ।

सतीश अतीत के सन्त्रास से त्रस्त पात्र है वह अपनी पत्नी शकुन तथा लेखक आलोकजी को एक कमरे में बन्द देखकर सन्देह युक्त हो जाता है तथा यह घटना मुल नही पाता । इस बात के कारण वह खुद को दुःखी करता है । सतीश की मनःस्थिति संशय और द्वन्द्व से ग्रस्त है । सतीश के मन में कई विचार आते है उसे लगा ''वह सचमुच ही पौरुषहीन है, कोई मर्द बच्चा होता तो दो लात मारता दरवाजे और शकुन को बाहर कर देता और दो झापड़ मारता उस लफंगे को ।''[२४]

वस्तुतः सच्चाई कुछ नहीं होती सब शक ही शक होता है । मानव इस ग्रंथि से मुक्त नही हुआ । सतीश की यह मानसिक कमजोरी है । लेखिका ने इस पात्रों के मानस का विश्लेषण किया है ।

विशिष्ट पात्र विशिष्ट मनःस्थिति को लेकर आते है ये सामान्य से अलग प्रतीत होते है। विशिष्ट पात्र वर्ग का प्रतिनिधित्व करते हुई दिखाई देते है । उसे हम वर्गगत पात्र कहते है ।

❖ उपन्यास साहित्य के पात्र :-

- अमर
- डाक्टर जोशी
- बन्टी

- दा साहब
- घनश्याम

मन्नू भंडारी के कथा साहित्य के प्रमुख पुरुष पात्र :-

मन्नू भंडारी के कथा साहित्य के अन्तर्गत विशिष्ट पात्रों का चरित्र चित्रण भी उपस्थित है । ये पात्र विशिष्ट मनःस्थिति को लेकर ही उपस्थित हुए हैं । मन्नू भंडारी के कथा साहित्य के विशिष्ट पुरुष पात्र एक वर्ग का प्रतिनिधित्व करते हुए दिखाई देते हैं ।

अमर :-

मन्नू भंडारी के उपन्यास 'एक इंच मुस्कान' में अमर अकेलेपन की अनुभूति करनेवाला संवेदनशील लेखक है । उसका अकेलापन ही उसके साथ रह जाता है एक भीड़ में अमर महेसूस करता है जैसे किसी से कह आया हो, जरा ठहरो मैं कपड़े बदलकर अभी आता हूँ... फिर लगा कि कोई बाहर बुला रहा हैं, वहाँ जाना है । बाहर जाओ तो ऐसा लगता है कमरे में अकेला बैठा कोई उसकी राह देख रहा है । वहा जाना चाहिए । यह मनःस्थिति उसके अकेलेपन का ही परिणाम है । अमर का अकेलापन उसे अकेला भी नहीं छोड़ता, हंमेशा अतीत की यादों में व्यथित रहता है । यही कारण है कि जब वह अमला, रंजना के ख्यालों में खो जाता है, उसे अपने अस्तित्व का बोध भी नहीं रहता यहाँ का सागर खींचता नहीं है ... मुक्त भी नहीं करता, वह तो अभिभूत कर देता है और गहराईयों में उछाल देता है, और निराकार वायु में घुला देता है और गन्ध की तरह वापस भेज देता है ।

अमर की प्रकृति में भी मानव मन को पकड़ने की दक्षता है । अमर के जीवन में परिवर्तन लाने का श्रेय अमला को ही है, जो उसे

अपनी तरफ खीचती रहती है, उसे कभी मुक्त नहीं होने देती, वह कभी भावावेश में पास आ जाती है तो झटके से अगले पल अपने आपको अलग कर देती है । अमर रंजना की याद करते समय सोचता है, प्यार संकीर्ण, स्वार्थी और निर्दय बना देता है ... प्यार की सपनीली और मखमली नरमाहट के पीछे ईर्ष्या के नुकीले नाखुन होते हैं कोई दूसरा उस तरफ बढ़ता है कि शेर की गुर्राहट सुनाई देती नहीं उधर मत आना यह मेरा शिकार है और इसे मैं अकेला ही खाऊँगा ... ।

रंजना अमर की प्रेमिका तथा पत्नी दोनों ही रही है वह अमर के सम्बन्ध अमला से बर्दास्त नहीं कर पाती और वह चाहती है कि अमर केवल उसका रहे । हाँलाकि वह अन्त में अकेला ही अमर को भटकने के लिये छोड़ जाती है । अमर सीधा-सादा प्रेमी है तो स्वाभिमानी पति भी है । रंजना के कमाने पर और खुद के लेखक मात्र होने पर वह सोचता है कि लिखना बाद में होगा सबसे पहले मुझे नौकरी करनी चाहिए । घर की हर चीज से उसे अरुचि और ऊब हो गयी है ।

अमर एक स्वाभिमान और आर्थिक विपन्नता से ग्रस्त लेखक है जहाँ वह अपना अधिकार समझता है वहाँ दो-दो रुपयों के लिये झगड़ा करता है और प्रकाशकों और पत्रिकाओं से पाँच-पाँच रुपयों के लिये भी सम्बन्ध बिगाड़ लेता है । क्योंकि उसके विचारों से लेखन भी एक सम्मानजनक पेशा ही है उसके परिश्रम के बदले उसी तरह कीमत मिले जैसी हाथी दाँत पर नक्काशी करनेवालों को मिलती है, किसी कलाकृति के परिश्रम पर मिलती है । इसलिये ही अमर अमला के भेजे दो हजार रुपये के चैक को वापर लौटा देता है । अमर के जीवन का हर पल अनिश्चित और अस्थिर है । इसलिये मन्दा भाभी कहती है, जिसके जीवन का हर पल अनिश्चित और अस्थिर हो, जो केवल

मूडस पर चले जिसके लिये जीवन और यथार्थ से कल्पना अधिक महत्वपूर्ण है । उसके साथ जीवन बिताने की कल्पना भले ही मधुर हो सकती है जीवन बिताना कदापि मधुर नहीं हो सकता । साहित्यकारों का कोई भरोसा नहीं । इन्हें एक पत्नी, एक प्रेयसी, एक प्रेरणा न जाने कितनी लड़कियाँ चाहिए ।

अमर कभी अपने विचारों पर तटस्थ नही रह पाता उसके विचार परिवर्तनशील रहते है । उसमें निर्णय लेने की अपूर्व क्षमता नहीं इसी वजह से अमला के विचारों को अपने जीवन में उतार लेता है और कहता है - ''विवाह अपने आप में एक समझौता है । विवाह के लिये नौकरी करनी होगी बंधी हुई निश्चित जिन्दगी बितानी होगी और जैसे जैसे उत्तरदायित्व बढ़ता जाएगा, सीमाएं और संकीर्ण होती जायेगी, रंजना यह सब करनेका मतलब होगा अपनी हत्या करना, तुम्हारी हत्या करना यह सब कर सकूंगा ।''[२५]

अमर रंजना के सामने अपने आपको हीन भावना से ग्रस्त पाता है । उसके नौकरी करने पर और स्वयं के अकेले घर पर रहने पर वह सोचता है - ''जैसे मैं घर की रखवाली करने को पीछे छूट गया हूँ, मेरा काम घर पर बैठकर करने का है और रंजना का स्कूल में जाकर पढ़ाने का बात इतनी ही नहीं है इसकी जड़े यह परिणतियाँ और भी गहराई में है मेरे हैसियत पति की है और कार्य पत्नी का ।''[२६]

अमर संस्कार युक्त भी है । रंजना का एकनिष्ठा प्यार और त्यार अमर में हीनभाव ही भरता है और यह भाव ही उसे विचलित तथा असन्तुलित कर देता है -

''तुम्हे चाहे कुछ न कहो पर मैं जानता हूँ कि तुम्हें नही दे पाया - न घर, न धन, न सुख, न प्यार । तुम्हारे सामने जब अपने को

देखता हूँ तो पाता हूँ कि मैं बहुत छोटा हूँ, बहुत नीच हूँ, बहुत स्वार्थी हूँ और यही मुझे पल-पल सालती रहती हैं ।''[२७]

रंजना का तिल-लित समर्पित होता व्यक्तित्व और एकान्तिक प्यार अमर में घुटन पैदा कर देता है इसलिए वह कहता है कि - ''मैं तुमसे कुछ नहीं चाहता रंजना सबकुछ तो तुमसे ले लिया अब और क्या चाहुँगा ? बस इतना ही चाहता हूँ कि तुम मुझे इतना प्यार मत करो । जिस प्यार का मैं प्रतिदान नहीं दे सकता वह मेरे लिए बोझ बन जाता हैं एक असहय बोझ । इसी बोझ के नीचे मैं रात-दिन घुट रहा हूँ ।''[२८]

अमर की यह घुटन उसको अमला के पास जाने को मजबूर करती है ।

अमर एक भावुक आदमी है और उसकी भावुकता उसके दाम्पत्य जीवन के विघटन का कारण बनती है विवाह के पश्चात् भी अमला के लिए उसके दिल में जगह बनी रहती है और अमला का दर्द उसे छूता है, इसी वजह से वह रंजना से कहता है कि -

''वह सारी पीड़ा को अपने में ही समेटकर जीती है । उसके पास तुम्हारी तरह अमर नही है, जिसकी छाती पर वह सिर पटक पटक कर अपना दुःख दर्द उड़ेल सके । किसी सन्तप्त को सांत्वना देना ऐसा कौन सा पाप है जो तुमने तूफान मचा के रखा हैं ।''[२९]

अमर जहाँ मित्र और प्रेमी की भूमिका का सच्चाई पूर्वक निर्वाह करता है, तो दूसरी और सफल पति भी बनना चाहता है और एक झटके में निर्णय ले लेता है अब मैंने सोच लिया है कि - ''तुम्हें सुखी करना ही मेरे जीवन का चरम लक्ष्य है, मैं सबकुछ छोड़ दूंगा घूमना, फिरना, मित्रों का साथ, अमला से सम्बन्ध यहाँ तक कि लिखना

पढ़ना भी । कहां नौकरी करुंगा और एक सद्‌गृहस्थ और अच्छा पति बनकर रहूँगा । अब से मैं अमर होकर नहीं जिऊँगा, रंजना का पति होकर जिऊँगा, केवल रंजना का पति ।''[३०]

अमला की द्रष्टि से भी अमर आम व्यक्तियों से हटकर है क्योंकि पत्नी का एक निष्ठ प्यार किसी भी पति के लिये जीवन का चरम सुख हो सकता है वही अमर के लिये कष्टदायक हो जाता है । यही पर अमला अमर के जीवन से साम्यता देखते हुए कहती है - यहीं आकर लगता है कि हम दोनों के जीवन कहीं साम्य है अपने अपने व्यक्तित्व के एक सिरे पर हम दोनों बहुत साधारण है, वहीं इच्छाएँ, वहीं कमजोरियाँ पर व्यक्तित्व के दूसरे सिरे पर कुछ ऐसे विशिष्ट है कि साधारण बातों की प्रतिक्रिया और परिणति भिन्न ही होती अमला की द्रष्टि में अमर यही विशिष्ट बन जाता है ।

कहीं-कहीं अमर संवेदनशील भी हो जाता है अपनी पत्नी रंजना के रोने पर स्वयं महसूस करता है कि - ''जैसे किसीने उसकी चेतना, उसकी संवेदनशीलता को हर लिया है इस समय तो रंजना उसके सामने यदि पोटेशियम साइनायड भी खा ले, तब भी शायद उसे कुछ नहीं होगा ।''[३१] ऐसा संवेदनहीन, निश्चेष्ट, जड़ अमर को रंजना जब प्लेटफार्म पर पाती है तब उसे छोड़कर जाती हैं । रंजना की द्रष्टि में अमर एक निष्ठुर, स्वार्थी, झुठा तथा विश्वासघाती पुरुष है । रंजना कहती हैं - ''तुम्हारी अपेक्षा, अवहेलना, तुम्हारे झुठ, छल और विश्वासघात की प्रतिक्रिया मेरे मन पर भी हुई है और बहुत गहरी हुई है । जब जब तुमने मेरी भावनाओं पर प्रहार किया है, हर बार मेरा मन बुरी तरह छुटा है, तड़पा है, सिसका है । लगता है कि अध्याय को सदा के लिये समाप्त करने मे पहले यदि मन की यह सारी घुटन तुम

पर ही उड़ेलकर मुक्त नहीं हुई तो मुझसे जियाभी नहीं जाएगा ।''[३२]

रंजना घुट-घुट कर अमर को भी घुटन ही देती है । अमर उसको जी जान से चाहता है, लेकिन मानसिकता और संवेदन के स्तर पर रंजना अमर की पीड़ा को पहचानने में असमर्थ ही रही है । अमर अपने अन्तवेदना की अभिव्यक्ति स्वयं ही करता है - ''मैं निरपाध हूँ रंजना, बिल्कुल निरपराध घुरी में उस रात अमला के मनुहार भरे उन्माद भरे आमन्त्रण पर भी मैं जड़ निश्चेष्ट बैठ रहा क्योंकि मुझे तुम्हारा ही ख्याल था । और वह सब करना तुम्हारे साथ धोखा करना था, अन्याय करना था और मैं तुम्हें धोखा नहीं दे सकता था, तुम्हारे साथ अन्याय नहीं कर सकता था क्योंकि मैंने तुम्हें प्यार किया था, आज भी करता हूँ ।''[३३]

प्यार अमर की कमजोरी रही है । इसी प्यारने अमर को पल-पल मारा है । रंजना हो या अमला वह प्यार देने में कंजूसी नहीं करता । वह प्यार के प्रतिदान की प्रतिक्षा के बिना एक आदर्श प्रेमी की तरह एकांतिक वेदना-सुख में जीता है । तभी तो प्यार में प्रवंचित अमर के लिए यही प्यार सबसे बड़ी ताकत बन जाता है । यह प्यार ही उसे जड़ होने से बचाता है, जिन्दा रखता है । और तभी तो गिरती दीवार सा अमर अमला का सहारा बन जाता है ।

अमर अपनी मानसिकता से तथा आनेवाले बच्चे को नष्ट करवाने के कारण अपराध बोधा तथा पीड़ा से ग्रस्त हो जाता है और यहीं दुःख अमर को सालता रहता है, जिसके परिणाम स्वरुप वो कहता है कि - ''लिखने के लिये बहुत कुछ मेरे दिमाग में घूमता रहता है पर मैं लिख नहीं पाता, दूसरों को मारकर जो पनपना चाहता है उसे पहले खुद मरना पड़ता है मैंने कभी किसी को मारना नहीं

चाहा, किसी को मारा भी नहीं, फिर भी हतया का अपराध मेरे सिर पर असह्य बोझ की तरह लदा रहता है और मैं खुद मृतक के समान किसी की लाश को लिए फिरता रहता हूँ ।''[३४]

अमर के पास हृदय भी है और बुद्धि भी परिवार भी है और स्व का विस्तार भी, वह टूटता भी है और बनता भी है उसे देने का दुःख नहीं है और न मिलने के सुख से वंचित होकर भी प्रसन्न है । अमर वह दायित्वहीन पलायन वादी नही । अमर वास्तव में अमर है । वह उस बुद्धिजीवी पीढ़ी का प्रतिनिधित्व करता है जो सहज संवेदनशील होकर निश्चय भाव से सभी स्थितियों से जो मिलता है, जितना मिलता है, जैसे मिलता है सभी प्यार की आग के साथ अंगीकार करता है । अमर भटकता हुआ भी लक्ष्य को पाता है और लक्ष्य पर पहुँचकर भी भटक जाता है । यह ट्रेजड़ी बार-बार अमर को मारकर भी अमर बना देती है । तभी तो राजेन्द्र यादव ने अपने स्पष्टीकरण में अमर को खलनायकत्व - जोकि मन्नू भंडारी के द्वारा लादा जा रहा था - को उतार फेंककर अमर को एक अलग रुप में प्रस्तुत करने का संकल्प दुहाराया है -

''अमर को मैं खलनायक नहीं बनाना चाहता अगर यह सचमुख आज संक्रान्तिकालीन बुद्धिजीवी ट्रेजडी और व्यक्तित्व का खलन है तो क्यों न उसकी सम्पूर्णता में चित्रित हो ? मैं अपने पात्रों के व्यक्तित्व के अनेक स्तरों और धरातल पर तटस्थ होकर पाने की कोशिश करुंगा - ताकि अमर की पराजय एक व्यक्ति की नहीं, एक पीढ़ी की पराजय होकर आये चाहे फिर वह राह खो जाने की व्याकुलता में भटक गई पीढ़ी के नाम से ही क्यों न जानी जाए ।''[३५]

इस प्रकार अमर खंडित-व्यक्तित्व प्राणी है उसका आन्तरिक

व्यक्तित्व दो भागों में बंटा है प्रेम, विवाह, सुख सुविधा के परम्परागत संस्कार कभी-कभी उन्हें प्राप्त करने की चाह अर्थात् एक और मानवीय नैतिकता बोध दूसरी और सष्टा व्यक्तित्व की उच्चतर मुक्ति कामना हैं ।

❖ डॉक्टर जोशी :-

मन्नू भंडारी के 'आपका बंटी' उपन्यास के डॉक्टर जोशी विशिष्ट चारित्रिक विशेषताएं रखते है । उनका व्यक्तित्व काफी सुलझा तथा विषम परिस्थितियों से भी समायोजन करने में सक्षम है । शकुन डॉक्टर जोशी के विशिष्ट चरित्र से प्रभावित होकर ही निकट आती है, जैसा कि वह स्वयं स्वीकारती भी है - ''डॉक्टर जोशी के व्यवहार में एक धीरता है, ठहराव जैसे डाक्टर ने अपनी जिन्दगी में बहुत कुछ पाया हैं । इसी वजह से शकुन कभी कभी डाक्टर के सामने अकारण ही अपने आपको छोटा महसूस करती है उसे लगता है जैसे डाक्टर ने स्वीकार करके उस पर बड़ी कृपा की है । डाक्टर जोशी की बातों में उसके सारे व्यक्तित्व में कुछ ऐसा है, जो शकुन को आश्वस्त करता है और डाक्टर की सुलझी द्रष्टि उसे बहुत सी उलझनों से उबार लेती हैं ।''[३६]

डाक्टर जोशी में बालपन को भी समझने की अपूर्व क्षमता है तभी तो वह बंटी को पहचानने में गलती नहीं करते और शकुन से कहते है कि - ''इस तरह बच्चों के साथ सख्ती करने से वे एकदम चुप हो जायेंगे बहुत ही सब मिसिब और सहमें हुए और नरमाई से पेश आने से वे उदण्ड हो जायेंगे ।''[३७]

डाक्टर जोशी के पास बाल मन के साथ मानव मन को भी समझने की पैनी द्रष्टि है तभी तो वह शकुन से कहते है - बंटी में

सन्तुलन लाने के लिये पहले तुम्हें अपने में सन्तुलन लाना होगा । शकुन जब जोशी के समीप (नजदीक) आती है तब महसूस करती है कि उसके सारे तनाव द्वन्द्व ढीले हो जाते है (दूर हो जाते है) उसकी स्थिति सामान्य हो जात है और वह सहज हो जाती है । शकुनने अकेले-अकेले चलकर सारी परेशानियों से अकेले-अकेले लड़कर भी ऐसा आत्मविश्वास और ऐसी शक्ति कभी महसूस नही की जो डाक्टर के हवाले अपने आप को करके महसूस कर रही है । डाक्टर जोशी बन्टी के अन्सामान्य व्यवहार से भी उत्तेजित नहीं होते ।

इस प्रकार डाक्टर जोशी का चरित्र आम व्यक्तियों से हटकर है। वह परिस्थितियों से सहज सामान्स्य स्थापित करनेवाले वर्ग का प्रतिनिधित्व करता हैं ।

❖ **बन्टी :-**

बाल मन की उलझी हुई समस्याओं को वाणी देनेवाले वर्गका प्रतिनिधित्व पात्र है बन्टी । मन्नू भंडारी ने बाल मन का अत्यन्त वास्तविक पूर्ण चित्रण 'बन्टी' के माध्यम से किया है । बालक का मन सरल, निष्पाप, देवता सदृश्य कोमल ही नहीं होता बल्कि वह बहुत ही जटिल, कुटिल और अच्छे बुरे आवेगों से भी परिपूर्ण हो सकता है ।

बन्टी अजय और शकुन अर्थात् अपने पापा मम्मी दोनों के अहं से संक्रान्त हुआ है । दोनों में पेजेसिवनेस है, जो बन्टी में उतरा है । बन्टी एक तो यु भी पैदाइशी प्राब्लम चाइल्ड के रुप में आता है फिर धीरे-धीरे मनोवैज्ञानिक केस बन जाता है । इस बदलाव के मूल कारण में उसकी मम्मी ही है क्योंइक मम्मी पर उसके एकाधिकार को चुनौती मिलने की सूक्ष्म आहट पाते ही बन्टी बहुत चौकना हो जाता

है । मम्मी का डॉक्टर जोशी से जुडता बन्टी में अनेक विकृतियों को जन्म देता है । उसक व्यवहार असन्तुलित, चिडचिड़ा तथा गुस्सेल हो जाता है। इसके अतिरिक्त बन्टी के चरित्र में स्थानान्तरिकरण बद्धत्व और स्वप्न की स्थिति सर्वप्रमुख है । स्थानान्तरिकरण के कारण ही बन्टी अपने नये पापा तथा मम्मी को स्वीकार नहीं कर पाता, बद्धत्व के अनुसार बन्टी आत्मनिर्भर नहीं हो पाता और उसकी प्रवृति विगतावस्था से चिपके रहने की हो जाती है । यही कारण है कि बन्टी डा. जोशी के घर जाने के बाद भी अपने पहले घर, बगीचे, फूल आदि को नहीं भूल पाता । बन्टी का अजीव अजीव दिवास्वप्न देखना भी उसकी मानसिक दुर्बलता का ही परिचायक है ।

बन्टी मम्मी को डाक्टर जोशी के निकट सहन नही कर सकता बिस्तर पर सू-सू करने के क्रम में उसका प्रबल विद्रोह, घुटन और मम्मी को अपनी और आकर्षित करने का अवचेतन प्रयास है । मम्मी की दूरी में बन्टी बिखरता है तो डाक्टर जोशी व अभि के प्रति मम्मी का लगाव देखकर ईर्ष्या करता है और वही कार्य करता है जिससे मम्मी को दुःख पहुँचे, मम्मी का अपमान करके शकुन के समझाने पर भी वह डाक्टर जोशी को पापा नही कहता है तथा अजय को समझाने पर वह मीरा को मम्मी के रूप में स्वीकार नहीं कर पाता । बन्टी की आक्रमक प्रवृत्तियों की परिचायक है वे स्थितिर्यां अब वह अपनी बन्दूक लेकर पेड़ पर चढ़कर ठाय-ठाय करता है न उसे भूष की चिन्ता है न प्यास की । इतना ही नहीं बन्टी एक जिद्दी किस्म का बालक है । मम्मी को दुःखी करने के लिए अजय के पास जाने की जिद्द बन्टी को बहुत तकलीफ पहुँचाती है परन्तु वह जाकर ही मानता है । इस प्रकार बन्टी अपनी क्रियाओं से अपनी मम्मी को ही दुःख नहीं

देता बल्कि स्वयं भी एक आन्तरिक यन्त्रणा से गुजरता है । इस कारण कहा जा सकता है कि 'बन्टी' अतिरिक्त संवेदनशील होने के कारण 'एबनार्मल' है ।

'आपका बन्टी' उपन्यास मे बन्टी सामान्य बालकों से अलग है, क्योंकि उसमें मनोवैज्ञानिक अतृप्ति है । बालक का समुचित विकास उसके माता-पिता दोनों के ही सामंजस्य से होता है, जबकि बन्टी अपने मम्मी पापा के अलग हो जाने की पीड़ा को स्वयं सबसे ज्यादा भोगता है । उसे वह परिवेश वातावरण नहीं मिल पाता जो उसके जीवन में सन्तुलन व सहजता ला सके । यही विषम परिस्थितियां बन्टी को उसकी उम्र से कुछ ज्यादा ही सोचने को विवश कर देती हैं ।

इस प्रकार बन्टी एक दयनीय पात्र बनकर नहीं रह गया है वह आधुनिक दाम्पत्य सम्बन्ध के निरीक्षण का सफल माध्यम भी बनने में समर्थ हुआ है ।

बन्टी के चरित्र में वैचित्र्य लाने का श्रेय अकेलेपन को भी जाता है । बन्टी के अन्य भाई-बहन न होने के कारण घर में मम्मी के अतिरिक्त किसी और को नहीं पाता तथा आसपास भी उसके हम उम्र न होने के कारण कोई मित्र नहीं बना पाता । यही अकेलापन मम्मी की शादी डाक्टर जोशी से हो जाने के बाद बन्टी के जीवन शैली को अव्यवस्थित कर देता है ।

बन्टी एक संवेदनशील बालक हैं, ममी का दुःख बन्टी को धूता है वह ममी को जरा सा भी परेशान देखकर व्यथित हो जाता है । यहां तक प्रयास करता है कि ममी के सामने वह ऐसा व्यवहार न कर बैठे जिसके कारण वह और दुखी हो उठे । वही संवेदनशील बन्टी अपनी

जरा भी उपेक्षा पाकर ममी को दुखी करने में ही सन्तुष्टि पाता है । बन्टी ममी को दुखी तो करता है परन्तु अपराध बोध का भाव उसे सालता रहता है । वह फिर यही प्रयास करता है कि ममी मान जायें गुस्सा न हो जायें । बन्टी में सुपर ईगो की भावना है यही कारण है वह अभि-जोत को कार से स्कूल जाते देखकर खुद के बस से जाने पर हीन भावना से ग्रस्त हो जाता है । बन्टी में एकाधिकार की भावना भी प्रचण्ड है वह चाहता है ममी उसकी ही रहें, सिर्फ उसी की । अभि के प्रति थोड़ा सा भी लगाव बन्टी में खुद के फालतू होने का भाव भरने लगता है ।

बन्टी प्रायः अपने अचेतन से साक्षात्कार करता रहता है - ''शकुन का प्यार जब बन्टी को नहीं मिलता तो बन्टी के दिमाग में यही एक बात घूमती रही । ममीने उसे एक बार भी प्यार नहीं किया । पहले कभी वह ममी के गाल पर किस्सू देता तो फिर ममी बदले में ढेर सारे किस्सू देती बाहो में भरकर खूब-खूब प्यार करती ।''[३८]

ममी का प्यार बन्टी के अचेतन मन में पड़ा हुआ है । और डाक्टर जोशी के यहाँ आने के बावजूद बन्टी के दिल-दिमाग से अपना घर नही भुलाया जाता । बन्टी ने जिन कहानियों में विचित्र स्थितियां पढ़ी व सुनी भयावह और त्रासद वही स्थितियाँ पापा से कट जाने के बाद और ममी के डाक्टर जोशी के साथ हम बिस्तार होने पर अकेलेपन और अजनबीपन की स्थितियों में उसके मन से उभर कर जाने लगती है ।

एक बात और भी बन्टी में है उसमे परिस्थितियों से जूझने की शक्ति है वह अपने से विषम परिस्थितियों से तब तक लड़ता है जब तक वह स्वयं टूट व बिखर नही जाता । बन्टी में तीव्र विद्रोहात्मक

प्रवृत्ति है इसका प्रदर्शन चाहे वह अपने व्यवहार द्वारा प्रदर्शित करे अथवा मौन रहकर । मन्नू भंडारीने बन्टी का चरित्र अपनी लेखनी से अंकित किया वह सर्वदा स्मरणीय रहेगा और उसे हिन्दी उपन्यास साहित्य के विशिष्ट पात्रों में उल्लेखनीय स्थान प्रदान किया हैं ।

❖ दोहरे व्यक्तित्व जीनेवाले वर्गका प्रतिनिधि चरित्र - 'दा साहब' :-

मन्नू भंडारी के 'महाभोज' उपन्यास में दा साहब मुख्यमन्त्री पद पर आसिन है । दा साहब का सम्पूर्ण व्यक्तित्व ही भव्यता के फ्रेम में पड़ा हुआ जान पड़ता है । दा साहब में कुछ ऐसी चारित्रिक विशेषताएँ हैं जो उन्हे विविष्ट व्यक्तित्व में सम्मलित करती है । दा साहब आम आदमियों की तरह छोटी-छोटी बातों से उत्तेजित नहीं होते । वह उम्र के अनुसार आवेश को स्वाभाविक मानते है । परन्तु आवेश राजनीति का दुश्मन है । राजनीति में विवेक चाहिए । विवेक और धीरज । महाभोज के दा साहब व्यक्तियों की कमजोरियों पर सीधा प्रहार करते है, साथ ही मनोवैज्ञानिक तौर पर प्रभावित करने की चेष्टा करते है जिसमें सफल भी होते है । दा साहब का चमचा लखन जब ज्यादा ही उल्टी सीधी कहता है तो दा साहब बहुत ही सहज ढंग से कहते हैं -

''मेरे साथ चलना है तो भाई जबान पर लगाम और व्यवहार में ढहराव चाहिए ।''[३६]

'महाभोज' का परिवेश हमारा आधुनिक राजनीतिक जीवन है । वर्तमान में व्याप्त राजनीति को लेखिकाने इस उपन्यास में खूबी से बांधा है । 'महाभोज' का परिवेश अत्यन्त भ्रष्ट घिनौना और लज्जित करनेवाला है । दा साहब अपना मुख्यमन्त्री का आसन बनाये रखने के लिए फूँक-फूँक कर कदम उठाते है सुकुल बाबु की विचार

शक्ति प्रबल थी और कोई भी उठाने के पूर्व वे हर अच्छे बुरे परिणाम के सम्बन्ध में विचार करते थे । दा साहब और सुकुल बाबु एक दूसरे के प्रभाव को कम करने में लगे रहते हैं ।

दा साहब सन्त के एक नहीं अनेक चेहरे एक पर एक चढ़ाये रहते है, जिसके नीचे उनकी शैतनियत खुलकर खेलती है । दा साहब की सफलता का यही राज है । दा साहब अपने प्रभावशाली व्यक्तित्व से तथा चतुराई से अन्य लोगों को तोड़ने व खरीदने में सफल हो जाते हैं । पत्रकार दत्ता बाबू पर प्रभाव डालने के उद्देश्य से दा साहब कहते है कि अपने पाँच-छः महीने पहले इन्टरव्यु के लिए समय माँगा था नही दे सका था समय के अभाव बात थी ।

दा साहब गाँधीवादी विचारधारा की बात करते है तो दूसरी ओर झूठ बोलना भी अनुचित नही समझते उसका मानना है कि कभी कभी परिस्थिति के दबाण से झूठ बोलना पड़ता है । दा साहब झूठ का सहारा भी अपनी साख बनाये रखने के लिए करते है । जोरावर ने दा साहब के कारण ही चुनाव लड़ने का विचार त्याग दिया और दा साहब के समक्ष आत्मसमर्पण कर दिया । दा साहब खुद देशप्रेमी है तथा उन्हें देशी पद्धति भी उतना ही प्रभावित करती है परन्तु उनके बच्चे अंगरेजियत से इम्पोर्टेड वस्तुएं और इम्पोर्टेड भाषा का ही इस्तेमाल करते है । इस बात को दा साहब बड़ी सफाई से टाल देते है कि - ‘‘यह बच्चों की अपनी रुचि और चुनाव है और किसी की स्वतन्त्रता पर अपने को आरोपित नहीं करते दा साहब ।’’[४०]

दा साहब एक ओर कहते है मेरे लिए राजनीति धर्मनीति से कम नही इस राह पर मेरे साथ चलना है तो गीता का उपदेश गाँठ बाँध लो, निष्ठा से अपना कर्तव्य किये जाओ फल पर द्रष्टि मत रखो तो दूसरी

ओर अपने पक्ष में वातावरण निर्माण करने के लिए भी वे सजग रहते है और प्रतिस्पर्धी को चतुराई के साथ काटने में या पराजित करने की ओर भी ध्यान देते हैं । दा साहब जानते थे कि आजकल चुनाव में दोहरी लडाई लड़नी पड़ती है । आदमी एक क्षण भी चैन से नहीं बैठ सकता । हंमेशा सतर्क सावधान ही रहना पड़ता है अपनो से और परायो से भी । दा साहब हमेशा यह जानने के लिए सतर्क रहते है कि कहाँ क्या हो रहा है और चारों ओर की खबरें उन्हें समय समय पर प्राप्त होती रहती है । उनका मुँह लगा लखन छोटी-छोटी बातों को लेकर उनके सामने उत्तेजित हो जाता है और आवेश में आ जाता है परन्तु उसकी इस बदमिजाजी पर दा साहब कभी नाराज नही होते दूसरों को उनकी कमजोरियों के साथ स्वीकार करना दा साहब का स्वभाव है । भयंकर से भयंकर घटना सुनकर भी उनके चेहरे पर किसी तरहना विकार नहीं आता । बिसू की मृत्युवाली घटना के कारण दल के माथे पर कलंक का भय था परंतु दा साहब मे ऐसा जोर एवं ऐसी तेज हँसी सहज भाव से झेल आनेका अनंत धैर्य था ।

दा साहब में परिस्थितियों को समझने की अपूर्व क्षमता एवं अनंत धैर्य हैं । दा साहब घरेलू उद्योगों के लिए आर्थिक सहायता की योजना की पृष्ठभूमि में चुनाव कर लेने की बात से सहमत नहीं होते वो कहते है कि घरेलू उद्योग की इस योजना से गरीबी पर मरहम लगाया जा सकता है, पर प्रियजनों के बिछुड़ने के दुःख पर मरहम नही । आदमी का दुःख जिस दिन पैसे से दूर होने लगेगा इन्सानियत उठ जायेगी दुनिया से ।

जब दा साहब को सुझाव दिया जाता है कि अपनी पार्टी के विरुद्ध उलटा सीधा छापनेवाले 'मशाल' नामक अखबार पर इमरजेंसी

के समान रोक लगा देनी चाहिए तब दा साहब कहते है यह तुम नहीं तुम्हारा स्वार्थ बोल रहा है । स्वार्थ को इतनी छूट देना ठीक नहीं कि वह विवेक को ही खा जाये । अखबारों को तो आजाद ही रहना चाहिए । वे ही तो हमारे कामों का हमारी बातों का असली दर्पण होते है । और मेरा तो उसूल है कि दर्पण को धुंधला मत होने दो । हाँ, अपनी छवि देखने का साहस होना चाहिए आदमी में इससे जो कतराता है वह दूसरों को नहीं अपने को ही छलता है ।

दा साहब अपनी पार्टी के असंतुष्ट सदस्यो द्वारा लाये जानेवाले अविश्वास के प्रस्ताव के खतरे से भी विचलित नहीं होते और स्पष्ट कह देते है कि जिस दिन अपने लोगों का विश्वास खो दूँगा उन दिन कुर्सी पर नहीं बैठूँगा । सबसे विश्वास पर ही टिकी हुई है मेरी कुर्सी सबके सद्भाव पर जिंदा हूँ मैं जब विश्वास सद्भाव ही नहीं रहा तो मेरे रहने का क्या मतलब ? दा साहब की बुद्धि चातुर्य का यह सुन्दर उदाहरण है ।

कभी-कभी दा साहब चिंतन की मुद्रा में जान पडते उसके घनिष्ठ परिचित जानते थे कि जब उसकी नजरें शून्य में गड़ जों तो समझ लेना चाहिए कि वे खूद समस्या में गहरे धँस गये और जब धँसे है तो कोई न कोई सिर पैर खोजकर लायेंगे ही । लखन ने अपनी आँखो से उन्हें बड़े बड़ो संकटों से उबरते देखा है । इस प्रकार दा साहब किसी भी समस्या के संबंध में सोच विचार कर ही कदम उठाते है और पार्टी के हित के लिए कभी भी उतावलापन नहीं दिखाते ।

दा साहब बिसू की मृत्यु के सम्बन्ध में कहते है कि पता लगाने का काम पुलिस का है और पुलिस अभी बयान ले रही है परन्तु वे खुद इस दिशा में सक्रिय हो चुके थे । उन्होंने यह जानकारी प्राप्त कर ली

थी कि बिसू आठ महीने पहले जेल से छूटकर आया था ।

दा साहब व्यवहार कुशल राजनीतिज्ञ के साथ-साथ स्पष्टवादी व्यक्ति है लेकिन कभी कभी उनमें वाक्‌संयम का गुण भी द्रष्टिगोचर होता है । वे अपने परिचितों और विश्वस्त व्यक्तियों के समक्ष कोई भी बात साफ-साफ कह देते है । अन्यथा वे अपनी भावनाओ को छिपाने में पूर्ण निपुण जान पड़ते हैं वह अपने विश्वासपात्र लखन के समक्ष भी अपनी भावी योजनाओं को प्रकट नहीं कर देते । दा साहब के व्यक्तित्व में उनकी बातो में ठहराव है और इस ठहराव की वजह से ही वे कुर्सी पर ठहरे हुए है ।

दा साहब एक कुशल प्रशासक है उनका नियम है कि सचिवालय से लौटकर घर में अपना आफिस खोलकर बैठते है तथा घरेलू आफिस के कमरे में रात्रि सात से नौ बजे तक फाइलों को देखते है । उनका विश्वास है कि काम वही अच्छा जो अपने हाथों से हो, अपनी नजरों के नीचे हों । दफतरों और अलग-अलग महकमों में फैली गैर जिम्मेदारी पर उनका मन क्षुब्ध होता है वे कहते है कि बापू यों ही इतने बड़े देश को अपने साथ त्याग के रास्ते पर चलाकर नहीं ले गये थे पहले खुद चले थे उस रास्ते पर । दा साहब ने बापू की हर बात और आदर्श को गाँठ बाँधकर रखा है तथा वे चाहते है कि दूसरे भी बापू के आदर्श का अनुसरण करे ।

दा साहब की बुद्धि चातुर्य का एक उदाहरण यह भी है कि जब नौ तारीख को सरोहा गाँव में पूरे जोश के साथ सुकुल बाबू भाषण दे रहे थे तब दा साहब अपनी आफिस में बैठे फाइल देख रहे थे । और इसी बीच चपरासीने 'मशाल' के संपादक दत्ता बाबू का कार्ड पेश कर उसके आने की सूचना की तो दा साहब ने उसे बुलवाया और चपरासी

को आदेश दिया कि पाँच सात मिनट में डी.आइ.जी. से फोन पर बात करवा दे । उन्होंने यह आदेश जान बुझकर दिया था क्योंकि वे चाहते थे कि दत्ता बाबू के सामने ही डी.आई.जी. से फोन पर बिसू की मृत्यु के संबंध में बातचीत कर अपने आपको एक निष्पक्ष प्रशासक होने की छाप दत्ता बाबू के मन में स्थापित करें ।

दा साहब अपने मिलनेवाले व्यक्ति पर न केवल अपना प्रभाव स्थापित करने में सफल रहते है बल्कि धीरे-धीरे उसे अपनी विचारधारा के प्रवाह में बहा लेते है और वह कुछ अंशो में उनका भक्त बन जाता है ।

दा साहब अपने स्वास्थ्य का भी ध्यान रखते है और नियमित रूप से सूर्योदय के पूर्व हरी दूब पर नंगे पैर चलते है । क्योंकि उसका मानना है कि ओर भीगी दूब पर घूमने से न केवल नेत्रों की ज्योति बढ़ती है बल्कि मन-मस्तिष्क में भी ऐसी तरवराट आती है कि सारा दिन आदमी तनाव मुक्त होकर काम कर सकता है । प्रातः भ्रमण के समय दा साहब के साथ उनका विश्वस्त व्यक्ति भी रहता है वह उस समय विभिन्न समस्याओं पर विचार विमर्श भी करते है ।

दा साहब में कथनी करनी का कंट्रास्ट है वे अखबरा के सम्पादक दत्ता के सामने पुलिस अधिकारी को कहते है - ''मेरे कहने की भी चिन्ता मत करो । बस अपना फर्ज निभाओ, ईमानदारी और सच्चाई के साथ ।''[४१] बाद में इसी अधिकारी से दा साहब बिसू के हत्यारे के रुप में बिन्दा को फांसने की आज्ञा देते है ।

दा साहब में 'गोदान' के राय साहब, मैला आंचल के विश्वनाथ प्रसाद, 'एक और मुख्यमंत्री' के अरविन्द घुले मिले है और वह कही इन राजनेताओं की कुटिलता और नीचता को भी पार कर जाते है ।

लेखिका ने बड़ी कुशलता से दा साहब के शातिर चरित्र को गढ़ा है । दा साहब के मुंह से निकलने वाले वाक्य पाठक को भ्रम में डालते है पाठक को लगता है कि आदर्शवादी, नैतिक ईमानदार व्यक्ति कुर्सी पर आसीन है । बापू और गीता की दुहाई देनेवाला सादगी में जीनेवाला गरिमामय व्यक्तित्व है दा साहब का । लेकिन उपन्यास के उत्तरार्द्ध में पता चलता है कि दा साहब घटिया और काइयां आदमी है । वह अपने विरोधियों, प्रतिस्पर्धीयों एवं असंतुष्टो आदि से निपटने और उनका प्रभाव कम करने में हमेशा सफल होते है । दा साहब ऐसी चतुराई से काम करते है कि ''सांप भी न मरे और लाठी भी न टूटे । कहावत चरितार्थ करते है । जब पांडेजी अगले सप्ताह सुकुलजी की रैली का उल्लेख करते हुए कहते है कि उसमें एक लाख आदमियों के सम्मिलित होने की आशाएँ और पूछते है कि क्या दो दिन के लिए बसों और ट्रकों की पाबन्दी लगा दी जाय तब दा साहब इस कार्य को अनुचित, अनैतिक और गैर कानूनी मानकर कहते है - ''पुलिस का पूरा प्रबन्ध होना चाहिये और वह भी सख्य हिदायत के साथ कि किसी तरह की कोई भी अशोभनीय घटना न घटे । प्रजातन्त्र में प्रदर्शन पर रोक नहीं लगा सकते ।''[४२]

दा साहब की कुपित होते कम लोगो ने देखा होगा पर जब होते है तो उनका स्वर और तेवर सामनेवाले भी भीतर तक परपरा देने की क्षमता रखता है । अतः दा साहब एक कुशल राजनीतिज्ञ है वह अपनी चतुरता से जोरावर का साहस समाप्त कर देता है और बिसू की मृत्यु के मामले में कहते है ये आत्महत्या का मामला नही और बिन्दा को बिसु की मौत का जिम्मेदार ठहराते है ।

इस प्रकार 'महाभोज' उपन्यास में दा साहब के चरित्र को

महत्त्वपूर्ण माना जा सकता है और उन्हें एक सफल नेता ही मान जायगा ।

❖ घनश्याम :-

घनश्याम मन्नू भंडारी ने 'स्वामी' शरतचंद्र की कहानीपात्र में थोड़ा परिवर्तन करके नवीन चारित्रिक विशेषताओं के साथ अपने उपन्यास 'स्वामी' में चित्रित किया है ।

मन्नू भंडारी के 'स्वामी' उपन्यास में घनश्याम संयत, शिष्ट तथा सम्य प्रकृति का युवान है । वह प्रतिकूल परिस्थिति से भी समझौता करने की अपूर्व क्षमता रखता है । घनश्याम में दूसरों के मन की पीड़ा को समझने की शक्ति है । उसकी पत्नी मिनी की द्रष्टि में घनश्याम आरोप, आक्षेप तथा व्यंग्य करनेवाले पुरुषों से अलग विशेषताओं का स्त्रोत है ।

घनश्याम में निर्णय लेने के शक्ति है । उसका चरित्र स्थिर है । घनश्याम अपनी बहन टुन्नी की शादी में दहेज मांगे जाने पर उसका विरोध करता है और वह उस जगह शादी करने से स्पष्ट इन्कार कर देता है । ''मैं लड़की का सौदा नहीं करुंगा ।''[४२]

मिनी की सास उसके व्यवहार से दुःखी होकर उसे माँ के पास वापस भेजता चाहती है तो घनश्याम कहता है ''इसने गुनाह किया तो इसे ही सजा दो मां इसे यहाँ से भेजकर तो तुम मुझे सजा दे डालोगी ।''[४३]

दहेज प्रथा ने मध्यवर्गीय परिवार की शांति को मिटा दिया है । 'स्वामी' उपन्यास की सौदामिनी की ननद टुकी जो पंद्रह साल की है पर उसकी माँ दिन-रात बेटी के विवाह की चिंता करती है । एक रिश्ता आता है परंतु लड़केवाले पच्चीस हजार रुपयों की माँग करते

है । माँ घनश्याम से कहती है -

''माँगे है पच्चीस हजार तो देने ही पड़ेगे । जैसे भी हो, वीरो इंतजाम रुपयों के पीछे क्या मेरी लड़की अनब्याही ही रह जाएगी ।''[४४]

घनश्याम कहात है - ''माँ मैं दुकाने बेचता अपने की बेचता अगर टुकी उन्हें पसंद होती तो मैं जैसे भी होता, जहाँ से भी होता रुपए का प्रबंध करता । पर बात यह है कि लड़की उन्हें पसंद नही है । वे सिर्फ सौदा करना चाहते है ।''[४५] एक दो महीने रख लेंगे और फिर वापस भेज देंगे । घनश्याम अपनी बहन का सौदा करना नही चाहता ।

आगे घनश्याम कहता है - ''माँ तुम जानती नही हमारे बंगाली परिवारो में कितने लोग ऐसी शादियाँ करते है और शादी के महीने - दो महीने बाद लड़की को वापस उसके घर छोड़ जाते है ।''[४८]

सैदामिनी अपने पति घनश्याम को समझ नही पाती वह सोचती है - ''सामने खड़े इस व्यक्ति को वह कभी समझ नहीं पायेगी, किताबों से पाया ज्ञान उसे जानने के लिए हमेशा ओछा पड गया है ।''[४६] घनश्याम के छोटे छोटे वाक्य मिनी की झंझौर डालते और उसके सम्पूर्ण व्यक्तित्व को बदल देते है इसी वजह से मिनी कहती है - ''जितने से खुद विचित्र प्रेम का इनका तरीका भी उतना ही विचित्र ।''[५०]

सौदामिनी का विवाह उसकी इच्छा के विरोध घनश्याम से होता है । वह ऐसा सोचकर पतिगृह आती है कि वह किसी की भी पत्नी बनकर नही रह सकेगी । वो भाग जाने की योजनाएँ बनाती है । और वह अपने प्रेमी के साथ भाग जाती है । घनश्याम प्रेमी के साथ

भागी पत्नी का पुनः स्वीकार कर अपने को विशिष्ट बना देता है । घनश्याम साधारण व्यक्तियों से भिन्न है । मिनी का प्रेमी नरेन कहता है - घर से भागी हुई स्त्री का शरण देनेवाले देव पुरुष मैने अपने देश में तो कभी देखे नही । राम तक तो सीता को नही बचा पाये । मिनी कहती है - ''ठीक कहते हो, राम नही कर पाये थे पर ये कर देगे । उदारता, क्षमा ये सब मेरे लिए किताबी शब्द थे इनका अर्थ तो मैने इनके सम्पर्क में आकर ही जाना समझा ।''[५१]

इस प्रकार मिनी की द्रष्टि में घनश्याम राम से भी कही श्रेष्ठ है ।

मन्नू भंडारी ने अमर डाक्टर जोशी, बन्टी, दा साहब और घनश्याम इन सभी चरित्रों के चरित्र विश्लेषण में मनोविज्ञान और मनोग्रन्थियों का भरपूर उपयोग किया है । ये पात्र कहीं अहं पीड़ित है तो कहीं काम-अतृप्त कुंठित अथवा किसी मनोरोग के शिकार अथवा आधुनिकता बोध से जुड़े हुए है । मन्नू भंडारी ने मनोविश्लेषण के सहारे इन सभी चरित्रों की सहज मानवीय संवेदनाओं और अनुभूति से जोड़ा है । लेखिकाने इन पात्रों के अन्तः बाह्य व्यक्तित्व को प्रस्तुत किया है । उसकी चारित्रिक विशेषताओं का उल्लेख किया है तो कभी एक पात्र दूसरे पात्र के स्वभाव, आचार-विचार आदि का विश्लेषण प्रस्तुत किया है । इस प्रकार इनमें मनुष्य के अन्तः उद्घाटन की प्रवृत्ति अर्थात् इसमें अतिरिक विश्लेषण किया है ।

मन्नू भंडारी ने मानसिक स्थितियों को स्थापित करने के लिए आत्मकथात्मक तथा आत्म विश्लेषणात्मक विधि का भी प्रयोग किया है । 'एक इन्च मुस्कान' की अमला कहती है -

''मैं सुख मानती हूँ कि सुख-सुविधाओं के बीच रहना मेरी आदत ही नही मेरा संस्कार सा बन गया है । पाप-पुण्य में नहीं मानती,

मर्यादा में और सीमाओं को भी मैंने कभी महत्त्व नहीं दिया । किसी की मजबूरी का यों फायदा उठाया जाए यह मुझसे सहन नहीं होता ।''[५२]

लेखिका ने अपने कथा साहित्य में सुक्ष्मता लाने के लिए संकेतात्मक, प्रतीकात्मक पद्धति का प्रयोग किया है । 'आपका बंटी' उपन्यास में लेखिका ने सर्वाधिक प्रतीकों का प्रयोग किया है ।

मन्नू भंडारी के कथा के मुख्य पात्र निम्न मध्यवर्गीय मनुष्य ही है जो प्रवृत्ति मूलक या अहं मूलक व्यक्ति नही, जीवन के घात प्रतिघातों को सहता, हारता, हराता हुआ, क्षुद्रता और मनुष्यता को सहेजता नकारता अपनी निर्णय शक्ति को बचाता, लुटाता अपनी जिन्दगी को वहन करता है ।

(२) कहानी के पात्र :-

कहानी में भी पात्रों का अपना स्वतंत्र महत्व होता है । पात्रों के बिना कहानी अधूरी रहती है । कहानी जीवन के यथार्थ से सम्बन्धित होने के कारण उसके पात्र भी सामाजिक जीवन से लिये जाते है । मन्नू भंडारी ने कहानी में पात्रों को महत्त्वपूर्ण स्थान दिया है । लेखिका ने नारी पात्रों के साथ-साथ पुरुष पात्रों का भी सुन्दर चित्रण किया है । कहानी के अधिकांश पात्र समय के अनुसार अपने आपको बदलना नहीं चाहते अतः विभिन्न मनोग्रंथियो तथा कुंठाओ का शिकार हो जाते है और इन पात्रों में बनने टूटने की प्रक्रिया निरंतर चलती रहती है । मन्नू भंडारी ने इन पात्रों को यर्थाथ रुप में चित्रित किया है ।

मन्नू भंडारी के पाँच कहानी संग्रह है । उसमें कुल मिलाकर ४८ कहानियाँ लिखी है । इस कहानियों में मुख्यतः वर्गगत और व्यक्तित्व

प्रधान पात्र दिखाई देते है । उनकी कुछ कहानियों में एक से ज्यादा पुरुष पात्र है जिसमें दो प्रेमी, दो पति, पिता-पुत्र इस प्रकार के पुरुष पात्र है । इन पात्रों में अपनी समस्या तथा व्यथा है साथ ही अपनी विशेषता भी है ।

मन्नू भंडारी के कहानी साहित्य के प्रमुख पात्रों को दो वर्गो में बाँट कर समीक्षा कर रही हूँ ।

(१) वर्गगत पात्र (२) व्यक्तित्वप्रधान पात्र

१. वर्गगत पात्र :-

(१) दिलीप :-

दिलीप 'मैं हार गई' कहानी संग्रह के अभिनेता कहानी का प्रमुख पात्र है । नायक है वह अपने को अविवाहित जताकर रंजना नामकी अभिनेत्री को न केवल छलता है बल्कि उसे शादी का वादा करके उसका निरन्तर आर्थिक शोषण करता रहता है । दिलीप ऐसे विवाहित पुरुषों का प्रतिनिधित्व करता है, जो नवयुवतियों को प्रेम-जाल में फंसाते है और उनका रस चूसते हैं । उनसे पूरा-पूरा फायदा उठाकर उन्हें एक ऐसी गहराई में धकेल देते है जहाँ उन युवतियाँ का जीना दूभर हो जाता है ।

रंजना एक अभिनेत्री है । उसका परिचय बिजनेसमेन दिलीप से होता है । दिलीप चालाक आदमी है । रंजना भोलीभाली लड़कि है वह दिलीप पर विश्वास कर लेती है । दिलीप को अभिनय पसन्द नही है इसलिये रंजना को विवाह के बाद काम छोड़ देने की बात वह करता है । दिलीप को पता है कि लड़की उसी की ओर खिंचती है जो उसकी उपेक्षा करत है । इसलिये दिलीप पहले रंजना से दूर-दूर रहता है उसकी उपेक्षा करता है । फल स्वरुप रंजना उसकी ओर आकर्षित

होने लगती है । इस तरह से वह रंजना को अपने वश में कर लेता है । दिलीप रंजना को अपनी मोह-जाल में फंसाता है । वह हर समय उससे अपने आदर्श प्रेम का बखान करता है ताकि रंजना यह समझ बैठे कि दिलीप उससे बहुत प्रेम करता है । दिलीप कहता है -

''तुम चाहे मुझे दकियानूस कहो या पुराणाग्रंथी पर लैला-मजनू का प्रेम ही मेरे प्रेम का आदर्श है । तुम्हारे बिना तो मैं अपने जीवन की कल्पना भी नही कर सकता ।''[५३]

रंजना दिलीप की बात से अत्याधिक प्रभावित होती है । दिलीप अपनी हर शाम रंजना के साथ व्यतीत करता है । दिलीप को कुछ रुपये चाहिए इसलिये वह बिजनेस का बहाना बताता है । रंजना दिलीप से प्रेम करती है इसलिए वह मुर्दनी सुरत लेकर जाता है ताकि वह उसका हाल पूछे उसे उसकी उदासी देखी नही जायेगी । और रंजना भावविवश होकर उसे कोरा चेक देती है । रंजना से कोरा चेक लेकर वह उससे शादी का झूठा वादा करता है अत्यंत सफाई से झूठ पर झूठ बोलता है लेकिन रंजना उसकी सारी बाते सच मान बैठती है । दिलीप चेक लेकर जाता है बाद मे उसके तीन चार पत्र नियमित रुप से आए । पर इसके बाद उसकी कोई खबर ही नही आई और न वह लौटकर आया । तब रंजना उसके घर जाती है । जहाँ उसने तार लिखने के लिए मेज का ट्राअर खोला तो ढेर सारे पत्र प्राप्त हुए । रेखा नाम की एक लड़की के दहेरादून से लिखे पत्र थे । रंजना को दिलीप की पत्नी, बच्चे तथा प्रेमिका का पता चला तब वह जान गई कि दिलीप विवाहित है और उसने प्रेमिका नाटक किया था ।

रंजना केवल रंगमंच पर अभिनय करती है लेकिन दिलीप का सारा जीवन ही अभिनय है वह एक अभिनेता है । दिलीप के इस

अभिनय से रंजना भी छली जाती है । इस प्रकार व्यवहारिक जीवन में भी वह एक सफल अभिनेता साबित होता है ।

धनवान नारियों को अपने मोहजाल में फंसाना और उनका धन हड़प कर लेना यही दिलीप का बिजनेस है मन्नू भंडारी ने स्वार्थ लोलुप दिलीप की मनोवृत्ति पर प्रकाश डाला है ।

(२) युवक :-

मन्नू भंडारी की 'श्मशान' कहानी का प्रमुख पात्र है युवक । युवक के चरित्र चित्रण करके लेखिकाने पुरुषों की आत्म केन्द्रित वृत्ति पर प्रकाश डाला है । इस कहानी में युवक की तीन बार शादी होती है । तीनो पत्निर्यां मर जाती है इसके नशीब में शायद पत्नी सुख नही है । हर पत्नी के मृत्यु के समय वह कहता है कि अब पत्नी को बिना वह जीवित नही रहेगा । वह इतना करुणाद्र चीत्कार करता है कि श्मशान जैसा संवेदन शून्य और वैराग्य से भरा जड़ स्थान भी पसीज कर जैसे उसके साथ रोने लगता है । लेकिन वह जीवित रहता है क्योंकि जीने की आरजू प्रेमभावना से अधिक प्रबल होती है ।

युवक की पहली पत्नी मर जाती है । वह अपनी पत्नी के शब सहित करुणाकंदन करता हुआ श्मशान में आता है और फुट-फुटकर रोता है मानो उसका सर्वस्व लूट गया हो । दूसरे दिन श्मशान में जाकर वह अपनी पत्नी की राख बटोरने लगता है । उसकी आँखे लाल हो गयी है तथा वह पागलों की भाँति लड़खड़ा रहा है । वह जोर-जोर से विलाप करते हुए कहता है -

''तुम मुझे छोड़कर कहाँ गई सुकेशी ? याद है कितनी बार तुमने कसमें खाई थी कि ज़िन्दगी भर तुम मेरा साथ दोगी पर ? अब मै तुम्हारे बिना जीवित नही रह सकता । तुम मुझे अपने पास बुला लो,

तुम नही तो मेरे जीवन का कोई अर्थ नही, कोई सार नही, कोई रस नही, तुम्हीं तो मेरा जीवन थी, मेरी प्रेरणा थी ।''[५४]

पहली पत्नी के बाद वह दूसरी शादी करता है । लेकिन तीन वर्ष बीतते ही दूसरी पत्नी भी मर जाती है उनके शव को लेकर वह श्मशान में जाता है । फिर उसी प्रकार विलाप करता है - ''मै तुम्हारे बिना कैसे जीवित रहूँगा । तुम ही तो मेरा प्राण थी । अब यह निष्प्राण देह कैसे जीवित रहेगी ? मुझे अपने पास बुला लो । सुकेशी तो अनुगामिनी थी पर तुम तो मेरी सहगामिनी थी हम तो दो शरीर एक प्राण थे । जब प्राण ही चले गये तो शरीर का क्या प्रयोजन ।''[५५]

दूसरी पत्नी की मृत्यु के बाद वह तीसरी शादी करता है । लेकिन दो वर्ष भी नही हुए कि उसकी तीसरी पत्नी मर जाती है । वह उसी प्रकार वही पुरानी बातें कंठस्थ पाठ की तरह दोहराता रहता है । वह हर बार कहता है कि जीवित नही रहेगा, फिर भी जीवित रहने का प्रयत्न करता है, वह युवक हर वियोग झेल लेता है । इस प्रकार युवकाो अपना जीवन प्यारा है । और बातें तो सिर्फ दिखावा है ।

यह कहानी मानवीय प्रेम और तदजन्य अनुभव को अभिव्यक्त करनेवाली सशक्त कहानी है । आत्मकेन्द्रित युवक का चित्रण करने में लेखिका सफल हुई है ।

(३) पंडित गजाधर शास्त्री जी :-

यह मन्नू भंडारी की 'पंडित गजाधर शास्त्री' कहानी के प्रमुख पुरुष पात्र है । वे ऐसे पुरुषों का प्रतिनिधित्व करते है जो अपने आपको महान साहित्यकार समझते है हालांकि उन्हें साहित्य से कोई लगाव नही । लेकिन वे आत्म प्रशंसा में लीन रहते है ।

इस कहानी में कृत्रिम सतही लेखकों के अहंकार पर व्यंग्य है

कहानी के नायक पंडित गजाधर शास्त्री की रचना छात्रोपयोगी पत्रिका में छप जाने से वह स्वयं को महान साहित्यकार समझते है । पुरी कहानी आत्म श्लाधी के देश और भ्रम में पड़े झुठे अहंकार से ग्रस्त आदमी की कहानी है ।

पंडितजी की मुलाकात एक लेखक से हो जाती है । शास्त्रीजी उन्हें अपनी पहचान एक महान साहित्यकार के रूप में कराना चाहता है । वे अपना परिचय देते हुए कहते है -

''मै हूं कहानी लेखक पं. गजाधर शास्त्री । यदि हिन्दी साहित्य से आपका थोड़ा भी परिचय होगा तो आपने गजाधर शास्त्री का नाम अवश्य सुना होगा । वह नाचीज मैं हूँ ।''[५६]

शास्त्रीजी आज के लेखकों की आलोचना करते है । वे उनके अनुभव अध्यया तथा साहित्य-साधना की कमियाँ बताते है । कहानी में एक प्रसंग ऐसा है जो शास्त्री जी की हीन प्रवृत्ति पर प्रकाश डालता है । वे समंदर के किनारे एक युवती को निहार रहे है जो एक मल्लाह का हाथ पकड कर नहा रही है । कपड़े भीगकर उसके शरीर से चिपट गए थे । शास्त्रीजी खड़े-खड़े बड़े सतृष्णा नेत्रों से उसी द्रश्य का रसास्वादन कर रहे थे । वे बताते है कि उस युवती में कहानी का प्लोट, ढूँढ रहे थे । पर यह कहना मुश्किल था कि वे कहानी का प्लोट ढूँढ रहे थे कि युवती के शरीर में कुछ ढूँढ रहे थे ।

मन्नू भंडारी ने खोखले अहं से पीड़ित शास्त्री जी का चित्रण अत्यंत सुक्ष्मता से किया है । वे आत्मप्रशंसा मे लीन रहता है । फलस्वरुप समाज के हंसा का कारण बन जाता है । उसका अहं उसके व्यक्तित्व को कमजोर कर देता है । उनकी साहित्य सम्बन्धी अल्पज्ञता उन्हें और भी खोखला बना देती है । वे अपने आप को एक ऐसी गर्त

में धकेल देते है जहाँ उन्हे केवल आत्म प्रवंचना ही मिलती है । लेखिका ने इस स्वार्थी एवम् खोखले व्यक्तित्व को बड़ी सहजता से चित्रित किया है । लेखिका ने शास्त्रीजी के द्वार उन आधुनिक लेखकों पर व्यंग्य किया है जो मौलिकता के अभाव में तस्कर वृत्ति ग्रहण करते हुए आत्म प्रशंसा द्वारा अपने श्मो श्रेष्ठ साहित्यकार सिद्ध करने का प्रयास करते है । यह अहंकार ग्रस्त आदमी की कहानी है ।

(४) मि. खन्ना :-

मि. खन्ना 'खोटे सिक्के' कहानी के प्रमुख पुरुष पात्र है । वे समाज के उन ठेकेदारों का प्रतिनिधित्व करते है जो दीन-हीन मजदूरों का शोषण कर अपनी तिजोरियाँ रुपयों से भर देते हैं ।

खन्ना साहब टकसाल के उच्च पदाधिकारी है उनका स्वभाव कठोर है । वे कॉलेज की छात्राओं को टकसाल देखने की अनुमति देते है तथा स्वयं टकसाल दिखाने लगते है । वहाँ मजदूर कच्चे धातु को गलायी जानेवाली भट्टियों के संमुख काम करते है । वे भट्टियाँ निरंतर आग बरसाती है जिससे मजदूर झुलस जाते है । लेकिन खन्ना साहब को मजदूरों की कोई पर्वा नही है । निरंतर मशीन की तरह काम करनेवाले मजदूरों को देखकर छात्राएँ खन्ना साहब से कहती है कि अपनी जान जोखिम में डालकर लोग यहाँ क्यूं आते है ? तब खन्ना साहब कहते है -

''काम करने । अरे एक जगह खाली होती है तो पचासों टूट पड़ते है । आप जानती नही हमारे देश में इन्सान की जान बड़ी सस्ती है ।''[५७]

यह कहानी मजदूरों के शोषण की कहानी है । इस टकसाल में मजदूरों के साथ बहुत सी दुर्घटनायें होती रहती है किसी के हाथ कट

जाते है कि किसी के पैर । लेकिन खन्ना साहब उन मजदूरों से कोई सहानुभूति नही जताते बल्कि उन्हें दुत्कारते है । वह मजदूरों से भारी काम लेते है लेकिन सिर्फ ६० रु. मासिक वेतन देते है । एक मजदूर की दोनों टांगे कट गई और उसकी पत्नी खन्ना साहब से काम मांगने आयी है वह बिनती करती है कि उसके पति को खोटे सिक्के चुनने का काम दिया जाए । लेकिन खन्ना साहब उसे दुत्कारते है । इस व्यवहार से छात्राएँ व्यथित हो जाती है तब खन्ना साहब अपने व्यक्तित्व का उन पर बुरा असर न पड़े इसलिए सफाई देने लगते है -

''टाँगे कट गई तो हमने दौ-सौ रुपये मुआवजे के दे दिये । और हम कर भी क्या सकते है ? यों इन लोगों को यहाँ बिठना शरु कर दें तो टकसाल अपंगो का अड्डा बन जाय । आये दिन यहाँ ऐसी दुर्घटनाएं होती रहती है ।''[५८]

खन्ना साहब जैसे समाज के उच्च अधिकारी मजदूरों का शोषण करते है । मजदूरों से अधिक मेहनत करवा कर उन्हें मासिक वेतन ६० रुपये देते है जो अपंग मजदूर है उन्हें टकसाल में हलका-सा काम भी नहीं दिया जाता चंद रुपयों से उनकी जान की कीमत तोली जाती है । समाज में खन्ना साहब जैसे समा के ठेकेदार उन्हें कुछ मुआवजा देकर अपने उत्तरदायित्व से मुक्त होना चाहते है । प्रस्तुत कहानी में मि. खन्ना को एक समाज कंटक के रुप में चित्रित करने में लेखिका काफी हद तक सफल हुई है । इसके द्वारा लेखिका ने आर्थिक समस्या पर गहरा प्रहार किया है ।

(५) कुंती के पिता :-

'क्षय' कहानी में कुंती के पिता प्रमुख पुरुष पात्र है । वे ऐसे पुरुषों का प्रतिनिधित्व करते है जिन्हें शारीरिक दुर्बलता के कारण

अपने बच्चों से नौकरी करानी पड़ती है और यही दुख जीवन भर सताता रहता है ।

यही सच है कहानी संग्रह की प्रथम कहानी 'क्षय' है । इस कहानी में पिता के क्षयग्रस्त हो जाने पर नवयुवती लड़की को परिवार की सारी देखभाल करनी पड़ती है उसकी सारी आकांक्षाएँ विलीन हो जाती है । उसे कुछ छोड़कर परिवार चलाने के लिए नौकरी करनी पड़ती हैं । कुंती के पिता हमेशा बिस्तर पर पड़े रहते है । वे क्षयग्रस्त होने के कारण कुछ नही कर पाते । इसलिए घर परिवार का उत्तरदायित्व वे कुंती पर सौपते है । वे बीमारी के कारण अन्दर-बाहर से पूरी तरह टूट चुके है । वे काफी बदल गये है । इसके साथ-साथ उनके आदर्श एवं सिद्धांत भी बदल गए है, इनका छोटा बेटा टुन्नी आठमी कक्षा में पढ़ता है । वह एक साल फेल हुआ है । इसलिए टुन्नी के खातिर कुंती के पिता कुंती को हेडमास्टर से मिलने के लिए कहते है । टुन्नी भी कुंती से कहता है कि वह हेडमास्टर साहब के पास जाती तो उसका एक साल बच जाता । पिता की यह बीमारी कुंती को सोचने के लिए विवश कर देती है -

''हे भगवान अब तो तू पापा को उठा ले मुझको बर्दाश्त नही होता मैं टूट चूकी हुँ ।''[५९]

कुंती के पिता अपने आपको असहाय महसूस करते है अतः घरका उत्तरदायित्व कुंती पर सौंपते है । कुंती टुन्नी को इलहाबाद भेजना चाहती है । इसलिए वह पिता की अनुमति लेना चाहती है । पिता अपनी दुर्बलता प्रकट करते हुए कहते है -

''भेज देना, मै कौन होता हूँ कुछ करनेवाला ? अब तो तुम्ही सबकुछ हो, जो चाहो करो । मै क्षय का रोगी ।''[६०]

कुंती परिवार की जिम्मेदारी के कारण सावित्री का टयुशन भी करती है । सावित्री की माँ कहती है - 'सावित्री की बात बड़े घर में चल रही है उन लोगों की एक ही जिद है कि लड़की दसवीं हो जायेगी तो शादी करेंगे । आप किसी न किसी तरह दसवीं में पहुँचवा दीजिए फिर तो सँभाल लेंगे ।''[६१]

सावित्री को पढ़ाना कोई सरल काम नहीं है । जो आठवीं के भी लायक नहीं है । फिर भी कुंती उसे पढ़ाने जाती है आर्थिक स्थिति कमजोर होने के कारण और घर की जिम्मेदारी कुंति पर होने के कारण । पिताकी बिमारी का कुंती पर इतना असर पड़ता है कि उसे अपनी खांसी भी पिता की खाँसी जैसे लगने लगती है । कुंती अपने क्षयग्रस्त पिता की बीमारी से अपनी तुलना करती है । उसे खांसी भी आती है तो वह सहम जाती है - ''एकाएक कुंती को लगा कि यह खाँसी, यह खोखली आवाज पापा की खांसी से कितनी मिलती जुलती है, हूबहू वैसी ही तो है सहमकर उसने गाड़ी के शीशे में से देखा कहीं उसके चेहरे पर भी तो वैसा कुछ नहीं जो उसके चेहरे पर भी वैसी ही मुर्दनी तो नहीं जो उसके पापा के चेहरे पर है ?''[६२]

यह कहानी एक संघर्षरत युवती की कहानी है जो परिस्थितियों से लड़ते-लड़ते टूटती हुई प्रतीत होती है । और क्षयग्रस्त पिता को अपने बच्चों की चिंता खाये जाती है ।

(६) आशा के पापा :-

'यही सच है' कहानी संग्रह की कहानी 'सजा' के प्रमुख पुरुष पात्र है । वे ऐसे पुरुषों का प्रतिनिधित्व करते है जो निर्दोष है लेकिन न्याय-व्यवस्था उन्हें मुजरिम करार देती है ।

मन्नू भंडारी ने इस कहानी के अन्तर्गत टूटने बिखरने का चित्रण

किया है । आज के जीवन का अर्थतंत्र इस अकेले आदमी को नहीं तोड रहा अपितु उसके समस्त सम्बन्धों में दरार पैदा कर रहा है और उसके सोचने के तीरकों में परिवर्तन कर रहा ह । इसकी नितान्त बौद्धिक किन्तु जीवनगत भावुकता से मुक्त अभिव्यक्ति 'सजा' के अन्तर्गत देखने को मिलती है ।

आशा के पापा पर बीस हजार रुपये गबन करने का इल्जाम लगाया जाता है । उन्हें दो साल की सजा होती है । लेकिन अपील मंजूर करवाने के बाद पापा को रिहा किया जाता है । जेल से छूटने पर घर आने के बाद पापा का रवैया ही बदल जाता है । वे अपने आपको एक कमरे में बन्द करवा लेते है । वह अपने बेटे मुन्नू को बहुत प्यार करते है लेकिन परिस्थिति वश वे उसे दादा-दादी के साथ गाँव भेज देते है । आशा को अपनी स्कूल बस छोड़कर पैदल जाना पड़ता है । अब वे पहलेवाले पप्पा नहीं रह गये । वे सारा दिन चुपचाप लेटे रहते या कुछ पढ़ते रहते । कभी-कभार कुछ लिखते भी है । पापा का यह रुखा-रुखा व्यवहार देख आशा की उनके पास जाने की हिम्मत नही होती ।

समाज के डर से पापा कही भी नौकरी करने के लिये बाहर नही जा सकते है क्योंकि समाज के लोग ताने कसते है । परिणाम स्वरुप दादा जी घर गृहस्थी चलाने के हेतु हिसाब लिखने का काम करके २५ रुपये भेजने लगते है । लेकिन वह काम छूटने पर वे अपनी पेन्शन में से १५ रुपये भेजते है । घर की गिरती हालत देखकर आशा की माँ अक्सर बीमार रहने लगती है । आशा के पापा अंधेरी कोठरी में अकेले रहते है तथा अपना भोजन वे स्वयं बनाते है ।

आशा के पापा को जब इज्जत के साथ रिहा किया जाता है तब

घर के सारे सदस्य फूट-फूटकर रो पड़ते है । लेकिन पापा रिहाई होने पर भी खुश नही होते और न ही उनकी आँखों में खुशी की चमक दिखाई देती है ।

आशा के परिवार को कोर्ट की सजा से भी बढ़कर अंतहीन यातनाओ की सजा भुगतनी पडी इसलिए उसके पापा को यकीन नही होता कि उन्हे सजा नही हुई । वह बेकसूर है लेकिन न्याय व्यवस्था उन्हें आसानी से मुजरिम करार देकर कटघरे में खड़ा कर देती है । फल स्वरुप उसका व्यक्तित्व खंडित होता है । और वे पूरी तरह टूट जाते है । आशा के पापा के इस खंडित व्यक्तित्व का लेखिकाने हूबहू चित्रण किया है ।

(७) शंकर :-

'शंकर' 'यही सच है' कहानी संग्रह की 'नशा' कहानी का प्रमुख पुरुष पात्र है । वह ऐसे पुरुषों का प्रतिनिधित्व करते है जो शराबी है और रुपयों पैसों के मामले में अपनी पत्नियों पर निर्भर रहते है ।

कहानी में संस्कारों के प्रति आग्रह है । विवाहित नारी अपने संस्कारों से मुक्त नही हो पाती । पति को परमेश्वर मानती है और दुःख सह लेती है । पति के मार, व्यंग्य, उपेक्षा, आदि झेलते हुए भी वह घर को छोड़ने की कल्पना नही करती । आनन्दी अपने पति को छोडकर नही जाती ।

शंकर शराबी है । उसके पिता नही माँ उसे सही रास्ते पर नही ला सकती । इसलिए आनंदी से शादी कर देती है ताकि शंकर सुधर सके लेकिन शंकर और भी बिगड़ जाता है । शराब पीने की लत के कारण उसके घरका सारा धन, खेत खलिहान और गाय-भैस भी चली जाती है । साथ-साथ आनंदी की किस्मत और बच्चों का भविष्य भी

चला जाता है । आनंदी दिन-भर मजदूरी करती है इस रुपयों से शंकर ऐश करता है, शराब पीता है । जब आनन्दी से पैसे न मिले वह उसे पीटता है । एक दिन उसका चौदह साल का बेटा किशन आ गया और बाप पर झपट पड़ा ।

''कक्का । तुमने माँ को हाथ लगाया तो मैं तुम्हारा खून पी जाऊँगा, मैं सच कहता हूँ, तुम्हारा खून पी जाउँगा ।''[६३]

किशन घर छोड़कर चला जाता है बार साल के बाद वह आता है तो देखता है अभी भी वही हाल है । पिता नशे में कहता है - ''क्या क्या लाड़ लडा रहा है माँ से ? अरे, अपने बाप को भी तो कुछ दे ! कुछ देना है तो इधर दे इधर मैं तेरा बाप हूँ, साले ।''[६४]

शंकर आनंदी से शराब के पैसे लेता है पैसे न मिलने पर उसे पीटता है तथा पैसे मिलने पर वह आनंदी का गुणगान करता है -

''तेरी जैसी सती नारी का भगवान जरुर भला करेगा आनंदी ऐसी औरत के साथ तो भगवान भी दुश्मनी नहीं निभा सकता ।''[६५]

आनंद अपने बेटे के साथ रहने चली जाती है शंकर से तंग आकर । बेटा किशन् और बहू आनंदी की अच्छी खातिर करते है । लेकिन यही आनंदी पड़ोसियों की सिलाई बुनाई कर उससे प्राप्त पैसे शंकर को भेजती रहती है । और शंकर शराब पीने में मग्न रहता है ।

प्रस्तुत कहानी में लेखिका ने शंकर के माध्यम से पुरुष प्रधान समाज व्यवस्था पर गहरा आघात किया है ।

(८) डा. दयाल :-

मन्नू भंडारी की 'इन्कमटैक्स और नींद' कहानी के प्रमुख पुरुष पात्र है डा. दयाल । वह हंमेशा आत्मप्रशंसा में लीन रहते है । इस कहानी में भ्रष्टाचार और उसके विविध रूपों का चित्रण हुआ है ।

डॉक्टर दयाल प्रसाद चतुर्वेदी बालरोग विशेषज्ञ है । उन्होंने अपने को शुरु से ही डॉक्टर दयाल के नाम से परिचित कररवाया डॉ. चतुर्वेदी के नाम से नही । वह ऐसे पुरुषों का प्रतिनिधित्व करता है जो परिवार प्रमुख होते है सारे परिवार पर अपनी हकूमत चलाते है । इनके पास बहुत कम पेशंट आते है जिसके कारण आर्थिक अभाव रहता है लेकिन यह बाते वे स्वीकार नही करते ।

डा. दयाल के भाई लखनऊ में रहते है, जिन्होंने अपनी बेटी महिमा को घर मे बिठा कर रखा है डॉ. दयाल को यह बात पसंद नही वे कहते है -

''बाप-बेटी दोनों को बस एक ही जिद थी डॉक्टरी पढ़ेगी । लो साब, हो गइ डाक्टर अब बस सेमिनार-वेमिनार में ही डोलती फिरो, घर ठिकाना तो कोई होना नही है इनका पता नही साला क्या जमाना आया है ।''[६६]

डॉ. दयाल स्वयं अपनी बेटी सरोज जो मेट्रिक में पढ़ती है, उसका विवाह जल्द से जल्द करना चाहते है । मेट्रिक के बाद लड़की को घर रखने में वे विश्वास नहीं करते । वे सोचते है लड़कियों को तो घर-गृहस्थी ही करनी है जितनी जल्दी सँभालें उतना ही अच्छा । दयाल अपने बेटे महिम को इंजीनियर या वकील बनाना चाहते है जब कि वह एक हिसाब लिखनेवाला क्लर्क बन गया है ।

''इन्कमटैस वालों की ओर जाँच हो रही है । अब ये लोग गोलमाल तो दुनिया भर का किये रहते है । सारा काम मुझे सौंप गया है कि जैसे भी हो सारे बही-खातों को इस रूप में तैयार करू कि कोई आंच न आये । बच गये तो एक हज़ार रुपये देने का वायदा किया है ।''[६७]

बचुआ के इस कथन में वर्तमान की विकृत व्यवस्था के दर्शन होते है जहां इन्कमटैक्स वालों की जांच से व्यापारियों की नींद गोल होती है दयाल बाबू के पास इन्क्वायरी आ जाने पर उन्हें गहन निद्रा आती है क्योंकि इन्कमटैक्स की तरफ से पत्र आ जाने पर उन्होंने अपनी भतीजी महिमा से जो डीग हांकी थी वह उन्हें सत्य प्रतीत होने लगता है ।

डॉ. दयाल अपनी भतीजी महिमा जो एलोपेथी की डॉक्टर है उससे ईर्ष्या भाव रखते है क्योंकि वह सरकारी अस्पताल में नौकरी कर प्राइवेट प्रैक्टिस भी करती है । महिमा की गाडी लेकर घूमना डा. दयाल को ऐश लगता है । वे होमियोपैथिक को सर्वश्रेष्ठ बताते है अपने आपको श्रेष्ठ सिद्ध कराने के हेतु वे कहते है -

''डॉक्टरी को हम पेशा कम और सेवा कार्य ज्यादा मानते है । अपने दो रुपये फीस रखो सभी बीस रख लेंगे तो गरीबों की गुजर कैसे होगी ?''[६८]

डॉ. दयाल को महिमा के फरवाले मोटे तौलिये से बढ़कर उनका खादी का श्रेष्ठ है ऐसा बताते है । उसे चम्मच से खाना अच्छा नहीं लगता उसे हाथ से खाना अच्छा लगता है ।

डॉ. दयाल अपनी धुम में मग्न है वह अहं मे डूबे हीन ग्रंथि से ग्रस्त है । वे हमेशा आत्म प्रशंसा में लीन रहते है वे समय के साथ अपने को बदलना नहीं चाहते । मन्नू भंडारी ने अहंवादी डॉ. दयाल का चित्रण किया है ।

(९) ठाकुर ताऊजी :-

मन्नू भंडारी के 'एक प्लेट सैलाब' कहानी संग्रह की 'छत बनानेवाले' कहानी का प्रमुख पुरुष पात्र है ताऊजी । यह कहानी

मध्यमवर्गीय परिवार की है जिसमें लेखिकाने पुरानी पीढी की नई पीडी के साथ तुलना की है । पुराने ख्यालात में बढ़ता ताऊजी का परिवार स्वस्थ और खुश है न कहीं तनाव है न कही संघर्ष । ताऊजी का शरद से पूछा जानेवाला सवाल उनके पारिवारिक शान्ति को स्पष्ट कर देता है -

''तुम्हें आये तीन दिन हो गये, कभी देखा तुमने बहुओं को लड़ते हुए ? सुनी उनकी तू-तू मैं-मैं ? सो भैया, हमने शुरु से ही ऐसा सिलसिला बिठा दिया कि झगड़े की कोई गुंजाइश ही नही ।''[६६]

ताऊजी धार्मिक वृत्ति के पुरुष है । अपने ललाट पर लंबा-सा तिलक लगाते है, बंद गले का सफेद कोट पहनते है । जिसमें सोने के बटन लगे है तथा सिर पर कलफदार साफा बाँधते है । उनका चेहरा कुछ अधिक चिकना एवम् शरीर कुछ अधिक कसा हुआ है । ताऊजी केवल हुक्म देते है । पूरे परिवार के सद्स्य ताऊजी के इशारे पर चलते है । उनका कोई अपना अस्तित्व नहीं है तथा वे अपने मर्जी के मालिक भी नही है ताऊजी के बेटे भी बड़े धार्मिक बन गये है वे नियमित रूप से मंदिर जाते है । ताऊजीने उन्हें प्रोविजन और जनरल स्टोर पर बिठा दिया है । कुछ साल पहले छोटू कायस्थ लड़की से विवाह करना चाहता था पर ताऊजी ने अपनी मर्जी से उसकी शादी करा दी । ताऊजी को अपनी बहुओं का बिना घूँघट लिये घूमना फिरना अच्छा नही लगता इसलिए उनकी बहुएँ हमेशा घूँघट ओढ़े रहती है । वे अपनी बेटी बिट्टू का विवाह जल्द से जल्द कराना चाहते है जब कि वह अभी छोटी है । ताऊजी जैसा चाहे वैसा ही सदस्यों को खाना-पीना तथा पहनना-ओढ़ना पडता है । इसलिए सारे सदस्य चाय के बजाय दूध या लस्सी पीते है । शरद चाय पीना

चाहता है पर ताऊजी दूध-लस्सी के फायदे और चाय से होनेवाले नुकसान को सुनाते है ।

इसमें अन्धविश्वास साधु महात्मा के प्रति अत्यधिक आस्था के भी दर्शन होते हैं -

''अम्मा महादेव जी के मंदिर में एक बड़े चमत्कारी महात्मा आये है, उन्हीं से लेकर ताबीज बांधी, वैद हकीमों से यह गठिया नही जायेगी ।''[७०]

ताऊजी इस कहानी के नायक है वे जांत-पांत को महत्त्व देनेवाले तथा लड़कियों की स्वतन्त्रता को भी अनुचित मानते है । शरद की बहन हीरा के अविवाहित रहने पर तथा उसके डाक्टर बन जाने पर उनका यह कथन उनकी मानसिकता का ही परिचायक है -

''अब तो हो गयी बड़ी पर पेट में से तो डाक्टर होकर नहीं निकली थी, हमारी तो कुछ समझ में ही नही आता कि रामेश्वर ने यह सारे घर का सिलसिला क्यों बिगाड़ रखा है । लड़कियों को कहीं यो छूट दी जाती है ? लगता है रामेश्वर ने बच्चों की तरफ से आँखे मूँद ली है ।''[७१]

ताऊजी की द्रष्टि दूरदर्शी है वे अपने रहते ऊपर की मंजिल बनवाना चाहते है । ताऊजी घर के कमांडर है । वे अपने तरीके से जीवन जीते है तथा दूसरों को भी जीने के लिए बाध्य करते है ।

ताऊजी अपनी मर्जी के मालिक है । वे बाह्य जगत से अछूत है और अपने बच्चों को भी रखना चाहते है । लेखिका ने ताऊजी को एक कमांडर के रूप में चित्रित किया है ।

(१०) बाबा :-

'संख्या के पार' कहानी के प्रमुख पुरुष पात्र है प्रमिला के

बाबा । यह भावना प्रधान कहानी है । संतान के लिए छिपी ममता का सुन्दर चित्रण लेखिकाने किया है । बाबा के क्रोधित होने पर भी आजी अपनी बेटी को घर आने से नही रोक पाती है । इसी प्रकार आजी की बेटी अपनी पुत्री प्रमिला से मिले बिना नहीं रह पाती । ससुराल से लड़ाई झगड़ा करके, अपने पिता के द्वारा अपमान क्रोध को झेलते हुए भी प्रमिला से मिलने आती है ।

प्रमिला के बाबा अत्यंत क्रोधी स्वभाव के है । उनके क्रोध से सारा शहर थर्राता है । उनकी विधवा बेटी अपनी बच्ची को छोड़कर चली गयी है । इसलिए बाबा अपनी बेटी के नाम से चिढ़ते है । इसकी बच्ची भी परवरिश बाबा और उनकी पत्नी ने की है । जब भी प्रमिला की माँ घर आती है बाबा उससे झगड़ते है और तहलका मचा देते है । वे क्रोध में आकर घरकी सारी चीजें फेकते है चिखते-चिल्लाते है । उसके घर आने पर उसकी टाँगे तोड़ देने की बाते करते है । उसकी पत्नी को दुःख होता है वे उसकी भावनाएँ समझते नही और आजी से कहते है -

''कुछ नही उन लोगों ने कुछ लेने-लिवाने के लिए भेजा होगा । कान खोलकर सुन लो, मैं उसे फूटी कोडी नही दूँगा । प्रमिला पर उसकी छाया भी नही पडने दूँगा ।''[७२] बाबा माँ की ममता को रुपयों से तौलना चाहते है । लेकिन उनकी बेटी ममता के कारण प्रमिला से मिलना चाहती है । पर बाबा उसे मिलने नहीं देते । वे माँ की ममता के मूल्य को समझ नही पाते । बाबा एक ऐसे पुरुष पात्र है जो अपने आदर्शो के लिए बैठे है वे अपनी रुढ़ियों को छोड़ नही सकते ।

'संख्या के पार' में नारी यातना का लेखिका ने चित्रण किया

है । बाबा अपनी बेटी को समझ नही पाते और बेटी का अपमान करते है । बाबा को लगता है कि बेटी पैसों के लिए आती है । इसलिए बाबा उसे दस हजार का चैक देना चाहते है । लेकिन उस चैक को ठुकराकर वह अपनी बेटी प्रमिला को पाँच रुपये देकर चली जाती है । बाबा संकीर्ण विचारवाले है ।

(११) शिंदे बोस :-

'शिंदे' त्रिशंकु कहानी संग्रह की 'स्त्री-सुबोधिनी' कहानी के प्रमुख पात्र है। वह ऐसे पुरुषों का प्रतिनिधित्व करते है जो विवाहित होकर भी किसी अविवाहित नारी की भावनाओं से खिलवाड़ करते है तथा उन्हें धोखा देते है ।

शिंदे आयकर विभाग में अफसर है । वह एक स्त्री से प्रेम का नाटक करता है । शिंदे उस स्त्री को बताते नही कि वह विवाहित है और एक बच्चे का बाप भी है । वह खुशमिजाज और खूबसूरत है । उसकी आँखो की गहराई में कोई भी खो जाए । वे कविताएँ भी लिखते है उसकी कविताएँ पत्र-पत्रिकाओं में छपती भी है और इस क्षेत्र में अच्छा खासा नाम है । जब भी वह स्त्री शिंदे से घर तथा घरवालों के बारे में पूछती है तो वह शायराना अंदाज में तीन-चार शेर दोहराते थे जिनका अर्थ था - ''मेरा न कोई घर है न दर, न कोई अपना न पराया इस जमीन और आसमान के बीच में अकेला हूँ, बिलकुल अकेला ।''[७३]

स्त्री के लिये इस शेर का अर्थ था - हरी झंडी, लाइन क्लयर । स्त्री उस रास्ते पर चलने लगी । लेकिन जब शिंदे विवाहित है ये पता चलता है तो वह टूट गई गुस्से से पागल हो गई तब शिंदे उसे प्यार भरी बातों में उलझाता है, वह रोने लगा और कहता है - ''पिता के दबाव

में आकर की हुई शादी मेरे जीवन की सबसे बड़ी ट्रेजेडी बन गई, बीबी के रहते भी मैं कितना अकेला हूँ दो अजनबियों की तरह एक छत के नीचे रहने की यातना ।''[७४]

शिंदी अपनी चतुराई से उस स्त्री को बहलाने लगा । वह उसे कभी बातों से तो कभी कविताओं से विश्वास दिलाता है -

''मन और शरीर की पवित्र भूमि पर ही असली प्रेम पनपता है । घर की चहार दीवारी के बीच निरंतर होनेवाली खिचखिच में तो वह मरता ही है ।''[७५]

ऐसी बाते करता है कि स्त्री को अब-संदेश न रहा उसे विश्वास था कि एक दिन वह खूँटे से उखड़कर मेरी गिरफ्त में आ जायेगा । शिंदे उसे अपनी जाल में फसाता रहता है । वह अपनी बीवी को नहीं छोड़ता । वह एक ही समय दो नावों में पैर रखना चाहता है । वह कहता है कि शादी के बाद बीवी उबाऊ और बेजान सा रहता है । वह ऐसी बाते करके उस स्त्री को अपनी प्रेमिका बनाये रखता है । कभी कभी बीवी के कर्कश स्वभाव की बातें करते-करते रो पड़ता है । उसे कहता है कि वह बीवी को तलाक देगा । लेकिन तलाक लेने में कभी कानूनी अड़चन तो कभी बूढ़े बाप के सदमें को बताकर बात टाल देता है । वह उसे मिलता रहता है ।

लेकिन धीरे धीरे शिंदे अपनी प्रेमिका से ऊब जाता है और सत्य परिस्थिति से अवगत कराने के हेतु शिंदे उसे अपने घर गृहप्रवेश के दिन बुलाता है । वहाँ उसकी मोटी प्रसन्न पत्नी, बच्चा और आधुनिक ढंग का मकान देखकर वह चली जाती है । इतना सब कुछ होकर भी शिंदे अपने घर-परिवार में खुश है ।

इस प्रकार शिंदे आठ साल तक प्रेमिका से प्रेम का नाटक करता

रहा । उसका फायदा उठाता रहा । और विवाहित होकर भी अविवाहित नारी की भावनाओं से खिलवाड़ करता रहा ।

नारी को खिलौना समझकर खेलनेवाले पुरुषों की निम्न प्रवृति पर मन्नू भंडारीने व्यंग्य किया है ।

(१२) रवि :-

मन्नू भंडारी के 'त्रिशंकु' कहानी संग्रह की 'रेत की दीवार' कहानी का प्रमुख पुरुष पात्र है रवि । वह युवा पीढ़ी का प्रतिनिधित्व करता है, जो बेरोजगारी की समस्या से त्रस्त है तथा घरवालो की इच्छा आकांक्षा की पूर्ति करने में असफल रहता है ।

रवि इंजीनीयरिंग कॉलेज में पढ़ता है । वह इंटर के बाद काम करना चाहता है लेकिन अपने बाबूजी के कारण इजीनियरिंग कॉलेज मे भर्ती होता है । उसके बाबूजी चाहते है कि वह इंजीनियर बने । बाबूजी उसे मन लगाकर पढ़ने की सूचनायें देते है । वे घर या घर के अन्य सदस्यों की कोई खबर नही भेजते । इसी कारण रवि को लगता है कि वह दिन-ब-दिन अपने घर से टूट चला जा रहा है । रवि अपने घर के लिए कुछ कर नही पाता । वह सिर्फ घरकी गिरती हालत देखता रहता है । उसका छोटा भाई टोनी बीमार है, माँ की आँख का ओपरेशन करना है, बहन चंदा को कॉलेज में भर्ती करना है इस प्रकार घर के अन्य सदस्यों की समस्यायें है । घर के अन्य सदस्यों की जरुरत पूरी नही की जा रही है क्योंकि रवि की पढ़ाई जारी है । इससे रवि अपने आप को दोषी मानता है । उससे यह देखा नहीं जाता, फिर भी वह चुम है -

रवि हमेशा अपने बाबूजी से कतराता रहता है । उनसे डरता है वह मनमें सोचता है -

''बाबूजी क्यों नही साफ-साफ उससे कह देते कि रवि, बहुत हुआ अब मेरे बस का नही है कि तुम्हारी पढ़ाई का खर्चा उठाऊँ । मेरे लिए तुम्हारी पढ़ाई से ज्यादा टोनी की जान है । तुम्हारी अम्मा की आँखे है । पर कहना तो दूर वे ऐसा संकेत भी नही करते ।''[७६]

जब भी रवि छुट्टियों मे घर आता है तब अम्मा का व्यवहार उसके प्रति विशेष ही रहता है मा के इस अरिरिक्त दुलार से रविको बेचैनी होती है । रवि जानता है कि आज सैकडो इंजीनियर्स मारे मारे फिरते है । मैरिट को कोई नही पूछता सिर्फ पैसा चाहिए । बाबूजी के सपनों के आगे रवि विवश हो जाता है । लेकिन रवि जिस दौर से गुजरता है वह सिर्फ वही जानता है । वह अपने आप को घरवालों के सदस्यो के बीच टूटता हुआ महेसूस करता है । वह घरवालों के एहसानों के नीचे दब गया है । बेरोजगारी की समस्या से त्रस्त नवयुवक रवि को चित्रित करने में लेखिका सफल हुई है ।

(१३) बाबूजी :-

बाबूजी 'रेत की दीवार' कहानी के ओर एक प्रमुख पुरुष पात्र है । वे रवि के पिता है । बाबूजी ऐसे पिताओं का प्रतिनिधित्व करते है जो अपने बेटे की शिक्षा द्वारा भविष्य के महल की आशा करते है । इस कहानी का हर पात्र आर्थिक संकट के कारण अपने आप से लड़ता अपने आप से टूटता है । बाबूजी घर की अन्य आवश्यकताओं को नजर अन्दाज करके उसे पढ़ाते है । रवि किसी समारंभ मे न जाना चाहे तो बाबूजी उस पर जोर-जबरदस्ती नही करते सिर्फ कहते है -

''यों अगर बिल्कुल इच्छा न हो तो रहने दो । मैं कुछ न कुछ कहकर बात संभाल ही लूंगा, तुम्हारी अपनी इच्छा की बात है ।''[७७]

बाबूजी रवि को इंजीनियर बनाना चाहते है तो कोई भी जिम्मेदारी

रवि पर लादना नही चाहते । उसे घर के अन्य सदस्यों की कोई चिंता नही । रवि का छोटा भाई बीमार है लेकिन बाबूजी उसका डॉक्टरों से इलाज नहीं करवाते उसकी थोड़ी-बहुत दवाइयों का खर्चा पूरा करने वो दुकान में हिसाब लिखने का काम करते है । और चंदा की अगली पढ़ाई तथा अपनी पत्नी का आँख का आपरेशन भी अगले साल करनेका निश्चय किया है क्योंकि रवि पढ़ाई कर रहा है । उसे इंजीनियर इसलिए बनाना है ताकि घर की हालत सुधर सके । गाँववाले बाबूजी की तारीफ करते है क्योंकि वे अपनी आधी तनख्वाह अपने बेटे की पढ़ाई पर खर्च कर रहे है । रवि इंजीनियरींग का पढ़ रहा है इस बात का उन्हे गर्व है । उन्हें रवि पर पूरा विश्वास है इसलिए वे गाँववालों से कहते है -

''रवि इंजीनियर हो जाए तो मन में मलाल नही रह जायेगा कि हमने अपना कर्तव्य नही किया बच्चे के प्रति । मा-बाप का असली सुख तो बच्चों के सुख में ही होता है ।''[७८]

बाबूजी का अपने बेटे के प्रति इस तरह का स्वप्न देखना व्यर्थ है । अगर रवि इंजीनियर नही बन पाता तो क्या बाबूजी इसे बर्दास्त कर पायेंगे ? बाबूजी के ख्वाब 'रेत की दीवार' जैसे है जो कभी भी ठह सकते है । पारिवारिक प्रेम की नई सच्चाईयों को मन्नू भंडारीने बड़े साहस के साथ अपनी कहानी में प्रस्तुत किया है । और बाबूजी को यथार्थ रूप में चित्रित किया है ।

(१४) राखाल :-

राखाल 'त्रिशंकु' कहानी संग्रह की 'शायद' कहानी के प्रमुख पात्र है । वह ऐसे पुरुषों का प्रतिनिधित्य करता है जो अर्थाजन के हेतु घर से बाहर रहते है तथा अपने ही घर में पराये हो जाते है । राखाल

जहाज पर मकेनिक है । वह साल में एक महीना छुट्टियों पर घर आता है । इसलिए घरमें घटनेवाली घटनाओ से वह अंजान रहता है । जब वह पिछले साल आया था तब उसकी पत्नी माला गर्भवती थी । उसके बाद बुलबुलका जन्म हुआ और वह बीमारी के कारण चल बसी लेखिन राखाल को कोई दुःख नही । उसके तीन बच्चे है । बड़ी लड़की रीना तेरह साल की है और माला को उसकी शादी की चिंता है लेकिन राखाल की कोई चिंता नही । राखाल का बेटा बच्चू दिनभर ऊधम मचाता है, तो छोटु राखाल को पहचानता तक नहीं । राखाल खुशी से घर लौट कर आया है लेकिन माला घर की समस्यायें लेकर उसके सामने रोती है । जिससे राखाल ऊब जाता है । राखाल की अनुपस्थिति में शंकर माला को आर्थिक मदद करता है । राखाल का छोटा बेटा भी हमेशा शंकर के पास ही रहता है । माला राखाल से ज्यादा शंकर, पिशी माँ, कपूर साहब को महत्त्व देती है । इसलिए राखाल शंकर से नफरत करता है । माला हमेशा उसे शंकर का कर्ज चुकाने के लिये कहती है जिससे राखाल अपने आप को अधिक टूटता हुआ महसूस करता है । राखाल अपने बच्चो को पढ़ाना चाहता है । रीना के लिए माला जो लड़का पसन्द करती है उसे राखाल नकारता है क्योंकि वह रीना को पढ़ाना चाहता है इस सब बातों से राखाल का आत्मविश्वास जागता है वह कहता है - ''यह मेरा घर है - इसमें मेरी इच्छा के खिलाफ कुछ नही हो सकता ।''[७९]

राखाल माला पर निर्भर रहना नही चाहता । वह अपने बलबुते पर बच्चों का निर्वाह करना चाहता है । माला पैसों का ही रोना रोती है । तीन बच्चों का पेट भरना दुनियादारी निभाना इस प्रकार अपनी तकलीफों को ही दोहराती रहती है, राखाल सोचा है कि -

''अच्छा होता, वह राखाल न होकर ब्लाटिंग पेपर होता, जो माला के सारे दुखो को सोख लेता ।''[८०]

२. व्यक्तित्वप्रधान पात्र :-

(१) निखिल :-

'निखिल' 'गीत का चुबन' कहानी का प्रमुख पुरुष पात्र है । वो कवि है । उसका परिचय एक समारोह में कनिका से होता है । कनिका उसके गीत गाती है । निखिल उसके लिये नये गीतों का सृजन करता है । दोनों निकट आ जाते है । निखिल और कनिका स्त्री-पुरुष के सम्बन्धों पर चर्चा करते है । कनिका विवाह पूर्व स्त्री-पुरुष सम्बन्ध अनैतिक मानती है जबकि निखिल विवाह पूर्व स्त्री-पुरुष सम्बन्ध को नैतिक मानता है । निखिल स्वच्छंदी युवक है । निखिल कनिका से प्रभावित हुआ है । एकबार कनिका को अपनी बाहो में भरकर चूम लेता है । उसके व्यवहार से कनिका उसे चाँटा मारती है । निखिल लज्जित होकर चला जाता है । निखिल के चले जाने से कनिका अकेलापन महसूस करती है । निखिल कनिका को पत्र लिखता है - ''अपने उस दिन के व्यवहार से मै बेहद लज्जित हूँ । आज तक मै जितनी भी लड़कियों के सम्पर्क में आया हूँ सबने मेरी ऐसी हरकतों का स्वागत किया है । ऐसी हरकत करने के लिये प्रेरित किया है । तुम ऐसी वैसी लड़की नही हो । साधारण लड़कियों से भिन्न हो, उनसे उच्च, उनसे श्रेष्ठ ।''[८१]

निखिल स्वछंदी पात्र है अनेक स्त्रियों से सम्बन्ध रखता है । वह पअने कवित्व के माध्यम से कनिका को फसा लेता है ।

मन्नू भंडारी ने निखिल को एक स्वच्छंदी युवक के रुप में प्रस्तुत किया है ।

(२) ललित :-

मन्नू भंडारी की 'एक कमज़ोर लड़की की कहानी' कहानी का प्रमुख पुरुष पात्र है ललित । ललित का रूप से प्रथम परिचय मामा मामी के घर होता है । ललित अनाथ लड़का है । वह दोनों घुलमिल जाते है । ललित उच्च शिक्षा के लिये विदेश जाना चाहता है । वे दोनों के बिदाई के समय व्यथित हो जाते है । ललित के चले जाने के बाद रूप का विवाह वकील साहब से हो जाता है । जब ललित विदेश से वापस आता है तो रूप से मिलने जाता है । रूप की आँखे भर आती है ललित कहता है -

''आँखो के बारे में जो नवीन खोजे हुई है उसका तुम्हे पता है ? एकाएक दिल पर चोट लगने से आँखो से पानी बहने लगता है - आँखो का सम्बन्ध हृदय से होता है मेरे आने से तुम्हारे हृदय को भी कही ... ।''[८२]

ललित उसके दिल में अपने प्रति प्रेम फिरसे जागृत करता है ललित उसे अपने साथ भाग चलने के लिए कहता है लेकिन परम्परागत संस्कार के कारण रूप तैयार नही होती, ललित को इस सब बातों में विश्वास नही होता एक सप्ताह तक ललित रूप को भाग जाने के लिए उत्साहित करता है -

''समझ से काम ले रूप । यह जिन्दगी यों ही मिट्टी में मिला देने की वस्तु नही । फिर तेरे मनकी हालत मैं तुझसे अधिक जानता हूँ, क्यो व्यर्थ में अपने को झुठलाने की कोशिश कर रही है । मेरी बात मान जा ।''[८३]

ललित की बातो से रूप भाग जाने के लिए तैयार होती है, लेकिन उसी रात वकील साहब अपने मित्र की पत्नी के भाग जाने का समाचार

देते है और रूप को कहते है रूपने आजतक किसी अन्य पुरुष की ओर आँख उठाकर भी नहीं देखा । परिणाम स्वरुप रूप भाग नही सकती । ललित अपनी प्रेमिका को नही पा सकता ।

(३) कैलाश :-

'कैलाश' 'कल और कसक' कहानी का पुरुष पात्र है । वह काला है । उसकी पत्नीका नाम रानी है । वह रात-दिन प्रेस में काम करता है । मशीनों के बीच रहकर स्वयं एक मशीन बन जाता है । उसके मन में न कोई भावना है - न ही रस । उसी रानी में दिलचस्पी नही । वह रानी की अपेक्षा करता है । कैलाश की बेरूखी के कारण रानी अनायास शेखर की ओर आकर्षित होती है । जब शेखर का विवाह हो जाता है तो रानी उसकी पत्नी से लड़ती-झगड़ती है । रानी के व्यवहार से तंग आकर कैलाश अपना मकान बदलना चाहता है लेकिन रानी इस बात से सहमत नही है । अंत में कैलाश रानी को लेकर नये मकान में रहने चला जाता है । कैलाश पति वर्ग का प्रतिनिधित्व करता है । हमेशा अर्थ के लिए जुटा हुआ यह व्यक्ति घर की ओर से अपेक्षित हो जाता है । अंत मे वह दुःखी बन जाता है ।

(४) हरीश :-

हरीश 'तीन निगाहो की एक तस्वीर' कहानी का प्रमुख पात्र है । वह लेखक है । अविवाहित है, आर्थिक अभाव के कारण दर्शना ने एक कमरा किराये पर दे रखा है । दर्शना का पति बिमार है । जब भी हरीश खाली बैठता है, दर्शना उसके पास आकर बैठती है । हरीश दर्शना को भाभी कहता है लेकिन परिस्थितिवश तनमन से प्यासी दर्शना हरीश की ओर आकर्षित होती है । दिन-ब-दिन पतिकी हालत गिरती

जाती है तब दर्शना रोती है, हरीश सोचता है कि - ''एक बार उचित अनुचित का ज्ञान भूलकर बडी जोर से इच्छा हुई कि इस रोती, बेबस नारी को जाकर अपनी बाहों में भर लूँ, अपने लिए नही, उसके संतोष के लिए, उसकी सांत्वना के लिए, लेकिन फिर ख्याल आया, इस आग को जलाने से लाभ ।''[८४]

दर्शना एक बार अपना सिर हरीश के सीने पर टिका देती है तब उसे हटाकर हौसला बंधाता है । वह हरीश से कुछ ओर चाहती है पर हरीश जानकर भी अंजान बना रहता है । दर्शना का हरीश के प्रति बढता लगाव देखकर दर्शना का पति उसे पीटता है और घर से बाहर निकाल देता है । हरीश दर्शना पर कहानी लिखता है उसमे दर्शना का मनोवैज्ञानिक विश्लेषण कर उसे उदात्त बनाने की कोशिश करता है । हरीश का व्यक्तितत्व आकर्षक है युवा मनोवृत्ति का चित्रण हरीश के माध्यम से लेखिकाने किया है ।

(५) शिवनाथ :-

शिवनाथ 'अनचाही गहराईयाँ' कहानी का पुरुष पात्र है वह गरीब लड़का है । वह सुनंदा से हिन्दी और इतिहास पढ़ता है । वह सप्ताह में तीन दिन पढ़ने आता है । लेकिन बाद में रोज आने लगता है । उसका रोज आना सुनंदा को पसंद नही । सुनंदा शिवनाथ को कभी पैसा तो कभी टयुशन दिलवाती है । सुनंदा जब उसे पढ़ाने से इन्कार करती है तो वह निराश हो जाता है । शिवनाथ के घर की स्थिति अच्छी नही उसके बाप को लकवा है माँ देख नही पाती और दो छोटी बहने और तीन भाई है । इन सभी की जिम्मेदारी शिवनाथ पर है । शिवनाथ किसी न किसी बहाने सुनंदा से नोट्स मांगता है । एक बार सुनंदा पढ़ाने से इन्कार करती है तब शिवनाथ उसे पत्र लिखता

है कि सुनंदा का स्नेह उसे बार-बार उसे घर की तरफ खींच कर ले आता है तथा यह स्नेह और विश्वास छिन्न जाने से शायद वह जिंदा नही रह सकता । लेकिन सुनंदा उसका पत्र पढ़कर नाराज हो जाती है । एकबार सुनंदा को बुखार आता है तब शिवनाथ हर रोज उसका हाल पूछता है । एक दिन वह सुनंदा के कमरे में प्रवेश करता है उसी वक्त सुनंदा की भाभी वहाँ आती है और शिवनाथ को सुनंदा पर झुका हुआ देखती है । इस घटना के बाद भैया-भाभी शिवनाथ को घर आने नही देते । और सुनंदा भी क्रोधित हो जाती है । शिवनाथ अपनी कुछ कठिनाईयाँ हल करने के हेतु एक किताब सुनंदा को देता है जिसमें एक प्रेमपत्र है । जिसे पढ़कर सुनंदा क्रोधित होकर शिवनाथ के गाल पर तमाचे मार देती है । शिवनाथ आत्महत्या कर लेता है । बाद में सुनंदा को पता चलता है कि प्रेमपत्र शिवनाथ का न होकर किसी और लड़के का था । शिवनाथ का आत्महत्या से सुनंदा व्यथित हो जाती है वह अपने आपको हत्यारिन समझने लगती है ।

मन्नू भंडारीने शिवनाथ के माध्यम से भावुक संवेदनशील व्यक्ति का चित्रण किया है । शिवनाथ का चित्र पाठक के हृदय तक पहुँचाने में लेखिका सफल हुई है ।

(६) शेखर :-

शेखर 'हार' कहानी का पुरुष पात्र है । वह राजनीतिक पार्टी का सदस्य है । उसका विवाह दीपा से होता है वह विरोधी पार्टी की सदस्या है । पार्टीवाले इनके दाम्पत्य सम्बन्ध के बारे में आशंकित है लेकिन विवाह के बाद दोनों अपनी-अपनी पार्टियों का काम करते है । पार्टी की गुप्त बाते कभी भी एक दूसरे को बताते नहीं । चुनाव आता है शेखर और दीपा एक-दूसरे के विरोध में खड़े रहते है

चुनाव में शेखर खड़ा है यह जानकर दीपा पहले निराश हो जाती है लेकिन शेखर कहता है -

''बीसवीं सदी के हर पढ़े-लिखे स्त्री-पुरुष को इस बात की पूरी स्वतंत्रता है कि वह अपने निजी विचार रखे और उनको अमल मे लाने के लिए तहे दिल से कोशिश करे ।''[८५]

चुनाव में दोनों के तनाव बढ़ जाते है । दीपा शेखर के खिलाफ भाषण देती है । उसकी धज्जियाँ उड़ाती है । लेकिन शेखर अपने काम में व्यस्त है । दीपा अपने सारे गहने पार्टी के लिए लुखा देती है फिर भी शेखर चुप रहता है । एकबार वह शेखर की बात सुनती है वह अपने मित्र से कहता है -

''मेरी जीत की संभावना ही मुझे खिन्न बनाये दे रही है सोचता हुँ मै हार भी गया तो उस लज्जा को सह लूगा । पुरुष हूँ और सहने का आदी । पर जीत गया तो दीपा का क्या होगा । तुम देखते हो पगली हो गयी है उसके पीछे । वह हार का धक्का बर्दाशत नहीं कर सकेगी और सच पूछो तो इसलिए मैं चाहता हूँ कि मैं हार जाऊँ ।''[८६]

शेखर की इन बातों से दीपा इतनी अस्वस्थ हो जाती है कि सुबह विक्षिप्तावस्या में अपना वोट पति की पेटी में डाल देती है । नारी पुरुष पर हावी होना चाहती है पर पुरुष अपने वाक्चातुर्य द्वारा अपने उदेश्य में सफल होता है ।

(७) दिलीप :-

मि. वर्मा 'चश्मे' कहानी के प्रमुख पुरुष पात्र है । वे अपनी बीमार प्रेमिका को त्याग कर किसी ओर से विवाह कर लेते है । उसकी अंतर्पीड़ा का मन्नू भंडारी ने चित्रण किया है । मि. वर्मा अपने

जीवन में सुखी है उसकी पत्नी साहित्यप्रेमी है कहानी लिखती है और वर्मा को सुनाती है । वर्मा सुनते-सुनते अपने अतीत मे खो जाते है । वह कहानी उसे अपने अतीत की कहानी लगती है ।

निर्मल वर्मा शैल से प्यार करते थे । लेकिन निर्मल को चिकनपॉक्स निकला था इस बीमारी में शैल उसकी देखभाल करती है । परिणाम स्वरुप वह बीमार हो जाती है उसे टी.बी. हो गया । और निर्मल अच्छा हो गया । शुरु में निर्मल शैल की देखभाल करता है लेकिन बाद में उसका मन आट जाता है । बीमार शैल में न कोई सौन्दर्य है और न कोई आकर्षण । धीरे-धीरे शैल के प्रति उनका लगाव कम होता गया । शैल निर्मल को पहचान गई । वह शैल से दूर जाने के लिए ट्रेनिंग का बहाना बनाता है । शैल के पिता निर्मल को खत लिखते है कि अगर शैल की शादी हूई तो वह बच सकती है ऐसा डॉक्टरों का कहना है लेकिन निर्मल अपनी धुन में मगन है । वह कुछ नहीं करता । परिणाम स्वरुप शैल की मृत्यु हो जाती है । जिससे निर्मल को दुःख होता है वह उस घटना को भूल नही पाता और अतीत की यह घटना वर्तमान मे भी मि. वर्मा को व्यथित करती है वह चिल्लाते है - ''मै कहता हूँ मेरा चशमा दो, नही तो मेरा दम घुट जायेगा ।''[८७]

मन्नू भंडारीने इस पात्र मे उसकी अंतर्पीडाओ को चित्रित किया है । व्यक्ति कितना भी क्यों न चाहे वह अपनी बीती हुयी जिंदगी से नाता तोड़ नही सकता क्योंकि अतीत के पार्श्व पर ही भविष्य की मंजिल खडी होती है ।

(८) सतीश :-

सतीश 'तीसरा आदमी' कहानी का पुरुष पात्र है । प्रस्तुत कहानी

में मन्नू भंडारी ने पुरुषों के मानसिक अंतर्द्वन्द्व का चित्रण किया है । सतीश और उसकी पत्नी शकुन अपने दाम्पत्य जीवन मे सुखी है । विवाह की तीन साल बाद भी संतान प्राप्ति न होती है इसी कारण शकुन अपनी डॉक्टरी जाँच करवा लेती है लेकिन सतीश मे अपनी डॉक्टरी जाँच करवाने कि हिम्मत नही होती सतीश अपने आप को नपुंसक समझने लगता है । उसके मन में भी यह विचार आता है कि शायद शकुन भी उसे नामर्द समझती है ।

सतीश शकुन के काम मे हाथ बटाने के हेतु अपनी माँ को घर बुलाना चाहता है लेकिन शकुन को तीसरे आदमी की उपस्थिति असहय हो जाती है वह मना करती है । वह सतीश के बिना अलग नही रहना चाहती । लेकिन अब यही शकुन सतीश की बाँहो मे जाने से कतराती है उससे मुँह फेरकर सोती है । जिससे सतीश अपमानित होता है । सतीश सोचता है -

''वह कभी शकुन को माँ नही बना सकता है तो ? क्या वह शकुन की इस इच्छा को पूरी करने में सहायक हो सकता है ? क्या वह अपनी इस दुर्बलता के सामने घुटने टेककर ऐसी तटस्थ उदारता ला सकता है, क्या वह उस बच्चे को स्वीकार कर सकेगा ?''[८८]

यह सतीश की पौरुषहीनता ग्रंथि का चरमसीमा है । शकुन का परिचित आलोक तीसरा-आदमी बनकर उन दोनों के बीच उपस्थित होता है । आलोक लेखक है, शकुन और उसके बीच पत्र-व्यवहार चलता रहता है । इसलिए सतीश परेशान है । वह शकुन के बारे में क्या-क्या सोचने लगता है । सतीश ऑफिस से आधे दिन की छुट्टी लेकर घर लौट आता है पर घर का दरवाजा बंद देखकर वह क्रोधित हो जाता है वह शकुन और आलोक को रंगे हाथ पकड़ना चाहता है

पर दरवाजा खटखटाने का साहस नहीं कर पाता -

''वह सचमुच पौरुषहीन है । कोई मर्द बच्चा होता तो दो लात मारता दरवाजे को और झोंटा पकड़कर बाहर कर देता शकुन को और दो झापड़ मारता उस लफंगे को ।''[८६]

सतीश की हीन-भावना उसे विचलित कर देती है तथा अर्थ का अनर्थ सोचने को मजबूर कर देती है । वह शकुन पर संदेह करता है । सतीश का मनोविश्लेषणात्मक चरित्र लेखिका ने प्रस्तुत किया है ।

(९) निशीथ :-

'यही सच है' कहानी का प्रमुख पुरुष पात्र है निशीथ । मन्नू भंडारी ने निशीथ के द्वारा प्रेम के संयम को बताया है निशीथ दीपा से प्रेम करता है । वह दीपा के साथ घूमता है । धीपा से वह कहता है -

''आत्मीयता के ये क्षण अनकहे ही रहने दे दीपा'', निशीथ दीपा की सुन्दरता की प्रशंसा करता है वह दोनों घरों साथ बैठते है लेकिन किसी कारण वश उन दोनों में अनबन हो जाती है जिसके कारण निशीथ कलकता चला जाता है । और दीपा कानपुर में अपना शोधकार्य करने लगती है । दीपा के चले जाने के बाद निशीथ बहुत बदल जाता है । वह दुबला हो गया है उसने शादी नही की फिर एक बार दीपा उसे कलकत्ते मे मिलती है । निशीथ उसे मदद करता है फिर दीपा उसकी ओर आकर्षित होती है । निशीथ कभी किसी का एहसान नही लेता लेकिन दीपा की खातिर अनेक लोगों से मिलता है और दीपा को मदद करता है । दीपा निशीथ से एकरुप होना चाहती है पर निशीथ उससे दूर ही रहता है ।

दीपा के कानपुर पहुँचने पर निशीथ उसे पत्र लिखता है उसमे

अन्त में लिखता है 'शेष फिर' उसके इस व्यवहार से दीपा नाराज होती है । निशीथ पत्र में भी अपनी भावनायें व्यक्त नही कर पाता । जब दीपा से मिलता है तब भी वह मौन ही रहता है । काश वह पत्र में अपना प्रेम व्यक्त कर पाता तो दीपा संजय को छोड़कर निशीथ को अपनाती । लेकिन निशीथ ऐसा नही करता जिससे दीपा फिर एक बार नये सिरे से संजय को चाहने लगती है। निशीथ दीपा के मामले में अन्त तक मौन ही रहता है । वह दीपा को बताता नही ।

(१०) कुंदन :-

कुंदन 'नई नौकरी' कहानी का प्रमुख पुरुष पात्र है । उसकी पत्नी रमा इतिहास की प्राध्यापिका है वह अपने जीवन से सुखी है कुंदन को डॉ. फिशर के द्वारा नई नौकरी मिलती है । उसके बाद कुंदन का व्यक्तित्व बदल जाता है इसलिए रमा को लगता है - ''नई नौकरी के साथ कुंदन की सारी पर्सनालिटी ही नहीं बात करने का लहजा तक बदल गया है । कितना आत्मविश्वास आ गया है सारे व्यक्तित्व में ! शेब जैसे टपका पड़ता है ।''[६०]

कुंदन को कंपनी का फ्लैट मिलता है । उसे सजाने की जिम्मेदारी वह रमा को सौंपता है । घर काम मे व्यस्त रमा को अपना लेक्चर तैयार करने का टाईम (समय) नही मिलता । लेकिन कुंदन को उसकी चिन्ता नही है । वह तो अपनी धुन मे मगन है । वह उसे रात देर तक अपने साथ पार्टी में रखता है । मेहमानों की आवभगत करना, डेकोरेशन करना इन्ही कामो मे रमा खो जाती है । कुंदन अपने स्वार्थ के लिए उसकी नौकरी भी छुडा देता है । परिणाम स्वरुप रमाका व्यक्तित्व एवं अस्तित्व मिट जाता है । रमा कॉलेज पर अपनी सहेलियों के लिए लंच ले जाना चाहती है लेकिन कुंदन मना करता

है । वही कुंदन अपने मेहमानों के लिए लंच बनाने का रमा को आदेश देता है इस प्रकार रमा का व्यक्तित्व पूरी तरह मिट जाता है जहाँ नई नौकरी के कारण कुंदन का व्यक्तित्व और अधिक निखर आया है । कुंदन रमा को अपने जीवन में 'शो-पीस' बनाकार रखता है ।

मन्नू भंडारीने कुंदन को यथार्थ रुप में चित्रित किया है ।

(११) विपिन :-

मन्नू भंडारी की 'बंद दराजों का साथ' कहानी का प्रमुख पुरुष पात्र है विपिन । विपिन विवाहित पुरुष है । उसकी पत्नी मंजरी प्राध्यापिका है । विपिन अपने दाम्पत्य जीवन में सुखी नही है वह पत्नी के अलावा किसी और से प्रेम करता है । वह पत्नी का विश्वास तोड देता है । वह पत्नी से अपने रहस्यों को दूर रखता है और उससे प्यार का नाटक करता है । लेकिन एक दिन राज खुलता है कि विपिन का पहले एक विवाह हो चुका है तथा उसे एक बच्चा भी है । यह बात जानकर मंजरी टूट जाती है । विपिन और मंजरी अलग हो जाते है । मंजरी तथा उसके आनेवाले बच्चे के प्रति विपिन के मन में कोई लगाव नहीं रहता । वह कहता है - "मैं दिल्ली छोड़ दूँगा । इसके बाद मुझसे यहाँ रहा नहीं जायेगा । तुम शायद यहीं लौटकर आना पसन्द करोगी इस घर को अपने नमा ही रहने दो ।"[६१]

विपिन मंजरी से संबंध तोडकर अपने गत जीवन से जुड़ना चाहता है । उसके मन में मंजरी के प्रति लगाव नही वह दूसरी महिला के साथ जीवन बीताता है ।

मन्नू भंडारीने पुरुष की भ्रमरवृति से नारी पर होनेवाले अत्याचार को विपिन के माध्यम से व्यक्त किया है यह ऐसा पात्र है जो अपनी पत्नी से छलता है जिसका उसे तनिक भी पश्चाताप नही होता ।

(१२) दिलीप :-

यह 'बंद दराजो का साथ' कहानी का दूसरा पुरुष पात्र है । विपिन से अलग होने के बाद तथा अपने बेटे असित को होस्टेल भेजने का बाद मंजरी अकेली हो जाती है । इसी दौरान मंजरी का दूसरा पति है । मंजरी लोकनिन्दा के कारण नौकरी छोड़ देती है । जब आसित छुट्टियों में घर आता है दिलीप उससे खुश नही होता । मंजरी दिलीप के ऑफिस जाने के बाद असित को लेकर घूमने निकलती है । छुट्टियाँ समाप्त होने पर असित लौटने लगता है उसी दौरान स्कूल से बिल आता है लेकिन दिलीप फीस देने से इन्कार कर देता है कहता है -

''यह स्कूल काफी महंगा है, इस महीने यों भी काफी खर्च हो गया । क्या जमाना आ गया है, हम इतना पढ़ लिये है पर ऐसी लम्बी चौड़ी फीस नही दी ।''[६२] तब मंजरी सोचती है उसने नौकरी क्यों छोड़ दी ? और मंजरी और विपिन में दरार पड़ती है । दिलीप के कारण मंजरी की जिन्दगी दो टुकड़े में बँट जाती है एक दिलीप के साथ और दूसरी बेटे असित के साथ । विपिन की तरह दिलीप भी मंजरी को संतुष्ट नही कर पाता ।

(१३) कुंज :-

कुंज 'एक बार और' कहानी का प्रमुख पुरुष पात्र है । बिन्नी कुंज की प्रेमिका है । बिन्नी दर्शनशास्त्र की प्राध्यापिका है । नैनीताल में दोनों पति पत्नी बनकर होटल में रह चुके है । कुंज बिन्नी से शादी करके नयी जिन्दगी की शुरुआत करने की बात करता है । लेकिन कुंज मधु से शादी करता है और बिन्नी के साथ सम्बन्ध बनाये रखता है । जब बिन्नी इस सम्बन्ध को तोड़ना चाहती है तो कुंज प्यार भरी

बातें करता है -

''बिन्नी शादी मुझे इतना संकीर्ण नही बना सकेगी कि मै अपने और सारे सम्बन्धों को झुठला ही दूँ । शादी अपनी जगह रहेगी और मेरा तुम्हारा सम्बन्ध अपनी जगह ।[६३]

कुंज ने शादी मधु से की और बिन्नी को अकेली जीने के लिए छोड़ दिया । वह बिन्नी से दूर जाना चाहता है । इसलिए जान बुझकर ड्रेसिंग-टेबल पर मधू का पत्र छोड़ देता है । वह बिन्नी को छोड़ने को तैयार नही और अपनी पत्नी कारण उसे छोड़ने पर मजबूर होता है वह कहता है -

''तुम शादी कर लो बिन्नी । मेरी दुर्बलता की कीमत आखिर तुम क्यों चुकाओ - मुझे लगता है कि जब तक मै निर्ममता से अपने को काट नही लेता तुम किसी और दिशा में सोचोगी ही नही । इस बार मुझे कुछ निर्णय ले ही लेना चाहिए ।''[६४]

कुंज बिन्नी से अलग होना चाहता है । बिन्नी भी समझ जाती है कि वह पुराने प्रेम सम्बन्ध नही रहे और वह कुंज से दूर जाने का निर्णय लेती है । जिससे कुंज मन ही मन खुश होता है । कुंज स्वार्थी है वह अपनी पत्नी तथा प्रेमिका से भी प्रेम-सम्बनध बनाये रखना चाहता है । लेकिन आखिर प्रेमिका को त्याग देता है । कुंज प्रेम को मात्र वस्तु माननेवाला नीचवृत्ति का पात्र है । ऐसे पात्र का निर्माण करके लेखिका ने अपने सशक्त वास्तववादी द्रष्टिकोण का परिचय दिया है ।

(१४) शिशिर :-

'शिशिर' 'ऊँचाई' कहानी का प्रमुख पुरुष पात्र है । शिशिर की शादी शिवानी से हो गई है । वह अपने दाम्पत्य जीवन से सुखी है ।

लेकिन अचानक एक दिन दरार पड़ जाती है । शिशिर को एक पत्र द्वारा मालूम होता है कि शिवानी अपने प्रेमी से शरीर सम्बन्ध कर आयी है । शिशिर पत्नी के गैर व्यवहार से अत्यंत दुखी हो जाता है । वह शिवानी से अलग होना चाहता है । दोनों सुखी थे फिर भी पत्नी अपने प्रेमी से शरीर सम्बन्ध कर आयी इस बात से उसे आश्चर्य होता है शिवानी ने उसका विश्वास तोड़ दिया । इसलिए वह कहता है -

''अपनी छोटी से छोटी बात को भी निर्द्वंद्व भाव से मुझसे कह देने को आतुर तुम, इतनी आगे बढ़ गई और मैं जान भी नहीं पाया ।''[६५]

शिवानी कहती है कि उसने विश्वासघात नहीं किया । लेकिन शिशिर उसकी बातों पर विश्वास नही करता । वह उससे अलग होना चाहता है । शिवानी भी कहती है अगर उनके सम्बन्धों का आधार इतना छिछला तथा कमजोर है तो ऐसे सम्बन्धों का टूट जाना ही बेहतर है ।

शिशिर पत्नी का क्षणिक भावुकता मे नही बल्कि जानबुझकर पर पुरुष से शरीर सम्बन्ध कर लेना भी सहन कर लेता है क्योंकि उसके चरित्र की विशेषता है कि वह चाहता है कि सिर्फ एकबार उसकी पत्नी अपनी गलती मान ले । पर पुरुष के स्पर्श मात्र से नारी अपवित्र हो जाती है इस पयकार की संकीर्णता उसमे नही है । फिर भी वह चाहता है कि जो कुछ हुआ है उसके लिए शिवानी प्रायश्चित करे । शिवानी कहती है कि उसने शिशिर को मन की उस ऊचाईं पर बिठा रखा है जहाँ कोई नहीं आ सकता । इन बातो से शिशिर सुलह कर लेता है और शिवानी को अपनाता है । एक समझौता वादी पति के रूप में शिशिर को चित्रित किया है ।

(१५) नरेन :-

नरेन 'त्रिशंकु' कहानी संग्रह की 'आते जाते याचावर' कहानी का प्रमुख पुरुष पात्र है । नरेन अभिनय द्वारा नारी को छलता है । उसका परिचय मिताली से एक दावत में होता है । वह उसके साथ नाटकीय अंदाज से बाते करता है । नरेश अपनी अमेरिकन पत्नी से विच्छेद कर भारत आया है । वह अपनी महत्त्वकाक्षाएँ और अपनी चायावर वृत्ति के बारे में कहता है -

''लगता है मेरे भीतर एक जिप्सी बैठा है, जो मुझे घुमाता है । पिछले सात साल से मै केवल घूम रहा हूँ भटक रहा हूँ, नये-नये स्थान, नये-नये लोग । पता नही कहां जाकर अंत होगा ।

नरेन मिताली को अपनी जिंदगी के बारे मे सब कुछ बताता है ताकि वह मिताली को अपने वश मे ले सके । लेकिन वह उसमे कामयाब नही होता क्योंकि मिताली अपने कॉलेज जीवन में एक सहपाठी से छली जा चुकी ह । एक पल वह नरेश की ओर आकर्षित होती है लेकिन दूसरे ही पल वह अपने आप को संभाल लेती है ।

मन्नू भंडारी ने नरेश जैसे भ्रमरवृत्तिवालों पर गहरा प्रहार किया है यह पात्र अपने अभिनय निपुणता के बल पर स्त्री को वशीभूत करना चाहता है पर कामयाब नही होता । वह जीवन मे कभी सुखी नही हो सकता क्योंकि वह भटनक वृतिवाला है । वह जाते समय मिताली से कहता है -

''इस आते-जाते चायावर का नमस्कार ।''[९६]

(१६) शेरा बाबू :-

शेरा बाबू 'तीसरा हिस्सा' कहानी का प्रमुख पुरुष पात्र है । उसका व्यक्तित्व खंडित है । वह संपादक है उसकी पत्रिका कर्मभूमि है । वे

अपनी पत्रिका के माध्यम से भ्रष्टाचार को जड़ से उखाडना चाहते है लेकिन उसमें असफल रहते है । वह अपने सिद्धांतो के अनुसार राजनीति नेताओं की पोल खोलना चाहते है । परिणाम स्वरुप उनकी पत्रिका ठप्प हो जाती है । शेराबाबू स्वाभिमान से जीना चाहते है वह नौकरी करने के लिए विवश हो जाते है लेकिन अधिक दिनों तक वे नौकरी नही कर पाते । कमऊ बीबी उसकी उपेक्षा करती है, बेटा सुधीर भी उनका अपमान करता है, उन्हें हर तरह से लाचारी सहनी पड़ती है । यहाँ तक कि जोरु का गुलाम भी बनना पड़ता है । उन्हें बीबी के आदेशानुसार रोटी सेकनी पड़ती है, घर को ठीक-ठाक करना पड़ता है । वे सोचते है अगर एक बार उनकी पत्रिका फिर से जम गयी तो बीबी से नौकरी छुड़वा देंगे । इसी आशा में वह हर शाम लाइब्रेरी जाते है । वहाँ एक साप्ताहिक मे जनता पार्टी के मंत्रियों की तस्वीरें, उनकी जीवनियाँ, इटरव्यूज, प्रशंसा आदि को पढ़कर वे बुरी तरह बौखला जाते है और आवेश में आकर कहते है -

‘‘लेखक, संपादक, अध्यापक, सब के सब चले जा रहे है लाइन लगाकर । जय कुर्सी मैया । यह तो शेरा बाबू ही स्साला उल्लू का पट्ठा है जो सिद्धांतो की दुम पकड़े सबका लतिभाव सहता रहता है । एक दिन ऐसे ही दफा भी हो जाएगा । कोई दो आँसू बहाने भी नही आएगा ।’’[९७]

शेराबाबू सच्चाई की राह पर चलना चाहते है लेकिन वर्तमान युग के भ्रष्टाचार में डूबे लोग उन्हें अपने साथ घसीटना चाहते है । लेकिन शेराबाबू अपने सिद्धांतो पर ही डटकर रहना चाहते है । उसे राजनीतिक भ्रष्ट नेताओं की चाहुकारिता करना पसंद नही है वे भ्रष्ट नौकरशाही जो जड़ से उखाड़ना चाहते है । भ्रष्ट समाज से वे जुड

नही पाते । वे अपने आपको समयानुसार बदलना नही चाहते परिणामतः बूरी तरह हार जाते है । शेराबाबू के खंडित व्यक्तित्व का चित्रण करने मे लेखिका सफल हुयी है ।

(१७) अमित :-

'अमित' 'नायक, खलनायक, विदूषक' कहानी का पुरुष पात्र है । परिस्थितिवश वह पत्नी और सास को दबाव में आकर अपना आत्मसम्मान खो बैठता है तथा कमजोर बन जाता है ।

अमित एक नाटककार है, आर्थिक अभाव के कारण वह अपने नाटक मंचित नही कर सकता । अमिता हमेशा नाटक लिखने तथा उसे मंचित करने मे ही व्यस्त रहता है । वह कोई नौकरी नही करता । उसकी पत्नी बड़े घर की बेटी है । वह नौकरी करती है इसलिए जान बूझकर पति का अपमान करती है । अमित अपनी पत्नी का साथ बर्दाश्त नही कर पाता । वह अपनी पत्नी के टुकडों पर पल रहा है । उसकी पत्नी अभिनेत्री है फिर भी अमित नंदा नामक अभिनेत्री को अपने नये नाटक में लेता है । परिणाम स्वरुप उसकी पत्नी के अहम् को ठेस पर्हुचती है वह अपनी माँ की सहायता से अमित को खरी खोटी सुनाना चाहती है । उसकी सास रूपये देकर उसका आत्मसम्मान खरीदना चाहती है ताकि वह उसकी बेटी के साथ खुश रहे । पहले अमित उन पैसों को लेने से इन्कार करता है लेकिन बाद में उसका आत्मसम्मान मजबूरी में तबदील होता है । वह अपनी सास की खलनायकी हरकत से बुरी तरह हार जाता है ।

संदर्भ - ग्रंथ सूची

क्रम	पुस्तक	लेखक	पृष्ठ संख्या
१.	स्वामी	मन्नू भंडारी	९
२.	स्वामी	मन्नू भंडारी	२६
३.	एखाने आकाश नाई (त्रिशंकु कहानी संग्रह)	मन्नू भंडारी	१०२
४.	श्मशान (मै हार गई)	मन्नू भंडारी	९०
५.	अकेली (तीन निगाहों की एक तस्वीर)	मन्नू भंडारी	
६.	तीसरा आदमी (यही सच है)	मन्नू भंडारी	
७.	आपका बन्टी (उपन्यास)	मन्नू भंडारी	१०५
८.	एक इंच मुस्कान (उपन्यास)	मन्नू भंडारी एवं राजेन्द्र यादव	
९.	रानी मा का चबूतरा (यही सच है)	मन्नू भंडारी	१२४
९.	गीत का चुम्बन (मै हार गई)	मन्नू भंडारी	
१०.	शायद (त्रिशंकु)	मन्नू भंडारी	
११.	क्षय (यही सच है)	मन्नू भंडारी	
१२.	एक इंच मुस्कान (उपन्यास)	मन्नू भंडारी एवं राजेन्द्र यादव	
१३.	स्वामी (उपन्यास)	मन्नू भंडारी	
१४.	महाभोज (उपन्यास)	मन्नू भंडारी	१३२
१५.	महाभोज (उपन्यास)	मन्नू भंडारी	
१६.	मन्नू भंडारी के कथा साहित्य का मनोविश्लेषणात्मक अध्ययन	ममता शुक्ल	२१७
१७.	कल और कसक (मै हार गई)	मन्नू भंडारी	
१८.	एक बार और (एक प्लैट सैलाब)	मन्नू भंडारी	
१९.	घुटन (तीन निगाहो की एक तस्वीर)	मन्नू भंडारी	
२०.	तीसरा आदमी (यही सच है)	मन्नू भंडारी	

क्रम	पुस्तक	लेखक	पृष्ठ संख्या
२१.	रानी मा का चबूतरा (यही सच है)	मन्नू भंडारी	
२२.	एक इंच मुस्कान	मन्नू भंडारी एक राजेन्द्र यादव	
२३.	महाभोज (उपन्यास)	मन्नू भंडारी	१२४
२४.	तीसरा आदमी (यही सच है)	मन्नू भंडारी	२६
२५.	एक इंच मुस्कान	मन्नू भंडारी एक राजेन्द्र यादव	५२
२६.	एक इंच मुस्कान	मन्नू भंडारी एक राजेन्द्र यादव	१५९
२७.	एक इंच मुस्कान	मन्नू भंडारी एक राजेन्द्र यादव	१६७
२८.	एक इंच मुस्कान	मन्नू भंडारी एक राजेन्द्र यादव	१६८
२९.	एक इंच मुस्कान	मन्नू भंडारी एक राजेन्द्र यादव	१६६
३०.	एक इंच मुस्कान	मन्नू भंडारी एक राजेन्द्र यादव	१६९
३१.	एक इंच मुस्कान	मन्नू भंडारी एक राजेन्द्र यादव	१६७
३२.	एक इंच मुस्कान	मन्नू भंडारी एक राजेन्द्र यादव	१९७
३३.	एक इंच मुस्कान	मन्नू भंडारी एक राजेन्द्र यादव	२५०
३४.	एक इंच मुस्कान	मन्नू भंडारी एक राजेन्द्र यादव	२४१
३५.	एक इंच मुस्कान	मन्नू भंडारी एक राजेन्द्र यादव	२६३
३६.	आपका बंटी (उपन्यास)	मन्नू भंडारी	१२२
३७.	आपका बंटी (उपन्यास)	मन्नू भंडारी	१२७
३८.	आपका बंटी (उपन्यास)	मन्नू भंडारी	१२३
३९.	महाभोज (उपन्यास)	मन्नू भंडारी	१८
४०.	महाभोज (उपन्यास)	मन्नू भंडारी	२०१
४१.	हिन्दी उपन्यास की दिशाएँ	डॉ. वेदप्रकाश अमिताभ	१२७
४२.	मन्नू भंडारी का उपन्यास साहित्य	नन्दिनी मिश्र	११६
४३.	स्वामी (उपन्यास)	मन्नू भंडारी	८७
४४.	स्वामी (उपन्यास)	मन्नू भंडारी	८१
४५.	स्वामी (उपन्यास)	मन्नू भंडारी	८१
४६.	मन्नू भंडारी के साहित्य में चित्रित समस्यायें	डॉ. माधवी जाधव	१०८

क्रम	पुस्तक	लेखक	पृष्ठ संख्या
४७.	मन्नू भंडारी के कथा साहित्यका मनोविश्लेषणामक अध्ययन	डॉ. ममता शुक्ला	२३२
४८.	स्वामी (उपन्यास)	मन्नू भंडारी	८२
४९.	स्वामी (उपन्यास)	मन्नू भंडारी	७५
५०.	स्वामी (उपन्यास)	मन्नू भंडारी	७६
५१.	स्वामी (उपन्यास)	मन्नू भंडारी	१०१
५२.	एक इंच मुस्कान	मन्नू भंडारी एवं राजेन्द्र यादव	२५१
५३.	अभिनेता (मै हार गई)	मन्नू भंडारी	७९
५४.	श्मशान (मै हार गई)	मन्नू भंडारी	८५
५५.	श्मशान (मै हार गई)	मन्नू भंडारी	८७
५६.	पंडित गजाधर शास्त्री (मै हार गई)	मन्नू भंडारी	१०२
५७.	खोटे सिक्के (तीन निगाहो की एक तस्वीर)	मन्नू भंडारी	६७
५८.	खोटे सिक्के (तीन निगाहो की एक तस्वीर)	मन्नू भंडारी	६९
५९.	क्षय (यही सच है)	मन्नू भंडारी	२४
६०.	क्षय (यही सच है)	मन्नू भंडारी	१२
६१.	क्षय (यही सच है)	मन्नू भंडारी	१६
६२.	क्षय (यही सच है)	मन्नू भंडारी	२५
६३.	नशा (यही सच है)	मन्नू भंडारी	९२
६४.	नशा (यही सच है)	मन्नू भंडारी	९४
६५.	नशा (यही सच है)	मन्नू भंडारी	८८
६६.	इन्कमटैक्स और नंद (यही सच है)	मन्नू भंडारी	१००
६७.	इन्कमटैक्स और नंद (यही सच है)	मन्नू भंडारी	१०१

क्रम	पुस्तक	लेखक	पृष्ठ संख्या
६८.	इन्कमटैक्स और नंद (यही सच है)	मन्नू भंडारी	१०७
६९.	छत बनानेवाले (एक प्लैट सैलाब)	मन्नू भंडारी	५१
७०.	छत बनानेवाले (एक प्लैट सैलाब)	मन्नू भंडारी	५०
७१.	छत बनानेवाले (एक प्लैट सैलाब)	मन्नू भंडारी	४९
७२.	संख्या के पार (एक प्लैट सैलाब)	मन्नू भंडारी	८८
७३.	स्त्री सुबोधीनी (त्रिशंकु)	मन्नू भंडारी	३५
७४.	स्त्री सुबोधीनी (त्रिशंकु)	मन्नू भंडारी	३५
७५.	स्त्री सुबोधीनी (त्रिशंकु)	मन्नू भंडारी	३७
७६.	रेत की दीवार (त्रिशंकु)	मन्नू भंडारी	८८
७७.	रेत की दीवार (त्रिशंकु)	मन्नू भंडारी	८२
७८.	रेत की दीवार (त्रिशंकु)	मन्नू भंडारी	९०
७९.	शायद (त्रिशंकु)	मन्नू भंडारी	६०
८०.	शायद (त्रिशंकु)	मन्नू भंडारी	५३
८१.	मै हार गई (मै हार गई कहानीसंग्रह)	मन्नू भंडारी	३१-३२
८२.	एक कमजोर लड़की की कहानी (मै हार गई कहानीसंग्रह)	मन्नू भंडारी	४५
८३.	एक कमजोर लड़की की कहानी (मै हार गई कहानीसंग्रह)	मन्नू भंडारी	४७
८४.	तीन निगाहो की एक तस्वीर (तीन निगाहो की एक तस्वीर)	मन्नू भंडारी	१२
८५.	हार (तीन निगाहो की एक तस्वीर)	मन्नू भंडारी	७४

क्रम	पुस्तक	लेखक	पृष्ठ संख्या
८६.	हार (तीन निगाहो की एक तस्वीर)	मन्नू भंडारी	७६
८७.	चश्मे (तीन निगाहो की एक तस्वीर)	मन्नू भंडारी	१०८
८८.	तीसरा आदमी (यही सच है)	मन्नू भंडारी	२८
८९.	तीसरा आदमी (यही सच है)	मन्नू भंडारी	२९
९०.	नई नौकरी (एक प्लेट सैलाब कहानीसंग्रह)	मन्नू भंडारी	१६
९१.	बंद दराजो का साथ (एक प्लेट सैलाब कहानीसंग्रह)	मन्नू भंडारी	२४
९२.	बंद दराजो का साथ (एक प्लेट सैलाब कहानीसंग्रह)	मन्नू भंडारी	२७
९३.	एक बार और (एक प्लेट सैलाब कहानीसंग्रह)	मन्नू भंडारी	५६
९४.	एक बार और (एक प्लेट सैलाब कहानीसंग्रह)	मन्नू भंडारी	५७
९५.	ऊँचाई (एक प्लेट सैलाब कहानीसंग्रह)	मन्नू भंडारी	११९
९६.	आते आते यायावर (त्रिशंकु)	मन्नू भंडारी	१२
९७.	तीसरा हिस्सा (त्रिशंकु कहानीसंग्रह)	मन्नू भंडारी	९७

:: पंचम अध्याय ::

- मन्नू भंडारी के साहित्य का शिल्पपक्ष

१. शीर्षक प्रयोजन

२. कथावस्तु का संगठन

३. पात्र परिकल्पना

४. देशकाल और वातावरण

५. भाषाशैली

पंचम अध्याय

❖ मन्नू भंडारी के कथा साहित्य का शिल्पपक्ष :-

❁ प्रस्तावना :

साहित्य की किसी भी विद्या में 'शिल्प' का महत्त्वपूर्ण स्थान है । चाहे वह कहानी उपन्यास, नाटक याँ काव्य क्यों न हो । साहित्य में शिल्प ही वह माध्यम है, जिसके द्वारा रचनाकार अपने एहसास को, अपने भावों को, एवम् विचारों को अपने हृदय की संवेदना को व्यवस्थित रुप में सुंदर रुप में प्रस्तुत करने का कार्य करता है । ''आधुनिक हिन्दी आलोचक तथा साहित्यकार शिल्प, शिल्प-विधि, शिल्प विधान आदि शब्दों का प्रयोग अंग्रेजी भाषा के आर्ट-एक्प्रेशन टेकनीक क्राफट आदि किसी न किसी शब्द के पर्याय के रुप में प्रयोग करते है ।''[१]

इतने सारे पर्याय का एक मात्र कारण यह है कि किसी भी रचना का 'शिल्प' उसके रचनाकार के कौशल पर आधारित है । इसीलिए एक के लिए 'शिल्प' क्राफ्ट है तो अन्य के लिए एक्सप्रेशन यॉं आर्ट है । वैसे संस्कृत साहित्य में 'शिल्प' शब्द का अर्थ कुछ विद्वान ६४ कलाओं के साथ तो कुछ कौशलपूर्ण कला के लिए करते है लेकिन फिर भी हिन्दी में 'शिल्प' शब्द प्रयुक्त होता है । ''अंग्रेजी का 'क्राफट' शब्द ही वास्तव में 'शिल्प' का पर्याय बन सकता है ।''[२] साहित्य की किसी भी विद्या उपन्यास, कहानी, नाटक, कविता के दो रुप होते है एक आंतरिक रूप जिसका सम्बन्ध रचनाकार के उदेश्य से होता है, जिसे वे अपने पाठकों के समक्ष प्रस्तुत करना चाहता है । दूसरा बाह्य रूप होता है । इन दोनों रूपों के विभाजन से किसी भी रचना के अध्ययन एवम् मूल्यांकन में आसानी होती है ।

लेकिन 'शिल्प' के अंतर्गत ये दोनों रूप एक-दूसरे में विलिन हो जाते है । यह भी कहा जा सकता है कि 'शिल्प' के अंतर्गत ये दोनों रूप किसी भी रचना रुपी सिक्के के स्वरुप और उद्देश्य रूपी दो पहलू है । किसी भी रचनाकार के पास अभिव्यक्ति के लिए एक निश्चित विषय वस्तु होती है । विषय रचना की बाह्य प्रक्रिया और वस्तु उसकी आंतरिक प्रक्रिया होती है । विषय को निश्चित रूप से वस्तु में परिणत होना ही पड़ता है । इसीलिए कथा-साहित्य में विषय की अपेक्षा वस्तु अत्याधिक महत्त्वपूर्ण हो जाती है और वस्तु को अनुभव के धरातल से प्राप्त करके कथाकार जिस माध्यम द्वारा प्रस्तुत करने का प्रयत्न करता है वह उपन्यास या कहानी का शिल्प कहलाता है । कथाकार के सामने वस्तु के चुनाव के साथ-साथ उनके अनुरुप उसे प्रस्तुत करने के लिए शिल्प के चुनावकी समस्या रहती है । हालांकि रचना की वस्तु के अनुरुप ही उसका शिल्प निर्मित होता है और वस्तु के परिवर्तन के साथ-साथ उसके अनुरुप ही शिल्प में भी परिवर्तन अपरिहार्य होता है ।

अब प्रश्न उठता है कि शिल्प क्या है ? शिल्प का शाब्दिक अर्थ कला का कौशल है ।

''डॉ. प्रेम भटनागर शिल्प को एक साधन मानते है और शिल्प किसी कलाकार की कला द्वारा अभिव्यक्त भाव एवं चिन्तनधारा को स्पष्ट करने का साधन या विद्या है ।''[३]

''शिल्प से अभिप्राय हाथ से कोई वस्तु तैयार करने अथवा हस्तकारी या कारीगरी से हैं ।''[४]

''शिल्प गुण कलाकृति के विभिन्न अंगो की शिल्पगत एकांतविति ।''[५]

''शिल्प - संज्ञा पु. निर्माण सर्जन, सृष्टि रचना''[६]

शिल्पविधि को स्पष्ट करने का प्रयास अनेक विद्वानों ने किया है - डॉ. सत्यपाल चुध के मतानुसार - ''उपन्यास रचना मे जिस प्रक्रिया से लक्ष्य तथा संवेदनाभूति उसके तत्वों कथानक, पात्र, संवाद, वातावरण आदि में परिणत हो औपच्यासिक रूप का निर्माण करते है, वही उसकी शिल्पविधि है ।''[७]

डॉ. ओमशुक्ल का मत है कि - ''कला की रचना में जिन तरीकों रीतियों और विधियों का उपयोग किया जाता है वे ही उस कला की शिल्पविधि के नाम से पुकारी जाती है ।''[८]

'शिल्प' की एक विशेषता यह भी है कि वह रचनाकार और समय के अनुसार परिवर्तित होता रहता है । वैसे परिवर्तन संसार का शास्वत नियम है । इसमे कुछ पुराना चला जाता है और उसके बदले नया प्रस्थापित होता है, उसी तरह से प्रत्येक रचनाकार की एक रचना पद्धति होती है यह रचना पद्धति उस रचनाकार की निजी उपलब्धि होती है ।

शिल्पपक्ष के अंतर्गत कथा, संवाद, भाषाशैली, पात्र आदि का समावेश किया जाता है । इस प्रकार हम कह सकते है कि किसी कथा साहित्य उपन्यास, कहानी, नाटक आदि की श्रेष्ठता उसके वस्तु कला और शिल्प के संतुलित समन्वय पर निर्भर करती है । अतः कथा साहित्य एक कला है और शिल्प इसी कला की परिणति है । कला का विकास मनुष्य की सहज सौन्दर्यानुभूति का परिणाम है । अतः कथा को सौन्दर्यप्रधान करनेवाला शिल्पकला का ही रूप है । साहित्य में शिल्प का एक महत्त्वपूर्ण स्थान है -

''प्रतिभा के साथ-साथ कुशल शिल्प का होना बहुत जरुरी है ।

शिल्पविहीन प्रतिभा उत्कृष्ट रचना का सृजन करने में असमर्थ है ऐसी प्रतिभा उस कुशल कारीगर के समान है जो औजार न होने के कारण अपनी कारीगरी दिखाने में असमर्थ है ।''[६]

'शिल्पा' शब्द के सम्बन्ध में संक्षिप्त रुप से विवेचन करने के बाद अब हम मन्नू भंडारी के कथा साहित्य के शिल्पपक्ष पर द्रष्टिपात करेंगे ।

मन्नू भंडारी के कथा साहित्य में शिल्प अद्वितिय है । लेखिका राजनीतिक और मनोवैज्ञानिक विचारधारा से प्रभावित है । इसके कथा साहित्य में कथा का सुसंगठित स्वरुप, चरित्रों का मनोवैज्ञानिक निरुपण, संवाद परिकल्पना वातावरण, भाषाशैली तथा उद्देश्य ये सब तत्व मनोविश्लेषण के रंग में रंगा हुआ है । उनकी भाषा विभिन्न प्रकारकी विशेषताओं से युक्त है । भाषा में तत्सम्-अंग्रेजी उर्दू के शब्दो का प्रयोग हुआ है साथ में मुहावरें-लोकोक्तियों का भी यथातथ्य निर्वाह हुआ है । मन्नू भंडारी के कथा साहित्य का शिल्पपक्ष ही अपने आप में उनकी एक विशेषता है ।

अब हम मन्नू भंडारी के कथा में शिल्प कला को देखेंगे ।

इस शिल्प पक्ष में समाविष्ट होनेवाले तत्व हैं -

(१) शीर्षक का प्रयोजन

(२) कथावस्तु का संगठन

(३) पात्र परिकल्पना

(४) देशकाल और वातावरण

(५) भाषा-शैली

(१) शीर्षक का प्रयोजन :

किसी भी साहित्यकार की रचना उपन्यास, कहानी, नाटक आदि

को पढ़ते समय पाठक की नजर सबसे पहले रचना के शीर्षक पर पड़ती है । नाम रूपात्मक इस जगत में शीर्षक या नाम का अपना महत्त्व है । जीवन में व्यक्ति का नामकरण जीवनारंभ मे कर दिया जाता है, इसीलिए कभी-कभी इसके नाम और व्यक्तित्व में महदन्तर दिखाई देने लगता है । साहित्य में ऐसा नही होता, लेखक रचना को समाप्त करने के बाद भी उस कृति का नामकरण कर सकता है ।

शीर्षक से हमे कृति में क्या है ? कौन सा विषय है ? कैसी रचना है इसकी जानकारी मिलती है । शीर्षक कभी नायक के नाम के आधार पर जैसे 'चन्द्रगुप्त', 'स्कंन्द गुप्त' दिया जाता है कभी नायिका के नाम पर शीर्षक दिया जाता है जैसे, यशोधरा, ध्रूवस्वामिनी तो कभी स्थल-काल के आधार पर 'पंचवटी' दिया जाता है । तो कभी रचना के कथ्य द्रष्टिकोण के आधार पर दिया जाता है जैसे मन्नू भंडारी का 'महाभोज' उपन्यास का शीर्षक । नामकरण लेखक की आलोचना की संक्षिप्ततम रुप होता है ।

शीर्षक कथा साहित्य का प्रथम तत्व है और उसका स्थान भी सर्वप्रथम है । प्रतापनारायण टंडनने अपनी 'हिंदी कहानी कला' पुस्तक में शीर्षक से संबंधित लिखा है - ''स्पष्टता, विषयानुकूलता, लघुता, आकर्षणयुक्तता, अर्थपूर्णता तथा नवीनता का शीर्षक में होना आवश्यक है ।''[१०]

अब हम आधार पर मन्नू भंडारी के साहित्य को देखे ।

स्पष्टता :

किसी भी रचना का शीर्षक स्पष्ट होना चाहिए । उपन्यास, कहानी, नाटक, काव्य आदि को पढ़ने से पाठक को क्या जानने को मिलेगा इसका ज्ञान शीर्षक को पढ़ते ही पाठकों को स्पष्ट होना

चाहिए । मन्नू भंडारी के उपन्यास 'स्वामी', 'आपका बंटी' और कहानी 'एक कमजोर लड़की की कहानी', 'मजबूरी', 'नई नौकरी', 'पंडित गजाधर शास्त्री' आदि के शीर्षक स्पष्ट है ।

❖ **विषयानुकूलता :**

कृति से संबंधित शीर्षक होना चाहिए । रचनाकार अपनी रचना में जो विषय चुनता है । वह सामाजिक, मनोवैज्ञानिक या राजनीतिक हो तो उसका शीर्षक उस विषय के अनुरूप होना चाहिए । ''रचना की विषयवस्तु और शीर्षक का संबंध ठीक न जुड़ने से रचना पाठकों के संवेदन के स्तर पर जुड़ नहीं सकती ।''[११] मन्नू भंडारी का उपन्यास 'महाभोज' उसका शीर्षक विषय के अनुरुप ही है । राजनीतिक वातावरण का उपन्यास है और चुनाव के समय नेतागण अपने से विरुद्ध परिस्थितियों को अपने अनुरुप बना लेते है । और बिसू की हत्या उसके लिए एक 'महाभोज' हैं । अतः केन्द्रिय भाव होने के कारण इस उपन्यास का दूसरा उचित कोई शीर्षक हो ही नहीं सकता । मन्नू भंडारी की कहानियों के शीर्षक भी विषयानुकूल हैं । जैसे 'सयानी बुआ', 'अकेली', 'तीसरा आदमी', 'मैं हार गई' आदि । तथा 'स्वामी' उपन्यास का शीर्षक भी विषयानुकूल ही हैं ।

❖ **लघुता :**

किसी व्यक्ति का नाम किताना भी लम्बा चौड़ा हो घर में अथवा मित्रों में बुलाने के लिए छोटा कर दिया जाता है । अर्थात् नाम की लघुता अपना महत्त्व रखती है ।[१२] रचना का शीर्षक छोटा हो तो पढ़ने में, ऊचारण में, अर्थ समझने में समय कम लगने से शायद वह अपना-सा लगता है । लघुता में एक प्रकार की मिठास होती है । मन्नू भंडारी के उपन्यास और कहानियों के शीर्षक लघुता लिए है -

जैसे हार, क्षय, सजा, ऊँचाई, घुटन, चश्मे, अकेली, नशा आदि कहानियों के शीर्षक छोटे है तथा स्वामी, कलवा उपन्यास के शीर्षक भी छोटे ही है । शीर्षक की लम्बाई पाठकों को आकृष्ट करने में असमर्थ प्रतीत होती है ।

❖ आकर्षण युक्तता :

रचना का शीषरक इतना रोचक और जिज्ञासावर्द्धक होना चाहिए कि पाठक उस रचना को पढ़ने के लिए बाध्य हो जाय । मन्नू भंडारी की कहानियों के शीर्षक हमें कहानी पढ़ने के लिए अपने आप प्रकृत करते है । वे आकर्षणयुक्त हैं । जैसे - मैं हार गई, जीती बाझी की हार, बाहों का घेरा, रेत की दीवार, एक बार ओर, गीत का चुम्बन । तथा उपन्यास में 'एक इंच मुस्कान', आपका बंटी । ये शीर्षक देखते ही कृति हमे अपनी ओर आकर्षित करती है और हम पढ़ने को उत्सुक हो जाते हैं ।

❖ अर्थपूर्णता :

शीर्षक अर्थपूर्ण होना चाहिए । हम शीर्षक पढ़ते ही उसका अर्थ निकालते है । मन्नू भंडारी के उपन्यास और कहानी के शीर्षक अर्थपूर्ण है । कहीं अर्थ सरल और स्पष्ट है । कही सांकेतिक अर्थ है । ईसा के घर इंसान, दरार भरने की दरार, अभिनेता, घुटन, सजा आदि सरल अर्थ के है तो स्त्री सुबोधिनी, त्रिशंकु, रानी मां का चबूतरा, चश्मे, क्षय संख्या के पार आदि सांकेतिक अर्थ के शीर्षक है । 'क्षय' कहानी में पिता का शारीरिक क्षय लड़की के नैतिक क्षय का कारण बनता है, और कुन्ती का नैतिक क्षय ही कहानी के शीर्षक को सार्थक बनाता है । ''स्त्री-सुबोधिनी' कहानी में घरेलू नारी को बोध देनेवाली घर तथा परिवार व्यवस्था की बातें थी । इसीलिए आधुनिक नारी को

बोध देनेवाली कहानी का शीर्षक मन्नू भंडारी ने 'स्त्री-सुबोधिनी' रखा है । इस कहानी में एक प्रौढ़ कुमारिका विवाहित पुरुष के प्रेम से छली जाती है । वह स्त्री अपने अनुभव के द्वारा समाज की अनेकानेक युवतियों को पुरुष वर्ग से संबंधित नारी-व्यवहार का बोध देती है ।''[१३] इसीलिए इस कहानी का शीर्षक अर्थपूर्ण है । इस प्रकार 'असामयिक मृत्यु' में पिता की असमय मौत बेटे की कलारूप के असमय मौत का कारण बनती है । ये शीर्षक अर्थपूर्ण है ।

'आपका बंटी' उपन्यास का शीर्षक बड़ा अर्थपूर्ण है । तलाकशुदा पति-पत्नी के अलग हो जाने से बच्चे की कैसी दशा होती है ? यह बात बताई गई हैं ।

❖ नवीनता :

शीर्षक में नवीनता होनी चाहिए । नवीनता का ग्रहण मनुष्य धर्म है । घिसी-पिटी कहानी कोई पसंद नही करता । लेखिका ने अपने कथा-साहित्य में नयी-नयी विषयवस्तु को प्रस्तुत किया है उसी प्रकार नयी कहानियों के लिए नवीन शीर्षकों का चुनाव किया है यह बात उसकी कहानियों को देखे तो पता चलता है । जैसे, 'एक प्लैट सैलाब', 'बंद दराजों का साथ', 'आते जाते यायावर', 'त्रिशंकु' कहानियों के शीर्षको में नवीनता स्पष्ट द्रष्टिगोचर होती है ।

मन्नू भंडारी की कृतियों के शीर्षक कथ्य की मूल संवेदना और उससे सम्युक्त समस्या के वाहक है । यही उनके शीर्षक की सार्थकता है ।

(२) कथावस्तु का संगठन :

कथा साहित्य में कथानक एक महत्त्वपूर्ण तत्व है । कथानक एक कल्पना, घटनाओं की ऐसी कृत्रिम व्यवस्था है जो पाठक की

रूचि अंत तक बनाये रखती है । कथानक में मौलिकता, कुतूहलता, स्वाभाविकता, मनोवैज्ञानिकता संगठन और संबद्धता कथानक की विशेषतायें मानी जाती है ।''[१४] कथानक को रचनाकार इस प्रकार मौलिक रूप से प्रस्तुत करता है कि उसमें अन्त तक कुतूहलता का तत्व बना रहे । इस कुतूहल का आधार यथार्थ होता है जिससे पाठक की उत्सुकता सदैव जाग्रत रहती है । कल्पना का ऐसा समावेश हो कि वर्णित कथा सजीव, विश्वनीय और स्वाभाविक लगे । तभी मानव जीवन का चित्रण काल्पनिक होते हुए भी यथार्थ लग सकता है । कथानक की सफलता का एक और कारण है उसमें चित्रित घटनाओं का सुगठित रूप । कथानक की अन्य विशेषता उसकी मौलिकता है । कथानक के प्रस्तुतिकरण के ढंग में भी मौलिकता होनी चाहिए । नही तो वह निष्प्राण प्रतीत होता है । संसार की प्रत्येक वस्तु उपन्यास, कहानी का विषय बन सकती है । प्रकृति का प्रत्येक रहस्य, मानव जीवन का हर एक पहलू जब एक सुयोग्य लेखक के कलम से निकलता है तो वह साहित्य का रत्न बन जाता है, लेकिन उसके साथ ही विषय का महत्त्व और उसकी गहराई भी उपन्यास के सफल होने में बहुत सहायक होती है । सफल उपन्यासकार का सबसे बड़ा लक्षण यह है कि वह अपने पाठकों के हृदय में उन्हीं भावों को जागरित कर दे जो उसके पात्रों में हो । पाठक और पात्र के बीच में आत्मीयता का भाव उत्पन्न हो जाए ।

आधुनिक साहित्य जीवन के यथार्थ को अंकित करता है । उसमें घटना प्रधान नही है अपितु अनुभूति अथवा विचार का ही प्रकटीकरण अधिक हुआ है । 'त्रिशंकु' कहानी संग्रह में मन्नू भंडारी ने अपनी रचना-प्रक्रिया के बारे में बताया है - ''शुरु में कोई अनुभव, स्थिति

या द्वंद्व धुंधले-से रूप में मन पर छाया रहता है । पुनः सृजन के दौरान वही धुंधली आकृति कहानी का रूप ले लेती हैं ।''[१५] बहुत लोग कहानी का पूरा ढाँचा तैयार करके उसे सिर्फ 'रिक्त स्थानों की पूर्ति करो' वाले अंदाज में लिख डालते है मुझसे ऐसा नही हो पाता । कभी-कभी कोई 'ब्रिलियंट आइडिया' जरुर लिखने के लिए उकसाता है, पर जब तक वह जीवन के साथ पूरी तरह गुंथ नहीं जाता, कहानी के रूप में उसे ढालना मेरे लिए संभव नही होता । जीवन की धड़कन से भरी-पूरी स्थितियां विचार या समस्याएं ही मुझे लिखने के लिए प्रेरित करती है । मन्नूजी जीवन के साथ पूरी तरह गुंथी हुई है । जीवन में से कुछ अनुभवों को अभिव्यक्त देने के लिए लेखिका ने कथा-कहानी का माध्यम चुना है । कहानी, उपन्यास के लिए कथावस्तु आवश्यक है क्योंकि पात्र एवं घटनाओं के माध्यम से ही लेखिका उद्देश्य तक पहुँच पाती है ।

किसी भी कृति में कथावस्तु में आदि मध्य और अन्त इन तीन स्थितियों का समावेश होता है । आज की कहानी मानव-मन के भाव-जगत की सूक्ष्म भावनाओं को उद्घाटित करती है । अतः उन भावनाओं का प्रारंभ मध्य तो निश्चित होता है किंतु अंत अनिश्चित होता है । कथा साहित्य में प्रारंभ रोचक होना चाहिए । मध्य में उबाऊपन नही होना चाहिए और अंत पाठक के मन पर प्रभाव डालनेवाला होना चाहिए ।

❖ आरंभ :

आरंभ कहानी का प्रवेशद्वार होता है, इसीलिए उसमें आकर्षण होना अनिवार्य हैं । आरंभ अनेक प्रकार से किए जाते है । वर्णन, घटना, चित्रांकन गीत आदि द्वारा आरंभ होता है । चाहे जिसी भी प्रकार से कहानी का आरंभ हो, उसमें पाठक को पूर्ण कहानी, पढ़ने

को विवश करने की शक्ति होनी चाहिए । मन्नू भंडारी के उपन्यास और कहानियों का आरंभ आकर्षक तो है ही साथ में जिज्ञासा वर्धक भी है । 'अकेली' कहानी का आरंभ ''सोमाबुआ बुढ़िया है । सोमा बुआ परित्यकता है । सोमाबुआ अकेली है ।''[१६] तो मजबूरी कहानी का आरंभ गीत द्वारा किया गया है । कुछ कहानियों का आरंभ संवाद द्वारा भी हुआ है 'खोटे सिक्के' कहानी का आरंभ संवाद द्वारा हुआ है -

''जी, इन्हें कहाँ रखूँ ?''

एक सहमी सी आवाज पर सब घूम पड़े देखा एक छोटा लड़का थैली हाथ में लिये भयभीत सा खड़ा है ।

''क्या है इसमें ? मि. खन्ना ने पूछा

जी, खोटे सिक्के हैं । वहाँ मेरा बाबा खोटे सिक्के चुन रहा है उसीने भेजे है ।''[१७]

तो 'अभिनेता' कहानी का आरंभ कलात्मक ढंग से हुआ है - ''वह बड़ी कामयाब और गज़ब की अभिनेत्री थी, अपनी कला में माहिर । मगर ठहरिये ! यह तो कहानी की शुरुआत ही गलत हो गयी कहानी का नाम रखा, 'अभिनेता' और शुरु किया 'अभिनेत्री' से ।''[१८]

नाटकीय ढंग से किया हुआ आरंभ प्रभावपूर्ण होता है । ऊँचाई कहानी का आरंभ इस प्रकार है -

''दोनों में से शायद कोई भी नही सोया था हा उनके बीच का प्यार और अपनत्व सो गया था, सो ही नहीं गया था शायद मर गया था ।''[१९] कहानी के आरंभ में ही कथ्य स्पष्ट है कि इसमें पति-पत्नी के संबंधो में तनाव होगा ही । 'त्रिशंकु' कहानी का आरंभ इस प्रकार

है - ''घर की चहारदीवारी आदमी को सुरक्षा देती है । पर साथ ही उसे एक सीमा में बांधती भी है । बात यह है बंधु, हार बात का विरोध उसके भीतर ही रहता है ।''[२०]

'महाभोज' उपन्यास का आरंभ लेखिका ने इस प्रकार किया है - लावारिस लाश को गिद्ध नोच-नोचकर खा जाते है । पर बिसेसर लावारिस नहीं । उसकी लाश सड़क के किनारे पुलिया पर पड़ी मिली ।''[२१] कितना चित्रात्मक आरंभ किया है । इस प्रकार मन्नू भंडारी की कहानियों तथा उपन्यासों में कथावस्तु संगठन में आरंभ के कई रूप मिलते है ।

मध्य :

कहानी और उपन्यास के मध्य में कथावस्तु के मूल सूत्र का विकास होता है । इस विकास में संतुलन बना रहना आवश्यक है नहीं तो कथात्मक सौन्दर्य नष्ट होता है । और उसमें विश्रृंखला आ जाती है । अतः कथानक में मध्य ठीक होना चाहिए । 'दो कलाकार' कहानी में लेखिका का उदेश्य दो कलाकार अरुणा और चित्र के अलग-अलग जीवन दर्शन को चित्रित करना है तो इस कहानी के मध्य में अरुणा और चित्रा का चारित्रिक विवरण बड़े स्वाभाविक और अच्छे ढंग से हुआ है ।''[२२] तो 'हार' कहानी में दीपा के हार जाने की घटना को चित्रित किया है । और कहानी के मध्य में उसकी हार जाने की अंतिम घटना तक संतुलन बराबर बना रहा है ।

'कील और कसक' कहानी में ''रानी से शेखर का परिचय उनके संबंधो का विकास और उन संबंधो का शेखर के विवाह के कारण टूटना, सब मध्य में आता है ।''[२३] और कहानी की कथावस्तु संतुलित रूप से आगे बढ़ती जाती है ।

“ ‘शायद’ कहानी में मध्य में जहाज काम करनेवाला राखाल घर में हिचकोले नही खा रहा था । घर परिवार में उसकी महत्त्व फिर से स्थापित हुआ ।”[२४]

‘आपका बंटी’ उपन्यास के मध्य में पाठक जान जाता है कि “डॉ. जोशी से विवाह करने के बाद, बंटी से उस की हर चीज छीनी जाएगी होता भी यही है । कॉलेज का क्वार्टर छोड़ते ही बंटी का कमरा, उसकी मेज, उसका बगीचा, उसकी फूफी - अंतमें उसकी ममी भी उससे छिन जाती है ।”[२५] पापा और ममी के बीच का तनाव भी कहानी के मध्य में आकर टूट गया और तलाक मिल गया । अतः इस उपन्यास का मध्य बड़ा शानदार है ।

❖ अंत :

उपन्यास कहानी का अंत उसकी कसौटी है । कहानी की श्रेष्ठता का आधार ही कहानी का अन्त माना जाता है । अंत भी अनेक प्रकार का हो सकता है । जैसे मर्मस्पर्शी अंत, अप्रत्याशित अंत, अनिश्चयात्मक अंत, विषय की पूर्णता बोधक अंत, नाटकीय अंत, संयुकत अंत आदि । आरंभ और मध्य से समान अन्त भी गहरा प्रभाव डालनेवाला होना चाहिए । पर अंत मानव को विचार और सोचने के लिये मजबूर करते है । मस्तिष्क पर छाये रहनेवाले अंत मन्नू भंडारी की श्मशान, क्षय, सजा, रानी माँ का चबूतरा, त्रिशंकु, तीसरा हिस्सा, ऊँचाई आदि कहानियों के है । आज की कहानी संघर्षशील मनुष्य के जीवन-यथार्थ को अभिव्यक्ति देती है । आदमी अपने बाहरी और आंतरिक दो रूपों में जीवन के लिए विवश है । उसकी यह विवशता कहानी के अंत तक बनी रहती है । हर समस्या का समाधान नहीं है इसीलिए कहानीकार अपनी कहानी के अंत में समस्या का

समाधान नहीं देते । समस्या को पाठक अपनी-अपनी द्रष्टि से सुलझाने के लिए स्वतंत्र रहते है और किसी भी पाठक के मन में कहानीकार के प्रति शंका या असमाधान नहीं रहता । आज की कहानी का अंत पाठको को सोचने के लिए विवश करता है ।

'सयानी बुआ' कहानी का अंत इस रुप में दिखाया गया है ''पर वास्तविकता जानकर बुआजी भी रोते ही रोते हंस पड़ी । पांच आने की सुराही तोड़ देने पर नौकर को बुरी तरह पीटनेवाली बुआजी, पचास रुपयेवाले सेट के प्यारले टूट जाने पर भी, हंस रही थी, दिल खोलकर हंस रही थी, मानो उन्हें स्वर्ग की निधि मिल गयी हो ।''[२६]

तो ''स्त्री-सुबोधिनी' कहानी का अंत उपदेशात्मक है - अब चाहती हूँ ठेठ दुनियादारी की बातें अपनी हजार हजार मासुम किशोरी बहनों के पल्ले से बांध दूं जिससे वे मेरी तरह भटकने से बच जाएं ।''[२७]

लेखिका ने 'स्वामी' उपन्यास का अंत बहुत सुन्दर दिया है - ''दो भुजाओं की जवीड़ में उसे लगा उसकी सारी भटकन समाप्त हो गयी है उसके सारे द्वंद्व समाप्त हो गए । निश्चित और निर्द्वद्व हो आए उसके मन के आगे मां का यह वाक्य ही गूंजता रहा जिसने अपना सुख दुःख अपने गुण-दोष स्वामी के हाथों में सौंप दिए ।''[२८]

इस प्रकार मन्नू भंडारीने अपने उपन्यासों में और कहानियों में विविध प्रकार से कथावस्तु का संगठन किया है । उनकी रचना का कौशल कथावस्तु के संगठन में दिखाई देता है । कथा वस्तु का चयन तथा कहानी का आरंभ, मध्य और अंत में लाया गया कसाव उनकी कहानियों को प्रभावशाली और रोचक बना गया है । उनमें उबाऊपन का अभाव होने से एक ही बैठक में किसी कहानी को पढ़ जाना

पाठकों के लिये एक सुखद अनुभव होता है ।

(३) पात्र परिकल्पना :

रचनाकार अपने आसपास के जीवन-जगत से घटनाएँ और पात्रों का चुनाव अपने कथानक के अनुरुप करता है । कथानक निर्माण पात्रों के क्रियाकलाप से होता है । तो घटनाएँ भी निरर्थक और स्वतः स्फूर्त नहीं होती । उनका उदेश्य व्यक्ति चरित्रों के जीवन के सारतत्व को दिखाना होता है । पात्रों के बिना कथानक का निर्माण हो नही सकता । कथा तत्व और पात्रों में परस्पर सामंजस्य आवश्यक है । उपन्यास के पात्रों और मानवीय जीवन के पात्रों में विशेष अंतर नही रह जाता ।

कहानी और उपन्यास के बहिरंग तत्वों में शीर्षक और कथावस्तु संगठन के बाद तृतीय महत्त्व पात्र नियोजन का है । कहानी आकार मे लघु होती है उसमें ज्यादा पात्रों का नियोजन शोभा नही देता । उपन्यास आकार में बड़ा होता है उसमें पात्रो की संख्या ज्यादा होती है । उपन्यास में सहायक पात्रों का निर्वाह भी होता है । जो प्रमुख पात्रों का चारित्रिक विकास करते है ।

मन्नू भंडारी ने अपनी कहानियों में सामान्यतः दो प्रकार के पात्रों की परिकल्पना की है - वर्गगत पात्र और व्यक्तिगत पात्र ।

❖ वर्गगत पात्र :

वर्गगत पात्र प्रतिनिधिक पात्र होते है । समाज के एक विशेष वर्ग का प्रतिनिधित्व करते है । वहां निश्चित व्यक्ति की जगह दूसरा कोई भी रहे तो भी कोई फरक नहीं पड़ता - जैसे 'खोटे सिक्के' के खन्ना साहब, 'नकली हीरे' की मिसेज सरन, 'रेत की दीवार' का रवि आदि ।

❖ व्यक्तिगत पात्र :

व्यक्तिगत पात्र की अपनी निजी विशेषता होती है । ये पात्र अपने आप में पूर्ण होते हैं । इनका स्थान अन्य कोई पात्र नहीं ले सकता । जैसे - 'नयी नौकरी' की रमा, 'यही सच है' की दीपा, 'बंद दराजों के साथ' की मंजरी । ये पात्र चाहें तो अपने आप से जुड़े हुए समाज का अंग भी बन सकते हैं, प्रतिनिधित्व भी कर सकते हैं या सबसे अलग भी रह सकते हैं । मन्नू भंडारी के कुछ पात्र अन्तर्मुखी भी है । उनके समस्त चरित्र व्यक्तिवादी और आत्मकेन्द्रित है । परिस्थितियों के सामने न झुकना तथा स्वनिर्माण की क्षमता उनके चरित्रों की विशेषताएं है । वैसे इनके पात्रों के परिस्थितियों के प्रति विद्रोह करने की क्षमता नहीं है । लेकिन वर्तमान क्षणों को स्वीकारने की प्रवृत्ति अधिक है । वे अपनी अंतर्ग्रथियों से तथा गत जीवन की अन्तर्कथाओं से प्रभावित और परिचालित रहते है । एक विशेष बात है कि उनके चरित्र व्यक्तिवादी है । यह व्यक्तिवाद वस्तुतः भारतीय समाज के नरीवाद का ही पर्याय है । उनके नारी-पात्र यथार्थतः भारतीय नारी का ही चरित्र है ।

मन्नू भंडारी के पात्रों के नामों की द्रष्टि से विचार किया जाय तो अधिकांश नाम पात्र के गुणानुकूल है । उन्होंने कुछ नाम तो अति सुंदर गढ़े हैं । 'मिताली' बड़ी सुंदर नाम है । 'लेख' से 'लेखा' बनाकर एक नये नाम का उन्होंने सृजन कर दिया है । 'मुरला', 'शकुन' आदि नाम कुछ ऐसे हैं जो पुराने नामों में हलका-सा परिवर्तन कर बना दिए है ।

मन्नू भंडारी के साहित्य में पात्र-परिकल्पना में वैविध्य द्रष्टिगोचर होता है । उनके कथा साहित्य में प्रधान रूप में नारी और पुरुष पाये

जाते है । उनके पात्र सभी अवस्थाओं के हैं । 'आपका बंटी' उपन्यास का बंटी बाल्यावस्था का है तो 'सजा' की आशा किशोरी है । लेखिकाने अधिकांश युवा चरित्र ही चित्रित किए हैं । प्रौढ़ एवं वृद्धावस्था के पात्र नाम मात्र को ही आये हैं । समाज के सभी वर्गो के प्रतिनिधिक रूप में कई पात्र इनकी कहानियों में हैं । शिक्षित एवं अशिक्षित पात्र भी आपको मिलेंगे । अपनी कहानियों में उन्होंने पारंपरिक और आधुनिक पात्रों की मिली-जुली परिकल्पना की है । कुछ पात्रों में मनोद्वंद्व भी अच्छा उभारा है । इसीलिए उनकी सजीवता पाठकों को विशेष रूप से प्रभावित करती हैं ।

(४) देशकाल और वातावरण :

देशकाल और वातावरण के अंतर्गत समाज या राष्ट्र की सामाजिक, राजनीतिक, सांस्कृति, धार्मिक परिस्थितियाँ, रहन सहन, रीति-रिवाज आदि आते है । क्योंकि मानव का समाज से पृथक कोई अस्तित्व नहीं है । वातावरण पात्रों का संसार है । इसलिए साहित्यकार को अपने पात्रों की परिस्थिति-विशेष का सूक्ष्म-चित्रण करना होगा क्योंकि देश-काल और परिस्थिति के संदर्भ में ही पाठक उसके पात्रों के कार्य-कलापों का सही मूल्यांकन कर सकेंगे ।

आधुनिक युग में कार्ल मार्क्सने जह यह कहा कि प्रवाहपतित होता है तो मनुष्य के आसपास की स्थितियों का चित्रण होता रहा है तो वही देश-काल का चित्रण कह जाता है ।

मन्नू भंडारी के कथा साहित्य में देशकाल और वातावरण का उल्लेख स्पष्ट मिलता है । वातावरण के बिना पाठकों के सम्मुख कहानी का यथार्थ रूप स्पष्ट हो नहीं पाता । देश और काल के बिना समस्या की निर्मित का अंदाज पाठकों को आ नहीं सकता । अतः

देशकाल और वातावरण को त्यागकर कहानी की रचना करने से पाठकों पर ज्यादा दिन असर नहीं रहता ।

कालबोध :

मन्नू भंडारी की कुछ कहानियों में स्वाधीनता पूर्व का वातावरण है, तो कुछ में स्वाधीनता के बाद का । 'हार' कहानी में सन् १९४५ की आजाद हिंद सेना का उल्लेख मिलता है । 'तीसरा हिस्सा' कहानी जनता पार्टी के शासनकाल की कहानी है । 'महाभोज' उपन्यास बहुचर्चित बेलछीकांड हर आधारित है, जो सन् १९७६ में हुआ था । श्रीमती मन्नू भंडारी ने अपनी कहानियों में काल का उल्लेख स्पष्ट रूप से किया है । 'हार' कहानी का उदाहरण प्रस्तुत है - 'बात यह सन् ४५ के अन्तिम दिनों की है । आजाद हिंद फोज के करिश्मे पढ़ पढ़कर सारी जनता बावली हो रही थी । हड़ताल, जुलूस, सभाओं का बाजार गर्म था। कालेज के छात्र-छात्राओं में जोश का ऐसा ज्वार आया था कि बिना मतलब ही ब्लेड से अंगूठे काट-काटकर एक दूसरे के या नेताजी की तस्वीर पर खून का तिलक करते फिरते थे और महसूस करते थे कि अपने इस हौसले के काम से आजादी की लड़ाई को उन्होंने एक कदम और आगे बढ़ा दिया है ।

इस प्रकार मन्नू भंडारी ने देशकाल और उसके अनुरूप कार्य करनेवाले लोगों की प्रवृत्ति का चित्रण कम से कम शब्दों में अपनी कहानियों में किया है । उनकी कुछ कहानियां समय-काल की दृष्टि से कुछ घंटो से लेकर अनेक वर्षो तक की अवधि को समेटती हैं । 'खोटे सिक्के', 'एक प्लेट सैलाब' कहानियों का समय लेखिका द्वारा होटल के हाल में बिताया हुआ थोड़े से समय का है । 'तीसरा आदमी' सिर्फ एक दिन की कहानी है जो सबेरे से शाम तक चलती है । इस

तरह कुछ कहानियों में अल्पकाल की घटनाओं को ही कहानी का विषय बनाया गया है और वह समय और उससे जुड़ी घटनाएं ही कहानी के तथ्य से अपना रिश्ता स्थापित कर पाती है । शायद यही सोचकर लेखिका ने काल का अनावश्यक विस्तार कहानी में होने नहीं दिया ।

कुछ कहानियां वर्तमान काल की हैं, तो कुछ अतीत की । 'नशा' नामक कहानी में अतीत को ४० वर्ष तक पीछे घसीटा गया है । 'यही सच है' कहानी डायरी शैली में होने के कारण स्थान और तिथियां सोलह आने ठीक हैं । मन्नू भंडारी की अधिकांश कहानियां वर्तमान में कार्यान्वित होती है । वे वर्तमान में सोच के स्तर तक ही सीमित है । कुछ कहानियों में अतीत महत्त्वपूर्ण हो उठा है । 'चश्मे' कहानी में मि. वर्मा का वर्तमान, अतीत और मिसेज वर्मा द्वारा सुनायी जाने वाली कहानी का कलाबोध; इस प्रकार तीन स्तर चलते है ।

मन्नू भंडारी जी के कथा-साहित्य में कालबोध स्पष्ट है । कालानुसार चरित्रों की परिकल्पना स्पष्ट दृष्टिगोचर होती है । 'हार' की नायिका दीपा जुलूस निकालती है, भाषण देती है । इस प्रकार कानानुरुप आचरण करती है । 'महाभोज' उपन्यास भ्रष्ट राजनीति का दर्पण है । कथा के पात्रों दासाहब और सुकुल बाबू अपने कालानुसार वर्तन करते है । कथा के पात्रों की संवेदना से पाठक की संवेदना जुड़ती है । इसीलिए कथा-साहित्य में कालबोध स्पष्ट है । मधुरेश जी ने 'लहर' पत्रिका में मन्नू भंडारी की कहानियों के समय संदर्भ में एक जगह लिखा है - 'अपने समय संदर्भो के प्रति एक अबाधित खुलापन मन्नू भंडारी की कहानियों को उनकी समकालीन कथा-लेखिकाओं से अलग करता है । समाज में तेजी से उभरते और

पनपते नवधनाढ्य वर्ग की मूल्य-मूढ़ता के संदर्भ में नये मूल्यों के संकेत उनकी बहुत-सी कहानियों में उभरे हैं ।'[२९]

स्थान-बोध :

स्थान-बोध का पता मन्नू भंडारी की अधिकांश कहानियों को पढ़ने से चल जाता है । उनकी कहानियों में अधिकतर दिल्ली, कलकता, जयपुर, अजमेर, भानुपुरा, कानपुर, इलाहाबाद आदि स्थानों का उल्लेख मिलता है । राजस्थान एवं कलकता में शिक्षा पाने से तथा निवास दिल्ली में होने से इनका उल्लेख मन्नू भंडारी की कहानियों में अधिक स्थानों पर आया है । 'पं. गजाधार शास्त्री' नामक कहानी में, जैसे - 'गर्मी की छुट्टियां समुद्र-किनारे बिताने के इरादे से मैं पुरी चला गया था । 'खोटे सिक्के' कहानी में - 'पर परसों जब उन्हें सूचना मिली कि लखनऊ से किसी कॉलेज की छात्राओं का एक दल कलकते के दर्शनीय स्थानों को देखने के लिए आया है ..... 'महाभोज' उपन्यास में तो स्पष्ट 'सरोहा और दिल्ली का उल्लेख है । 'जब से उसने आगजनी की घटना के प्रमाण जुटाये हैं, वह पागलों की तरह पीछे पड़ा हुआ था । दिल्ली चलने के लिए ।' इन प्रकार अधिकांश कहानियों में स्थान का उल्लेख स्पष्ट है ।

वातावरण-बोध :

प्रत्येक कहानी में वातावरण होता है, बिना वातावरण के कोई कहानी होती ही नहीं । 'वातावरण हमें संपूर्ण कहानी के भाव का बोध कराता है न कि किसी एक अंग का । वातावरण कहानी का परिणाम है न कि कारण । अतः कहानी के विविध तत्त्वों की सावयवता वातावरण की एकाई को जन्म देती है ।' कहानी के पात्रों के व्यापार और वातावरण परस्पर प्रतिक्रियात्मक होते हैं । ऐसे दृश्य पाठकों की

संवेदनशीलता को प्रेरित करने में सफल साबित होते हैं । मन्नू भंडारी की कहानियों में विषयवस्तु अथवा पात्रों के मनोव्यापार के अनुकूल ही वातावरण चित्रित किया गया है । वातावरण के कारण कथ्य अधिक प्रभावशाली रूप से पाठकों के मन में बिंबित होता है । एक जगह बस अड्डे का बड़ा ही यथार्थ वातावरण मन्नू भंडारी ने प्रस्तुत कर अलग अलग पात्रों के क्रियाकलाप का चित्रण किया है । 'ड्राइवर अपनी सीट पर आकर बैठ गया है । सामान तो ठीक से जमाकर कुली नीचे उतर गया है और खड़ा-खड़ा बीड़ी फूंक रहा है । अधिकतर यात्री बस में बैठ चुके हैं, पर कुछ लोग अभी बाहर खड़े बिदाई की रस्म अदा कर रहे हैं ।'

'आपका बंटी' की नायिका शकुन की मनःस्थिति का चित्रण करने में लेखिका ने जो वातावरण जुटाया है वह बड़ा महत्त्वपूर्ण है । 'रोज सबेरे पीछे के आंगन से घुसकर धूप सारे घर को चमकाती दमकाती दोपहर को लान में फैल-पसरकर बैठ जाती और शाम को बड़ी अलसायी-सी धीरे-धीरे सरकती हुई पीछे की पहाड़ियो में छिप जाती । एक दूसरे को ठेलते हुए मौसम भी आते ही रहे । फिर भी शकुन को लगता था कि समय जैसे ठहर कर जम गया है और जमे हुए समय की यह चट्टान कहीं से न पिघलती थी, न टूटती थी । बस टूटती रही है तो शकुन - धीरे-धीरे, तिल-तिल ।'[३०]

(५) भाषा-शैली :

भाषा अभिव्यक्ति का सशक्त माध्यम है । किसी भी रचनाकार की शक्ति उसकी भाषा और शैली होती है, जिससे वह अपनी विशिष्ट और अलग पहचान बनाता है और पाठकों पर अपने व्यक्तित्व का प्रभाव छोड़ता है । प्रत्येक व्यक्ति की अपनी शैली होती है, इस

प्रकार साहित्यकार की भी अपनी शैली होती है । जिससे वह अपने समकालीनों से अलग पहचाना जाता है । प्रत्येक रचना में लेखक के व्यक्तित्व की अमिट छाप होती है । इस आधार पर हम मन्नू भंडारी के कथा साहित्य की भाषा-शैली पर विचार करेंगे ।

आज का कथाकार अनुभव का धनी है, क्योंकि आवरण मुक्त यथार्थ उसकी आंखों के सामने है । मन्नू भंडारी की कहानियां इसी बात का एहसास दिलाती हैं कि यथार्थ से टकराई हुई होने से उन्हें शिल्प की कोई आवश्यकता नहीं । फिर भी युगों से चली आई हुई परिपाटी को तोड़ा नहीं जा सकता । इसीलिए शिल्प से संबंधित जो बाते हमें उनकी कहानियों में मिली उन्हें प्रस्तुत करने का प्रयास किया गया है ।

मन्नू भंडारी की बेंटी रचना ने वार्तालाप में कहा था कि - ''ममी की कहानियां पढ़ते समय ऐसा लगता है कि मानो ममी अपने साथ सीधी बात कर रही है । रोजमर्श के जीवन में ममी जैसे बात करती है, उसी भाषा में वह पअनी कहानियां लिखती है ।''

मन्नू भंडारी की कहानियों और उपन्यास के पात्र जैसे सजीव हैं वैसे ही उनकी भाषा भी जीवंत है । लेखिका के पास अपने अनुभव एवं अनुभूति को संप्रेषित करने के लिए जीवंत और सहज भाषा है । अकेले भाषा के स्तर पर भी उनकी कहानियां समृद्ध हो गई है । आज की गहरी, जटिल, आंतरिक संवेदना और द्वंद्वात्मक अनुभवों को संप्रेषित करने के लिए जिस प्रकार की भाषा की जरुरत होती है वह उनके पास है । क्योंकि किताबी भाषा न लिखकर वे उस माहौल की भाषा लिखती हैं जिसमें उनके पात्र सांस लेते हैं ।

मन्नू भंडारी हिंदी भाषा के प्रति प्रयत्नशील नहीं हैं । भाषा

शास्त्रीय द्रष्टि से शुद्ध हिन्दी भाषा का अपनी रचनाओं में प्रयोगकर सिर्फ बुद्धिजीवियों के लिए अपना साहित्य-निर्माण उन्होंने नहीं किया है, अपितु उन्होंने जन-सामान्य की व्यथा-कथा जन-सामान्य तक पहुंचाने के लिए जन-सामान्य की बोलचाल की भाषा का प्रयोग किया है । इसीलिए उनकी भाषा को हम दो रूपो में देखते है ।

१. शब्दों का प्रयोग ।

२. भाषा का प्रयोग ।

शब्दों का प्रयोग :

मन्नू भंडारी अजमेर में रही है, वहां से माहौल में घुली-मिली हैं । उस प्रदेश विशेष के शब्द स्वतः ही मन्नू भंडारी की कहानियों में प्रचुर मात्रा में पाये जाते है । अरबी-फारसी शब्दों का सहज स्वीकार इनकी भाषा में है । प्रारंभ के दो कहानी-संग्रहो की कहानियों में यह प्रभाव अधिक है । मन्नू भंडारी के स्थानान्तरण के साथ उनकी भाषा में परिवर्तन आता गया है । मन्नू भंडारी अजमेर से कलकता और कलकता से दिल्ली पहुंची है । उनकी कहानियों का देशकाल वातावरण और भाषा का भी प्रयास उसी अनुषंग से हुआ, यह भी स्वयमेव स्पष्ट है ।

श्रीमती मन्नू भंडारी की भाषा में समय-संदर्भ, परिवेश और पात्रानुकूल शब्दों का प्रयोग हुआ है । देशी-विदेशी तथा नये ढंग से प्रयुक्त अप्रचलित शब्दो के प्रयोग भी मिलते हैं । तत्सम और तद्भव शब्द, अरबी-फारसी के शब्द, अंग्रेजी के व्यवहार में प्रयुक्त होनेवाले शब्द मन्नू भंडारी की भाषा में पाये जाते हैं । उदाहरणार्थ -

''कुशलक्षेम, त्रिशंकु, अंग-प्रत्यंग, भद्र, क्षणांश ।

ब्याह, लब्बो-लुबाब, जद्दोजहद, शऊर, मुग़ालता ।

दुग्गी, छमियां, छमाका, नानई, आदि ।''[३१]

अन्य भारतीय भाषाओं के शब्द :

बंगला :

कलकता निवास में बंगला भाषा को मन्नू भंडारी ने थोड़ा बहुत जाना था किंतु उनका परिवेश हिंदी भाषा ही रहने के कारण उनकी भाषा पर बंगला भाषा का अधिक प्रभाव दिखाई नहीं देता । फिर भी बंगाली परिवेश के प्रभाव से मन्नू भंडारी अछूती नहीं रही । उनकी एक कहानी का नाम ही बंगला गीत के प्रारंभ के कुछ शब्दों से होता है । 'एखाने आकाश नांइ', इस कहानी में उस बंगला गीत की पंक्तियां कुछ इस तरह रख दी हैं कि कहानी के भाव उससे जुड़ जाते है । 'शोनो बंधु शोनो प्राणहीन ऐ शहरेर इतिकथा।'[३२]

विदेशी भाषा के शब्द :

मन्नू भंडारी का परिवार सुशिक्षित रहा है । पिता, पति तथा बहन के घर अंग्रेजी भी परिचित बोली है । आज भी भारतीय शिक्षा व्यवस्था में अंग्रेजी का स्थान बना रहने से भारतीय जनता पर वह छायी रही है । मन्नू भंडारी की भाषा में अंग्रेजी के शब्द सहज रूप में आये हैं । कहीं-कहीं रोमन लिपि में भी दिखायी देते हैं । वैसे देवनागरी लिपि में लिखे अंग्रेजी के शब्द और वाक्य हमें कई कहानियों में मिलेंगे । जैसे - मिरेंडियन्स, ट्र्यून, आर्टीफिशियल, इनफीरियारिटी, कम्पलेक्स, नर्सरी राइम । कुछ वाक्य भी द्रष्टव्य हं - 'इट्स क्लीयर केस आफ सुसाइड' । 'आन सन्डे आइ एम हैप्पी' ।

उर्दू के साथ अंग्रेजी शब्दों को मिलाकार बनाये गये शब्द - फैशनपरस्त बीवियां, माई डियर दोस्त । अंग्रेजी से हिंदी में किया

'तीसरा हिस्सा' कहानी में प्रयुक्त एक मक्खीमार अनुवाद भी मन्नू भंडारी की कलम से निकला है । जैसे 'सुई पटक सन्नाटा' । एक कहानी के शीर्षक में मन्नू भंडारी ने त्रिभाषा फॉरमूले को बड़े ही सुंदर ढंग से प्रस्तुत किया है : 'एक प्लेट सैलाब' ।

संयुक्त शब्द :

मन्नू भंडारी ने अपनी भाषा में अनेक शब्दों का प्रयोग किया है । प्रचलित संयुक्त शब्दों के साथ संदर्भानुकूल नये संयुक्त शब्दों का प्रयोग भी बड़ी सहजता से कर दिया है । प्रचलित संयुक्त शब्द हमें जो उनकी कहानियों में मिले, वे हैं - मामा-वामा, पार्टी-वार्टी, दुक्खन-सुक्खम, दंड-फंड । 'छत बनाने वाले' कहानी में बड़ी सहजता से मन्नू भंडारी ने 'क्षणांक' शब्द का प्रयोग किया है ।' 'क्षणांक' के लिए धनी भौंहों के नीचे आंखों के कटोरे कुछ और सिकुड़े, ललाट की तीन सलवटें कुछ और अधिक उभर आयीं ।''

लोकगीत :

कुछ कहानियों में स्थानीय बोलियों में प्रचलित गीतों की कड़िया भी है जिनके शब्दों पर विचार किया जा सकता है । जैसे - 'मजबूरी' कहानी की पंक्तियां -

'आओ री चिड़िया चुन करो
बेटू ऊपर राइ-नूम करो
नून करो - नून करो ।'[३३]

बोलचाल के शब्द प्रयोग :

मन्नू भंडारी ने अपनी कहानियों में देशकाल के अनुसार बोलचाल के शब्दों का प्रयोग बहुलता से किया है । कुछ उदाहरण

प्रस्तुत हैं -

''अफसरों से झड़ों, चपरासियों को झाड़ो ।
तगण-मगण-पगण का तर्पण ।
छुरी केंची का एल. पी. चला ।
कलम घिस्सू क्लर्क, जीभ चिस्सू हो गए ।
बड़े बाप की बेटी अफसर संग लेटी ।
अनखाये दिन अनसोयी रातें ।''[३४]

कहावतें और मुहावरे :

प्रेमचंद के युग में अत्यधिक प्रचलित कहावतों और मुहावरों का प्रयोग इधर कुछ कम ही दिखायी देता है । लेकिन मन्नू भंडारी का ध्यान आधुनिक तथ्य की कहानियां लिखने पर भी उनकी ओर गया है । कुछ प्रयोग द्रष्टव्य हैं :

''सौ सुनार की एक लुहार की ।
चूं-चूं का मुरब्बा ।
अय हाय । गाव की छोरी और पूरब की चाल ।
दूधों नहाई, पूतों फली ।''[३५]

भाषा के साहित्यिक गुण :

मन्नू भंडारी की भाषा में साहित्यिक गुणों की कमी नहीं है जैसे -

प्रवाहात्कमता :

मन्नू भंडारी की भाषा का प्रवाह नदी की उस धारा के समान है जो अपने मंतव्य तक रुकना जानती ही नहीं । उद्धरण द्रष्टव्य है - ''रजनीगंधा की महक धीरे-धीरे मेरे तन-मन पर छा जाती है । तभी मैं अपने भाल पर संजय के अधरों से स्पर्श महसूस करती हूं, और मुझे लगता है यह स्पर्श, यह सुख, यह क्षण ही सत्य है, वह सच झूठ था,

मिथ्या था, भ्रम था - और हम दोनों एक दूसरे के आलिंगन में बंधे रहते हैं - चुम्बित, प्रतिचुम्बित ।''[३६]

चित्रात्मकता :

मन्नू भंडारी की तूलिका जब चलती है तब पात्रों के चेहरे पाठकों के सम्मुख उभरते चलते है । एक उदाहरण इस प्रकार है - ''और उस क्षण जब मेरी स्तब्ध और लुप्त चेतना लौटी तो मेरी आंखे भर आयीं । मैंने देखा, मेरे सामने दस हजार का चैक पड़ा था और हाथ में पांच का नोट - आंसूभरी आंखों के पार मुझे लगा जैसे दोनों के रूप अस्पष्ट से अस्पष्टतर होते चले जा रहे हैं ।''

नाटकीयता :

नाटकीयता के बिना कहानी निखार नहीं आता । मन्नू भंडारी की कहानियों में नाटकीयता की झलक देखी जा सकती है - ''तो इस तरह चल रही है शेखर और तुम्हारी दोस्ती ? यही पढ़ाई होती है यहां बैठकर ..... यही सब करने के लिए आता है वह यहां ..... ।' बित्ते भर की लड़की और करतब देखो इनके । जितनी छूट दो उतने ही पैर पसरते जा रहे हैं इनके । एक झापड़ दूंगी तो सारा रोमांस झड़ जायेगा दो मिनट में ..... ।''[३७]

पात्रानुकूलता :

मन्नू भंडारी ऐसी कहानी-लेखिका है जो अपनी पात्रानुकूल भाषा को गढ़ती है । 'त्रिशंकु' कहानी में भिन्न-भिन्न उम्र के पात्रों की भाषा जानकर ही उम्र जानी जाती है । पात्र अगर पढ़ा-लिखा हो तो उसकी भाषा में अंग्रेजी के कई शब्द आयेंगे । पात्र अगर मुस्लिम वातावरण में रहा हो तो फारसी-उर्दू के शब्दों का प्रयोग उसकी भाषा में दिखायी देगा । 'अभिनेता' कहानी में पच्चीसों उर्दू शब्दों को हम

देखते है । सरोहा गांव के ग्रामीण जन 'महाभोज' में भोजपुरी शब्दों द्वारा अपनी व्यथा-कथा को प्रकट करते है ।

※ विविध शैलियों का प्रयोग :

प्रत्येक रचनाकार अपने भावों और विचारों को विशेष पद्धति से अभिव्यक्त करने का प्रयास करता है, उसे ही शैली कहा जाता है । प्रस्तुतिकरण का ढंग ही शैली है । डॉ. नीरजा का कथन है, ''शैली तो प्रस्तुति का ढंग है और शिल्प पूरी रचना की साकारता का तंत्रात्मक आधार । शिल्प की रचना जिस प्रक्रिया विशेष में से उभरती है वह है शैली ।[३८] शैली का संबंध सिर्फ साहित्य से नहीं होता बल्कि साहित्यकार से भी होता है । क्योंकि साहित्य, साहित्यकार के अनुभूत युग-जीवन का प्रतिबिंब होता है । अतएक रचनाकार के संस्कार, अनुभव, रुचि कार्यक्षेत्र तथा परिवेश आदि का भी उसमें विशेष महत्व होता है । शैली कथ्य के अनुसार अपना रूप भी परिवर्तित करती है । मन्नू भंडारी की साहित्यिक प्रतिभा कहानी, उपन्यास और नाटक के माध्यम से प्रकट हुई है । लेखिका का सतत यह प्रयत्न रहा है कि उनके कथ्य की मूल संवेदना, पाठकों के हृदयों के अतल गहराई में उतरकम उन्हें विचार-मंथन के लिए प्रवृत्त करें । अतएव उनके साहित्य में शैलियों का वैविध्य है । एक कृति में वे चार-पाँच शैलियों का प्रयोग भी कौशल से करती है । इनके ये प्रयोग चमत्कार-प्रदर्शन या शिल्प की कारीगरी दिखलाने के लिए नहीं अपितु अपनी रचना के आशय को समझने में पाठकों को किसी प्रकार की असुविधा न हो, इसी प्रयोजन से किए गए हैं । यही उनकी रचनाधर्मिता एवं प्रयोगधर्मिता की सचेतन उपलब्धि है ।

१. वर्णनात्मक या विवरणात्मक शैली :

वह साहित्य-सृजन की सर्वाधिक प्रचलित और प्राचीन प्रणाली

है । आज यह शैली केवल मानव के बाह्य-जीवन के चित्रण में ही नहीं बल्कि अंतर्निरूपण में भी अपना सामर्थ्य दिखा रही है । मन्नू भंडारी ने अपनी रचनाओं में द्विमुखी विषय-वस्तु का प्रतिपादन किया है । एक ओर वे मानव की अंतःश्चेतना से जुड़ी हुई समस्याओं का उद्घाटन करती है तो दूसरी ओर विकृत तथा विसंगत सामाजिक, राजनीतिक, पारिवारिक, धार्मिक स्थितियों को उजागर करती हैं । इस दूसरी स्थिति में वर्णनात्मक-शैली से काफी काम लिया जाता है । वस्तुतः वर्णनात्मक शैली में समस्या को जिंदा पकड़कर उसी रूप में पाठकों तक संप्रेषित करना जोखिम का कार्य होता है । लेखिका ने अपने कथा-साहित्य में इस शैली का यत्र-तत्र प्रयोग किया है । उनकी प्रारंभिक रचनाओं में समस्या-अंकन के लिए भी इसका प्रयोग कम-अधिक मात्रा में हुआ है । 'महाभोज' उपन्यास में समस्या के उद्घाटन में यह शैली काफी सफल हो चुकी है ।

''बिसू के मारने का तरीका चाहे न समझ में आ रहा हो, पर मरनेवाले का नाम शायद सबके मन में बहुत साफ था । नाम भी, कारण भी । पर केवल मन में । बयान के समय भी जबान पर कोई नहीं लाया । बिसू का बाप भी नहीं ।''[३९]

'अभिनेता' कहानी ने प्रौढ़ा-कुमारिका की अकेलेपन की समस्या वर्णनात्मक शैली द्वारा ही निरावृत की है, ''दौलत की गोद और शोहरत की मीनार, जो भी सुख ला सकती थी, वे रंजना के आँगन में बारहमासी के फूलों की तरह खिले रहते थे । मगर फिर भी रंजना खुश न थी । कुछ था, जो उसे भीतर-ही-भीतर खाए डालता । प्रेम का अभिनय करते उसका जी तड़प जाता कि काश, कोई होता जिससे वह सचमुच प्रेम कर सकती ।''[४०]

इस प्रकार वर्णनात्मक शैली में भी समस्या को जिंदा पकड़ने की लेखिका की कला प्रशंसनीय है ।

२. आत्मकथात्मक शैली :

आधुनिक युग में यह सर्वाधिक प्रचलित शैली है । इसमें लेखक आत्मकथा की भाँति प्रथम पुरुष में कथा का वर्णन करता है । कभी वह खुद निवेदक होता है तो कभी कहानी का प्रमुख अथवा सहायक पात्र भी लेखक का स्थान ग्रहण कर लेता है । इस शैली में ग्रंथित कथ्य अत्यधिक विश्वसनीय बनकर पाठक और लेखक में पर्याप्त नैकट्य स्थापित करता है । अतएव ''वर्णनात्मक शैली की अपेक्षा आत्मकथात्मक शैली अधिक श्रम-साध्य है और कलात्मकता की अपेक्षा रखती है ।'' मन्नू भंडारी की अनेक रचना-कृतियों में इसका सफल प्रयोग हुआ है । इसमें पात्र जिन आंतरिक और बाह्य समस्याओं से गुजरते हैं, उन्हें वे खुद ही उद्घाटित करते हैं । 'स्त्री-सुबोधिनी' कहानी में परिवार के लिए, अर्थ-स्त्रोत बनी नायिका खुद ही अपनी समस्या को व्यक्त करती है, ''न घर का कोई अंकुश था और न इस बात की संभावना कि कहीं मेरा ठौर-ठिकाना लगा देंगे । मेरा ठिकाना वे लगाते भी क्या, उनकी जिंदगियाँ ठिकाने लगी रहें, और घर की मशीन जैसे-तैसे चलती रहे, इसके लिए मुझे ही हर महीने मनीऑर्डर में तेल डालकर भेजना पड़ता था ।

लेखिका की 'मैं हार गई', 'हार', 'सज़ा', 'यही सच है', 'आते-जाते यायावर', 'स्त्री-सुबोधिनी' आदि कहानियाँ विशुद्ध रूप से आत्मकथात्मक शैली में संरचित है । इन कहानियों के अतिरिक्त अन्यत्र भी बीच-बीच में इस शैली के प्रयोग द्वारा पात्र स्वयं अपनी उलझनें व्यक्त करता हैं । 'आपका बंटी' और 'एक इंच

मुस्कान' उपन्यासों में इस शैली का बखूबी से प्रयोग हुआ है । 'एक इंच मुस्कान' की अमला खुद अपने जीवन की भटकन को व्यक्त करती है जो उसके जीवन की शोकांतिका की जड़ हैं, ''आज तक मैंने अपने जीवन पर विचार और उसका विश्लेषण करने के अतिरिक्त किया ही क्या है ? ये विचार ही मुझे भटकाते रहे हैं, जीवन-पर्यंत भटकाएंगे, भटकना मुझे स्वीकार्य है, पर किसी का बंधन, किसी का दुराग्रह स्वीकार नहीं । अमला जीवन में सीमाओं, मर्यादाओं और बंधनों को नहीं मानती, मानेगी भी नहीं ।''[४१]

आत्मकथात्मक शैली में किया गया समस्याओं का अंकन अत्यधिक प्रभावी तथा विश्वसनीय बनकर पाठकों पर सीधा आघात करता है ।

३. डायरी तथा पत्र-शैली :

डायरी तथा पत्र-शैली मन के गुह्यतम भावों को व्यक्त करने का सशक्त उपकरण है । लेखिका ने डायरी शैली का प्रयोग 'तीन निगाहों की एक तस्वीर' कहानी में समर्थ रूप में किया है । दर्शना की अतृप्त काम की समस्या से डारी के पन्ने के पन्ने रंग गए हैं । इसमें स्वप्न शैली ने योग देकर समस्या का सशक्त रूप में उद्घाटन किया है । इसमें पात्र अत्यधिक गोपनीय बातें, जो केवल अपने आपसे बता सकता है, उसका उद्घाटन होता है । अतएव यह शैली पात्रों की मानसिक गुत्थियों एवं उसकी दुखती रग को यथावत् पकड़ने में समर्थ होती है । इसी प्रकार 'एक इंच मुस्कान' उपन्यास में भी डायरी शैली के माध्यम से अमला के मानसिक अन्तर्द्वन्द्व का चित्रवत् अंकन हो पाया है । मंद मंद मुस्कान का कवच ओढ़कर और अपनी चारों ओर झूठे अहं और मिथ्याभिमान की दीवारें करती है । सारे बंधनों और

मर्यादाओं को तोड़कर विशिष्ट बनने की ललक में उसने क्या पाया, ''यह एकाकी जीवन बहुत बोझिल और निरर्थक-सा लग रहा है ।''[४२] डायरी का यह एक वाक्य अत्यधिक विश्वसनियता के साथ पाठकों के सम्मुख उसकी व्यथा को रख देता है ।

मन्नू भंडारी ने अपने साहित्य में बीच-बीच में पत्र शैली का प्रयोग करके पात्रों की मनःस्थितियों एवं जटिल उलझनों को व्यक्त करता है । इस शैली के द्वारा लेखक कथ्य को विस्तार से बचाता है और उसके प्रभाव की सामर्थ्य भी बढ़ाता है । 'एक कमजोर लड़की की कहानी' में पत्र शैली द्वारा ही नायिका का अकेलापन, उसके हृदय की अतल गरहाई में छिपी कसक तथा जिंदगी को घसीटते हुए जीने की विवशता व्यक्त हुई है । जिन बातों का उद्घाटन करने के लिए कहानी के कितने ही पन्ने भर जाने की संभावना रहती है, लेखिका पत्रों के चंद पंक्तियों में उसे समर्थता से उठाती है । वस्तुतः सांवेगिक क्षणों में प्रत्यक्ष अभिव्यक्ति जब मुश्किल-सी होती है तब पत्र संश्लेषण ही सशक्त माध्यम होता है । 'अभिनेता' कहानी में केवल एक पत्र की संरचना करके लेखिका ने दिलीप का पूरा अतीत रंचना के सम्मुख उपस्थित कर दिया है, जो रंजना के तन-मन को तोड़ देता है । रंजना खुद कहानी के अंत में दिलीप को पत्र लिखती है, ''मैं तो केवल रंगमंच पर ही अभिनय करती हूँ, पर तुम्हारा तो सारा जीवन ही अभिनय है । बड़े ऊँचे कलाकार और सधे हुए अभिनेता हो तुम मेरे दोस्त !''[४३] पत्र के चंद वाक्य रंजना के टूटे दिल की दास्तान व्यक्त करने में सक्षम हैं । 'अनचाही गहराइयाँ' तथा 'सयानी बुआ' कहानी में इस शैली का मार्मिक प्रयोग हुआ है, जो समस्या की जड़ ही उधेड़ देता है ।

'एक इंच मुस्कान' उपन्यास में लेखिका द्वारा निर्मित पूरा एक अध्याय पत्र-शैली में हैं । इसमें छः पत्रों में पूरे अध्याय को गूँथकर लेखिका ने पति-पत्नी के बीच दे आत्मीय-सम्बन्ध नष्ट हो जाने की समस्या की उसके पत्रों-रेशों सहित उद्घाटित किया है । यही अध्याय उपन्यास का मेरुदंड बनकर पाठकों को कथ्य की मूल संवेदना तथा समस्या के संसक्त कराता है । इस प्रकार लेखिका ने अपने कथा साहित्य में पत्र-शैली का प्रयोग समस्या के निरावरण के लिए किया है ।

४. मनोविश्लेषणात्मक शैली :

आधुनिक युग में मनोविश्लेषणात्मक शैली का प्रयोग अनिवार्य हो गया है । क्योंकि आज लोक-जीवन में जितनी उलझनें बाहर हैं, उससे कई ज्यादा जटिल उलझनें उसके अंतस् में हैं । ये उलझनें उसे अंदर से नोंच-नोंचकर लहूलुहान कर रही हैं । इन आंतरिक संवेगों संवेदनाओं, द्वंद्वों-गुत्थियों को सुलझाने के लिए इस शैली का महत्त्वपूर्ण सहयोग रहा है । डॉ. धनरान मानधानो का कथन है, ''उसके माध्यम से मानव-चरित्र की विविध परिस्थितियों में प्रतिक्रियात्मक संभावनाओं का सबसे अधिक निदर्शन संभव है ।'' मनोविश्लेषणात्मक शैली में साहित्यकार की भाषिक सामर्थ्यमहत्वपूर्ण होती है । लेखिका की भाषिक सामर्थ्य मानव की अंतःचेतना को सही धरातल पर पकड़कर उसे व्यक्त करने में सक्षम है । इन्होंने अपूर्व संवेदना के सहारे मानव की मनःस्थितियों के चित्रण में अद्भूत सफलता प्राप्त की है । इस शैली के द्वारा पात्रों की मानसिक उलझनों, गुत्थियों अन्तर्द्वंद्व को इतनी संवेदशनशीलता से उठाया है कि पाठक अनायास ही पात्रों की संवेदना से जुड़कर उसी प्रकार की संवेदनात्मक उद्रेक

की अनुभूति अपने में पाता है । किशोर गिरकडकर का कथन सार्थ है, ''यदि यह कहा जाए कि मनोविश्लेषणात्मक शैली मन्नू भंडारी की रचनाओं का प्राणतत्व है। तो शायद गलत न होगा ।'' लेखिका ने इस शैली के द्वारा दमित, कुंठित, खंडित तथा उद्वेलित पात्रों की दुखती रग पर बराबर हाथ रख दिया है । इस दृष्टि से उनका 'आपका बंटी', 'एक इंच मुस्कान' उपन्यास तथा 'कील और कसक', 'तीन निगाहों की एक तस्वीर', 'घुटन', 'तीसरा आदमी', 'एक बार और', 'बाँहों का घेरा', 'आते जाते यायावर' जैसी कतिपय कहानियाँ उल्लेखनीय हैं । लेखिका ने पात्रों के अंतर्मन में पहुँचकर, उनके मानस पर चढ़ी पर्तों को अत्यधिक नजाकत से अलगाया है और उनकी समस्या को अनावृत कर दिया है । यहाँ कुछ उदाहणर द्रष्टव्य हैं -

'तीसरा आदमी' कहानी में मनोविश्लेषणात्मक शैली द्वारा अपनी पौरुषहीनता की ग्रंथि से संत्रस्त सतीश के मानसिक द्वंद्व एवं संशय को जिंदा पकड़ लिया है, ''साला शोहदा कहीं का, कहानी लेने आया है ! शकुन ने उसे जरूर बता दिया होगा । शकुन, किस जन्म का बैर तुमने मुझेसे निकाला है ! उस आदमी के सामने मुझे नंगा किया, जिसके सामने मुझे वस्त्रों की सबसे ज्यादा आवश्यकता थी !'

'आपका बंटी' उपन्यास में शकुन की मानसिक उलझनों को अत्यधिक संवेदनशीलता से उठाकर एक पुनर्विवाहिता के मातृत्व से अलगाव की समस्या का प्रत्यक्षीकरण किया है, ''अहं और गुस्से से भरे-भरे, शकुन की लाई हुई चीजों को बिना देखे, बिना छुए एक ओर सरका देने, उमढ़ते आँसुओं को भीतर-ही-भीतर रोककर सूखी आँखों से मोटर में बैठकर बिदा हो जाने की व्यथा बंटी से कहीं ज्यादा शकुन की अपनी व्यथा है, और ऐसी व्यथा जिसे कोई बता भी नहीं

सकता.. आज भी नहीं, आगे भी नहीं ।''[४४] इस प्रकार लेखिका की मानसिक उलझनों को पकड़कर, सही दर्द की पहचान करा देने का सामर्थ्य बेजोड़ है ।

इस प्रकार 'यही सच है' में दीपा की अनिर्णय की द्वंद्वग्रस्त स्थिति, 'सजा' कहानी में आशा का मनोविश्लेषण, 'कील और कसक' तथा 'बाँहों का घेरा' कहानी की नायिकाओं की अतृप्त काम कुंठा, 'घुटन' कहानी की प्रतिमा की घुटन, 'क्षय' कहानी की कुंती की आंतरिक तड़पन, 'एक इंच मुस्कान' की अमला का मंद-मंद मुस्कान की ओट में छिपा दर्द, 'स्वामी' उपन्यास की मिनी का अन्तर्द्वंद्व सभी का लेखिका ने मनोविश्लेषणात्मक ढंग से विश्लेषण करके उनकी समस्याओं को यथावत् उपस्थित किया है । लेखिका ने पुरुष-पात्रों का मनोविश्लेषण भी सशक्तता से किया है । 'तीसरा हिस्सा' कहानी के शेरा बाबू, 'शायद' कहानी का राखाल, 'ऊँचाई' कहानी का शिशिर, 'आते-जाते यायावर' का नरेन, 'महाभोज' उपन्यास के त्रिलोचन सिंह इन सभी पात्रों के अंतर्मन में प्रवेश कर उनकी आंतरिक व्यथा को उजागर किया है ।

५. संवाद शैली :

संवाद नाटकों के प्राणतत्व होते हैं तो दूसरी ओर वे कथा-साहित्य में प्राण फूँकते हैं । वे कथ्य और उद्देश्य के संवाहक होते हैं तो कभी कथ्य की संवेदना और समस्या की सही पहचान करा देने में भी सहयोग पहुँचाते हैं । वे कभी पात्र का आत्म-विश्लेषण कर उनकी छटपटाहट पर वार करते हैं । अर्थात् साहित्यकार के लिए संवाद एक ऐसा उपकरण है, जिसके प्रयोग से वह बहुत सारे काम करवा लेता है । मन्नू भंडारी के कथा-साहित्य में संवाद शैली का

प्रयोग प्रचुर मात्रा में हुआ है । उन्होंने अपनी कतिपय कहानियों में वर्णनात्मकता से बचकर चटकीले मार्मिक तथा सांकेतिक संवादो द्वारा समस्याओं का अंकन किया है । उनके उपन्यासों में तो संवाद ही इतने जबरदस्त हैं कि वे पात्रों की आंतरिक और बाह्य उलझनों को सतही तौर पर स्पष्ट करते हैं । डा. नीरज का कथन है, ''भाव और कथ्य को संपेषित करना उपन्यासकार का दायित्व बन जाता है । इस कार्य-पूर्ति के लिए वह समस्यारूप पात्रों का चयन करता है, उनकी मनःस्थिति, आत्मगत कथन और संवादों के माध्यम से वह उपन्यास के उद्देश्य को अभिव्यंजित करता है ।''[४५] अर्थात् मंतव्य को संप्रेषणीय बनाने में संवाद सशक्त साधन हैं । लेखिका ने 'आपका बंटी' उपन्यास में स्थल-स्थल पर आत्मगत संवादों का प्रयोग कर आत्म-विश्लेषण द्वारा समस्या के कारणों और परिणामों का ऊहापोह किया है । उपन्यास में शकुन का निम्न आत्मगत संवाद समस्या की जड़ को निरावृत करता है, ''सच, हम लोग शायद बंटी को मात्र एक साधन ही समझते रहे ! अपने-अपने अहं, अपनी-अपनी महत्वाकांक्षाओं और अपनी-अपनी कुंठाओ के संदर्भ में ही सोचते रहे । बंटी के संदर्भ में कभी सोचा ही नहीं ।''[४६] समस्याओं से गुजर जाने के बाद का यह आत्मविश्लेषण पाठकों के दिशा-निर्देशन में भी काफी उपर्युक्त है ।

लेखिका के संवादों में व्यंग्य का ऐसा पैनापन है कि वह सीधा समस्या की जड़ पर कठोराघात करता है । इस दृष्टि से उनका 'महाभोज' उपन्यास उल्लेखनीय है, जिसमें संवाद स्थान-स्थान पर जन्म लेकर अपनी तीखी धार से भ्रष्टाचार के विविध पहलुओं को साहसिकता के साथ आर-पार चीर देते हैं । वर्तमान राजनेताओं की

दोगली नीति तथा जनता को बहकाने के हथकंडो को देखकर बिंदा कहता है, ''हीरा काका ! नहीं जानते ? आप सब लोगों के तो समधी बने हुए हैं आजकल ! जिसे देखो वही धोती की लाँग उठाए चला जा रहा है उनके पास ।''[४७] संवाद केवल समस्या को जिंदा ही नहीं पकड़ते बल्कि उसकी समर्थता से चीर-फाड कर देते हैं ।

मन्नू भंडारी के कथा साहित्य में यथावकाश उठाए गए संवाद स्थितियों एवं समसयओं को उजागर करने में सक्षम है । सांकेतिकता तथा व्यंग्य का पुट लिए संवाद समस्याओं की प्रभाव-क्षमता बढ़ाने में सक्षम हैं । उनके संवाद-शैली की अन्यतम उपलब्धि यह है कि उन्होंने कुछ समस्याओं के उद्घाटन के लिए स्वतंत्र कृतियों एवं पात्रों का चयन नहीं किया है । फिर भी प्रसंगानुकूल पात्रों की बहस द्वारा समस्याएँ स्वतः उद्घाटित हुई हैं । विशेषतः दहेज-समस्या, बालिग होने से पूर्व विवाह, विवाह में बाधाएँ तथा विधवा-समस्या ने पात्रों के संवादों में स्वतः प्रवेश कर अपने को निरावृत किया है ।

'बिना दीवारों के घर' तथा नाट्य-रूपांतर 'महाभोज' के संवाद तो कथ्य में प्राण फूँकते हैं । संवादों की भाषा अपने सभी शस्त्रों अस्त्रों का प्रयोग करके कथ्य की मूल संवेदना से जुड़कर उसको संप्रेषणीय बनाने में सफल सिद्ध हो चुकी है । इसी कारण तो उनके 'महाभोज' उपन्यास की अपेक्षा नाट्य-रूपांतर 'महाभोज' सामाजिक जागरण का प्रभावी साधन रहा है । इस प्रकार संवादों की सहजता, सरलता, पात्रानुकूलता, संक्षिप्तता और सांकेतिकता के कारण समस्याओं का यथावत् अंकन पाठकों के दिलों-दिमाग पर स्थायी प्रभाव छोड़कर उन्हें आलोड़ित करता है ।

मन्नू भंडारी ने युगसत्य की सही तस्वीर उतारने के लिए

समस्यानुरूप विविध शैलियों का प्रयोग किया है । समस्याओं की प्रभावोत्पादकता बढ़ाने के लिए उन्होंने व्यंग्य शैली, आवेश शैली, चित्रात्मक शैली तथा काव्यात्म और गीत शैली का भी सहज स्वाभाविक प्रयोग किया है ।

समग्रालोचन :

कुल मिलाकर कह सकते है कि श्रीमती मन्नू भंडारी की भाषा की सबसे पहली विशेषता है उसकी सह्जता-जन्य सरलता । उनकी भाषा में भावों को व्यक्त करने की असाधारण शक्ति है । जिस बात को वे जिस रूप में प्रकट करना चाहती हैं, उसे उसी रूप में उनकी भाषा प्रकट कर देती हैं । भाषा को खास ढंग से गढ़ने की आवश्यकता उन्हें कभी महसूस नहीं हुई । वे प्रतिमा के धनी हैं । उनकी कथाओं में भाव और विचार, तथ्य और कल्पना, भाषा और अलंकार का आश्चर्यजनक रूप में समन्वय हुआ है । दैनदिन जीवन की भाषा का उपयोग उसी रूप में मन्नू भंडारी ने अपनी रचनाओं में किया है । उसी के परिणामस्वरूप उनकी भाषा में प्रभाव और ताजगी है, जो उनकी कहानियों को रोचकता प्रदान करती है । बोलचाल में कहावतों, मुहावरों आदि का उपयोग करने से मन्नू भंडारी के सजीव पात्र जीवंत भाषा के उद्घाटित करते हैं । विद्वत्ता के प्रदर्शन का अभाव और कृत्रिमता से दूर देशकाल और परिवेशगत पात्रों के अनुकूल भाषा का सहज प्रयोग करने में मन्नू भंडारी सिद्धहस्त है । वही उनकी भाषा का शृंगार है । भावों के साथ भाषा की रोचकता पाठकों को कहानी पढ़ते समय उबाती नहीं ।

मन्नू भंडारी की भाषा अपने आप में सुंदर है । सूक्ष्म से सूक्ष्म अंतर्द्वंद्व और मनोवैज्ञानिक जटिलता को सरलता से सुलझाने में उनकी

भाषा समर्थ है । भाषा की सुंदरता, सुबद्धता एवं सहजता से मन्नू जी की कहानियां लोकप्रिय बनी है ।

उद्देश्य :

साहित्यकार अपनी रचना में किसी विशिष्ट द्रष्टिकोण को लेकर रचना करता है और उसके आधार पर मानव जीवन का मूल्यांकन करता है और मानव जीवन से विविध पहलुओं को गहराई से देखने की चेष्टा के पीछे उसका कोई न कोई उद्देश्य होता है । और साहित्यकार अपनी रचना के माध्यम से अपने उद्देश्य को सिद्ध करता है । कथा साहित्य केवल मनोरंजन का साधन न रहकर उसका उद्देश्य होता है बिना उद्देश्य किसी भी कृति की रचना नही होती । लेखिका ने अपने उपन्यास, नाटक और कहानी में समाज में जो हो रहा है उसका यथार्थ चित्रण प्रस्तुत किया है । 'आपका बंटी' उपन्यास में बंटी की समस्या समाज की समस्या है । समाज में ऐसे बंटी बहुत है । तो 'महाभोज' उपन्यास एक राजनीतिक उपन्यास है उसमें लेखिका ने राजनीति का यथार्थ चित्रण दिया है ।

संदर्भसूचि

संदर्भ - ग्रंथ सूची

क्रम	पुस्तक	लेखक	पृष्ठ संख्या
१.	अश्क के उपन्यास कथ्य और शिल्प	डॉ. श्रीमति वीणापाणि	६१
२.	अश्क के उपन्यास कथ्य और शिल्प	डॉ. श्रीमति वीणापाणि	६२
३.	हिन्दी-उर्दू उपन्यास शिल्प बदलते परिपेक्ष्य	डॉ. प्रेम भटनागर	२६
४.	हिन्दी-उर्दू उपन्यास शिल्प बदलते परिपेक्ष्य	डॉ. प्रेम भटनागर	३
५.	मानवी की पारिभाषिक कोश	नगेन्द्र	२४
६.	हिन्दी शब्द सागर	सं. श्यामसुंदरदास	४७५१
७.	प्रेमचंदोत्तर उपन्यासों की शिल्पविधि	डॉ. सत्यपाल चुध	१०
८.	हिन्दी उपन्यास की शिल्पविद्या का विकास	डॉ. ओम शुक्ल	१७
९.	हिन्दी उपन्यास की शिल्पविद्या का विकास	डॉ. ओम शुक्ल	२७
१०.	हिंदी कहानी कला	प्रतापनारायण टंडन	२३६
११.	कथाकार मन्नू भंडारी	अनीता राजूरकर	१०१
१२.	कथाकार मन्नू भंडारी	अनीता राजूरकर	१०२
१३.	सुबोधिनी (त्रिशंकु कहानीसंग्रह)	मन्नू भंडारी	३५
१४.	समाजवादी हिन्दी उपन्यासों में चरित्रांकन	डॉ. नास्तिकुमार	४२
१५.	कथाकार मन्नू भंडारी	अनीता राजूरकर	१०३
१६.	अकेली (तीन निगाहों की एक तस्वीर)	मन्नू भंडारी	२७
१७.	खोटे सिक्के (तीन निगाहों की एक तस्वीर)	मन्नू भंडारी	५४

क्रम	पुस्तक	लेखक	पृष्ठ संख्या
१८.	अभिनेता (मै हार गई कहानीसंग्रह)	मन्नू भंडारी	७४
१८.	ऊँचाई (एक प्लेट सैलाब कहानीसंग्रह)	मन्नू भंडारी	११८
१९.	त्रिशंकु (त्रिशंकु कहानीसंग्रह)	मन्नू भंडारी	७१
२०.	महाभोज (उपन्यास)	मन्नू भंडारी	३८
२१.	दो कलाकार (मै हार गई कहानीसंग्रह)	मन्नू भंडारी	१३१
२२.	कील और कसक (मै हार गई कहानीसंग्रह)	मन्नू भंडारी	११८
२३.	शायद (त्रिशंकु कहानीसंग्रह)	मन्नू भंडारी	४७
२४.	आपका बंटी (उपन्यास)	मन्नू भंडारी	३०
२५.	सयानी बुआ (मै हार गई कहानीसंग्रह)	मन्नू भंडारी	६७
२६.	स्त्री सुबोधिनी (त्रिशंकु कहानीसंग्रह)	मन्नू भंडारी	३७
२७.	स्वामी (उपन्यास)	मन्नू भंडारी	४५
२८.	कथाकार मन्नू भंडारी	अनीता राजूरकर	१११
२९.	आपका बंटी	मन्नू भंडारी	३६
३०.	कथाकार मन्नू भंडारी	अनीता राजूरकर	११४
३१.	एखाने आकाश नाई (त्रिशंकु कहानीसंग्रह)	मन्नू भंडारी	१२४
३२.	मजबुरी (तीन निगाहों की एक तस्वीर)	मन्नू भंडारी	८४
३३.	कथाकार मन्नू भंडारी	अनीता राजूरकर	११५
३४.	कथाकार मन्नू भंडारी	अनीता राजूरकर	११६
३५.	कथाकार मन्नू भंडारी	अनीता राजूरकर	११६

क्रम	पुस्तक	लेखक	पृष्ठ संख्या
३६.	मन्नू भंडारी के उपन्यास साहित्य का विश्लेषणात्मक अध्ययन	डॉं. नीरजा	१७३
३७.	महाभोज (उपन्यास)	मन्नू भंडारी	२६
३८.	स्त्री सुबोधिनी (त्रिशंकु)	मन्नू भंडारी	६६
३९.	एक इंच मुस्कान (उपन्यास)	मन्नू भंडारी एवं राजेन्द्र यादव	८२
४०.	एक इंच मुस्कान (उपन्यास)	मन्नू भंडारी एवं राजेन्द्र यादव	१२४
४१.	अभिनेता (मै हार गई)	मन्नू भंडारी	८४
४२.	तीसरा आदमी (यही सच है)	मन्नू भंडारी	४९
४३.	आपका बंटी (उपन्यास)	मन्नू भंडारी	१९२
४४.	मन्नू भंडारी के उपन्यास साहित्य का विश्लेषणात्मक अध्ययन	डॉं. नीरजा	१२२
४५.	आपका बंटी (उपन्यास)	मन्नू भंडारी	२०३
४६.	महाभोज (उपन्यास)	मन्नू भंडारी	११५

मन्नू भंडारी से साक्षात्कार

:: परिशिष्ट - १ ::

:: मन्नू भंडारी से साक्षात्कार ::

स्वातंत्र्योत्तर कहानी लेखिकाओं में मन्नू भंडारीका अपना विशिष्ट स्थान है । वह अपनी क्षमता को उपन्यास, कहानी तथा नाटकके रूप में प्रकट करती रही है । उनके प्रमुख उपन्यास पाँच हैं - 'आपका बंटी', 'महाभोज', 'स्वामी', 'एक इंच मुस्कान' और कलवा है । कहानी संग्रह पाँच है । मैं हार गई, 'तीन निगाहों की एक तस्वीर', 'यही सच है', 'एक प्लेट सैलाब' और 'त्रिशंकु' । नाटक दो है - 'बिना दीवारों के घर' और 'महाभोज' का नाट्य रुपान्तर । लेखिका से उनकी रचनायें उनके व्यक्तित्व, कृतित्व के बारे में पूछताछ करके शोध-प्रबन्ध प्रस्तुत करे तो ज्यादा अच्छा रहेगा । इस विचार से उनसे टेलिफोन द्वारा संपर्क करके तिथि एवं समय निश्चित करके दिनांक २७ डिसम्बर २००८ शनिवार को सुबह दस बजे दिल्ली में उनके निवासस्थान हौजखास एपार्टमेंट्स, १०३ नम्बर मकान पर मैं और मेरे मामा उनसे मिलने गये । मन्नू भंडारी से मिलकर ऐसा लगा कि वर्षो से हम एक-दूसरे को जानते हैं । उनके सरल और सहृदय स्वभाव का परिचय मिला । दो घंटे तक हम लोग बैठे उनके कथा साहित्य पर चर्चा की । उन्होंने सहित्य के बारे में निजी जीवन के बारे में और अनुभवों के बारे में बिना मुखौटा पहने बातचीत की । एक कलाकार का महत्त्व उसकी विनम्रता में होता है । इसका मैंने अनुभव किया । इस प्रकार उनके व्यक्तित्व एवं कृतित्व को ओर निकटता से निहारने का सुअवसर प्राप्त हुआ । मेरे

पास टेपरेकार्ड था, उसमें जितने भी प्रश्न उनके किये रेकार्डिंग किया है, जिसका हू-ब-हू चित्रण निम्नलिखित हैं -

साक्षात्कार :-

प्रश्न-१ आपके जीवन के बारे में कुछ बाते कहीए ।

उत्तर मेडमने कहा मै राजस्थानी परिवार की हूं आजादी के पहले की बात है मैंने स्वातंत्र्य आंदोलन में काम किया है । मेरे पिताजी हमे किचन से दूर रखते थे । पिताजी कहते थे कि तुम राजनीतिक बाते जानो, देश में क्या हो रहा है ? शीला अग्रवाल का आग्रह था कि केवल घर में बैठ कर न जाने सक्रिय रूप से भाग ले । शीला अग्रवाल हमें प्रेरित करती थी । मैं सबेरे से प्रभातफेरी मे जाती और साम तक जुडी रहती थी । एकबार अजमेर में भाषणबाजी होती थी । किसीने आकर पिताजी को बताया कि मन्नू का भाषण सूना ? (डॉ. अम्बालालजी ने कहा) कैसा भाषण देती है । पिताजी यह बात सुनकर गद्‌गद हो गये । पिताजी द्वन्द्व में रहते थे । फिर भी कुछ खास बनो ऐसा पिताजी चाहते थे । कॉलेज से चीठी आई कि मन्नू कॉलेज का अनुशासन बीगाड़ रही है आप उसे घर में बिठाईये । मैं डरती थी कि पिताजी नाराज होंगे पर वो तो खुश थे कि आज ऐसी लड़कियों की जरुरत है । ऐसा ही मेरा बचपन बीता बाद में कलकता में बी.ए. बनारस से एम.ए. किया ।

प्रश्न-२ नारी स्वतंत्रता के बारे में आपके क्या विचार है आपने अपने साहित्य में ज्यादातर नारी विषयक द्रष्टिकोण अपनाया है ।

उत्तर मैं मानती हू कि नारी को स्वतंत्रता मिलनी चाहिए । महादेवी वर्माकी 'श्रृंखला की कड़िया' नारी विमर्श की पहले किताब मानती हूँ । अगर देह की स्वतंत्रता को नारी स्वतंत्रता मानते है तो मैं इसके समर्थन में नहीं हूँ । हा अगर पति से सम्बन्ध बिगडे तो आप अलग हो जाएँ दूसरी शादी कर ले । उस समय विधवा विवाह नही होता था ।

प्रश्न-३ आजके समय में साहित्य की क्या भूमिका है ?

उत्तर मेडमने कहा जब से इलेकट्रोनीक मीडिया आया है । साहित्यकी भूमिका आज गौण हो गई है । फिर भी मुझे लगता है जिनकी रूचि साहित्य मे है वो साहित्य ही पढ़ेगे उनकी रूचि को टी.वी. देखकर सुख, चेन, शांति न दे पायेगी । हर साल प्रकाशक इनकी किताबे प्रकाशित करते है वो किताबे कही बीकती जरुर है और कोई पढ़ता होगा इसलिए छपती है । इसका असर समाज पर देखा जाता है ।

प्रश्न-४ 'महाभोज' उपन्यास की प्रेरणा कहाँ से मिली ? क्या आप राजनीति में रुचि रखते हो ?

उत्तर मेडमने बताया कि न मैं राजनीति में थी, न आज हूँ, न भविष्य में इसकी संभावना है । मैंने किसी पत्रिका में बिरछी गाँव में पेड़ से बाँधकर हरिजनो को बाँध के जला दिया था ऐसा वर्णन पढ़ा उस वर्णन ने मुझे प्रभावित कर दिया मैं दो रात तक सो नही पाई । 'महाभोज' १९७९ के चुनाव पद्धति पर आधारित है । आज तो उससे बदतर स्थिति है मै ये बात दिल्ली में देखती हूँ,

जो आँख, कान खुले रखते है वो राजनीति को जानते है ।

प्रश्न-५ 'आपका बंटी' उपन्यास का क्या उद्देश्य है ?

उत्तर १९७० में सीरीयल चलती थी जो धर्मयुग में धारावाहिक रूप में छपी थी ये पूरी होते ही किताब में आ गयी । आपका बंटी तीन परिवार की कथा है, तीनों परिवार तलाक शुद्धा परिवार हैं एक बेटा मॉं के साथ रहता है। एक लड़की माँ-बाप के साथ रहती है । मैने पहलीवार मोहन राकेश की पत्नी को उसकी मृत्यु के बाद देखा । राकेशजी पत्नीने दूसरी शादी कर ली थी । राकेश न कहाँ कि बेटा मेरे साथ रहेगा मैंने (लेखिका) ने कहाँ बेटेको माँ के साथ रहनेदो मैंने सारी बात को उसे समझाया, फिर भी वे बच्चो को ले गये । एक कहानी में पहली पत्नी की बिटिया दूसरी पत्नी के साथ रहती थी । वे उसे बहुत खराब ढंग से रखती है ये सब मैं जानती थी । एक और दंपती था उसके पति की मृत्यु हो गई एक बेटा था उसकी पत्नी का किसी ओर से सम्बन्ध था जो उसका बेटा बर्दाश्त नही करता था ये तीनो परिवार मेरे सामने था वह 'आपका बंटी' उपन्यास के रूप में व्यक्त हुआ है ।

प्रश्न-६ साहित्य और शिक्षा में राजनीति का क्या प्रभाव है ?

उत्तर आज राजनीति हर जगह प्रमुख है चाहे शिक्षा हो या साहित्य । सब जगह प्रेवश कर गई है । आजादी के पहले बुढ़े, युवान सब राजनीति मे थे नहेरुजी ने कहाँ अब आजादी मिल गई तो अपने अपने क्षेत्रमें लग जाओ, पर राजनीति अपनी रोग में घुस गई थी

तो सब अपने अपने क्षेत्र की राजनीति में लग गये और इस तरह राजनीति सभी क्षेत्र में आ गई । आपने कहा कि साहित्य में हम जीन मूल्यों की स्थापना करते है उन मूल्यों का विरोध होता है । हर साहित्यकार पुरस्कार पाने के लिये कही न कही सरकार से झुकते है उसमें अपवाद भी होते है । संपादक भी रचनाकार को चुनते है । राजनीति का रुप बदल गया पर है तो सभी जगह । शिक्षा में आज विद्यार्थीओं का एक दल होता है । हमारे समय में ऐसा न था शिक्षा में भी राजनीति घुस गई है और हर पार्टी अपने दल को जिताने में लग जाते है ।

प्रश्न-७ आपने अपने साहित्य में ज्यादातर नारी की ही बाते की है । आप नारीवाद की पक्षधर है ?

उत्तर मैं नारीवादकी पक्षधर नहीं हूँ । 'सजा' कहानी में न्याय व्यवस्था पर करारा व्यंग्य है । इस कहानी में नव साल में व्यक्ति का परिवार तहस-नहस हो जाता है और अंतमें जज कहता है कि बरी किया जाता है तब परिवार बरबाद हो गया था । 'क्षय' कहानी में बेटी को नैतिकता को छोड़ना पड़ता है पिताका 'शारीरिक क्षय' बेटी के 'नैतिक क्षय' का कारण बनता है । कहानी नारी के ऐंगल से लिखी गई है पर उसमें सामाजिक समस्या का चित्रण किया गया है ।

प्रश्न-८ 'आसमाता' उपन्यास में आय क्या कहना चाहते हो ?

उत्तर मेरी माँ आसमाता का व्रत करती थी । ये बाल उपन्यास है जो राजस्थान की लोककथा पर आधारित है आज जो जीवन में

आशा रखके चलते है उसी की आशा पूरी हो जाती है वह जीवन में आगे बढ़ सकता है । कुछ लोककथा और मेरी ओर से कुछ जोड़कर ये छोटा उपन्यास बना दिया है ।

प्रश्न-९ आपकी कौन-सी रचना आपको सबसे अधिक प्रिय है ?

उत्तर मेडम ने कहा ये बड़ा मुश्किल सवाल है । परंतु कहानी में 'त्रिशंकु' और उपन्यास में 'महाभोज' सबसे अच्छा लगा है ।

प्रश्न-१० 'स्वामी' उपन्यास की प्रेरणा कहाँ से मिली ?

उत्तर बंगला के कहानीकार शरतचन्द्र की कहानी 'स्वामी' से प्रेरित है । उनका ही विस्तार है । बसु चटर्जी शरत् की 'स्वामी' कहानी पर फिल्म बनाना चाहते थे तो मैंने शरतबाबूकी कहानी को उपन्यास में रूपांतरित किया और 'स्वामी' बहुत अच्छी बनी है ।

प्रश्न-११ आप अब कुछ लिखते हो ?

उत्तर अब मेरा लिखना कम हो गया है, मुझे न्युलोजिया की बीमारी है, याददास्त कमजोर हो गई है, आँख पर असर हो गई है तो मै शाम को पढ़ नहीं सकती सुबह कुछ पढ़ती हूँ मैंने २००७ में 'एक कहानी यह भी' लिखी थी ।